अनिल सलूजा

आधा पागल

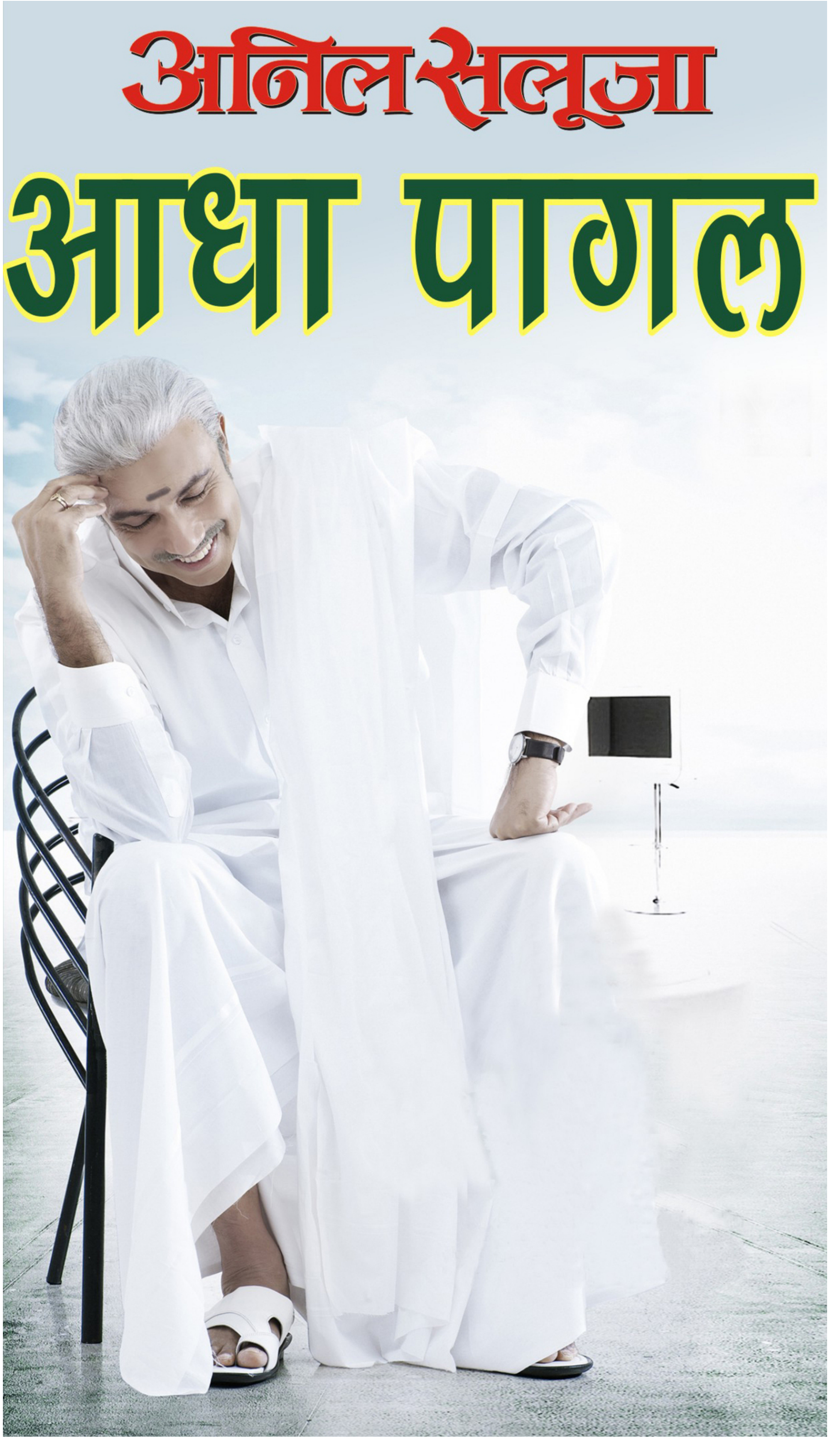
अनिल सलूजा
आधा पागल

आधा पागल

अनिल सलूजा

रवि पॉकेट बुक्स

उपन्यास : आधा पागल
लेखक : अनिल सलूजा
© : प्रकाशकाधीन
डिजिटल © : बुकमदारी

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनायें काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। समानता संयोग से हो सकती है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। प्रूफ संशोधन कार्य यद्यपि पूर्ण योग्यता व सावधानीपूर्वक किया गया है, तथापि मानवीय त्रुटि रह सकती है, अत: किसी भी तथ्य सम्बन्धी त्रुटि के लिए लेखक, प्रकाशक व मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मेरठ में होगा।

आधा पागल

“लो बाऊजी—एक पैग लगा लो।”

“ऊहूं....मैं ऐसे नहीं पीयूंगा।”

“तो फिर कैसे पीयेंगे बाऊजी?”

“मुर्गा ला साथ में। मुर्गा समझता है न दो टांगों वाला—एक चोंच वाला—लाल रंग का।”

“मैं समझ गया बाऊजी। मैं अभी लाया।”

कहकर जोरावर ने अपने पीछे खड़ी युवती की तरफ इशारा किया जो कि सिर्फ पैंटी और ब्रा पहने हुए थी।

युवती तुरंत वहां से हटी और शीघ्र ही वह वापस लौटी तो उसके हाथ में एक प्लेट थी जिसमें कि भुना हुआ मुर्गा था।

जोरावर ने उससे प्लेट ली और सिंहासन नुमा कुर्सी की तरफ मुड़ा जिस पर सफेद रंग का कुर्ता-पायजामा पहने करीब पचास साल का व्यक्ति बैठा था।

उसका कुर्ता-पायजामा इस कदर मैला हो रहा था मानो कई दिनों से उसने वही पहन रखा हो। जगह-जगह राल टपकने के निशान पड़े हुये थे।

कुर्ता-पायजामा पहने वह शख्स अयोध्या प्रसाद था।

अयोध्या प्रसाद का इस वक्त का हुलिया बहुत बिगड़ा हुआ था—उसके सफेद बाल उलझ रहे थे—आंखों में सूनापन नजर आ रहा था—दाढ़ी बढ़ी हुई थी और चेहरा पसीने के जम जाने से काला हो रहा था।

गोल चेहरे वाला अयोध्या प्रसाद अण्डरवर्ल्ड का बेताज बादशाह था।

उसे जानने वाले कहते हैं कि वह बिहार का रहने वाला था। वहां किसी बात पर उसका पड़ोसी से झगड़ा हो गया और उसने गुस्से में आकर उस पूरे परिवार को ही जिन्दा जला डाला था और फिर वहां से भागकर यहां रामनगर में आकर रिक्शा चलाने लगा।

एक रिक्शा चालक से तरक्की करते-करते आज वह अण्डरवर्ल्ड का डॉन बना हुआ था।

बड़े-बड़े लीडर—पुलिस अफसर उसके दरबार में आकर उसे सलाम करते थे।

वह जिसके भी सिर पर हाथ रख देता—उसका तो समझ लो बेड़ा पार हो गया और जिस पर उसकी नजर टेढ़ी पड़ जाती, समझो उस पर शनि सवार हो गया।

इस वक्त वह अपनी सिंहासन नुमा कुर्सी पर पैर रखे घुटनों को छाती से लगाये कुछ सहमा-सहमा-सा नजर आ रहा था।

उसकी आंखें बता रही थीं कि उसका दिमाग कुछ हिला हुआ है।

जोरावर—

गैंडे जैसा सख्त शरीर वाला काले रंग का व्यक्ति उसका बॉडीगार्ड होने के साथ-साथ उसका दायां हाथ भी था।

उसने पैग और प्लेट अयोध्या प्रसाद के सामने रखी और उदास स्वर में बोला—

“लीजिये बाऊजी—मुर्गा भी आ गया।”

अण्डरवर्ल्ड में अयोध्या प्रसाद को बाऊजी के नाम से ही जाना जाता था।

चिकन देखकर अयोध्या प्रसाद ऐसे खुश हुआ—जैसे किसी बच्चे को उसकी मनपसंद डिश मिल गई हो।

उसने तुरंत प्लेट में से मुर्गा उठाया और उसकी एक टांग तोड़कर बाकी का मुर्गा प्लेट में वापस रखा और जोरावर से पैग लेकर उसकी तरफ देखा।

“खा लूं?” वह ऐसे सिर हिलाकर बोला जैसे खाने की इजाजत मांग रहा हो।

जोरावर ने जबरदस्ती होंठों पर मुस्कान लाते हुए इजाजत देने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

अयोध्या प्रसाद ने टांग को पैग में डुबोया और फिर उसे खाने लगा।

घिन लाने वाली हरकत थी यह उसकी। मगर जोरावर के चेहरे पर जरा भी घिन नहीं थी।

“ऐसे तो बड़ा मजा आता है।” वह खुश होते हुए बोला।

“हमें तो बाऊजी की खुशी चाहिये बस।” जोरावर होंठों पर मुस्कान लाते हुए बोला।

टांग खाते हुए ही अयोध्या प्रसाद ने सामने देखा—

सात आदमी हाथ बांधे खड़े थे उसके सामने।

वे सभी अयोध्या प्रसाद के वफादार थे।

“तुम सब भी मजा लो।” वह टांग आगे कर उन सातों की तरफ घुमाते हुए बोला—“इन सभी को मुर्गा दो और पैग पिलाओ।”

बात करने के दौरान ही दो बार उसके मुंह से थूक निकलकर उसके कपड़ों पर गिरी—साथ ही दांतों द्वारा पिसा हुआ गोश्त भी थोड़ी बहुत मात्रा में टपका।

“जो हुक्म बाऊजी।”

जोरावर तुरंत बोला और गर्दन पीछे मोड़ अपने पीछे खड़ी युवती की तरफ देखा।

युवती उसके इशारा करने से पहले ही समझ गयी—सो वह तुरंत मुड़ी और हॉल से बाहर निकल गई।

अयोध्या प्रसाद टांग को बार-बार शराब में डुबोकर उसे खा रहा था। ऐसे में शराब तथा उसकी राल उसके कपड़ों पर बार-बार गिर रही थी।

थोड़ी देर बाद युवती हाथों में बड़ी ट्रे उठाये वहां पहुंची और जोरावर के इशारे पर वहां खड़े सातों आदमियों के सामने जा खड़ी हुई।

ट्रे में सात गिलास शराब से लबालब भरे थे और एक प्लेट में मुर्गे की टांगें रखी थीं। बारी-बारी से सभी एक-एक गिलास और टांग उठाने लगे।

युवती उनके सामने से हटी तो सभी के हाथों में एक-एक गिलास था और दूसरे हाथ में टांग थी।

“खाओ....खाओ! बड़ा मजा आयेगा।”

अयोध्या प्रसाद टांग वाला हाथ हिलाते हुए बोला।

सभी सातों ने अपने-अपने हाथ में पकड़ी टांग गिलासों में डुबोई और उसे खाने लगे।

अयोध्या प्रसाद अपनी आंखें चमकाते हुए सभी को देख रहा था।

तभी उसकी चमकती आंखों में सहसा ही कहर उभर आया।

चेहरा वीभत्स हो उठा।

उसकी खूंखार हो रही आंखें दायीं तरफ के दूसरे व्यक्ति पर टिकी हुई थीं—जिसका चेहरा ऐसा हो रहा था जैसे उसे मांस को इस तरह खाने से घिन हो रही हो।

सहसा ही अयोध्या प्रसाद के हाथ में थमी मुर्गे की टांग उसके हाथ से छूटी और सीधी उस व्यक्ति के मुंह पर जा पड़ी।

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा वह।

इधर अयोध्या प्रसाद ने फौरन जेब से रिवॉल्वर निकाली और—

'धांय!'

गोली सीधी उस व्यक्ति के सीने में जा धंसी।

हाथ में पकड़ा पैग और मुर्गे की टांग उसके हाथ से छूट गईं और वह सीने को पकड़े औंधे मुंह कटे वृक्ष की तरह फर्श पर जा टकराया।

"साला हरामी—मुंह बना रहा था—!" गुस्से में गुर्राया अयोध्या प्रसाद—"इतनी स्वादिष्ट टांग खा रहा था—वो भी फोकट में—फिर भी मुंह बना रहा था।"

सभी के चेहरे सन्न रह गये।

निगाहें उस लाश पर जा अटकीं जो अभी पल भर पहले हाथों में जाम और मुर्गे की टांग पकड़े था।

वही जाम अब कई टुकड़ों में बंटा उसके आसपास बिखरा हुआ था—और मुर्गे की टांग उसके गाल के नीचे दबी हुई थी।

अयोध्या प्रसाद ने टांगें लटकाईं और पैरों को फर्श पर टिकाते हुए खड़ा हो गया।

जेब में रिवॉल्वर रखते हुए उसने बाकियों की तरफ देखा।

“तुम क्यों रुक गये—खाओ-खाओ।”

सभी ने तुरंत मुर्गे की टांगें शराब में डुबोईं और ऐसे खाने लगे जैसे वे जिन्दगी में पहली बार ऐसी स्वादिष्ट चीज खा रहे हों।

अयोध्या प्रसाद ने रिवॉल्वर कमीज की साईड की जेब में डाली और कमीज से हाथ पौंछते हुए लाश की तरफ बढ़ा।

लाश के करीब आकर वह झुका और लाश के गाल के नीचे दबी मुर्गे की टांग को खींचकर उसे अपने बायें हाथ में पकड़े गिलास में डुबोया और चटखारे लेकर खाने लगा।

जोरावर का दिल कर रहा था कि वह जोर-जोर से रोने लगे। उसका दिल रो भी रहा था—लेकिन अपनी आंखों में आंसू नहीं आने दिये उसने।

कल तक जो अयोध्या प्रसाद दूसरों के सामने अपनी जूठन फैंकता था, आज वो किसी दूसरे की जूठन खा रहा था।

वो भी मजे ले-लेकर खा रहा था।

मगर वह बोला कुछ नहीं, मन-ही-मन अपने आंसुओं को पी गया।

जब अयोध्या प्रसाद ने टांग खा ली और पैग पी लिया तो जोरावर उसके करीब आया और बड़े ही अपनत्व भरे स्वर में बोला—

“आपके सोने का वक्त हो गया है बाऊजी।”

“सोने का वक्त हो गया?” आंखें फाड़ते हुए बोला अयोध्या प्रसाद।

“हां बाऊजी।”

“तो फिर चल—सुला मुझे और बढ़िया-सी लोरी सुनाना।”

“चलो।”

कहकर उसने छहों को लाश उठाने तथा वहां से जाने का इशारा किया और फिर अयोध्या प्रसाद को अपने साथ लेकर हॉल के दायीं तरफ के दरवाजे की तरफ बढ़

गया।

वह अर्धनग्न युवती उनके पीछे-पीछे चल रही थी।

¶¶

अपने कमरे में फर्श पर बैठा जोरावर फर्श पर घूंसे मारे जा रहा था। उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे और चेहरे पर कहर झलक रहा था।

साफ नजर आ रहा था कि वह गुस्से में तो है लेकिन कुछ कर नहीं पा रहा।

जोरावर का वह कमरा काफी खूबसूरती से सजा हुआ था।

कमरे के बीचों-बीच शानदार डीलक्स साईज का बेड लगा हुआ था जिस पर कि सफेद सिल्क की चादर बिछी थी।

बेड के करीब ही एक शानदार सोफा सैट था जिसके बीच में सैंटर टेबल पड़ी थी। दायीं तरफ कोने में एक टी.वी. स्टैण्ड पर टी.वी. रखा हुआ था।

पूरा कमरा एयरकंडीशंड था।

मगर वह बैठा हुआ था नंगे फर्श पर और बायें हाथ की हथेली फर्श पर टिकाये दायें हाथ से फर्श पर घूंसे मार रहा था।

तभी कदमों की आहट सुनकर उसने अपना आंसुओं से भरा चेहरा उधर घुमाया।

करीब तेईस-चौबीस साल का अच्छी सेहत और लम्बे कद वाला युवक भीतर प्रवेश कर रहा था।

उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे जो उसकी सारी खूबसूरती को खराब कर रहे थे। वर्ना उसकी पर्सनाल्टी काफी अच्छी थी।

उसके चेहरे पर भी उदासी और गुस्से के मिलेजुले भाव थे।

वह कबीर था, कबीर प्रसाद।

अयोध्या प्रसाद का लड़का—उसका लख्ते जिगर।

अपने बेटे को वह कबीर नहीं कबीरा कहकर बुलाता था।

कबीर को देख जोरावर की आंखों से बहने वाले आंसुओं में तेजी आ गई।

“छोटे बाबू....!” उसकी आवाज भर्रा गई—“यह क्या हो गया बाऊजी को?”

“सब ठीक हो जायेगा जोरावर अंकल।” उसके करीब आकर गहरी सांस छोड़ी कबीर ने—“सब ठीक हो जायेगा—बस एक बार उस औरत का पता चल जाये जिसने बद्रीनाथ चाचू को मारा है। फिर देखना कैसे ठीक होंगे बाऊजी।”

“यही तो पता नहीं चल रहा छोटे बाबू।” जोरावर फिर से फर्श पर मुक्का मारते हुए बोला—“उसी हरामन की वजह से ही तो बाऊजी की यह हालत हुई है। एक मामूली-सी औरत बद्रीनाथ जी को खत्म कर गई। यही सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाये बाऊजी—जिसका सीधा असर उनके दिलो-दिमाग पर पड़ा और वे आधे पागल हो गये। जिस बद्रीनाथ के सामने बड़े-बड़े सूरमाओं का पेशाब निकल जाता था—उस बद्रीनाथ को एक औरत ने मार डाला—कैसे विश्वास किया जा सकता है? बाऊजी को भी यह सुनकर विश्वास नहीं हुआ था। मेरी आंखों के सामने आज भी वह दृश्य उभरता है तो मैं सिहर उठता हूं। कितने खुश थे उस दिन बाऊजी। इनाम बांट रहे थे वे सभी को जब....।”

¶¶

“शाबाश मेरे शेर....शाबाश।” अयोध्या प्रसाद एक व्यक्ति के सामने खड़ा उसके कंधे पर थपकी दे रहा था—“कमाल कर दिया तूने तो—एक ही झटके में तूने मुझे चार करोड़ का फायदा करा दिया। वो भी बिना कोई खर्च किये।”

“मैं तो आपका एक तुच्छ सेवक हूं बाऊजी—और मेरा सबसे पहला फर्ज आपकी वफादारी बनता है और दूसरा आपकी तिजोरी भरना।”

“वाह, क्या डायलॉग मारा है।” हंसा अयोध्या प्रसाद— “जोरावर....!” उसने अपने पीछे खड़े जोरावर को पुकारा।

तुरंत जोरावर उसके पीछे से निकलकर उसके बराबर आ खड़ा हुआ।

“जी बाऊजी।” वह बोला।

“अरे भई—इन्होंने हमारे लिये इतना कुछ किया”—उसने वहां खड़े चार व्यक्तियों की तरफ इशारा किया—“अब हमारा भी तो कुछ फर्ज बनता है न कि हम भी इन्हें

कुछ दें।"

"हुक्म करें बाऊजी।"

"चारों को पांच-पांच लाख रुपये हमारी तरफ से बतौर इनाम दिये जायें।"

चारों के चेहरे ऐसे खिल गये जैसे उनके भीतर खुशी का पुतला उछलकूद मचा रहा हो।

"जो हुक्म बाऊजी।" जोरावर बोला।

"तो फिर खड़ा क्यों है, जाकर बीस लाख लेकर आ—हम अपने हाथों से इनाम देंगे इन्हें।"

जोरावर ने सिर हिलाया और जैसे ही वह वहां से हटने को हुआ, तभी वहां एक व्यक्ति पहुंचा।

"दीनापुर से एक आदमी आया है बाऊजी।" वह सिर को झुकाते हुए बोला—"अपना नाम जैकी बता रहा है और आपसे फौरन मिलना चाहता है।"

दीनापुर का नाम सुनते ही अयोध्या प्रसाद का चेहरा खिल उठा।

"जैकी तो अपने यार बद्री का आदमी है। जा ले के आ उसे।"

वह आदमी वापस मुड़ा और बाहर निकल गया।

शीघ्र ही जैकी हॉल में दाखिल हो उसकी तरफ बढ़ा।

उसकी उखड़ी हुई सांस और घबराया हुआ चेहरा देखकर अयोध्या प्रसाद बुरी तरह से चौंक उठा—साथ ही उसके जेहन में अंजान आशंकायें सिर उठाने लगीं।

"क्या बात है?" जैकी के अपने करीब आते ही वह बोला—"मुंह क्यों उतरा हुआ है तेरा—सब खैरियत तो है न?"

सहसा ही जैकी फफकते हुए अयोध्या प्रसाद के पैरों में गिर पड़ा।

"हम लुट गये बाऊजी!" वह उसके पैरों को अपने आंसुओं से धोते हुए बोला—"बर्बाद हो गये।"

उसकी इस हरकत पर बुरी तरह से हड़बड़ा उठा अयोध्या प्रसाद।

झुककर उसने उसे कंधों से पकड़कर खड़ा किया और आंसुओं से भीगे चेहरे को देखते हुए गुर्राया—

“क्या हुआ? मेरा यार ठीक तो है न?”

“ब....बॉस नहीं रहे।” जैकी पुनः फफक पड़ा।

अयोध्या प्रसाद के पैरों तले से धरती खिसक गयी। बद्री की मौत की खबर से उसे बहुत ही गहरा सदमा लगा।

“मेरा बद्री मर....गया?” उसने सिर को अपने दायें कंधे की तरफ झुकाया।

“ह....हां बाऊजी।”

“नहीं....तू....तू झूठ बोलता है....बकवास करता है तू। दुनिया की ऐसी कोई ताकत नहीं जो बद्री का बाल भी बांका कर सके। उसकी ताकत को जानता हूं मैं....वह इतनी आसानी से मरने वाला नहीं। क....कैसे मरा....हार्ट अटैक हुआ क्या उसे?”

“न....हीं....।” रोते हुए बोला जैकी।

“तो क्या उसने खुद को गोली मार ली?”

“न....हीं।”

“तो फिर कैसे मर सकता है वह? क्या मिलिट्री ने तोपखाना लाकर उस पर हमला किया?”

“उन्हें एक लड़की ने मारा था।”

“लड़की ने!” बुरी तरह से उछल पड़ा अयोध्या प्रसाद।

“हां बाऊजी....बीच चौराहे पर बॉस को उसने पीट-पीटकर मार डाला।”

अयोध्या प्रसाद के जेहन को जबरदस्त झटका लगा।

“य....यह क्या कह रहा है तू? एक औरत ने हाथों से पीट-पीटकर बद्री को मार डाला?”

“ह....हां बाऊजी....अ....और मारा भी सैंकड़ों लोगों के बीच।”

“और उसके वफादार कहां थे....तू कहां था उस वक्त?”

“मैं तो बॉस के काम से दिल्ली गया हुआ था। मेरे पीछे ही उस औरत ने न सिर्फ बॉस का साम्राज्य खत्म कर दिया बल्कि बॉस को भी मार डाला।”

“कमाल है....एक मामूली औरत ने बद्री को मार डाला! वह बद्री जो अपने एक ही घूंसे से दीवार को तोड़ने की ताकत रखता था—उसे एक औरत ने मार डाला!”

“ह....हां....बाऊजी।”

“तो फिर तू जिन्दा क्यों है? बद्री के साथ तू क्यों नहीं मर गया?”

सहसा ही काले नाग की तरह फुंफकार उठा वह।

अयोध्या प्रसाद के इस बदले रूप को देख बुरी तरह से कांप उठा जैकी।

“ब....बाऊजी....म....मैं....।”

बात भी पूरी नहीं कर पाया वह कि अयोध्या प्रसाद ने रिवॉल्वर निकालकर उस पर फायर कर दिया।

‘धांय....!’

गोली सीधी जैकी के कलेजे में जा धंसी।

जैकी जोरों से चीखा और वहीं गिरकर छटपटाने लगा।

तभी अयोध्या प्रसाद की रिवॉल्वर उसके चारों वफादारों की तरफ घूमी।

रिवॉल्वर का रुख अपनी तरफ होते देख चारों के तो देवता ही कूच कर गये।

“मेरा यार मर गया....।” अयोध्या प्रसाद कहर भरे स्वर में बोला—“एक मामूली औरत ने उसे बीच चौराहे में सैकड़ों लोगों के बीच मार डाला—और तुम्हारी आंखों में एक भी आंसू नहीं आया। जबकि मुझे देखो—मैं रो रहा हूं....मेरा दिल रो रहा है। नहीं, तुम मेरे वफादार नहीं हो सकते—और ऐसे कुत्तों को जिन्दा रहने का कोई हक नहीं।”

कहने के साथ ही वह ट्रेगर दबाता चला गया।

‘धांय....धांय....धांय....धांय....!’

उसकी रिवॉल्वर ने एक के बाद एक चार शोले उगले—और वे चारों कटे वृक्षों की तरह एक-दूसरे से उलझते हुए नीचे गिर पड़े।

बेचारे।

कहां उन्हें पांच-पांच लाख इनाम मिल रहा था और कहां उन्हें सिर्फ एक-एक गोली मिली।

उसने रिवॉल्वर वाली बांह नीचे लटकाई और जोरावर की तरफ मुड़ा।

“मैंने इन्हें मारकर ठीक किया न जोरावर?”

वह अपनी आंखें चौड़ी करते हुए बोला। उसका निचला होंठ नीचे लटक गया था और वहां से दो बूंदें राल की टपक रही थीं। उसका यह बदला हुआ रूप देखकर जोरावर भीतर-ही-भीतर कांप उठा।

साफ नजर आ रहा था कि इस वक्त उसका दिमाग अपने काबू में नहीं है।

और यह सच भी था।

बद्रीनाथ की मौत को बर्दाश्त नहीं कर पाया था वह। सहसा झटका लगा था उसे और वह अपना दिमागी संतुलन खो बैठा था।

“ह....हां बाऊजी।” जोरावर हड़बड़ाते हुए बोला—“अ....आपने बिल्कुल ठीक किया।”

सहसा ही अयोध्या प्रसाद की आंखें भर आईं।

“एक लड़की ने—एक मामूली लड़की ने मेरे यार को मार डाला—वो भी सरे बाजार—बीच चौराहे पर। मुझे उस लड़की का नाम पता चाहिये—जरा मैं भी तो देखूं—क्या बला है वो। ऐसी क्या खासियत है उसमें जो उसने मेरे हाथी जैसे ताकतवर यार को मार डाला।”

“जो हुक्म बाऊजी। अब आप यह रिवॉल्वर मुझे दे दीजिये।”

कहते हुए उसने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया।

निश्चय ही जोरावर को यह डर लग रहा था कि कहीं उस पर फिर से पागलपन का दौरा सवार न हो जाये।

"क्यों?"

गुर्राया अयोध्या प्रसाद—साथ ही उसके माथे पर बल पड़ गये।

"रिवॉल्वर खाली हो चुकी है बाऊजी—इसे लोड भी तो करना है।"

"अभी एक गोली है इसमें...." कहते हुए अयोध्या प्रसाद ने रिवॉल्वर उस पर तान दी—"चलाकर दिखाऊं?"

जोरावर पहले तो हड़बड़ाया—फिर उसके होंठों पर भीगी मुस्कान फैल गई।

"चलाइये बाऊजी!" वह बोला—"आपके हाथों मरूंगा तो दिल को तसल्ली तो रहेगी कि मैंने अपनी वफा निभाई।"

"न....न....न....!" अयोध्या प्रसाद ने सिर दायें-बायें हिलाया—"बेवकूफ समझता है क्या तू मुझे—अगर तू ही मर गया तो उस हरामन को कौन ढूंढेगा—जिसने मेरे यार को मारा....साली एक मामूली औरत मेरे यार को मार गई।"

वह बच्चों की तरह बिलख पड़ा और वहीं फर्श पर बैठ गया।

आसपास लाशें बिखरी हुई थीं—और वह बार-बार बद्रीनाथ को याद करते हुए रो रहा था। साथ ही वह बार-बार वही डायलॉग दोहरा रहा था कि एक मामूली-सी औरत ने उसके यार को मार डाला।

¶¶

"बस उसी दिन से बाऊजी आधे पागल हो गये।" भर्राये स्वर में कह रहा था जोरावर—"कभी एकदम ठीक हो जाते हैं तो कभी पूरे पागल हो उठते हैं। अपना आपा खो बैठते हैं और सामने जो भी होता है उसे खत्म कर देते हैं। डॉक्टर टंडन ने साफ कह दिया है कि जब तक बाऊजी खुद अपने हाथों से उस औरत को खत्म नहीं करेंगे, तब तक वे ऐसे ही पागल बने रहेंगे। मगर वो औरत है कि उसका पता ही नहीं चल रहा। यहां तक कि उसका नाम भी पता नहीं चल पा रहा। महीना भर से

ऊपर हो गया है और अभी तक उस औरत का कुछ भी पता नहीं चल पा रहा—जबकि मैंने पचास आदमी दीनापुर में उसकी तलाश में लगा रखे हैं। पता नहीं कब उस हरामन का पता चलेगा—कब बाऊजी उसे मारेंगे और कब वो ठीक होंगे?"

कहते हुए वह दरिंदा फफक पड़ा।

"हौंसला रखो जोरावर अंकल।" कबीर उसके करीब बैठते हुए गम्भीर लहजे में बोला—"कभी-न-कभी तो उसका पता चलेगा ही। बस यूं समझ लो कि अभी तक वह अपनी खुशकिस्मती के कारण ही हमारी निगाह में नहीं चढ़ पाई। आखिर कभी तो उसकी बदनसीबी उस पर सवार होगी। और जिस दिन भी ऐसा हुआ—उसी दिन उसका क्रियाकर्म हो जायेगा।"

"पता नहीं कब आयेगा वो दिन?" ठण्डी सांस भरते हुए बोला जोरावर।

"आयेगा—जरूर आयेगा। मुझे देखो—मैं तो बाऊजी का अपना खून हूं। मैं भी तो सब्र रखे हुए हूं।"

"मैं....आप नहीं छोटे बाबू....मैं....।"

बात बीच में ही रह गई जोरावर की—उसके मोबाईल की घण्टी बज उठी थी।

'ट्रिन....ऽ....ऽ....।'

उसने अपनी जेब से मोबाईल फोन निकाला और उसकी स्क्रीन पर निगाह डाली।

"दीनापुर से आया है फोन।" वह चौंकते हुए बोला।

"देखो....किसका फोन है?" कबीर के स्वर में भी हल्की उत्तेजना उभर आई।

जोरावर ने ओ.के. का बटन दबाया और मोबाईल कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो....!"

"मैं सलीम बोल रहा हूं मास्टर।"

दूसरी तरफ से आती आवाज को सुन जोरावर और भी सतर्क हो गया।

सलीम को उसने अन्यों के साथ दीनापुर भेजा हुआ था।

“हां बोल....क्या रिपोर्ट है?” वह बोला—“पता लगा उस औरत का?”

“नहीं मास्टर....!”

जोरावर के चेहरे पर निराशा फैल गई।

“फोन क्यों किया?” वह भरे स्वर में बोला।

“वो औरत तो नहीं मिली मास्टर, मगर हमें उस आदमी का पता चल गया है जिसने उस औरत को दीनापुर में बुलाया था।”

“य....यानि वह औरत दीनापुर की नहीं थी?” चौंकते हुए बोला जोरावर।

“यस मास्टर।”

“उस आदमी से पूछताछ की?”

“वो यहां नहीं है।”

“क्या मतलब?”

“वो रामनगर में अपनी रिश्तेदार की मौत में गया हुआ है।”

“या....नि वो हरामी यहां आया हुआ है?”

“यस मास्टर?”

“कहां?”

दूसरी तरफ से एक पता बताया गया।

“नाम बोल उसका।”

“भीम....भीमसेन।”

जोरावर ने आगे कुछ भी सुनने की जरूरत नहीं समझी। तुरंत उसने मोबाईल बन्द किया और फर्श पर खड़ा हो गया।

“क्या कह रहा था सलीम?” कबीर भी उसके साथ खड़ा होते हुए बोला।

जोरावर ने उसे सब कुछ बताया। फिर बोला—“अब उस हरामन का पता लगने में देर नहीं लगेगी। मैं भीमसेन नाम के उस कुत्ते के हलक में हाथ देकर उगलवा लूंगा कि उसने किसे बुलाया था—बस एक बार पता लगने की देर है—फिर उसे यहां लाने में देर नहीं लगेगी।”

कहते हुए गुस्से से जोरावर के नथुने फूलने-पिचकने लगे।

“इस काम को आप ही अंजाम दीजिये जोरावर अंकल—भीमसेन को लेने आप ही जाइये।”

“वो तो मैं ही जाऊंगा।”

कहते हुए जोरावर के मुंह से कुत्ते की-सी गुर्राहट उबली और आंखों में कहर बरसने लगा।

¶¶

“राम नाम....!”

“सत्य है।”

“सच बोलो।”

“गत है।”

शवयात्रा में एक आदमी ‘राम नाम’ कह रहा था—और बाकी के ‘सत्य है’ बोल रहे थे।

आगे चार आदमी एक अर्थी को कंधा दिये चल रहे थे—उसके आगे करीब बीस-बाईस साल का युवक बनियान और धोती पहने चल रहा था—जिसके हाथ में थाली थी और थाली में जौं के आटे के बने पिंड रखे थे—साथ में एक लोटा था जिसमें से वह थोड़ा-थोड़ा पानी निकालकर छींटें मार रहा था। साथ-साथ वह रोता भी जा रहा था।

अर्थी के पीछे लोगों का हुजूम था।

शवयात्रा उस वक्त कुरानी रोड से निकल रही थी—जब एकाएक एक ओपन जीप सामने से आई और सबसे आगे चल रहे लड़के के सामने आ खड़ी हुई।

थाली पकड़े पानी का छिड़काव कर रहे युवक का रोना एकदम से रुक गया।

अब उसके चेहरे पर आतंक की छाया साफ नजर आ रही थी।

“मा....स्टर।” उसके होंठों से कांपता स्वर निकला।

हां....जीप की ड्राइविंग सीट पर जोरावर ही बैठा था। और पीछे की सीटों पर स्टेनगनों से लैस छह आदमी बैठे थे।

युवक के रुकते ही उसके पीछे अर्थी को कंधा दे रहे चारों व्यक्ति भी रुक गये।

युवक की तरह उनके चेहरे भी फक्क पड़े हुए थे—और आंखों में आतंक नजर आ रहा था।

तभी जीप के पीछे बैठे गुण्डे हाथों में स्टेनगन पकड़े छलांग लगाकर नीचे उतरे और युवक के सामने आ खड़े हुए।

“ऐ....नीचे रखो मुर्दे को!” एक गुण्डा गुर्राया।

इन्कार करने की हिम्मत किसमें थी।

तुरंत चारों ने अर्थी को कंधे से उतारा और खड़े हो गये।

जोरावर अपनी सीट से उतरा और आगे आकर जीप के बोनट पर आ बैठा।

“सभी को नीचे बिठाओ।” वह गुर्राया।

“सारे नीचे बैठ जाओ।” एक अन्य गुण्डा दहाड़ा।

अर्थी के पीछे चल रहे लोगों को अब तक जोरावर का पता चल चुका था—सो वे नीचे बैठने लगे।

तभी एक आदमी खड़ा हुआ और आवेश भरे स्वर में बोला—

“यह कैसी गुण्डागर्दी है जो शवयात्रा के....आ ऽ ऽ ऽ!”

बाकी के शब्द चीख में तब्दील हो गये उसके।

एक गुण्डे ने अपनी गन का मुंह खोल दिया था, और तड़-तड़ करती दर्जनों गोलियां उसकी खोपड़ी में जा समाई थीं। उसका जिस्म जोरों से उछला और आसपास बैठे

व्यक्तियों पर जा गिरा।

हड़बड़ाते हुए वे लोग इधर-उधर छितरा गये और वह व्यक्ति लाश में तब्दील हो नीचे सड़क पर गिर गया।

उसकी मौत से भीड़ में से कुछ घुटी-घुटी चीखें जरूर निकली थीं—मगर कोई विरोध करने के लिये खड़ा नहीं हुआ।

हां—आखिर के जो कुछ लोग खड़े थे—वे फौरन नीचे बैठ गये।

इधर सबसे आगे खड़े लड़के ने पीछे देखा—फिर बुरी तरह से थर-थर कांपते हुए जोरावर को देखने लगा।

जोरावर बोला कुछ नहीं, बस उंगली के इशारे से उसे अपनी तरफ बुलाया।

युवक कांपती टांगों पर किसी तरह अपना वजन सम्भाले उसकी तरफ बढ़ा और उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"अभी-अभी जो मरा वो कौन था?" जोरावर उसे घूरते हुए बोला।

"म....मेरा प....पड़ोसी था।" युवक के मुंह से कांपता स्वर निकला।

"और जो अर्थी पर पड़ा है वो कौन है? तेरी मां—या बाप?"

"म....मां....!" युवक की आवाज भर्रा गई।

"च....च....च....!" जोरावर ने अफसोस जताया।

सहसा ही युवक उसके पैरों को पकड़ रोने लगा।

"म....मेरी मां की मिट्टी खराब मत करो मास्टर! तुम....।"

"घबरा नहीं....कुछ नहीं होगा तेरी मां की मिट्टी को....सीधा खड़ा हो।"

युवक कांपते हुए—आंसू बहाते हुए खड़ा हो गया।

"मुझे बस एक आदमी की तलाश है।" वो ही प्यार से बोला जोरावर—"और इस वक्त वो इन्हीं लोगों में है।" उसने दूर तक नजर आ रहे सिरों की तरफ बांह लम्बी

की—“बस तू हमें यह बता दे कि वो कहां है—फिर तू अपनी मां की लाश को ले जाकर फूंक सकता है। वर्ना तुझे एक नहीं बल्कि इन सभी की लाशें फूंकनी होंगी।”

युवक ने जोरों से थूक सटकी।

“क....किसकी तलाश है?”

“दीनापुर में कौन रहता है तेरा?”

“मौसी।”

“तेरे मौसा का नाम बोल।”

“भ....भीमसेन।”

“बस वही चाहिये मुझे....पीछे मुड़ और बोल....कौन है भीमसेन?”

जोरावर के कहर के बारे में रामपुर का बच्चा-बच्चा जानता था। रामपुर का शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसने सरेआम कत्ल होते न देखा हो। रामपुर में कभी भी कहीं भी कुछ भी अनर्थ हो सकता था—मगर उस अनर्थ का विरोध करने वाला कोई नहीं होता। यहां तक कि पुलिस भी उस अनर्थ को होते देख आंखें मूंद लेती थी।

यूं समझ लो कि एक तरह से जानवरों की जिन्दगी जी रही थी रामपुर की जनता।

किसी की भी जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं था। किसी की भी बहन-बेटी सुरक्षित नहीं थी।

जब भी दिल करता बाऊजी के गुण्डे आते और किसी भी लड़की को उठाकर ले जाते।

रामपुर में कानून का नहीं बाऊजी का राज चलता था और जोरावर उसका सेनापति—बॉडीगार्ड उसका सब कुछ था—और रामपुर में मास्टर के नाम से जाना जाता था।

जिधर से भी उसकी गाड़ी निकलती—उधर की सड़कें खाली हो जातीं।

ऐसा खौफ था जोरावर का।

ऐसे में उस युवक की क्या हालत हो रही थी, इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता था।

अकड़ वह सकता नहीं था।

इन्कार करने का मतलब था मौत और उसके मौसा का पता जोरावर ने फिर भी लगा लेना था।

वह नहीं बताता तो उसकी मौत के बाद कोई दूसरा बता देता।

सो वह मुड़ा और लोगों की तरफ मुंह करके खड़ा हो गया।

सड़क पर बैठे लोग उसकी और जोरावर की बातों से अंजान थे—सो उत्सुकता से युवक की ओर देख रहे थे।

युवक की निगाहें भीड़ में से अपने मौसा को ढूंढ रही थीं।

तभी उसकी निगाहें भीमसेन पर जा टिकीं।

"मौ....सा जी।" वह भर्राये स्वर में बोला।

तुरंत भीमसेन खड़ा हो गया।

"वह है भीमसेन?" तभी पीछे से गुर्राया जोरावर।

"ह....हां मास्टर।" युवक उसकी तरफ गर्दन मोड़ते हुए थूक सटकते हुए बोला।

जोरावर ने तुरंत अपने गनमैनों की तरफ इशारा किया।

उसी वक्त दो गनमैन भीड़ में झपटे।

उन्हें रास्ता देने के लिये बैठे हुए लोग फौरन इधर-उधर गिर पड़े। फिर भी तीन-चार की टांगों को रौंदते हुए वे भीमसेन तक जा पहुंचे।

झपटकर एक ने उसके बाल पकड़े और उसे घसीटते हुए बाहर की तरफ बढ़ा।

दूसरा उसके पीछे-पीछे था।

बालों के खिंचने से भीमसेन के होंठों से कराहें फूट पड़ीं।

बेदर्दी से उसे लगभग घसीटते हुए वे जोरावर के सामने ले आये और फिर उसके बालों को छोड़ दिया गया।

“क....कौन हैं आप लोग?” भीमसेन जोरावर को देखते हुए हैरानी से बोला—“म....मैं तो आपको जानता तक नहीं—और इस शहर में मैं दस साल बाद आया हूं। फिर ये मेरे साथ ऐसा सलूक क्यों?”

“भीमसेन है न तेरा नाम?” जोरावर उसे घूरते हुए गुर्राया।

“हां, मगर....!”

“दीनापुर से आया है न तू?”

“हां....।”

“बद्रीनाथ को तो शायद भूल गया होगा तू। महीना भर हो गया है उसे मरे हुए।”

सुनकर भीमसेन पहले तो बुरी तरह से चौंका—फिर उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

“त....तुम....?”

“तेरा चेहरा ही बता रहा है कि बद्रीनाथ की मौत का कारण तू ही है। अब बाकी बातें बाद में....डालो इसे गाड़ी में।”

तुरंत गुण्डों ने उसे जकड़ लिया।

जोरावर बोनट से उतरा और युवक की तरफ देखते हुए क्रूरता से मुस्कुराया—

“ले जा अपनी मां को फूंकने के लिये।”

कहकर वह जीप की तरफ मुड़ गया।

उसने देखा नहीं कि युवक के चेहरे पर किस तरह के भाव उभर रहे हैं। उसे तो बस भीमसेन से मतलब था, जिसे उसने काबू कर लिया था।

¶¶

“बाऊजी....!”

खर्राटे लेते अयोध्या प्रसाद ने हड़बड़ाते हुए ऐसे आंखें खोलीं जैसे वह जागते हुए ही कोई बुरा सपना देख रहा हो। मगर जब उसने सामने खड़े जोरावर को देखा तो वह मुस्कुरा पड़ा।

“बड़ा ही शैतान है तू....मुझे ही डरा दिया। डरूं कैसे नहीं....।” वह बैठते हुए उदास हो गया—“जब मेरे यार बद्री को एक मामूली औरत ने मार डाला—वो भी सैंकड़ों लोगों के बीच तो मैं....।”

“उसी औरत की बात करने आया हूं बाऊजी....।”

जोरावर उसकी बात काटते हुए बोला।

सुनकर सहसा ही अयोध्या प्रसाद के चेहरे पर उत्तेजना फैल गई।

“मुझे बता कौन है वो हरामजादी—नाम बोल उसका।”

“अभी उसका नाम पता नहीं चला।”

“क्या?”

“मगर हमें वो आदमी मिल गया है जो उस औरत को दीनापुर में लेकर आया था। और इस वक्त वह आप ही के जूते खाने का इंतजार कर रहा है।”

“कहां है वो?” फुंफकार उठा अयोध्या प्रसाद।

“टार्चर रूम में....कुर्सी से बंधा हुआ है।”

बस और कुछ नहीं पूछा अयोध्या प्रसाद ने। वह बेड से उतरा और लगभग भागने वाले अंदाज में जोरावर को एक तरफ धकेलते हुए कमरे से निकल गया।

कहीं वह उसे जान से ही न मार दे—यही सोचकर जोरावर उसके पीछे भागा। अगर भीमसेन मर गया तो फिर उस औरत के बारे में जानना मुश्किल हो जायेगा।

हॉल पार कर वह सामने वाले कमरे में प्रविष्ट हुआ तो अयोध्या प्रसाद उसे दायीं तरफ बेसमेंट में जाने वाली सीढ़ियां उतरते नजर आया।

वह भी उसके पीछे-पीछे लपका।

नीचे उतरते ही काफी बड़ा हॉल था—जिसके दायीं तरफ कतार में तीन कमरे बने थे और एक कमरा ऐन सामने था।

अयोध्या प्रसाद सामने वाले कमरे की तरफ बढ़ा और उसका दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गया। सामने कुर्सी पर भीमसेन बैठा था।

उसके दोनों हाथ कुर्सी के हत्थों से जकड़े हुए थे और पैर पायों के साथ बंधे हुए थे।

उसे देखते ही अयोध्या प्रसाद पर छाया पागलपन और भी ज्यादा हो गया।

दांत किटकिटाने लगा था वह और लार उसके मुंह से गिरने लगी थी।

तुरंत उसने जेब में हाथ डाला।

शुक्र था कि उसकी जेब में रिवॉल्वर नहीं थी—वर्ना वह तो उसे खत्म ही कर देता।

रिवॉल्वर को अपनी जेब में न पा उसका पागलपन और भी बढ़ गया और वह उसके करीब आकर टूट पड़ा उस पर।

“हरामजादे....सूअर की औलाद....कुत्ते....तूने बुलाया था उस औरत को....मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा—खत्म कर दूंगा तुझे।”

कुछ ही पलों में ही भीमसेन लहुलुहान हो गया।

अयोध्या प्रसाद के शक्तिशाली घूंसों ने उसके नाक-सिर-ठोड़ी वगैरह फोड़ डाले थे।

और फिर अयोध्या प्रसाद ने दोनों हाथों से उसका सिर पकड़ लिया।

उसके करीब खड़ा जोरावर बुरी तरह से घबरा गया।

“न....नहीं बाऊजी....” वह चीखा—“इसे खत्म नहीं करना।”

अयोध्या प्रसाद की जिस्मानी ताकत जानता था वह। और जब अयोध्या प्रसाद किसी का सिर दोनों हाथों से पकड़ लेता था तो उस आदमी की मौत निश्चित हो जाती थी। वह सिर्फ एक ही झटका देता था और सामने वाले की गर्दन की हड्डी टूट जाती थी।

तभी तो वह चीखा था।

उसका सिर पकड़े हुए ही अयोध्या प्रसाद ने उसकी तरफ गर्दन मोड़ी—

“नहीं....मैं इस हरामखोर को जिन्दा नहीं छोडूंगा। इसने उस औरत को बुलाया था जिसने मेरे यार को मारा था....। और तू कहता है कि मैं इसे खत्म न करूं....लगता है तू भी मेरे दुश्मनों से मिल गया है।” उसके बोलने के दौरान जोरावर के चेहरे पर थूकों के इतने छींटे पड़े कि उसका पूरा मुंह ही छींटों से भर गया।

मगर क्या मजाल जो उसके चेहरे पर घिन उभरी हो—या उसने अपना चेहरा साफ किया हो।

हां—दुःख जरूर उभर आया था उसके चेहरे पर।

“आप....आप मुझे जान से चाहे मार डालें बाऊजी—मेरी बोटी-बोटी कर दें। लेकिन ऐसा कभी न कहना कि मैं दुश्मनों से मिल गया हूं।”

“तो फिर इसे खत्म न करने को क्यों कह रहा है तू?”

“जरा सोचिये....अगर यह मर गया तो हमें उस मामूली औरत का पता कैसे चलेगा जिसने बद्रीनाथ जी को मारा था? फिर हम उसे ढूंढेंगे कहां से?”

“अरे....।” अयोध्या प्रसाद भीमसेन का सिर छोड़ हैरानी से अपनी ठोड़ी के नीचे उल्टा हाथ रखते हुए बोला—“इसके बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं।”

“तभी तो मैं आपको मना कर रहा था।”

“चल....!” अयोध्या प्रसाद एक तरफ हटते हुए बोला—“तू बात कर—पूछ इससे कि उस हरामन को कहां छुपा रखा है इसने?”

जोरावर भीमसेन के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने पहले आस्तीन से अपना थूकों से भरा चेहरा साफ किया फिर कहर भरी निगाह भीमसेन के चेहरे पर डाली, जिसके लहूलुहान चेहरे पर पीड़ा के साथ-साथ होंठों पर मुस्कुराहट थी।

उसे मुस्कुराते देख आग-बबूला हो उठा वह।

“हरामजादे मुस्करा रहा है तू!” वह फुंफकारा।

भीमसेन के होंठों पर फैली मुस्कान और भी तेज हो गई।

"खामखा ही बांधा मुझे। अरे यह सवाल मुझसे वहां शवयात्रा में भी पूछ लेते तो मैं फौरन उसका जवाब देता।"

जोरावर के होंठों पर जहरीली मुस्कान उभर आई।

"ऐसा क्या?"

"बिल्कुल ऐसा....। क्योंकि शैतान उसे तभी याद करता है जब उसे मौत की जरूरत पड़ जाती है और इंसान उसे तब याद करता है जब उसे उसकी मदद दरकार होती है। और इंसान तो तुम हरगिज नहीं हो सकते। जो आदमी—" उसने अयोध्या प्रसाद की तरफ देखा—"बद्री की मौत से पागल हो उठा हो—जो...." उसने जोरावर की तरफ देखा—"शवयात्रा में गोली चलाकर किसी की हत्या कर दे, वह इंसान कैसे हो सकता है?"

"बकवास नहीं!" फुंफकारा जोरावर—"नाम बोल उसका—कौन है वो हरामजादी?"

"वो हरामजादी नहीं....बल्कि देवी है देवी—और उस देवी का नाम है—रीमा राठौर। पता भी बताऊं?"

"बोल....!" चिढ़े स्वर में बोला जोरावर।

"मुम्बई चले जाओ। वहां किसी भी बच्चे से, जो बोलना सीख रहा हो, उसका पता पूछ लेना। क्योंकि वहां के बच्चे सबसे पहले मां कहना नहीं सीखते—बल्कि उन्हें रीमा राठौर बोलना सिखाया जाता है। इतनी इज्जत है उसकी वहां। और वह तुम्हें या तो अपनी कोठी में मिलेगी या फिर अदालत में। और अगर वह दोनों जगहों पर नहीं मिलती तो समझ लेना कि वो बद्री जैसे किसी महिषासुर के संहार के लिये निकली हुई है।" कहकर वह पुनः मुस्कुराया—"और कुछ पूछना है?"

जोरावर उसके मुस्कुराने से और भी ज्यादा फुंक गया।

उसका दिल तो किया कि वह अभी उसके सिर पर ऐसा घूंसा मारे कि उसका भेजा बाहर आ गिरे। लेकिन उसने ऐसा किया नहीं—बल्कि एक तरफ हटते हुए अयोध्या प्रसाद की तरफ देखा।

"क्या नाम बताया इसने उसका?" अयोध्या प्रसाद बोला।

“रीमा राठौर—मुम्बई में रहती है। आप हुक्म करें तो मैं अभी बिच्छू को उसे लाने के लिये रवाना कर दूं?”

“हां....!” खुश होते हुए अयोध्या प्रसाद ने सिर को हिलाया—“तू भेज उन्हें।” कहकर उसने भीमसेन की तरफ इशारा किया और बड़ी ही मासूमियत से बोला—“अब मैं इसे खत्म कर दूं?”

मुस्कुराया जोरावर।

“अब यह आपका शिकार है बाऊजी—! मगर इसे मारते समय अपने दिल में यह बात जरूर बिठाये रखना कि बद्रीनाथ की मौत में इसका बराबर का हिस्सा था। रीमा राठौर को बुलाने वाला यही था।”

यह बात उसने जानबूझकर कही थी ताकि अयोध्या प्रसाद के दिमाग में यह बात बैठ जाये और हो सकता था कि भीमसेन को मारने के पश्चात् वह कुछ हद तक ठीक हो जाये।

अयोध्या प्रसाद आंखें चमकाते हुए भीमसेन की तरफ बढ़ा। उसके हाथ आगे की तरफ इस तरह फैले हुए थे जैसे वह उसका गला दबाने के लिये उसकी तरफ बढ़ रहा हो।

उसको पागलों वाले अंदाज में अपनी तरफ बढ़ते देख भीमसेन के चेहरे की रंगत पहले तो पीली पड़ी—फिर वह एक गहरी सांस छोड़ते हुए मुस्कुराने लगा।

“एक और महिषासुर के जीवन की उल्टी गिनती शुरू होने जा रही है।” वह बड़बड़ाया—“अब जैसे ही रीमा राठौर को पता चलेगा कि मैं मारा गया हूं—वह फौरन यहां पहुंच जायेगी।”

इधर उसके सामने आकर अयोध्या प्रसाद रुका और अपनी आंखें चौड़ी करते हुए गुर्राया—

“तो तू है वो हरामी जिसने मेरे यार की मौत को बुलाया था।” थूक की फुहार भीमसेन के चेहरे पर पड़ी।

“अब मैं तेरी वो हालत करूंगा कि तू मौत मांगेगा—मगर मैं तुझे मरने नहीं दूंगा। खिलौने की तरह पहले तेरे से खेलूंगा—फिर एक-एक करके तेरे पुर्जे तोड़ूंगा।”

थूक की फुहार पुनः भीमसेन के चेहरे पर पड़ी।

जिस अंदाज से अयोध्या प्रसाद बोला था—भीमसेन उसी से समझ गया कि वह उसे बहुत ही बुरी मौत मारेगा। और पागल आदमी का क्या भरोसा कि वह कब क्या कर दे।

मौत का डर नहीं था उसे—लेकिन वह बुरी मौत नहीं मरना चाहता था।

सो उसने तुरंत मौत को गले लगाने का रास्ता तलाशा, ताकि उसे कष्ट न उठाना पड़े।

उसने अपने मुंह में ढेर सारा थूक इकट्ठा किया और—

"आक्....थू....।"

ढेर सारा थूक अयोध्या प्रसाद के मुंह पर जा पड़ा।

"हरामी के पिल्ले!" वह गुर्राया—"मुंह पर थूकता है। साले बात करनी भी नहीं आती। पागल कहीं का!" एक तो मुंह पर थूक का गिरना—ऊपर से ढेर सारी गालियां।

अयोध्या प्रसाद का चेहरा कानों तक लाल हो उठा। गुस्सा सातवें आसमान पर जा चढ़ा।

"तूने मेरे मुंह पर थूका!"

वह कुत्ते की तरह गुर्राया—और अपने दोनों हाथों में उसका सिर पकड़कर एक तेज झटका दिया।

"कड़क्....!" की हल्की-सी आवाज के साथ भीमसेन की गर्दन की हड्डी टूट गई और उसका बदन बुरी तरह से हिलने लगा।

"मुझे गाली निकाली तूने।" वह आस्तीन से अपना मुंह पौंछते हुए दहाड़ा और एक जबर्दस्त घूंसा उसकी कनपटी पर रसीद कर दिया।

अयोध्या प्रसाद के बाजुओं की ताकत का पता उसके घूंसे से चला।

एक ही घूंसे में भीमसेन का भेजा बाहर बिखर गया।

भीमसेन दो-चार पल और तड़पा—फिर शांत हो गया।

अयोध्या प्रसाद आस्तीन से अपने चेहरे को पौंछते हुए पीछे मुड़ा तो जोरावर को सामने खड़ा पाया।

“तूने देखा जोरावर”—अयोध्या प्रसाद की आवाज भर्रा गई—“इसने मेरे मुंह पर थूका—मुझे गाली निकाली।”

“आपने इसे मारकर ठीक किया बाऊजी।”

कहते हुए जोरावर ने गहरी सांस छोड़ी। भीमसेन की चाल वह समझ गया था। और वह अपनी चाल में सफल भी रहा था। बहुत ही आसान मौत मरा था वह।

मगर वह कुछ कर भी तो नहीं सकता था। अयोध्या प्रसाद के गुस्से पर काबू पाना उसके बस की बात नहीं थी। अगर वह पागल न होता तो बात और थी—एक पागल को समझाया नहीं जा सकता था—बस उसकी हां-में-हां ही मिलाई जा सकती थी।

भीमसेन को मारकर अयोध्या प्रसाद ठीक नहीं हुआ था—बल्कि उस पर पागलपन का भूत और भी गहरा हो गया था।

अब तो बस रीमा राठौर ही थी उसका इलाज।

“बिच्छू को बुला।” तभी गुर्राया अयोध्या प्रसाद—“उस हरामन को ले के आने का हुक्म मैं खुद दूंगा उसे।”

जोरावर कुछ नहीं बोला—बस सिर हिला दिया।

¶¶

“इसे उस लड़की का नाम बता जोरावर।”

“रीमा राठौर।”

“पता भी बता।”

जोरावर ने बिच्छू को रीमा राठौर का पता भी बताया।

अयोध्या प्रसाद भीमसेन की लाश की तरफ पीठ करके बैठा था। उसने अपनी बायीं बांह घुटने पर रखी हुई थी और दायीं हथेली फर्श पर टिकाई हुई थी।

उसके सामने बिच्छू सिर झुकाये खड़ा था। बिच्छू के बराबर में ही जोरावर खड़ा था।

बिच्छू करीब पैंतीस साल का गेंडे जैसी गर्दन वाला लम्बा ऊंचा व्यक्ति था।

बेशक उसका रंग गोरा था—मगर उसकी खूंखार आंखें—क्रूर चेहरा उसकी दरिंदगी को साफ जाहिर कर रहे थे।

अयोध्या प्रसाद के पेशे में बिच्छू की हैसियत जोरावर जैसी तो नहीं थी फिर भी वह उसका एक विश्वसनीय सिपहसालार था।

“नाम-पता सुन लिया?” जोरावर के चुप होते ही बोला अयोध्या प्रसाद।

“जी बाऊजी।” बिच्छू बड़े ही आदर भरे स्वर में बोला।

“तू जानता है रीमा राठौर को? पता है कौन है वो? वो....वो वही है जिसने मेरे यार बद्री को मार डाला।”

अयोध्या प्रसाद की आवाज भर्रा गई—आंखों में आंसू भर आये।

“त....तू उसे ले के आ। यहां पर ले के आ—मेरे सामने। ले के आयेगा ना?”

वह ऐसे बोला जैसे वह बिच्छू के सामने गिड़गिड़ा रहा हो।

बिच्छू ने गर्दन उठाई और अयोध्या प्रसाद की तरफ देखते हुए बोला—“आप निश्चिंत रहिये बाऊजी—कल शाम को वह औरत आपके सामने होगी—और आप उसे अपने हाथों से सजा दे रहे होंगे।”

“शाबाश!” अयोध्या प्रसाद ने खुश होते हुए ताली बजाई—“मैं उसे अपने हाथों से मारूंगा। एक मामूली औरत ने मेरे यार को मार डाला। जरा मैं भी तो देखूं—कौन है वो। अब जा—ले के आ उसे।”

बिच्छू ने सिर हिलाया और उसकी तरफ पीठ कर ली।

अयोध्या प्रसाद ने गर्दन पीछे मोड़ी और भीमसेन की लाश को देखते हुए हंसा—

“ही....ही....ही....अब आयेगा मजा—मैं उसे तेरे सामने खत्म करूंगा। ही....ही....ही....।”

¶¶

“लगता है आज मैडम कत्लेआम करने जा रहीं हैं।”

पार्वती शीशे में से रीमा राठौर को देखते हुए मुस्कुराई—जो कि अपनी टॉप का ऊपरी हुक बन्द कर रही थी।

“वो कैसे?” बड़ी ही शोख अदा से बोली रीमा राठौर।

“अरे मैडम....” पार्वती ने ठण्डी सांस छोड़ी—“ऐसे पहनावे में बाहर निकलेंगी तो फुटपाथों पर लाशें बिछ जायेंगी—जो भी आपको देखेगा अपना दिल थामकर वहीं गिर पड़ेगा।”

रीमा राठौर खिलखिलाई और शीशे की तरफ पीठ फेर पार्वती की तरफ मुड़ी।

“औरत अगर श्रृंगार न करे तो मर्द उसे पूछे ही न। मर्दों के बीच औरत की औकात तभी बनती है जब वह ऐसे ही कपड़े पहने—अपनी चाल में नजाकत लाये।”

कहते हुये उसने बड़ी ही अदा से अपने जिस्म को हिलाया और फिर बेड की तरफ ऐसे बढ़ी जैसे रैंप पर कोई मॉडल चल रही हो।

सचमुच उसके कपड़े ऐसे ही थे।

सफेद रंग की शार्ट टॉप। ऐसी कि बस मुश्किल से उसकी आधी छातियां ही ढक पा रही थीं। टॉप के गले के किनारे पर सफेद रंग की ही कढ़ाई की हुई थी—जिसमें उसकी शानदार गुलाबी छातियां और भी ज्यादा खूबसूरत लगने लगी थीं।

बस यूं समझ लो कि टॉप ऊपर से नीचे तक इतनी छोटी थी कि नीचे से अगर टॉप में उंगली डाली जाये तो उंगली टॉप के गले में से नजर आने लगे।

ऐसे ही स्कर्ट थी उसकी।

उसकी जांघों को नहीं बल्कि सिर्फ उसके नितम्बों को ही ढक पा रही थी—या यूं समझ लो कि अपनी पैंटी को छुपाने के लिये उसने वो स्कर्ट पहनी थी।

वह बेड पर बैठी तो स्कर्ट में से उसकी पैंटी नजर आने लगी।

मगर रीमा राठौर को भला इसकी परवाह कहां थी। वह झुकी और बेड के नीचे से सफेद रंग के ही ऊंची हील के सैंडिल निकाले और उन्हें पहनने लगी।

सैंडिल के पत्तीनुमा फीते उसके घुटनों तक जाली बनाते हुए पहुंच गये।

सैंडिल पहनकर वह खड़ी हुई—एक नजर अपने आपको शीशे में निहारा—फिर खुद के ही अक्स को आंख मारकर पलट गई।

उसकी इस हरकत पर पार्वती हौले से हंस पड़ी। बोली कुछ नहीं वह।

“मेरा पर्स ले आना।”

रीमा राठौर उसकी हंसी को नजरअंदाज करते हुए बोली और अपने कूल्हे मटकाते हुए कमरे से बाहर निकल गई।

कुछ ही देर में वह अपनी आलीशान कोठी के पोर्टिको में खड़ी थी—जिसमें कि आगे-पीछे छः अलग-अलग कम्पनियों की गाड़ियां खड़ी थीं।

उसने अपने लिये मारुति जेन का चुनाव किया और उसका ड्राइविंग डोर खोलकर स्टेयरिंग के पीछे बैठ गई।

उसने कार स्टार्ट की और उसे चलाते हुए ड्राईव-वे पर आ गई जहां कि पार्वती उसका सफेद रंग का पर्स लिये खड़ी थी।

खिड़की में से हाथ निकालकर उसने पर्स लिया और मेन गेट की तरफ बढ़ी जिसके पल्ले मुरारी खोल रहा था।

ऐसे अंग दिखाऊ कपड़े आज उसने शौक से नहीं पहने थे बल्कि उसके पीछे एक वजह थी।

परसों उसने एक खूंखार आतंकवादी को पकड़ा था और इस नेक काम में सिकंदर ठाकरे उसके साथ था। उस आतंकवादी ने यह तो कबूल कर लिया था कि वह आतंकवादी है लेकिन अभी यह नहीं बताया था कि उसके साथी कौन-कौन हैं—और कहां-कहां हैं।

सिकंदर ठाकरे का अभी आधा घण्टा पहले ही उसे फोन आया था—जिसमें उसने अपने हाथ खड़े कर दिये थे कि वह उससे कुछ भी नहीं उगलवा पायेगा। सो रीमा राठौर ने उसकी जुबान खोलने का बीड़ा स्वयं उठाया—अपने उसी काम को अंजाम देने के लिये उसने ऐसे कपड़े पहने थे।

सिकंदर ठाकरे के बारे में वह जानती थी कि वह पत्थर को भी मोम बनाने की कुव्वत रखता है—जब ऐसे इंस्पेक्टर ने ही हाथ खड़े कर दिये हों तो जाहिर था कि

आतंकवादी काफी सख्तजान है। और ऐसे सख्तजान व्यक्ति को मोम बनाने के लिये उसे शारीरिक नहीं मानसिक रूप से टॉर्चर किया जाता है—और ऐसे कामों का उसे अच्छा-खासा तजुर्बा था। तभी तो वह ऐसे कपड़े पहनकर निकल रही थी।

कार ड्राईव करते हुए वह अभी गेट से निकली भी नहीं थी कि तभी—

'चीं....ऽ....ऽ....ऽ....!'

ब्रेकों की तीव्र चरमराहट के साथ एक मैटाडोर वैन ऐन उसकी जेन के आगे आ खड़ी हुई।

अगर रीमा राठौर फौरन ब्रेक न मार लेती तो अवश्य ही उसकी जेन मैटाडोर से भिड़ जाती।

बस—दो-तीन इंच का फासला ही रह गया था टक्कर होने में।

जिस अंदाज में मैटाडोर उसकी कार के सामने आकर रुकी थी—उसी से रीमा राठौर समझ गई थी कि गड़बड़ है। ऐसे में वह सतर्क न हो—ऐसा कैसे हो सकता था।

गेट के करीब खड़ा मुरारी भी सतर्क हो उठा था। साथ ही उसका हाथ उसकी जेब में रखी रिवॉल्वर के दस्ते पर जा टिका था।

तुरंत मैटाडोर के दरवाजे खुले और देखते-ही-देखते उसमें से दस मुस्टंडे बाहर आ गये। उन सबके बाहर आने के पश्चात् ही बिच्छू बाहर निकला।

सभी गुंडे चाकुओं—हथियारों वगैरा से लैस थे।

रीमा राठौर भी कार से बाहर आ गई और कार के बोनट से टेक लगाकर खड़ी हो गई।

"ऐ छोकरी....!" तभी बिच्छू उसके करीब आते हुए गुर्राया—"रीमा राठौर यहीं रहती हैं?"

कहते हुए उसकी निगाहें रीमा राठौर की शानदार छातियों पर जा टिकीं।

"हां....!" मन-ही-मन मुस्कराई रीमा राठौर—"क्यों?"

“कहां है वो?”

“तेरे सामने ही तो खड़ी है।”

बुरी तरह से चौंका बिच्छू—फिर उसके होंठों पर व्यंग भरी मुस्कान फैल गई।

“तू....तू रीमा राठौर है?” वह हंसा।

“क्यों?” रीमा राठौर की मुस्कान तेज हो गई—“क्या मैं रीमा राठौर नहीं हो सकती?”

“तू....!” बिच्छू ने उसके आगे बांह लम्बी कर ऊपर से नीचे की—“तू तो मक्खन मलाई है—बिस्तर पर लड़ने की चीज है तू तो....तेरा हुस्न ही बता रहा है कि तू सिर्फ भोगने की चीज है—तोड़ने की नहीं।”

जबकि रीमा राठौर के होंठों पर जहर उभर आया।

“मगर तू कौन है?” वह बोली—“और रीमा राठौर से क्यों मिलना चाहता है?”

“यह छोकरी तो रास्ता ही नहीं दे रही उस्ताद।” तभी एक गुण्डा बिच्छू से बोला।

“मुझे तो लगता है वो इसकी मां है।” दूसरा बोला।

“क्यों न इसी को काबू में कर लें।” तीसरे ने सलाह दी—“इसकी मां अपने आप ही खुद को हमारे हवाले कर देगी।”

बिच्छू के होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई। अपने साथी का विचार उसे बढ़िया लगा था।

“तू ठीक कह रहा है धनिया!” वह बोला—“बाऊजी के लिये यह छोकरी बहुत बड़ी औषधि का काम करेगी। काबू कर लो इसे और बांधकर गाड़ी में डाल दो।”

कहते हुए उसने रीमा राठौर की तरफ उंगली सीधी की।

“पकड़ इसे!” एक गुण्डे ने हाथ में पकड़ी हॉकी अपने साथी की तरफ बढ़ाई—“यह तो ऐसी कोमल है कि पकड़ना भी आहिस्ता से पड़ेगा कि कहीं हड्डी न टूट जाये।”

अपने साथी को हॉकी पकड़ाकर गुण्डा रीमा राठौर की तरफ बढ़ा जो कि पूरी तरह से लापरवाह नजर आ रही बोनट के साथ लगकर खड़ी थी। बांहों को अपने सीने पर बांधे हुए—जैसे कुछ हो ही न रहा हो।

मुरारी को उसने पहले ही इशारा कर दिया था कि वह तब तक कुछ न कहे जब तक कि वह इशारा न करे....सो मुरारी ने हाथ जेब से निकाल लिया था।

इधर गुण्डा रीमा राठौर की तरफ बढ़ रहा था—उधर बिच्छू ने मुरारी की तरफ गर्दन घुमाई।

“अपनी मालकिन से बोल कि वह चुपचाप बाहर निकल आये—वर्ना उसकी छोकरी को यहीं गाड़ी में ही सभी रगड़ डालेंगे।”

मुरारी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया—बस चुपचाप खड़ा रहा।

हालांकि उसके शब्दों से उसे गुस्सा तो जरूर आया था—मगर रीमा राठौर ने उसे कुछ भी न करने को कह रखा था—सो भीतर-ही-भीतर वह खून का घूंट पीकर रह गया।

“तू पहले मैडम को तो काबू में कर हरामखोर।” वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

“लगता है अपनी छोटी मालकिन की इज्जत लुटते तू अपनी आंखों से देखना चाहता है।” उसे हिलता न देख बोला बिच्छू—“कोई बात नहीं....देख....फिर बाद में चले जाना। और फिर....।”

आगे के शब्द मुंह से नहीं निकल पाये उसके। क्योंकि तब तक गुण्डा रीमा राठौर के करीब पहुंच चुका था।

ठीक तभी—

जैसे कोई बिजली चमकी।

रीमा राठौर की लम्बी टांग पूरी शक्ति से उसके पेट में पड़ी।

गुण्डा अपने स्थान से उछला और पांच फीट पीछे खड़े अपने साथी से जा टकराया और उसे साथ लिये जमीन पर ढेर हो गया।

ऐसे में बिच्छू के मुंह से शब्द क्या निकलने थे। वह अवाक्-सा रीमा राठौर को देखने लगा जो कि उसी तरह से सीने पर हाथ बांधे बोनट के साथ लगकर खड़ी थी।

होंठों पर एक मधुर मुस्कान लिये हुए।

बिच्छू के साथ आये गुण्डे भी स्तब्ध रह गये।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि जिस्म से नाजुक नजर आने वाली वह रूप की रानी इतनी फुर्तीली और शक्तिशाली हो सकती है।

“क्यों मियां?” रीमा राठौर बिच्छू को देखते हुए हंसी—“मेरा ख्याल है अब तुझे विश्वास हो गया होगा कि तू रीमा राठौर के सामने खड़ा है।”

कहते हुए उसने तीन-चार दफा चुटकी बजाई।

बिच्छू पहले तो हड़बड़ाया, फिर उसका चेहरा भभक उठा।

“तू सचमुच रीमा राठौर है।” वह गुर्राया—“अच्छा हुआ जो तूने साबित कर दिया कि तू ही वो है जिसके लिये मैं रामपुर से यहां आया हूं—वर्ना मैं तो तुझे चखकर छोड़ देने वाला था। मगर अब, अब तू चखी नहीं जायेगी—बल्कि मेरे साथ रामपुर जायेगी तू।”

“वो तो मेरी मर्जी पर है कि मैं जाऊंगी कि नहीं। तू यह बता कि तू मुझे वहां ले जाना क्यों चाहता है?”

“चिंता मत कर—वहां पहुंचेगी तो सब पता चल जायेगा। काबू करो इसे।” बिच्छू अपने साथियों से बोला—“बेशक इसकी टांगें ही क्यों न तोड़नी पड़ें—इस पर काबू करो। मगर ध्यान रहे—मरनी नहीं चाहिये यह।”

आदेश सुन गुण्डे हाकियां, छुरे सम्भाले रीमा राठौर की तरफ बड़े ही खतरनाक भावों से बढ़े।

रीमा राठौर भी अब गम्भीर हो गई—और उसने अपने हाथों को खोल दिया—तथा बोनट से हट गई।

मुरारी भी सतर्क हो उठा—साथ ही उसका हाथ पुनः उसकी जेब में रेंग गया।

दस और एक का मुकाबला था—और एक भी वो जो समाज में कमजोर जाना जाता है।

मगर वह कमजोर नहीं थी।

तभी तो वह उनको धूल चटाने के लिये तैयार खड़ी थी।

गुण्डे उससे कुछ फीट दूर आकर ठिठक गये।

आंखों-ही-आंखों में उनमें इशारे हुए और फिर सभी एक साथ रीमा राठौर पर झपटे।

मगर....

कोई छू भी नहीं पाया उसे।

रीमा राठौर का बदन रबड़ के गुड्डे की मानिंद उछला और उनके सिरों के ऊपर से होते हुए पीछे सड़क पर लैंड कर गया। गुण्डे आपस में उलझ गये—और इसी उलझन में दो गुण्डे नीचे गिर पड़े।

बाकी तेजी से पीछे पलटे।

ठीक तभी रीमा राठौर का जिस्म पुनः उछला और—

‘ठाक्....ठाक्....!’

उसकी दोनों टांगें एक साथ चलीं। और दो गुण्डे सीधा जेन के बोनट पर पीठ के बल गिरे और कलाबाजी खाकर जेन की पिछली साईड में सड़क पर जा गिरे।

इधर रीमा राठौर पुनः सड़क पर आ खड़ी हुई थी। और बिच्छू—वह आंखें फाड़े उस अबला को देख रहा था जो इस वक्त उसे किसी बला से कम नजर नहीं आ रही थी।

बाकी के गुण्डे पलभर के लिये हड़बड़ाये, फिर हुंकारें भरते हुए रीमा राठौर की तरफ झपटे।

मगर....वह रीमा राठौर ही क्या जो उन गुण्डों के काबू में आ जाती।

फिरकनी की तरह घूमी वह और जब वह रुकी तो गुण्डे सड़क पर पड़े नजर आ रहे थे।

“साली....!” चीखा बिच्छू—“हराम की खा-खाकर बस चर्बी ही बढ़ाते जा रहे हो। एक लौंडिया नहीं सम्भाली जा सकती क्या तुमसे—उठो....।”

गुण्डे हड़बड़ाते हुए उठे और पुनः रीमा राठौर पर टूट पड़े।

कार के पीछे गिरे गुण्डे भी अपने साथियों में शामिल हो गये।

मगर कोई रीमा राठौर को छू भी नहीं पाया। यहां तक कि उनके हथियार भी कुछ नहीं कर पाये—जबकि रीमा राठौर की लातें घूंसे उन पर कहर बरपा रहे थे।

गुण्डों की चीखें उबल रही थीं और वे एक-एक करके ढेर होते जा रहे थे।

और बिच्छू—वह रीमा राठौर को ऐसे देख रहा था जैसे वह दुनिया का आठवां अजूबा देख रहा हो।

हड्डी तो उसे जैसे नजर ही नहीं आ रही थी रीमा राठौर के जिस्म में। ऐसे उसका जिस्म मुड़-तुड़ रहा था। और फुर्ती—जैसे बिजली प्रवेश कर गई हो उसमें।

पांच मिनट भी नहीं बीते कि सारे गुण्डे इधर-उधर बिखरे पड़े हांफ रहे थे।

किसी का माथा फट गया था तो किसी की नाक से खून बह रहा था, कोई अपनी टांग की टूटी हड्डी को सहला रहा था तो कोई अपनी टूटी बांह पकड़े हुए था।

उनके हाथों में पकड़े हथियार इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

रीमा राठौर ने गर्दन बिच्छू की तरफ मोड़ी और कुटिलता से हंसी।

“तेरी यह फौज तो फुस्स निकली रे—अब तू दिखा अपना दम-खम।”

पलक झपकते ही बिच्छू के हाथ में रिवॉल्वर चमकने लगी।

“मानता हूं तू बड़ी पहुंची हुई चीज है।” वह गुर्राया—“मेरे दस मुस्टंडों को तूने धराशायी कर दिया। मगर अभी मैं बचा हूं। और देख ले—मेरे हाथ में क्या है।” उसने रिवॉल्वर उंगलियों में नचाई—“बस दो गोलियां खर्च होंगी और तेरे घुटने टूट जायेंगे। और....!”

‘धांय....!”

तभी धमाका हुआ और बिच्छू का हाथ फनफना उठा।

रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर एक तरफ जा गिरी।

हड़बड़ाते हुए उसने अपना हाथ पकड़ लिया और गर्दन दाईं तरफ मोड़ी—जहां मुरारी हाथ में रिवॉल्वर लिये खड़ा था।

“फाऊल-पर-फाऊल किये जा रहा है तू।” वह हंसा—“पहले दस कुत्ते मैडम से भिड़ने के लिये भेज दिये और अब रिवॉल्वर निकाल रहा है।”

ठीक तभी रीमा राठौर की टांग चली और बिच्छू चीखता हुआ उछलकर पीछे जा गिरा।

बड़े इत्मिनान से रीमा राठौर ने उसका रिवॉल्वर उठाया और उसे अपने चेहरे के पास ले जाते हुए बोली—

“यह बच्चों के खेलने की चीज नहीं है! घोड़ा दब जाये तो जान निकल जाती है।”

कहने के साथ ही उसने रिवॉल्वर का रुख उसकी तरफ किया और—

‘धांय....धांय....धांय....!'

रिवॉल्वर से पटाखे छूटने लगे।

गोलियां बिच्छू के सिर से बस एक आधा इंच दूर ही सड़क को उखाड़ने लगीं—और बजरी उड़कर उसके सिर से टकराने लगी।

बिच्छू को काटो तो खून नहीं।

अपनी मौत उसे सामने नजर आ रही थी।

राहत की सांस उसने तब छोड़ी जब रिवॉल्वर खाली हो गई।

उसने थोड़ा उठकर पीछे सड़क पर देखा।

जहां उसका सिर था—वहां उसके चारों तरफ छह गड्ढे बने हुए थे।

उसने रीमा राठौर की तरफ देखा—जिसके होंठों पर विषैली मुस्कान थी।

“चाहती तो बड़े आराम से यही छह गोलियां तेरे भेजे में उतार सकती थी।” वह बोली—“मगर अभी तुझे मेरे सवालों के जवाब देने हैं—इसी वजह से तू अभी तक जिन्दा है। और फिलहाल मेरे पास अभी इतना वक्त नहीं—सो आकर तेरे से बात करूंगी।”

कहने के साथ ही उसने अपनी टांग चला दी।

ठोकर सीधी उसकी कनपटी पर पड़ी और वह वहीं लम्बा हो गया।

“इसे उठाकर अन्दर ले जाओ मुरारी।” वह बोली।

मुरारी तुरंत बेहोश पड़े बिच्छू की तरफ लपका।

रीमा राठौर घायल पड़े गुण्डों से मुखातिब हुई—

“फौरन दफा हो जाओ यहां से—अगर मेरे तीन गिनने तक मुझे यहां कोई भी नजर आया तो अपनी मौत का वह खुद जिम्मेदार होगा।”

रीमा राठौर की इस गर्जना ने सभी के कलेजे दहला दिये। जिनकी हड्डियां टूटी हुई थीं, वे पीड़ा की परवाह न करते हुए घिसटते हुए गिरते-पड़ते मैटाडोर की तरफ लपके।

“एक....!” रीमा राठौर दहाड़ी।

गुण्डे बुरी तरह से हड़बड़ाये और मैटाडोर में घुसने लगे।

“दो....!”

तीन कहने की नौबत नहीं आई।

गुण्डे वहां से ऐसे भागे जैसे गधे के सिर से सींग।

रीमा राठौर हौले से हंसी और जेन की तरफ बढ़ गई।

¶¶

मारुति जेन थाने के गेट में प्रविष्ट हुई और प्रांगण में दायीं तरफ जाकर खड़ी हो गई।

रीमा राठौर ने दरवाजा खोला और अपना पर्स सम्भाले बाहर आ गई।

ठीक तभी हवलदार खुशीराम लगभग भागते हुए उसके करीब आया और माथे पर उल्टा हाथ रखते हुए बोला—“जय हिन्द रीमा राठौर जी।”

दरवाजा बन्द कर रीमा राठौर उसकी तरफ मुड़ी और मुस्कुराई—

“कैसे हो खुशीराम?”

“आपकी मेहरबानी से ठीक हूं।”

“तुम्हारी बीवी कैसी है?”

“आपको बहुत याद कर रही है। जब से उसे पता चला है कि आप ही की मदद से वह बची है—तभी से वह बस आप ही को याद कर रही है। अगर आप वक्त पर मुझे पचास हजार नहीं देतीं तो....।” आवाज भर्रा गई उसकी।

“रिलेक्स खुशीराम....!” रीमा राठौर ने उसके कंधे पर थपकी दी—“अगर वो तुम्हारी पत्नी है तो मेरी भी तो भाभी हुई—हुई न?”

भावुक होते हुए खुशीराम ने अपना सिर हिला दिया।

“ठाकरे....!”

“साहब अपने आफिस में बैठे हैं।”

रीमा राठौर मुस्कुराई और सिकंदर ठाकरे के ऑफिस की तरफ बढ़ गई।

जैसे ही वह अपने ऑफिस में प्रविष्ट हुई—

“वल्लाह....लगता है आज मैडम कत्ल करने के इरादे से आई हैं।”

अपनी कुर्सी पर बैठा सिकंदर ठाकरे चहका।

रीमा राठौर एक कातिल हंसी हंसी—और आगे बढ़कर विजिटर चेयर पर बैठ गई।

“अजी जनाब—हम तो कब से पिघलने को तैयार हैं।” बड़े ही आशिकाना अंदाज में उसने सीने पर हाथ मारा—“बस तुम इशारा कर दो।”

रीमा राठौर ने मुस्कुराते हुए एक ठण्डी आह भरी। और अपनी बायीं छाती पर हाथ रखते हुए बोली—

“यह तन तो न जाने कब से तुम्हारे साथ बिछने को तड़प रहा है। मगर तुम ऐसे निर्दयी हो कि एक अबला की आरजू भी पूरी नहीं कर सकते।”

“यह कैसी बात कर रही हो तुम....तुम हां तो करो—फिर देखो—कैसे अपने जलवे दिखाता हूं।”

सिकंदर ठाकरे ने अपना सीना चौड़ा करते हुए बायीं आंख दबाई।

“हाSSS....!” रीमा राठौर ने सीने पर हाथ रखते हुए ठण्डी आह भरी—“मैं तो कब से तुम्हारे जलवे देखने को तरस रही हूं....मगर....!”

“मगर क्या?”

“तुम हो कि मेरी एक छोटी-सी आरजू भी पूरी नहीं कर सकते।”

“अरे मेरी जान—तुम मांगो तो सही—जान भी हाजिर है।”

“तुम्हारी जान नहीं चाहिये मुझे।”

“तो?”

“बस....नाक के नीचे जो झाड़ियां तुमने उगा रखी हैं वो....।”

“मूंछ नहीं मुंडाऊंगा।” दहाड़ उठा सिकंदर ठाकरे—साथ ही उसका हाथ अपने मुंह पर जा चिपका।

ठीक तभी एक सिपाही चाय की ट्रे लेकर भीतर दाखिल हुआ।

सिकंदर ठाकरे की दहाड़ उसने भी सुन ली थी—तभी तो वह हड़बड़ा उठा था—फिर हैरानी से ठाकरे को देखने लगा था।

हड़बड़ाया सिकंदर ठाकरे भी था—मगर उसने अपनी हड़बड़ाहट जाहिर नहीं होने दी—बस मुंह से हाथ हटाया और चेहरे को गम्भीर बनाते हुए बोला—

“रख दो।”

सिपाही ने आगे बढ़कर टेबल पर चाय रखी और खाली ट्रे उठाके बाहर आकर उसने अनभिज्ञता से कंधे उचकाये और एक तरफ बढ़ गया।

सिकंदर ठाकरे की मूंछें न मुंडाने की दहाड़ का मतलब वह बिल्कुल भी नहीं समझ सका था।

अब उसे क्या पता कि उन दोनों के बीच कैसा रिश्ता है।

इधर ऑफिस में रीमा राठौर उसके जाते ही हौले से हंसी और चाय का कप उठा लिया।

सिकंदर ठाकरे भी मुस्कुराया और सिर पर हाथ फेरकर कप उठा लिया।

बस यही नोंक-झोंक होनी थी उनमें। मजाक जरूर भौंडा था उनका। मगर दोनों के दिलों में किसी भी तरह का कोई मैल नहीं था।

“कुछ बताया उस आतंकवादी ने?” रीमा राठौर चाय का घूंट भरते हुए बोली।

“अरे वो तो सिरे से ही मुकर गया कि वह आतंकवादी है।” सिकंदर ठाकरे बोला—“जबकि उसके पास से एक ऐ.के. सैंतालीस के अलावा तीन किलो आर.डी.एक्स. मिला है। और वो पट्ठा है कि उस सामान का अपना होने से भी इन्कार कर रहा है।”

“चाय पी लो—फिर देखते हैं उसे।” रीमा राठौर गम्भीरता से बोली।

दोनों चाय पीने लगे।

चाय पीकर रीमा राठौर खड़ी हुई।

“कहां है वो?”

“टॉर्चर सैल में....!” कहते हुए सिकंदर ठाकरे भी खड़ा हो गया।

“आओ....!” रीमा राठौर दरवाजे की तरफ मुड़ते हुए बोली।

दोनों टार्चर सेल में पहुंचे—जहां पर कि वह आतंकवादी दीवार से टेक लगाकर बैठा हुआ था—उसके दोनों पैर लकड़ी के स्लीपर में बने छेदों में फंसे हुए थे और हाथ पीछे पीठ पर बंधे थे।

रीमा राठौर को देखकर पहले तो वह चौंका—फिर गम्भीर हो गया।

बोला कुछ नहीं वह।

रीमा राठौर एक कुर्सी खिसकाकर उसके सामने बैठ गई।

उसके बैठते हुए आतंकवादी की निगाहें सीधा उसकी स्कर्ट के भीतर जा पहुंचीं।

हौले से मुस्कुराई रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे की तरफ देखे बिना बोली—

“तुम अभी जाओ ठाकरे।”

सिकंदर ठाकरे ने गहरी सांस छोड़ी और टॉर्चर सैल से बाहर निकल गया।

रीमा राठौर अपने हुस्न के जलवे दिखाती हुई आतंकवादी से बोली—“यह सब तुम्हारा है—बस जो मैं पूछूं सच-सच बता दो।”

“द....देखो....तुम लोग लाख बार मुझसे पूछ चुके हो। अरे जब मैं जानता ही कुछ नहीं तो बताऊंगा कहां से?”

“तो तुम आतंकवादी नहीं हो।”

“नहीं।”

“और वो आर.डी.एक्स., ऐ.के. सैंतालीस?”

“मैंने तो कभी आर.डी.एक्स. देखा तक नहीं—और न ही कभी गन पकड़ी है। तुम लोग खामखां एक नेक शहरी को तंग कर रहे हो।”

“कहां के रहने वाले हो?”

“क्या मतलब?” हड़बड़ाया वह।

“मैंने तुम्हारा पता पूछा है और एक नेक शहरी होने के नाते तुम्हें अपना नाम-पता बताने में कोई एतराज नहीं होना चाहिये।”

“मगर....!”

“चिंता मत करो....अपनी तसल्ली कर लेने के बाद तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।”

अब उस आतंकी के चेहरे पर हल्की-सी घबराहट उभरी।

“क्या हुआ? पता क्यों नहीं बता रहे?”

“नहीं बताऊंगा।” दृढ़ता से बोला वह आतंकी।

“क्यों?”

“जब तुम मुझे ही इतना सता रहे हो तो मेरे घरवालों की तो मिट्टी हराम कर दोगे। तुम कुछ भी कर लो....मैं कुछ नहीं बताने वाला।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

“सोचा था कि अगर तुम मुझे सब कुछ बता दोगे तो मैं तुम पर अपनी जवानी लुटाकर तुम्हें खुश कर दूंगी। लेकिन लगता है तुम प्यार के नहीं मार के भूखे हो। कोई बात नहीं—जब तुम्हारी तमन्ना यही है तो फिर मैं क्या कर सकती हूं।”

“तुम कुछ भी कर लो—मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बताने वाला।”

“अपने साथियों के नाम भी नहीं बताओगे?”

“नहीं....!”

“वे कहां छुपे हैं—यह भी नहीं बताओगे?”

“नहीं बताऊंगा।” दृढ़ता से बोला वह।

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“चलो....तुमने यह तो माना कि तुम्हारे साथी हैं, और यह भी माना कि वे कहीं छुपे हुए हैं।”

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा वह आतंकी—और फिर दृढ़ता से होंठ भींच लिये।

सचमुच उसने काफी बड़ी गलती कर दी थी।

रीमा राठौर हंसी और कोहनियां अपने घुटनों पर टिकाते हुए आगे को झुक गई।

आतंकी की निगाहें उसकी छातियों पर जा अटकीं जो कि उसके झुकने से बाहर उलटने को बेकरार हो रही थीं।

“इन्हें भूल जाओ अब।” रीमा राठौर बोली—“अब नहीं मिल सकतीं तुम्हें यह।”

आतंकी कुछ नहीं बोला—बस उसकी छातियों से निगाहें हटा लीं—और परे देखने लगा।

रीमा राठौर ने अपने पर्स में से रिवॉल्वर निकाली और उसका मुंह छत की तरफ करके ट्रिगर दबा दिया।

‘धांय....!’

गोली छत में जा धंसी और थोड़ा-सा प्लास्टर उखड़कर सीधा आतंकी के सिर पर आ गिरा।

हड़बड़ाकर आतंकी ने पहले ऊपर देखा, फिर रीमा राठौर के हाथ में थमी रिवॉल्वर को देखकर मुस्कुरा पड़ा।

बोला कुछ नहीं वह—बस मुस्कुराता रहा।

रीमा राठौर के होंठों पर भी मुस्कान रेंग गई।

"मैं जानती हूं कि तुम्हें मौत का जरा भी खौफ नहीं। आई.एस.आई. ने तुम्हारे दिमागों को साफ करके उनमें यह भर दिया है कि अगर तुम मर गये तो सीधे जन्नत में जाओगे। दुश्मन के हाथों तुम्हारी मौत तुम्हें खुदा के करीब ले जायेगी। और तुम्हारे जेहन में यह भरा गया है कि हिन्दुस्तानी हुकूमत मुसलमानों पर कहर ढा रही है—उनकी बेटियों की अस्मत लूटी जा रही है और तुम्हें इन सबका बदला लेने को उकसाया जाता है। इसीलिये तुम मौत से बेखौफ हो।" उसने एक गहरी सांस छोड़ी और आगे बोली—"मैं पाकिस्तान की तमाम करतूतों को बताकर अपना वक्त खराब नहीं करना चाहती। उन करतूतों को सारे हिन्दुस्तान के मुसलमान जानते हैं—तभी तो उनके दिलों में पाकिस्तान के प्रति नफरत है। खैर....अपना मुंह बन्द ही रखना—खोलना नहीं—और अपने कलेजे को भी मजबूत कर लेना।" कहने के साथ ही वह सीधी हुई और कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गई।

"ठाकरे....!" उसने दरवाजे की तरफ मुंह करके आवाज लगाई।

सिकंदर ठाकरे बाहर ही खड़ा था—तभी तो वह फौरन भीतर आ गया था।

"इन साहब को कुर्सी पर बिठाओ और हाथ-पैर बांध देना।" वह बोली—"मैं अभी आई।"

कहकर वह बाहर निकल गई।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे भी बाहर आया और आवाज आई—

"खुशीराम....!"

तुरंत खुशीराम दौड़ता हुआ उसकी तरफ बढ़ा।

¶¶

करीब पन्द्रह मिनट बाद जब रीमा राठौर टॉर्चर सैल में प्रविष्ट हुई तो उसने दोनों हाथों में एक मटका उठा रखा था।

कांस्य का मटका था वह।

खूब बड़ा सारा।

मटका देखकर आतंकी के चेहरे पर हैरानी उभरी—लेकिन वह बोला कुछ नहीं।

“यह मटका....!” तभी ठाकरे हैरानी से बोला।

“जादू का मटका है यह।” रीमा राठौर उसे अपनी कमर के साथ लगाकर मटके के गले में बांह पिरोती हुई हंसी—“जंच रहा है न मुझ पर?”

“अगर घाघरा-चोली पहनी होती तो जरूर जंचता। इन कपड़ों में नहीं—मगर यह जादू का मटका कैसे हो गया?”

रीमा राठौर ने करीब ही पड़ा एक डण्डा उठाकर मटके को अपनी हथेली पर खड़ा किया और उस पर डण्डा मारा।

“टन्न....!” एक तेज आवाज पैदा हुई।

“देखा जादू?” हंसी रीमा राठौर।

“जादू?” हैरानी जताई सिकंदर ठाकरे ने—“मुझे तो सिर्फ टन्न की आवाज ही सुनाई दी—“कोई जादू तो नजर आया नहीं।”

“यह जुबान खुलवाने वाला जादू है। जो टन्न की आवाज से पैदा होता है।”

“मैं अभी भी कुछ नहीं समझा। भला इस मामूली मटके से तुम इसका मुंह कैसे खुलवा सकती हो?”

“अभी तुम्हारे सामने ही होगा जादू।”

कहकर रीमा राठौर मटके को उठाके आतंकी के सामने आ खड़ी हुई।

“कलेजा मजबूत कर लिया न?” वह मुस्कुराई।

आतंकी कुछ नहीं बोला—बस होंठों को और भी सख्ती से भींच लिया।

“शाबाश—होंठों को ऐसे ही बन्द रखना—खोलना नहीं।”

आतंकी ने और भी जोरों से होंठ भींच लिये।

“अब मैं तेरे सिर पर यह मुकुट पहनाऊंगी।”

कहते हुए रीमा राठौर ने मटके को उल्टा कर उसे दोनों हाथों से पकड़ा और उसके सिर के ऊपर करते हुए बोली—

“घबराओ नहीं—मरोगे नहीं तुम—बस थोड़े से पटाखे तुम्हारे कानों में फटेंगे—फिर या तो तुम बहरे हो जाओगे या पागल—मगर मरोगे तुम हरगिज नहीं।”

कहकर उसने वह मटका आतंकी के सिर पर डाला और छोड़ दिया।

मटका उसके कंधों पर आकर ठहर गया।

अब आतंकी के धड़ पर सिर नहीं बल्कि वह घड़ा नजर आ रहा था।

मटके के भीतर चेहरा आते ही आतंकी के कानों में सांय-सांय होने लगी।

हवा उसके कंधों के पास से भीतर प्रवेश कर रही थी।

“एक छोटा-सा पटाखा फोड़ने जा रही हूं।”

तभी रीमा राठौर की गूंजती आवाज उसके कानों में पड़ी—साथ उसे रीमा राठौर के मुंह का स्पर्श अपने सीने के पास महसूस हुआ।

वह अपनी आवाज उसके कानों तक पहुंचाने के लिये ही मुंह को घड़े के मुंह के करीब लाई थी।

हालांकि वह साधारण आवाज में बोली थी—मगर आतंकी को ऐसा लगा जैसे लाऊडस्पीकर उसके कानों के पास बजा हो।

रीमा राठौर सीधी हुई और उंगली की बटें बनाकर मटके पर दस्तक दी।

बाहर खड़े सिकंदर ठाकरे को वह आवाज साधारण लगी थी—मगर आतंकी को ऐसा लगा जैसे उसके कानों के पास विस्फोट हुआ हो।

न चाहते हुए भी उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा। साथ ही वह अपने कलेजे को मजबूत करने की कोशिश करने लगा। वह समझ गया था कि आगे क्या होगा।

रीमा राठौर ने मुस्कुराते हुए एक बार सिकंदर ठाकरे को देखा—फिर वही डण्डा उठाकर बोली—

“अब देखो इस जादुई मटके का कमाल।”

कहने के साथ ही उसने मटके पर डण्डे का प्रहार किया।

‘टनाक्....!’

सिकंदर ठाकरे के कानों में तेज आवाज पड़ी और वह अपने दायें कान में उंगली दे खुजाने लगा।

जब बाहर खड़े सिकंदर ठाकरे के कानों में सांय-सांय होने लगी थी तो आतंकी की हालत का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था।

उसका तो सिर मटके के भीतर था।

उसे ऐसा लगा जैसे उसके कानों के साथ लगाकर परमाणु बम फोड़ा गया हो।

एक ही धमाके ने उसके दिल को दहलाकर रख दिया था।

अभी पहले धमाके की गूंज उसके कानों में ही गूंज रही थी कि तभी दूसरा धमाका गूंजा।

और फिर उसके कानों में लगातार विस्फोट होने लगे।

आठ-दस धमाकों में ही उसे अपना दिमाग फटता महसूस होने लगा।

सिर भारी हो गया।

उसे ऐसा लगा जैसे वह ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर पायेगा। फिर भी वह होंठों को भींचे बर्दाश्त करता रहा।

परमाणु बम बार-बार उसके कानों के पास फटकर उसके कलेजे को दहला रहे थे।

आखिर उसका जी मिचलाने लगा।

उसने खुद को रोकने की बहुत कोशिश की मगर रोक नहीं सका।

उसका मुंह पूरा-का-पूरा खुल गया और पिछला सारा खाया-पीया बाहर आ गया।

कै से उसका मुंह, गर्दन तथा गर्दन से नीचे के कपड़े सराबोर हो गये।

अब एक नहीं—दो-दो यातनायें पड़ रही थीं उस पर।

एक तो बम फट रहे थे—दूसरे बदबू से उसका हाल बुरा हो रहा था।

नतीजा—

वह टूट गया।

उसे टूटना पड़ा।

“रोको....!” वह चीखा—“मैं बताता हूं।”

चीखने के साथ-साथ उसने सिर को भी जोर-जोर से हिलाया।

बाहर मटके पर डण्डे बरसा रही रीमा राठौर को उसकी आवाज सुनाई तो नहीं पड़ी—मगर मटके के आगे-पीछे हिलने से वह रुक गई कि वह कुछ कहना चाहता है। सो उसका डण्डा वहीं रुक गया।

उसने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखते हुए मटके को निकालने का इशारा किया।

सिकंदर ठाकरे आगे बढ़ा और आतंकी के सामने आकर मटके को पकड़ा जो कि डण्डे की चोटों के कारण कई जगहों पर से पिचक गया था।

उसने मटके को ऊपर उठाया तो उसका जी मिचला उठा।

आतंकी का चेहरा कै से भरा हुआ था और वहां से बदबू उठ रही थी।

“म....मैं बताता हूं....।” आतंकी रीमा राठौर के बोलने से पहले ही बोल उठा—“मेरा बाप निसार अहमद है और मैं पाकिस्तान में कराची में रहता हूं। म....मैं सब कुछ बता दूंगा—मगर खुदा के लिये पहले मेरे मुंह से गंदगी साफ कर दो।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—“इसका मुंह साफ करवाओ ठाकरे।”

सिकंदर ठाकरे ने मटका नीचे रखा और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

पीछे-पीछे रीमा राठौर भी बाहर निकल आई।

“अब वो टूट चुका है।” वह ठाकरे से बोली—“तुम उससे हर जानकारी ले सकते हो।”

सिकंदर ठाकरे जो एक सिपाही को आवाज देने जा रहा था—चौंककर रीमा राठौर को देखने लगा।

“अरे जब मुंह तुमने खुलवाया है तो पूछताछ भी तुम ही करो न।”

“वो तुम कर लो।”

“मगर तुम....?”

“मुझे फौरन जाना है! कोई मेरा बेसब्री से इंतजार कर रहा है।” कहते हुए रीमा राठौर की आंखों के आगे बिच्छू का चेहरा नाच उठा।

उसकी बात सुन सिकंदर ठाकरे चौंक पड़ा—साथ ही हल्की-सी ईर्ष्या भी उसके चेहरे पर उभरी।

“अभी तो दिन चढ़ा है!” वह चिढ़े स्वर में बोला—“और तुम....!”

“रीमा के लिये दिन क्या रात क्या। बस जब दिल किया दिल भर लिया।”

“तो मुझसे भी दिल भर लो न—मैं क्या मर गया हूं।”

“मूंछें....!” रीमा राठौर उसकी मूंछों की तरफ इशारा करते हुए हंसी—“तुम मूंछें कटवाओ मैं....।”

“जाओ....!” सिकंदर ठाकरे उसकी बात काटते हुए हौले से चीखा।

रीमा राठौर पुनः हंसी और परिसर की तरफ बढ़ गई।

“खुशीराम....!” तभी ठाकरे ने सिपाही को आवाज लगाई।

¶¶

रीमा राठौर अपने बेडरूम में दाखिल हुई और सीधा वार्डरोब की तरफ बढ़ी।

वार्डरोब के सामने आकर उसने उसका दरवाजा खोला और अपनी दायीं बांह भीतर डाल पता नहीं ऐसा क्या जादू किया कि वार्डरोब के करीब ही फर्श फटने लगा और फटे स्थान में नीचे जाती सीढ़ियां नजर आने लगीं।

यह बेसमेंट में प्रवेश करने का उसका अपना पर्सनल रास्ता था।

रीमा राठौर के बेसमेंट के बारे में तो आप काफी कुछ जानते ही हैं। वह वहां कई तरह के प्रयोग भी करती है और वहीं पर उसका टॉर्चर सैल भी है। जहां पर वह बड़े-बड़े पत्थरों को पिघलाने के एक से बढ़कर एक नायाब तरीके अपनाती है।

सीढ़ियां उतरकर वह बेसमेंट के जिस कमरे में खड़ी हुई, वहां दायीं तरफ एक लम्बी टेबल पर शीशे के कई जार रखे थे जिनमें कि अलग-अलग रंगों के रसायन नजर आ रहे थे।

उन सभी को नजरंदाज करते हुए वह सामने वाली दीवार के सामने पहुंची और ताली बजाई।

तुरंत प्रतिक्रिया हुई।

दीवार फट गई और उसमें बाहर जाने का रास्ता बन गया।

वह उस रास्ते से निकली और एक लम्बे गलियारे में आ गई।

पैदल ही आगे बढ़ते हुए वह गलियारे के अन्त वाले दायीं तरफ के कमरे के दरवाजे में प्रवेश कर गई।

सामने एक कुर्सी पर बिच्छू बंधा हुआ था।

उसके पैर कुर्सी के पायों से बंधे हुए थे, और हाथ हत्थों से।

रीमा राठौर को अपनी तरफ देखते देख बिच्छू ने मुंह परे फेर लिया।

रीमा राठौर के होंठों पर जहरीली मुस्कान उभर आई।

बड़े ही ठण्डे अंदाज में चलते हुए वह उसके सामने आकर रुकी और उसके बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़कर उसका चेहरा अपनी तरफ घुमा लिया।

"तेरे इस तरह आंखें फेरने से मैं न तो गायब हो जाऊंगी और न ही मेरा इरादा तुझे छोड़ देने का बनेगा।"

"मैं मरने से नहीं डरता।"

बिच्छू अपनी आवाज में दृढ़ता लाते हुए बोला।

"इसका पता तो तब चलेगा जब मौत तेरे सामने होगी। फिलहाल तो तू यह बोल कि तू है कौन? और मुझे उठाने के लिये तू इतनी बड़ी फौज को लेकर क्यों आया था?"

जो बात रीमा राठौर ने उससे पूछी थी—उसका जवाब देने में बिच्छू को कोई एतराज नजर नहीं आया।

"बद्रीनाथ को तूने ही मारा था न?" वह रीमा राठौर की आंखों में घूरते हुए बोला।

सुनकर रीमा राठौर बुरी तरह से चौंकी।

"तू....दीनापुर के बद्री की बात कर रहा है?" वह सोचपूर्ण स्वर में बोली।

"हां....!"

"ओह....तो तू उसका कोई सगेवाला है—और उसकी मौत का बदला लेने आया है।" वह कुटिलता से मुस्कुराई—"अरे बेवकूफ! पहले दीनापुर में पता तो कर लेना था—जूतों से पीट-पीटकर मारा था मैंने बद्री को—वो भी पब्लिक के सामने। अगर यह तू पहले जान लेता तो....।"

"तेरी इसी हरकत ने तो बाऊजी को आधा पागल बना दिया है।" उसकी बात को काटते हुए गुर्राया बिच्छू—"अब वो तभी ठीक होंगे जब वो तेरे खून से अपने हाथ रंग लेंगे।"

रीमा राठौर की आंखें सिकुड़ गईं। उसकी बात का उसने बुरा नहीं माना—हां—बाऊजी के बारे में जरूर सोच रही थी वह। यह नाम उसने तब भी सुना था—जब बिच्छू उसे उठाने आया था।

"यह....बाऊजी कौन है?" वह बोली।

"हमारे बॉस हैं—अन्नदाता हैं तुम्हारे—रामनगर चली जाओ—सब पता चल जायेगा।" बिच्छू बोला—"बद्रीनाथ बाऊजी का जिगरी दोस्त था—तूने उसे मारकर अपनी मौत

के परवाने पर दस्तखत कर दिये हैं। रीमा राठौर—अब तो खुद ऊपर वाला भी आकर तुझे बाऊजी के कहर से नहीं बचा सकता।”

रीमा राठौर के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

“यह तो वक्त ही बतायेगा कि कहर किस पर टूटता है।” वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोली—“फिलहाल तो तू यह बता कि तेरे बाऊजी का असली नाम क्या है?”

“अयोध्या प्रसाद।”

“उसे मेरा पता कैसे चला?”

रीमा राठौर के इस सवाल पर बिच्छू हड़बड़ा उठा। साथ ही उसके चेहरे पर हल्का-सा आतंक उभरा।

बाकी सब कुछ तो उसने बेखौफ बता दिया था—लेकिन अब उसे दहशत हो रही थी—और उसकी वजह भी थी। वह जानता था कि उसने भीमसेन का नाम बता दिया और यह बता दिया कि वह मर गया है तो कोई बड़ी बात नहीं कि वह गुस्से में आकर उसे गोली से उड़ा दे।

इसी वजह से उसके चेहरे की रंगत उड़ी थी।

उसकी उड़ी हुई रंगत से ही रीमा राठौर ने उसका चेहरा पढ़ लिया था। उसे समझते देर नहीं लगी कि अयोध्या प्रसाद को उसका पता लगने की बात गहरी है।

“बोल....!” उसके मुंह से इस बार गुर्राहट उबली—“उसे मेरा पता कैसे चला?”

जवाब में बिच्छू ने जोरों से थूक सटकी। बोला कुछ नहीं वह, बस उसके होंठ फड़फड़ाकर रह गये।

“लगता है मौत की शक्ल दिखानी ही पड़ेगी तुझे।” रीमा राठौर फुंफकारी।

बिच्छू ने गहरी सांस छोड़ी और गम्भीरता से बोला—

“जिस अंदाज से तुमने मेरे समेत मेरे सभी साथियों को मारा—उसी से पता चल जाता है कि तुम मेरी जुबान भी खुलवा सकती हो। इसलिये मेरे लिये बेहतर यही है कि मैं बता दूं लेकिन....!”

“लेकिन क्या?”

“मेरी एक शर्त है।”

“शर्त?”

“जुबान खोलने की शर्त।”

रीमा राठौर के होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

“क्या तुम शर्त रखने की स्थिति में हो?”

“नहीं, फिर भी शर्त रख रहा हूं।”

रीमा राठौर ने पल भर के लिये सोचा—फिर बोली—

“बताओ—क्या शर्त है तुम्हारी—लेकिन उसे मानने के लिये मैं बाध्य नहीं हूंगी।”

“बहुत छोटी-सी शर्त है।”

“बोलो।”

“मुझसे यह जानने के बाद कि बाऊजी को तुम्हारा पता कैसे लगा—तुम मुझे गोली मार दोगी।”

“क्...या मतलब?” बुरी तरह से उछल पड़ी रीमा राठौर।

बिच्छू ने गहरी सांस छोड़ी और गम्भीर स्वर में बोला—

“बाऊजी से गद्दारी करने की मैं सोच भी नहीं सकता। यूं भी जो तुम पूछ रही हो वो गद्दारी नहीं—और जो कुछ मैंने बताया वो भी गद्दारी नहीं। लेकिन....अगर मैं खाली हाथ वापस गया तो मेरी जो हालत होगी वो मैं ही जानता हूं। नाकामी की सजा सिर्फ और सिर्फ मौत है—वो भी बहुत बुरी मौत। और मैं बुरी मौत नहीं मरना चाहता। इसीलिये मैं तुम्हारे सामने शर्त रख रहा हूं....।”

“कि जानने के बाद मैं तुम्हें गोली मार दूं?”

“हां!”

“आसान मौत मरना चाहते हो।”

“तभी तो शर्त रखी है।”

रीमा राठौर ने सोचपूर्ण अंदाज में अपनी ठोड़ी उंगली के पोर से ठकठकाई, फिर सिर को हल्का-सा झटका देकर बिच्छू के चेहरे पर निगाहें जमाते हुए बोली—

“मैं वादा नहीं कर रही कि मैं तुम्हें गोली मारूंगी।”

“ल....लेकिन....!”

“हां....अगर तुम्हारी बातों से मुझे गुस्सा आ गया तब बात और है। वर्ना तुम यहां से सीधे जेल में जाओगे।”

“ल....लेकिन मैं....।”

“बेकसूर लोगों का बिना वजह खून बहाना मेरी फितरत नहीं बिच्छू। इसलिये मैं ऐसा वादा हरगिज नहीं करूंगी और तुम्हें बताना भी पड़ेगा। अगर जिद करोगे तो जुबान खुलवाने के मेरे पास एक नहीं सैंकड़ों रास्ते हैं। अब बोलो—तुम बोल रहे हो कि नहीं।”

जिस खुरदुरे अंदाज में रीमा राठौर ने बात की थी—उसे सुन बिच्छू की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। उसकी ताकत को तो वह देख ही चुका था। वह जान गया था कि उसके सामने खड़ी वह हसीन-तरीन युवती जो कह रही है, उसे कर गुजरने का माद्दा भी रखती है। और वह यह भी जानता था कि उसकी बात सुनकर रीमा राठौर उसे गोली नहीं मारेगी—और अयोध्या प्रसाद के हाथों वह बुरी मौत मरना नहीं चाहता था। सो उसने खुद ही आसान मौत मरने का फैसला कर लिया।

उसने गहरी सांस छोड़ी और रीमा राठौर की तरफ देखते हुए बोला—

“तुम्हारा पता बाऊजी को भीमसेन के जरिये पता चला।”

“भी....म....सेन।” एक तेज झटका लगा रीमा राठौर को।

न चाहते हुए भी उसका कलेजा धड़क उठा था।

“दीनापुर वाला भीमसेन—उसका पता मैंने ही लगाया था। उसी ने बुलाया था न तुम्हें दीनापुर—बद्रीनाथ को खत्म करने के लिये।”

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—बस उसे घूरती रही।

“बड़ी मुश्किल से पता चला उसका—और वो पता मुझे ही चला—मैं भीमसेन को लेकर सीधा बाऊजी के पास पहुंचा और फिर जिस तरह मैंने उसकी जुबान खुलवाई, वो मैं ही जानता हूं। दांतों तले पसीना आ गया मेरे। बड़ा ही सख्तजान निकला था वह। टांगें काट डालीं मैंने उसकी—बांहें काट डालीं। तब भी नहीं बोला वह। और फिर जब मैंने उसे उसी हालत में सड़क पर फेंक देने का ऐलान किया, तब जाकर उसने तुम्हारा नाम बताया—वो भी इस शर्त पर कि उसे जिन्दा न छोड़ा जाये।”

“य....यानि भीमसेन....।”

“मर गया....।”

रीमा राठौर का चेहरा कानों तक लाल हो उठा। आंखें अंगारे बरसाने लगीं।

झपटकर उसने बिच्छू के बालों को अपनी मुट्ठी में पकड़ा और उसे झिंझोड़ते हुए नागिन की तरह फुंफकारी—

“हरामखोर....मेरे भाई को मार डाला तूने।”

“ज....जुबान जो खुलवानी थी उसकी—आ....ह।” पीड़ा भरे स्वर में बोला बिच्छू।

रीमा राठौर ने तुरंत रिवॉल्वर निकाली और—

‘धांय....!’

गोली सीधी बिच्छू के सीने में जा धंसी।

बिच्छू पहले तो चीखा फिर उसके होंठों पर फीकी मुस्कान उभर आई।

“थ....थैंक्....यू....री....मा राठौर....। त....तुम्हारे हा....थों आ....सान मौत....म....मरने के....लिये....ही मैं....ने झूठ....ब....बो....ला था....भ....भी....मसेन को मैं....ने न....हीं....ब....बाऊ....जी....न....ने....।”

बात अधूरी ही रह गई उसकी। गर्दन एक तरफ लटक गई।

मर चुका था वह।

लेकिन रीमा राठौर उसकी अधूरी छोड़ी बात को समझ गई थी। तभी तो उसके होंठों से गहरी सांस छूट गई थी। अपने धर्म-भाई की मौत को वह बर्दाश्त नहीं कर पाई थी, तभी तो तैश में आ गई थी।

मगर अब उसे अपनी जल्दबाजी पर अफसोस हो रहा था—और खुद पर गुस्सा भी आ रहा था कि वह इतनी जल्दी तैश में क्यों आ गई।

मगर अब किया भी क्या जा सकता था।

तीर तो कमान से निकल कर शिकार भी कर चुका था।

¶¶

'ट्रिन....ट्रिन....।'

फोन की घण्टी घनघना उठी।

जम्हाई लेते हुए सिकंदर ठाकरे ने रिसीवर उठाया और उसे कान से लगाते हुए माऊथपीस में बोला—

"हैलो....!"

"फारिग हो गये आतंकवादी से?" दूसरी तरफ से रीमा राठौर की आवाज आई।

"बस अभी कुछ देर पहले ही फारिग हुआ हूं। सुबह उसे लेकर अदालत जाना है और....।"

"यह काम सब-इंस्पेक्टर कर लेगा।"

"क्या मतलब?"

"तुम दो घण्टे के अंदर-अंदर मेरी कोठी पहुंचो।"

"क्या बात है....खैरियत तो है?" चौंकते हुए बोला सिकंदर ठाकरे।

"मैं घर फोन करके तुम्हारी छुट्टी मंजूर करवा रही हूं।"

"ल....लेकिन....।"

गहरी सांस छोड़ कर रह गया सिकंदर ठाकरे। दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया था।

जिस गम्भीरता से दूसरी तरफ से रीमा राठौर ने बात की थी—वह उसी से समझ गया था कि कोई बड़ी बात हो गई है—और उसे सुलझाने के लिये वह रीमा राठौर के साथ बाहर जा रहा है।

कहां....?

यह उसे पता नहीं था।

उसने पुनः गहरी सांस छोड़ी और एक सिपाही को बुलाकर उसे सब-इंस्पेक्टर बंसल को बुलाने का हुक्म सुना दिया।

¶¶

“अरे बाबा, हम कहां जा रहे हैं? यह तो बोलो। अपने घर में चाय तक नहीं पिलाई तुमने—यहां तक कि भीतर भी नहीं घुसने दिया। बाहर से ही कार में बिठाया और चल पड़ीं। आखिर बात क्या है? किस आपरेशन पर ले जा रही हो मुझे....कम-से-कम पता तो चले।”

सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर की तरफ देखते हुए तनिक झल्लाये स्वर में बोला।

पन्द्रह किलोमीटर तक का सफर कर चुके थे वे—और अब मुम्बई की सीमा से बाहर निकल चुके थे। मगर अभी तक रीमा राठौर ने उससे कोई बात नहीं की थी। बस कार ड्राईव करते हुए सामने सड़क पर निगाहें टिकाये हुए थी।

उसका चेहरा गम्भीर था—और वह जबड़ों को बार-बार भींच रही थी।

उसका चेहरा देखकर सिकंदर ठाकरे यह तो समझ ही गया था कि मामला गम्भीर है। गम्भीर क्या बहुत ज्यादा गम्भीर है। वर्ना कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी वह हमेशा मुस्कराती ही रहती थी। बस इसी वजह से वह अभी तक चुप बैठा हुआ था कि वह स्वयं ही सब कुछ बता देगी।

मगर जब उसने रीमा राठौर के होंठ खुलते नहीं देखे तो उसके सब्र का बांध टूट गया और उसने अपना मुंह खोल दिया।

लेकिन रीमा राठौर ने तब भी कुछ नहीं कहा—बस कार ड्राईव करती सामने देखती रही।

“अरे बाबा, मैं तुमसे पूछ रहा हूं।।” सिकंदर ठाकरे उसके कंधे पर हाथ मारते हुए तीखे स्वर में बोला—“जुबान को लकवा मार गया है क्या?”

तब जाकर रीमा राठौर ने उसकी तरफ देखा।

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे।

आंखों में हैरानी का सागर ठाठें मारने लगा।

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो वह देख रहा है, वो सच है या सपना।

बात ही ऐसी थी।

रीमा राठौर की आंखों में आंसू चमक रहे थे।

एक ऐसी महिला की आंखों में वह आज पहली बार आंसू देख रहा था—जिसमें उसने हमेशा कठोरता के ही दर्शन किये थे। भावनाओं की उसके दिल में कोई जगह नहीं थी।

उसके लिये अगर उसका अपना कुछ था तो था—भारतवर्ष और कानून।

और आज वह उसकी आंखों में आंसू देख रहा था। ऐसे में उसका बुरी तरह से चौंकना स्वाभाविक ही था।

“ऐ....त....तुम रो रही हो?” वह हैरानी दर्शाते हुए उसकी तरफ उंगली सीधी करते हुए बोला।

रीमा राठौर ने गर्दन सीधी की।

“मेरा भाई मर गया ठाकरे....।” उसके गले से भर्राई आवाज निकली।

एक और झटका लगा सिकंदर ठाकरे को।

“तुम्हारा भाई?” वह हैरानी से बोला—“तुम्हारा भाई कहां से आ गया?”

रीमा राठौर ने स्टेयरिंग से बायां हाथ हटाकर अपनी आंखों को पौंछा और पुनः स्टीयरिंग पकड़ते हुए बोली—

“मेरा धर्मभाई था वह।”

“धर्मभाई?”

“हां!”

“मगर तुम तो....।”

“सिर्फ यार ही पालती हूं—यही कहना चाहते हो न तुम?”

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा सिकंदर ठाकरे।

ठीक ही तो कह रही थी रीमा राठौर। सिकंदर ठाकरे ने अभी तक सिर्फ उसकी आशिकी के ही चर्चे सुने थे। हां, अपने प्रति उसने उसके दिल में कोमल भावनाओं को पनपते जरूर देखा था। लेकिन किसी की बहन बनना....यह वह पहली बार सुन रहा था। तभी तो हैरान हो रहा था वह।

उसे चुप देख रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

“मेरे एक नहीं....कई भाई भी हैं ठाकरे। उन्हीं में से एक भीमसेन भी था। मगर मैं उसे सिर्फ एक ही बार राखी बांध पाई। दूसरी बार राखी बंधवाने से पहले ही उसे मार डाला गया।”

“य....यह भीमसेन था कौन? कहां रहता था वह? और यह तुम्हारा भाई कैसे बन गया?”

सिकंदर ठाकरे के शब्दों से ही उसके भीतर की आतुरता नजर आ रही थी।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और कार की रफ्तार बढ़ा दी।

उसकी निगाहें विण्डस्क्रीन पर जमी हुई थीं, जिस पर कि अब धुंधले-धुंधले अक्स उभर रहे थे।

यह तस्वीरें करीब छह महीने पहले की थीं जब वह नील नगर गई हुई थी।

तब उसे तलाश थी जगवीर की, जिसके पीछे पूरे हिन्दुस्तान की पुलिस लगी हुई थी।

एक गुप्त सूचना के आधार पर वह नील नगर गई थी—और उस वक्त वह नील नगर के पुलिस स्टेशन में वहां के एस.एच.ओ. इंस्पैक्टर कांशी राणा के ऑफिस में प्रविष्ट हुई थी।

¶¶

इंस्पेक्टर कांशी राणा ने ललचाई निगाहों से रीमा राठौर को देखा।

उस वक्त रीमा राठौर काले रंग की जीन्स पहने थी—और ऊपर पीले रंग की शर्ट पहने हुए थी।

शर्ट जीन्स में थी सो उसके उभार जानलेवा अंदाज में उभरे हुए थे—ऊपर से उसकी शर्ट के ऊपरी बटन खुले हुए थे।

बस एक बटन और खुल जाता तो भीतर का सारा मामला सामने आ जाता।

एक हसीन तरीन युवती—वो भी फैशनेबल कपड़ों में कांशी राणा के ऑफिस में प्रविष्ट हुई थी। ऐसे में उसका कलेजा धड़कना स्वाभाविक था।

और कलेजा धड़का भी था उसका। जिसका सबूत उसके गले की घण्टी थी जो कि बार-बार उछल रही थी।

अपने भारी कूल्हे मटकाते हुए रीमा राठौर आगे बढ़ी और एक विजिटर चेयर पर बैठ गई।

कांशी राणा अभी भी एकटक उसे निहारे जा रहा था। एक अजीब-सी हवस उसकी आंखों में झांक रही थी। उसकी निगाहें एकटक उसके उभारों पर ही टिकी हुई थीं।

रीमा राठौर एक-दो पल तो उसे देखती रही—फिर अपना हाथ आगे कर उसके चेहरे के सामने चुटकी बजाते हुए बोली—

“होश में आओ इंस्पेक्टर।”

हड़बड़ाया कांशी राणा और उसकी छातियों से निगाहें हटाकर उसके चेहरे को देखने लगा।

“क्या तुम यहां आने वाली हर औरत की ब्यूटी ऐसे ही देखते हो?” रीमा राठौर उसे घूरते हुए बोली।

एक बार फिर हड़बड़ाया कांशी राणा, फिर उसके होंठ फैल गये।

“कोई-कोई फूल ऐसा होता है—जिसे देखकर ही आदमी मदहोश हो जाता है। ऊपर वाले ने लगता है तुम्हें फुरसत में बनाया है। और....।”

“सिर्फ मतलब की बात करो।” रीमा राठौर उसे बीच में ही टोकते हुए बोली।

कांशी राणा हल्के से हड़बड़ाया—फिर स्वयं को सम्भालते हुए निगाहें रीमा राठौर के चेहरे पर गड़ाते हुए बोला—

“तुम्हारा नाम?”

“रीमा राठौर।”

“काम?”

“जगवीर की तलाश में आई हूं।”

रीमा राठौर ने यह शब्द कहे तो सामान्य अंदाज में थे—मगर कांशी राणा के लिये यह जैसे परमाणु बम का विस्फोट था। बुरी तरह से चौंकते हुए वह ऐसे खड़ा हुआ कि कुर्सी पीछे को उलट गई।

हड़बड़ाते हुए वह पीछे हाथ कर झुका और कुर्सी को सीधा कर उस पर वापस बैठते हुए पहले जोरों से थूक सटकी, फिर बोला—

“क....कौन हो तुम?”

“बताया तो, रीमा राठौर।”

“जगवीर से तुम्हारा क्या रिश्ता है?”

“वही जो पुलिस का चोर से होता है। कानून का मुजरिम से होता है।”

“क्या मतलब....मैं कुछ समझा नहीं।”

“मुम्बई से आई हूं मैं। भारत सरकार की तरफ से मुझे आदेश मिला है जगवीर को पकड़ने का—और मुझे पता चला है कि वह यहां नील नगर में छुपा हुआ है।”

कहकर रीमा राठौर ने अपनी शर्ट की जेब में से अपना वकील वाला आई कार्ड निकाला और उसे कांशी राणा के सामने करते हुए बोली—

“यह मेरा आई कार्ड है। ज्यादा तसल्ली के लिये गृहमंत्रालय में फोन कर सकते हो।”

“अ....आपने कह दिया तो तसल्ली कैसी?” हड़बड़ाते हुए बोला कांशी राणा—“ल....लेकिन हमें तो ऐसी कोई सूचना नहीं मिली कि जगवीर यहां इस शहर में है।”

“कमाल है।” रीमा राठौर ने हैरानी जताई—“चालीस खून अभी हाल ही में किये हैं उसने। भरे चौक में बम फैंककर उसने चालीस बेगुनाहों की जान ली है। उससे पहले भी वह कई बड़े-बड़े अपराध कर चुका है। इतना बड़ा अपराधी नील नगर में है और तुम्हें कोई जानकारी नहीं।”

“म....मगर....!”

“पूरे शहर में अपने मुखबिरों को सचेत कर दो।” रीमा राठौर ने उसकी बात काटी—“वह यहीं इसी शहर में छुपा हुआ है। मुझे हर हाल में उसका पता चाहिये। वो भी आज ही। कल रात के दस बजे तक मुझे जगवीर की खबर मिल जानी चाहिये। अभी चार बजे हैं। यानि छह घण्टे हैं तुम्हारे पास।”

कांशी राणा ने थूक सटकते हुए सिर हिला दिया।

“मैं होटल नटराज में ठहरी हूं—कमरा नम्बर छह सौ सात। जैसे ही उसकी सूचना मिले—मुझे फौरन खबर कर देना।”

कांशी राणा ने पुनः सिर हिला दिया।

रीमा राठौर खड़ी हो गई।

“को....कोई चाय-पानी तो....।”

“सॉरी....इतना वक्त नहीं है मेरे पास।”

रीमा राठौर रूखे अंदाज में बोली और पलटकर कूल्हे मटकाते हुए बाहर निकल गई।

कांशी राणा कुछ देर तक तो दरवाजे को खाली-खाली निगाहों से घूरता रहा—फिर उसने एक ठण्डी आह भरी और कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

¶¶

करीब एक घण्टे बाद कांशी राणा ने अपनी जिप्सी शहर की सीमा के बाहर निकाली और उसे थोड़ा आगे चलकर एक कच्ची सड़क पर मोड़ दिया।

कच्ची सड़क पर धूल के बादल उड़ाते हुए जिप्सी आगे बढ़ने लगी।

हिचकोले खाते हुए जिप्सी करीब दो किलोमीटर चलकर रुकी तो जिप्सी के साथ-साथ कांशी राणा भी धूल से भरा हुआ नजर आ रहा था।

मगर उसने अपने कपड़ों पर लगी धूल की तरफ ध्यान नहीं दिया।

वह छलांग मारकर जिप्सी से उतरा और इधर-उधर देखने लगा।

चारों तरफ दूर-दूर तक बंजर पड़ी जमीन थी जिसमें जगह-जगह कंटीली झाड़ियां उगी हुई थीं। बीच-बीच में बड़े-छोटे गड्ढे थे और उनमें से कई बड़े गड्ढों में पानी भरा हुआ था।

उसके दायीं तरफ करीब आधा किलोमीटर दूर एक खंडहर नुमा इमारत थी।

दूर से देखने पर वह कोई मस्जिद नजर आ रही थी।

अपने कपड़ों पर हाथ मारते हुए कांशी राणा उस इमारत की तरफ पैदल ही बढ़ने लगा।

अभी वह इमारत से थोड़ी दूर था कि तभी—

'धांय....!'

गोली की आवाज गूंजी और उसके पैरों के पास की मिट्टी उखड़कर उछल गई।

कांशी राणा पहले तो हड़बड़ाया, फिर वहीं स्थिर हो गया।

खड़ा होने के साथ ही उसने हाथ भी सिर पर रख लिये और उधर देखने लगा जिधर से गोली चली थी।

तभी एक झाड़ी के पीछे से एक आदमी निकला जो कि ऐ.के. सैंतालीस से लैस था, और उसकी तरफ बढ़ा।

ऐ.के. सैंतालीस का रुख उसी की तरफ था और उंगली ट्रिगर पर दबी हुई थी।

कांशी राणा से कुछ कदम पहले आकर वह रुक गया और गुर्राया—

"कौन है तू?"

"कांशी राणा।" कांशी राणा बिना घबराये बोला—"इंस्पेक्टर कांशी राणा। जगवीर से बोलो कि मैं आया हूं।"

उस आदमी ने अपने बायें हाथ से जेब से वॉकी-टॉकी निकाला और उसका बटन दबाकर मुंह के पास ले जाते हुए बोला—

"इंस्पेक्टर कांशी राणा आया है।....ओ.के.....!"

उसने वॉकी-टॉकी जेब में डाला और कदम पीछे हटाते हुए बोला—"जा।"

कांशी राणा ने हाथ नीचे किये और कदम आगे बढ़ा दिये।

इमारत का ऊपरी गुम्बद मस्जिदनुमा तो था—मगर वो मस्जिद नहीं थी, बल्कि किसी इमारत के खंडहर थे। इमारत की चारदीवारी जगह-जगह से टूट रही थी तथा नीचे जमीन पर छोटी ईंटें जगह-जगह बिखरी हुई थीं।

ऐसे ही एक टूटे हुए स्थान से कांशी राणा भीतर दाखिल हुआ और इमारत के उस हॉल की तरफ बढ़ा जिसके ऊपर गुम्बद बना हुआ था।

उस हॉल के दायें-बायें कुछ और कमरे भी बने हुए थे। और वे सभी खस्ता हाल में थे। बस एक हॉल ही था जो अन्य कमरों से बेहतर नजर आ रहा था।

कांशी राणा हॉल में दाखिल हुआ।

दीवारों की तरह हॉल का फर्श भी छोटी ईंटों का बना हुआ था—दायीं तरफ आदमकद अलमारी दीवार में थी जिसका दरवाजा दीमक ने चट कर डाला था। बस उसके अवशेष ही नजर आ रहे थे, जिसके पीछे दीमक की खाई लकड़ी की शैल्फ लगी थी।

अलमारी के करीब ही साथ वाले कमरे में जाने का रास्ता था।

कांशी राणा ने उस तरफ अभी रुख ही किया था कि तभी हाथ में रिवॉल्वर लिये करीब तेईस-चौबीस साल का लड़का साथ वाले कमरे से निकला।

“हथियार है?” बिना किसी दुआ-सलाम के वह बोला।

“है।” कांशी राणा बोला।

“निकाल!” कहते हुए लड़के ने बायां हाथ आगे बढ़ाया।

कांशी राणा ने चुपचाप अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकालकर उसके बढ़े हाथ पर रख दी।

“अब जा!” लड़का उसकी रिवॉल्वर को अपनी पैंट की जेब में डालते हुए बोला।

कांशी राणा उसके बराबर से निकलकर साथ वाले कमरे में प्रविष्ट हो गया।

वह कमरा बिल्कुल खाली था। कमरे के बीचोंबीच चमगादड़ों के बीट का ढेर लगा हुआ था और ऊपर छत में दर्जनों की संख्या में चमगादड़ उल्टे लटके हुए शोर कर रहे थे।

कांशी राणा बीट के ढेर के करीब से निकलकर सामने वाली दीवार के करीब आकर ठिठका और दीवार की तरफ देखने लगा।

लगातार दो मिनट तक वह दीवार को इस तरह देखता रहा जैसे वह अपनी आंखों के सामने दीवार के एक ही हिस्से में कुछ तलाश कर रहा हो।

दो मिनट बाद जैसे चमत्कार हुआ।

दीवार एक तरफ हटने लगी और देखते-ही-देखते उसमें इतनी जगह बन गई कि एक आदमी भीतर प्रवेश कर सके।

कांशी राणा भीतर प्रवेश कर गया।

दायीं तरफ नीचे जा रही सीढ़ियां थीं।

सीढ़ियों की दोनों साइडों की दीवार से रगड़ खाते हुए वह नीचे उतरने लगा।

करीब पंद्रह सीढ़ियां उतरकर उसने स्वयं को एक हॉल में खड़ा पाया।

वह हॉल भी ऊपरी कमरों की तरह छोटी ईंट का बना हुआ था—मगर वह ऊपर की अपेक्षा काफी मजबूत था। एक तरफ दो ट्यूब लाईटें जल रही थीं जो कि बैटरी से चल रही थीं। उनके करीब ही एक दरी बिछी हुई थी जिस पर कि जगवीर एक निहायत ही खूबसूरत युवती के साथ बैठा हुआ था।

जगवीर करीब तीस साल का गोरे रंग का मगर सख्त और क्रूर आंखों वाला व्यक्ति था। जिसके बालों का रंग लाल था और उसने फ्रैंच कट दाढ़ी रखी हुई थी।

उस वक्त वह सिर्फ कच्छा-बनियान पहने हुए था—और उसके बाकी के कपड़े एक तरफ खूंटी पर टंगे हुए थे।

युवती ने नीचे स्कर्ट पहनी हुई थी—और ऊपर सिर्फ ब्रा पहने हुए थी। उसके करीब ही उसकी टॉप पड़ी थी और उसके साथ ही उसका जांघिया पड़ा हुआ था जो साफ बता रहा था कि स्कर्ट के नीचे उसने कुछ नहीं पहन रखा।

“आ राणा....!” कांशी राणा को देखते ही बोला जगवीर—“बैठ।”

कांशी राणा आगे बढ़कर उसके सामने दरी पर बैठ गया।

उसने एक नजर युवती के उभारों पर डाली, फिर पुनः जगवीर को देखने लगा।

“कोई खास खबर?” जगवीर ने पूछा।

“तभी तो आया हूं।”

“बोल।”

“पुलिस को तुम्हारा पता चल चुका है कि तुम इस शहर में हो।”

“क्या?” बुरी तरह से चौंका जगवीर।

“हां।”

“तुझे कैसे पता चला?”

“रीमा राठौर आई थी मेरे पास।”

“रीमा राठौर....यह कौन है?”

“उसके आई-कार्ड से वकील ही नजर आ रही थी।”

“कमाल है....एक वकील मेरे बारे में पूछ रही है।” हैरानी जताई जगवीर ने।

“सरकार ने तुम्हें पकड़ने का काम उसे सौंपा है। ऐसे में जाहिर है कि वकील होने के साथ-साथ वह और भी बहुत कुछ है।”

“फिर तूने क्या बताया?”

कांशी राणा ने रीमा राठौर से हुई सारी बात उसे बता दी।

“ओह! तो वह नटराज होटल में ठहरी है।”

“हां।”

“दिखने में कैसी है वो?” कहते हुए जगवीर भेद-भरी मुस्कान मुस्कुराया।

कांशी राणा भी मुस्कुरा पड़ा—“बढ़िया है। क्लास—वन।” कहते हुए उसने बाईं आंख दबाई।

“इससे भी....!” जगवीर ने अपने पास बैठी युवती की उंगली दबाई—“बढ़िया है?”

कांशी राणा ने युवती की फीगर पर निगाह मारी—उसकी ब्यूटी को देखा, फिर उसके चेहरे पर निगाहें जमाते हुए बोला—

“सच बोलूं?”

“मैं सच ही सुनना चाहता हूं।” जगवीर बोला।

“तो सच है यह जगवीर कि यह रीमा राठौर के सामने कुछ भी नहीं।”

सुनकर उस युवती का चेहरा बुझ गया। आंखों में ईर्ष्या के भाव साफ नजर आने लगे।

“बेशक यह”—उसके चेहरे पर फैली नाराजगी को नजरंदाज करते हुए कांशी राणा ने अपनी बात आगे बढ़ाई—“यह बहुत खूबसूरत है। मगर वो....वो है।”

कहकर उसने जगवीर की तरफ देखा।

“कमाल है—ऐसी खूबसूरती को इतने बड़े काम पर लगाया गया है।” जगवीर ने हैरानी जताई—“जबकि खूबसूरत औरत तो कोमल होती है। बहादुरी का तो उससे मीलों दूर का वास्ता नहीं होता। लगता है सरकार को मैं कोई छोटा-मोटा मुजरिम नजर आ रहा हूं—जो उसने किसी खूंखार आदमी की बजाये एक हसीना को मेरे पीछे लगाया है। कोई बात नहीं....हम भी उससे गिरफ्तार होंगे।”

“क्या....?” हड़बड़ाया कांशी राणा।

“हथकड़ियों में नहीं....उसकी जुल्फों में कैद होंगे।”

“ओऽऽ....!” कांशी राणा ने दांत दिखाये—“ऐसी गिरफ्तारी अगर मुझे भी मिल जाये तो....।”

“घबरा नहीं....प्रसाद तुझे भी मिलेगा। आज रात को भोग मैं लगाऊंगा और सुबह पहला प्रसाद तुझे ही मिलेगा।”

कांशी राणा का चेहरा खिल उठा—उसकी आंखों के सामने रीमा राठौर का खूबसूरत चेहरा ही नहीं, उसका समूचा बदन—वो भी निर्वस्त्र नाचने लगा।

“क्या नाम बताया था तूने होटल का?”

तभी जगवीर के प्रश्न पर वह हड़बड़ाया और उस शानदार सपने से बाहर निकल आया।

“नटराज!” वह थूक सटककर बोला।

उसकी हालत ही बता रही थी कि रीमा राठौर के बारे में सोचकर वह बेतहाशा गर्म हो चुका था।

“कमरा नम्बर?” जगवीर ने पूछा।

कांशी राणा ने बताया।

“ठीक है—अब तू जा....कल तुझे प्रसाद के साथ-साथ बढ़िया इनाम भी मिल जायेगा।”

कांशी राणा ने एक भरपूर निगाह युवती पर डाली।

युवती ने तुनककर मुंह परे फेर लिया। निश्चय ही उसे रीमा राठौर की तारीफ बुरी लगी थी।

कांशी राणा ने गहरी सांस छोड़ी और खड़ा हो गया।

¶¶

“नमस्कार....!”

होटल नटराज के डायनिंग हॉल में टेबल पर बैठी खाना खा रही रीमा राठौर के कानों में आवाज पड़ी तो उसने गर्दन ऊपर उठाई।

करीब तैंतीस वर्ष का साधारण कद-बुत का व्यक्ति उसके सामने खड़ा था।

रीमा राठौर ने प्रश्न-भरी निगाहों से उसकी तरफ देखा।

“कहिये।” वह बोली।

“अगर मैं गलत नहीं तो आप रीमा राठौर जी हैं....।”

उसकी आवाज में इज्जत और श्रद्धा के भाव थे।

“आप....!”

“मेरा नाम भीमसेन है।” वह आदमी बोला—“दीनापुर में रहता हूं। आपके मैंने बहुत कारनामे पढ़े-सुने हैं—बहुत ही बड़ी वकील हैं आप....।”

“खाना खायेंगे?” रीमा राठौर उसकी बात को काटते हुए बोली।

“ज....जी नहीं।” हड़बड़ाया भीमसेन।

“तो फिर मैं खा लूं?”

“ह....हां....आ....प खाइये....स....सॉरी....।”

भीमसेन पुनः हड़बड़ाया और उसके सामने से हट गया।

रीमा राठौर पुनः डिनर पर झुक गई। भीमसेन के उसके सामने से हटते ही उसने उसे अपने दिमाग से निकाल दिया।

हालांकि उसने उसकी आंखों में अपने प्रति इज्जत के भाव देखे थे। जबकि अन्य मर्द हमेशा उसे ललचाई निगाहों से ही देखते थे। मगर उसे किसी की भी परवाह नहीं थी।

खाना समाप्त कर उसने नेपकिन से हाथ पौंछे और खड़ी हो गई।

उसने अपनी रिस्टवॉच में वक्त देखा।

साढ़े नौ बज चुके थे—और कांशी राणा को उसने दस बजे तक का वक्त दे रखा था। सो उसने अपने कमरे में ही जाना उचित समझा।

छठी मंजिल पर कमरा था उसका, सो वह लिफ्ट की तरफ बढ़ी।

लिफ्ट द्वारा वह छठी मंजिल पर पहुंची और बायीं तरफ के गलियारे में आगे बढ़ने लगी।

बायीं तरफ छह कमरे छोड़कर सातवें कमरे के सामने वह रुकी और जेब से चाबी निकालकर उसे की-होल में डाला और चाबी को दायीं तरफ घुमाकर चाबी निकाली और दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गई।

अभी उसने बेड की तरफ दो कदम ही बढ़ाये थे कि उसे वातावरण में जहरीली गैस का आभास हुआ।

सिर एकदम से भारी होने लगा था उसका और दम घुटने लगा था।

"खतरा....!"

फौरन उसके जेहन में यह एक शब्द हथौड़े के समान बजा।

बिजली की-सी फुर्ती से वह पीछे मुड़ी।

लेकिन मुड़ नहीं पाई वह, बल्कि उसके घुटने मुड़ गये। और वह वहीं फर्श पर बिछ गई।

उसकी आंखें तो हरकत कर रही थीं—मगर दिमाग चेतना-शून्य हो गया था। जुबान भी बन्द हो गई थी। ठीक तभी उसके ऐन सामने वाले कमरे का दरवाजा खुला और दो व्यक्ति बाहर निकले।

दोनों ने पहले गलियारे में इधर-उधर देखा।

कोई नजर नहीं आया उन्हें।

तुरंत दोनों आगे बढ़े और रीमा राठौर के कमरे में दाखिल हो गये।

आनन-फानन में उन्होंने रीमा राठौर को उठाया और सीधा खड़ा कर कमरे से बाहर इस तरह ले आये जैसे किसी शराबी को सम्भालने की कोशिश कर रहे हों वो।

मजे की बात यह थी कि कमरे में फैली जहरीली गैस का उन पर कोई असर नहीं हुआ था।

उसे सम्भाले हुए वे अपने कमरे में आ गये।

“जल्दी से बोतल निकाल।” एक बोला और रीमा राठौर की बाजू अपनी गर्दन में डाल उसे सम्भाल लिया। तुरंत दूसरे ने रीमा राठौर को छोड़ा और सामने टेबल पर से बोतल उठाकर वापस आया और ढक्कन खोलकर बोतल उसके मुंह से लगा दी।

कुछ शराब रीमा राठौर के पेट में गई और कुछ उसके जिस्म पर जा गिरी।

उसने बोतल बन्द कर वापस टेबल पर रखी और आकर रीमा राठौर की दूसरी बाजू अपनी गर्दन में पिरो दी।

“अब ठीक है।” पहला बोला—“अब हर कोई यही समझेगा कि इसने बहुत पी रखी है।”

दोनों उसे सम्भाले कमरे से निकले और लिफ्ट की तरफ बढ़े।

लड़खड़ाते हुए घिसटते हुए रीमा राठौर उनके साथ चल रही थी।

लिफ्ट द्वारा दोनों हॉल में आये और गेट की तरफ बढ़े।

“कितनी बार कहा है कि ज्यादा न पीया करो।” एक बोला।

“करा दी न हमारी बेइज्जती।” दूसरा बोला।

“अब डॉक्टर उल्टियां करायेगा—तब ठीक होंगी तुम।” पहला बोला।

यह डायलॉग उन्होंने जानबूझ कर कहे थे, ताकि आसपास की टेबलों पर बैठे लोगों को संदेह न हो।

लेकिन कोने की टेबल पर एक शख्स ऐसा था जिसकी आंखों में संदेह साफ नजर आ रहा था।

भीमसेन था वह।

अभी थोड़ी देर पहले ही उसने रीमा राठौर को ठीक-ठाक खाना खाते देखा था। उससे बात भी की थी उसने और उसे कहीं से भी ऐसा नहीं लगा था कि उसने शराब पी हुई थी। ऐसे में इतनी जल्दी शराब के नशे में कोई चूहा भी टुन्न नहीं हो सकता, फिर वह तो इंसान थी।

और उसे बाहर ले जा रहे दोनों शख्स कौन थे?

उसे इसके पीछे कोई भारी साजिश महसूस हो रही थी।

रीमा राठौर के बारे में वह काफी कुछ पढ़ चुका था। उसे पता था कि वह कानून की बेटी के तौर पर जानी-जाती थी और अपराध के प्रति उसे दिली नफरत थी। ऐसे में जाहिर था कि उसने सैंकड़ों दुश्मन बना लिये थे।

कहीं रीमा राठौर को ले जाने वाले उसके दुश्मन तो नहीं?

रीमा राठौर का फैन तो था ही वह सो अपने फेवरिट को बचाने के लिये वह फौरन टेबल छोड़कर खड़ा हो गया।

उस वक्त दोनों रीमा राठौर को सम्भाले गेट के करीब पहुंच चुके थे।

अपनी तरफ से लापरवाही दर्शाते हुए वह टेबलों के बीच से निकलते हुए उनके पीछे-पीछे गेट से निकल गया।

ठीक तभी एक मारुति जेन गेट के सामने आकर रुकी और एक व्यक्ति ड्राइविंग डोर खोलकर बाहर निकला और पिछला दरवाजा खोल दिया।

दोनों में से पहले ने रीमा राठौर को छोड़ा और कार की पिछली सीट पर बैठ गया।

तब दूसरे ने रीमा राठौर को पिछली सीट पर डाला—जिसे पहले ने भीतर खींच लिया—और फिर दूसरा भी भीतर प्रवेश कर गया।

ड्राईवर बना व्यक्ति पुनः स्टीयरिंग के पीछे बैठा और स्टार्ट कर दी।

जैसे ही कार आगे बढ़ी, ठीक तभी थोड़ी दूरी पर बाईक पर बैठे भीमसेन ने भी बाईक स्टार्ट की और कार के पीछे लगा दी।

इधर कार की पिछली सीट पर रीमा राठौर पहले वाले व्यक्ति पर गिरी पड़ी थी—जिससे कि उस आदमी के भीतर पल-प्रतिपल आग भड़क रही थी। उसकी सांसें तेज चल रही थीं—और चेहरा लाल-भभूका हो गया था।

उसे ऐसा लगने लगा कि वह अपने साथ लगी आग को और ज्यादा देर बर्दाश्त नहीं कर पायेगा और जल्दी ही पिघल जायेगा।

जगवीर की तरफ से उन्हें हुक्म था कि उन्हें रीमा राठौर के किसी अंग को छूना नहीं। और अभी तक उन्होंने उसको कहीं से भी नहीं छुआ था।

मगर अब....!

अब उसे ऐसा लग रहा था कि मामला उसकी बर्दाश्त से बाहर होता जा रहा है।

आखिर उसका सब्र जवाब दे ही गया।

उसने चोर निगाहों से अपने साथी की तरफ देखा।

वह सामने देख रहा था।

धीरे से उसका बायां हाथ ऊपर उठा और रीमा राठौर के शरीर पर जा पहुंचा।

जैसे ही उसने उसको दबाया—

करंट का तेज झटका लगा उसे।

उसका दिल किया कि वह अभी रीमा राठौर को सीट पर गिराये और उसे आगोश में ले ले।

“सम्भल के—।”

तभी उसके कानों में अपने साथी की फुंफकार पड़ी।

सिर से पांव तक कांप उठा वह—और हाथ फौरन नीचे गिर गया।

“म....मैं तो इसे सम्भाल रहा था।

वह हड़बड़ाते हुए अपने साथी से बोला—जो कि उसी की तरफ देख रहा था।

उसके भीतर पक रहा सारा लावा पानी में तब्दील हो चुका था।

“छातियों को पकड़कर सम्भाल रहा था।”

“न....हीं....म....मैंने तो....।”

“अब हाथ ऊपर न उठे।”

कहकर दूसरे ने गर्दन सीधी कर ली।

मन-ही-मन अपने साथी को सौ-सौ गालियां निकालते हुए पहला भी सामने देखने लगा।

रीमा राठौर की छातियां अभी भी उसकी बांह से टकरा रही थीं—मगर अब उस पर खौफ की ऐसी चादर पड़ गई थी कि उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था।

कार पूरी गति से सड़क पर दौड़ रही थी।

¶¶

साढ़े दस बजे कार एक दोमंजिला कोठी के मेन गेट के सामने रुकी।

ड्राईवर ने हॉर्न बजाया।

‘पीं....पीं....!’

तुरंत कोठी का फाटक खुला और कार खुले गेट में प्रवेश कर हाई-वे पर आगे बढ़ने लगी।

गेट खोलने वाले ने तुरंत गेट बन्द कर दिया।

कार कम्पाऊंड के सामने आकर रुकी और उसी के साथ ही दूसरे व्यक्ति ने दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

वापस मुड़कर वह झुका और रीमा राठौर की बांह पकड़कर उसे बाहर खींच लिया।

पीछे-पीछे पहला भी बाहर आ गया।

रीमा राठौर को सम्भाले दोनों कम्पाऊंड में दाखिल हुए और दरवाजे की तरफ बढ़े। तभी कोठी का मेन डोर खुला।

सामने उन्हीं की तरह पच्चीस-छब्बीस वर्ष का युवक था।

रीमा राठौर को देख वह एक तरफ हो गया।

दोनों भीतर दाखिल हो गये।

"उस्ताद को फोन कर दे कि शिकार आ गया है।" दूसरा दरवाजा खोलने वाले से बोला।

दरवाजा खोलने वाले ने सिर हिला दिया।

दोनों रीमा राठौर को सम्भाले हॉल में आये और सामने वाले कमरे में ले जाकर उसे डबलबेड पर लिटा दिया।

तभी दरवाजा खोलने वाला भीतर प्रविष्ट हुआ।

"फोन किया उस्ताद को?" पहला बोला।

"हां....उस्ताद आ रहा है। उसने कहा है कि इसके कपड़े उतार इसे नंगी कर दो।" उसने रीमा राठौर की तरफ इशारा किया—"और इसके हाथ-पैर बांध दो और फिर इसे इंजेक्शन लगा देना।"

सुनकर दोनों ने गहरी सांस छोड़ते हुए एक दूसरे को देखा।

बहुत बड़ा इम्तिहान था यह उनका।

बला-सी खूबसूरत और परियों जैसे हुस्न की मलिका के कपड़े उतारना और कुछ भी न करना—किसी इम्तहान से कम नहीं था। उससे आसान काम तो एवरेस्ट पर चढ़ना था।

मगर जगवीर का हुक्म था।

पालन तो करना ही था उन्हें।

दरवाजा खोलने वाला वापस चला गया।

अब रीमा राठौर की बांहें तथा टांगें चौड़ी होकर बेड के पांवों से बंधी हुई थीं—और वह सिर से पांव तक पूरी तरह से निर्वस्त्र थी।

उसकी आंखें सब कुछ देख तो रही थीं—मगर वह कुछ भी करने के काबिल नहीं थी।

“निकाल इंजेक्शन!”

दूसरे ने पहले से कहा।

पहले ने जेब से पहले एक सिरिंज निकालकर उसका रैपर फाड़ा और फिर जेब से एक शीशी निकालकर उसमें से सिरिंज भरी और इंजेक्शन रीमा राठौर के कूल्हे पर लगा दिया।

“अब चल....!”

पहला सीधा होते हुए बोला।

“हां....अगर....” दूसरा बोला—“और थोड़ी देर तक खड़े रहे तो एक बार फिर बाथरूम जाना पड़ेगा।” कहकर वह हौले से हंसा।

पहला भी हंसा। और आगे बढ़कर रीमा राठौर के कपड़े उठा लिये।

और फिर दोनों ने जी भर के पहले रीमा राठौर को देखा—फिर कमरे से बाहर निकल गये।

उसी के साथ ही कमरे का दरवाजा बन्द हो गया।

¶¶

इंजेक्शन ने जादू का-सा असर किया।

एक मिनट बीतते-बीतते रीमा राठौर पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी।

होश में आते ही वह पहले तो हड़बड़ाई, फिर जैसे ही वह उठने को हुई—एक गहरी सांस उसके मुंह से निकल गई। उसे आभास हो गया कि वह बंधी हुई है।

तभी उसे अपने जिस्म पर ठण्डक का अहसास हुआ।

गर्दन उठाते हुए उसने अपने जिस्म पर निगाह मारी।

कपड़े का एक रेशा तक नहीं था उसके बदन पर।

उसे समझते देर नहीं लगी कि वह दुश्मन की कैद में है। और जिस तरह से उसे बेलिबास करके बांधा गया है, उससे दुश्मन की नीयत का साफ पता चल रहा था।

मगर उससे उसे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। न जाने कितने ही लोगों से वह सम्बन्ध बना चुकी थी। सो दुश्मन की नीयत की तरफ से ध्यान हटाकर वह दुश्मन के बारे में सोचने लगी।

'कौन हो सकता है वो....जिसने उसे कैद किया हुआ है?'

'जगवीर।'

फौरन यह नाम उसके जेहन में कौंधा।

लेकिन जगवीर को कैसे पता चला कि वह उसी को पकड़ने यहां आई हुई है? जबकि उसने तो इस ऑपरेशन को गुप्त रखा हुआ था।

फिर उसे पता कैसे चल गया?

'कांशी राणा।'

वह मन-ही-मन बड़बड़ाई।

एक वही था जिसे उसकी आमद का और आने के मकसद का पता चला था।

'वो कांशी राणा जगवीर का कुत्ता है।'

वह मन-ही-मन बड़बड़ाई और उसी के साथ ही उसके जबड़े भिंचते चले गये। आंखों में कहर उभर आया।

दांतों पर दांत जमाये हुए उसने पूरी शक्ति से अपनी बांहों को झटका दिया।

मगर रस्सी ढीली होने की बजाये और भी टाईट हो गई।

एक ही झटके में वह समझ गई कि जोर-आजमाईश करनी बेकार है।

‘फिर क्या किया जाये?’

उसने मन-ही-मन सोचा।

अब तो दुश्मन के आने के बाद ही कुछ किया जा सकता है।

वह मन-ही-मन बड़बड़ाई।

तभी....

¶¶

इधर कोठी का गेट बन्द हुआ—उधर भीमसेन की बाईक ऐन गेट के सामने आकर रुकी।

सीट पर बैठे-बैठे ही उसने बन्द गेट की तरफ देखा—फिर बाईक को आगे बढ़ाकर थोड़ी दूर ले जाकर बाईक को सड़क से उतारकर वापस कोठी के सामने आ खड़ा हुआ।

इतना तो उसे यकीन हो चुका था कि उसकी फेवरिट रीमा राठौर खतरे में है और उसे खतरे से बचाने के लिये वह अपनी जान की बाजी लगाने को भी तैयार था।

कुछ देर तो वह यूं ही कोठी के सामने खड़ा चारदीवारी को देखता रहा—फिर हिम्मत करके चारदीवारी की तरफ बढ़ा।

हथियार के नाम पर उसके पास सुईं तक नहीं थी। फिर भी वह हिम्मत कर रहा था।

उसने चारदीवारी के सिरे को पकड़ा और धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा।

चारदीवारी पर चढ़ने के लिये उसे काफी मशक्कत करनी पड़ी थी—और इसी मशक्कत में उसके घुटने भी छिल गये थे।

मगर वह कामयाब हो गया था।

उसने चारदीवारी पर लेटकर ही भीतर झांका।

गेट के करीब उसे एक आदमी कुर्सी पर बैठा नजर आया, जिसकी पीठ उसी की तरफ थी।

भीमसेन धड़कते दिल से लटककर नीचे उतरा।

वह जानता था कि अगर गेट पर बैठे आदमी ने उसे देख लिया तो उसका बचना नामुमकिन हो जायेगा—तो वह अपनी तरफ से पूरी तरह से चौकन्ना हो अंधेरे में लुकते-छिपते दीवार के साथ लगते हुए आगे बढ़ा और कोठी के बराबर से निकलकर पीछे के लॉन में आ गया।

अंधेरे में दुबककर उसने पीछे का नजारा किया।

कोई भी नजर नहीं आया उसे।

आश्वस्त हो वह कोठी की पिछली साईड की पहली खिड़की के करीब आया—और आहिस्ता से भीतर झांका।

कमरे में उसे तीन आदमी बैठे नजर आये, जो किसी बात पर हंस रहे थे—मगर खिड़की पर लगे शीशे के कारण उसे उनकी हंसी की आवाज नहीं आ रही थी। उनमें से दो तो वही थे जिन्हें उसने होटल में देखा था।

इस वक्त भीमसेन का कलेजा धाड़-धाड़ कर उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

वह झुका और खिड़की के नीचे से होते हुए आगे बढ़ गया।

अगले कमरे की खिड़की के करीब आकर उसने भीतर झांका।

कमरा पूरी तरह से खाली था।

भीमसेन अगले कमरे की तरफ बढ़ा।

तीसरे कमरे की खिड़की में से उसने जैसे ही भीतर झांका—उसका कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा। बेड पर निर्वस्त्र बंधी हुई रीमा राठौर उसके सामने थी।

रीमा राठौर को बेलिबास देखकर भी उसके दिल में कोई गलत भावना नहीं आई।

सीधे होकर उसने सावधानी बरतते हुए पहले इधर-उधर देखा, फिर खिड़की के पट को धकेला।

खुशकिस्मती से पल्ला भीतर से बंद नहीं था।

भीमसेन ने राहत की सांस ली और खिड़की में चढ़कर भीतर कूद गया।

¶¶

'धप्प....!'

हल्की-सी आवाज रीमा राठौर के पीछे हुई—जैसे कोई कूदा हो।

गर्दन टेढ़ी कर उसने पीछे देखा तो भीमसेन को देखकर चौंक उठी।

उस वक्त भीमसेन अपनी शर्ट के बटन खोल रहा था।

गुस्से से रीमा राठौर की आंखें दहकने लगीं।

"तुम....!"

उसके होंठों से फुंफकार उबली।

मगर भीमसेन ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया। उसने शर्ट उतारी और रीमा राठौर के बदन पर डाल दी। एक तेज झटका लगा रीमा राठौर को। वह तो यही समझी थी कि भीमसेन उससे रेप करने के लिये शर्ट उतार रहा है। मगर उसने तो अपनी शर्ट उसके बदन पर डाल दी थी।

अभी वह उस फटके से उभर भी नहीं पाई थी कि एक और फटका लगा उसे।

भीमसेन उसके हाथ की रस्सी खोल रहा था।

"मुझे वहीं होटल में ही शक हो गया था....जब....!" भीमसेन रस्सी की गांठ खोलते हुए धीमे स्वर में बोला—"मैंने आपको उन दोनों के बीच लड़खड़ाते हुए जाते देखा। जबकि थोड़ी देर पहले आप पूरी तरह से ठीक थीं—सो मैं उनके पीछे लग गया—और यहां आ पहुंचा।"

उसने रस्सी खोली और बेड के दूसरे पाये की तरफ बढ़ गया।

"आपके कपड़े नजर नहीं आये मुझे—सो मैंने अपनी शर्ट आप पर डाल दी, क्योंकि एक बहन किसी भाई के सामने निर्वस्त्र नहीं हो सकती।"

उसने दूसरी डोरी भी खोल दी और रीमा राठौर के पैरों की तरफ बढ़ा।

“आप मेरी शर्ट पहन लें—मैं आपके पैर खोलता हूं।”

कहते हुए वह रीमा राठौर के पैरों में झुक गया।

रीमा राठौर बैठी और उसकी शर्ट पहनने लगी।

बटन बन्द होते-होते रीमा राठौर के पैर आजाद हो गये।

“आपको लाने वाले परले कमरे में हैं।” बोला भीमसेन—“इसलिये पीछे के रास्ते से निकल जाइये।”

रीमा राठौर ने पैर नीचे लटकाये और फर्श पर खड़ी हो गई।

भीमसेन की शर्ट उसकी जांघों के ऊपरी हिस्से तक को ही कवर कर रही थी, सो उसकी पूरी टांगें अभी भी निर्वस्त्र थीं।

उसने मुस्कुराकर भीमसेन की तरफ देखा और बोली—

“मेरा पीछा कैसे किया था?”

“बाईक है मेरे पास। बाहर खड़ी है।”

“ओ.के.—अब तुम पीछे अंधेरे में छुपकर बैठो, मैं जरा उनसे निपटकर आती हूं जो मुझे यहां लाये थे।”

“न....हीं....व....वो तीन हैं और उनके पास हथियार भी हो सकते हैं। जबकि आप....।”

“डोंट वरी....हम दोनों वापस तुम्हारी बाईक पर ही जायेंगे।”

“ल....लेकिन आप अकेली....।”

“मेरे बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा है न आपने?”

“ह....हां....!”

“तो फिर उस पर यकीन करो....जाओ।”

“मैं भी आपके साथ....।”

“अगर तुमने मुझे बहन न कहा होता तो मैं इन्कार नहीं करती। मैंने सिर्फ शर्ट पहन रखी है—और उनसे भिड़ने के दौरान मेरी शर्ट फट भी सकती है। ऐसे में एक बहन होने के नाते मैं किसी भी सूरत में अपने भाई के सामने नंगी होना पसंद नहीं करूंगी।”

“ओह!”

“सो तुम बाहर जाओ और मेरा इंतजार करो।”

इस बार भीमसेन कुछ भी नहीं बोला। रीमा राठौर की बात ठीक लगी थी उसे—सो वह मुड़ा और खिड़की के रास्ते से जैसे आया था—वैसे ही बाहर निकल गया।

उसके कमरे से जाते ही रीमा राठौर का चेहरा सख्त हो उठा। आंखों में कहर उभर आया।

वह दरवाजे की तरफ बढ़ी और उसके हैंडल को पकड़कर अपनी तरफ खींचा।

दरवाजा सिर्फ भिड़ा हुआ था—सो वह फौरन खुल गया।

रीमा राठौर बेझिझक बाहर निकली और हॉल में आ गई।

भीमसेन ने उसे तीन आदमियों के बारे में बताया था कि वे पहले कमरे में हैं। उनके अलावा वहां और कितने थे.....यह उसे पता नहीं था।

मगर उसे गिनती की परवाह नहीं थी।

वह सीधी एक कमरा छोड़ अगले कमरे के दरवाजे के सामने आ खड़ी हुई।

उसे वहां लाने वाले दोनों और एक अन्य कुर्सियों पर बैठे शराब के पैग चढ़ा रहे थे।

दो तो रीमा राठौर की तरफ पीठ करके बैठे थे—जबकि एक दरवाजे की तरफ मुंह किये बैठा था—सो जाहिर था कि सबसे पहले उसी की नजर उस पर पड़नी थी।

रीमा राठौर को देख वह इतनी जोरों से चौंका कि उसके हाथ में थमा पैग उसके हाथ से छूटकर नीचे फर्श पर जा गिरा और खनाक की आवाज के साथ चूर-चूर हो गया।

“अरे क्या बात है....अभी तो शुरू हुआ है—इतनी जल्दी चढ़ भी गई।” उसका साथी बोला।

लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया—बस फटी-फटी निगाहों से खड़ी रीमा राठौर को देखता रहा।

उसे अपने पीछे हैरानी से देखते देख दोनों की गर्दनें भी पीछे घूम गईं।

अपने साथी की तरह उन्हें भी जबरदस्त झटका लगा। मगर उन्होंने स्वयं को सम्भाल लिया।

तुरंत वे कुर्सी छोड़कर खड़े हो गये।

“इतनी जल्दी आजाद कैसे हो गई यह?” तीसरे ने दूसरे से पूछा—“और मैंने तो इसे नंगी करने को कहा था—यह शर्ट कहां से आ गई इसके बदन पर?”

“पता नहीं!” दूसरा हैरानी से बोला—“हमने तो पूरी मजबूती से बांधा था इसे और इसके कपड़े भी वो पड़े हैं।” उसने कोने में पड़े रीमा राठौर के कपड़ों की तरफ इशारा किया।

“पकड़ो इसे।” तीसरा गुर्राया—“अवश्य ही बाहर इसका साथी छुपा है—मैं उसे देखता हूं।”

कहते हुए वह रीमा राठौर की तरफ बढ़ा।

दूसरा भी उसकी तरफ बढ़ा।

पहला भी जो कि अब तक स्वयं को सम्भाल चुका था, उनके साथ था।

तीनों के चेहरों पर लापरवाही थी।

उनकी नजर में वह एक मामूली औरत थी—जिसकी ताकत उन तीनों में से किसी एक के भी बराबर नहीं थी।

मगर....

अपनी गलतफहमी का पता उन्हें तब चला जब वे उसके करीब पहुंचे।

एकाएक ही रीमा राठौर अपने स्थान से उछली और उसकी दोनों टांगें दो के सीनों में जा लगीं।

इस एक्शन में उसकी शर्ट उसकी कमर तक उठ गई थी।

इस एक्शन में अगर उसे कोई आशिक देखता तो वह अवश्य ही अपने होश खो बैठता।

उसकी फ्लाईंग किक इतनी जबरदस्त थी कि दोनों उछलकर पीछे कुर्सियों पर जा गिरे और वहां से टेबल पर। टेबल पर पड़े बोतल और उनके पैग नीचे गिर पड़े।

'ढिशुम....!'

तभी रीमा राठौर का घूंसा तीसरे के चेहरे पर पड़ा।

चीखता हुआ तीसरा अपने साथियों पर जा गिरा।

सिर्फ एक ही चोट से उन्हें पता चल गया कि नाजुक नजर आने वाली वह युवती कितनी खतरनाक और ताकतवर है।

तीनों ने तेजी से स्वयं को सम्भाला और खड़े हो गये।

"यहां एक बार जो आया—बाहर जिन्दा नहीं जा सकता।" तीसरा फुंफकारा—"अगर उस्ताद का हुक्म नहीं होता तो अब तक न केवल हम तेरी सवारी गांठ चुके होते—बल्कि तुझे ऊपर भी पहुंचा चुके होते।"

"घबरा मत मुन्ना।" रीमा राठौर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोली—"मैं वापस जाऊंगी और जिन्दा जाऊंगी। लेकिन अफसोस कि मुझे जाते हुए तुम तीनों नहीं देख पाओगे....क्योंकि उस वक्त तुम लाशों में तब्दील हो चुके होंगे।"

"इसका पता अभी चल जायेगा डार्लिंग....।"

कहते हुए तीसरा बड़े ही खूंखार भाव से उसकी तरफ बढ़ा।

दोनों भी इस वक्त पूरी तरह से सतर्क नजर आ रहे थे।

ऐसा लग रहा था कि वे तीनों मिलकर एक ही बारी में रीमा राठौर को मुर्गी की तरह दबोच लेंगे।

लेकिन....

उन्हें मालूम नहीं था कि वे किससे भिड़ रहे थे।

अगर पता होता तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि वे रीमा राठौर के पैरों में गिर कर माफी मांग रहे होते।

जिसे वे मुर्गी समझ रहे थे—वह शेरनी से भी कई गुना ताकतवर थी। इसका सबूत उन्हें तब लगा—जब उनकी सारी-की-सारी सतर्कता धरी-की-धरी रह गई।

रीमा राठौर अपने दायें पंजे पर पंखे की तरह घूमी और उसकी टांग पूरी शक्ति से तीसरे के जबड़े पर पड़ी।

वह चीखता हुआ पुनः पीछे जा गिरा।

ठीक तभी रीमा राठौर दोनों पर टूट पड़ी।

उसके हाथ-पैर बिजली की-सी गति से चलने लगे।

पहले और दूसरे के मुंह से पीड़ा भरी चीखें इस तरह से निकलने लगीं जैसे बकरे को पीट-पीटकर मारा जा रहा हो।

“बस....!”

तभी तीसरे की दहाड़ती आवाज उभरी।

“बन्द कर नाचना—वर्ना यहीं ढेर कर दूंगा।”

रीमा राठौर का थिरकना वहीं रुक गया।

उसने तीसरे की तरफ देखा, जो कि हाथ में रिवॉल्वर लिये हुए था।

पहला और दूसरा फर्श पर पड़े अपने टूटे-फूटे अंगों को सहला रहे थे।

रिवॉल्वर देख रीमा राठौर के होंठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

“क्या बात है?” वह बोली—“हाथ-पैरों में दम नहीं रहा जो इस खिलौने का सहारा ले रहा है?”

“तू बहुत खतरनाक कुतिया है और ऐसी कुतिया को काबू में करने के लिये ऐसे खिलौनों का सहारा लेना ही पड़ता है। चुपचाप हाथ ऊपर कर ले।”

“और अगर न करूं तो?”

“त....तो मैं ग....गोली चला दूंगा।” कहते हुए उसकी आवाज में बदहवासी-सी उभर आई।

निश्चय ही वह गोली नहीं चलाना चाहता था। क्योंकि वह रीमा राठौर को जगवीर की अमानत समझ रहा था। लेकिन जिस तरह से वह कुछ ही पलों में तीनों पर हावी हो गई थी, उससे वह मजबूरी भी महसूस कर रहा था। बस इसी वजह से उसकी आवाज में बदहवासी उभर आई थी।

रीमा राठौर के होंठों पर अचानक मुस्कान रेंग गई।

इतना तो वह समझ ही चुका था कि हसीन और नाजुक नजर आने वाली उस लड़की पर हाथ-पैरों से काबू नहीं पाया जा सकता। तभी तो मजबूर होकर उसने रिवॉल्वर निकाली थी।

मगर वह तो रिवॉल्वर से भी नहीं डर रही थी।

सो खिसियाकर उसने ट्रिगर दबा दिया।

‘धांय....!’

गोली रिवॉल्वर से निकली—मगर वह रीमा राठौर के सीने में दफन होने की बजाये उसके पीछे सीधी दीवार में जा धंसी।

रीमा राठौर को बस थोड़ा-सा दायीं तरफ हटना पड़ा था।

तीसरे की आंखें आश्चर्य और अविश्वास से फैल गईं।

अपने निशाने पर उसे पूरा भरोसा था। उसे याद नहीं था कि अब से पहले उसका निशाना कब चूका था।

“क्या हुआ?” रीमा राठौर मुस्कुराई—“निशाना चूक गया क्या? चल एक बार फिर ट्राई कर ले।”

दांत किटकिटाते हुए तीसरे ने पुनः ट्रिगर दबाया और दबाता चला गया।

‘धांय....धांय....धांय....!’

पूरी रिवॉल्वर खाली हो गई। मगर एक भी गोली रीमा राठौर को लगती तो क्या उसे छू भी नहीं पाई।

रीमा राठौर कभी दायें झुकती—कभी बायें और गोलियां उसके करीब से निकलकर पीछे दीवार में जा धंसतीं।

पहला और दूसरा हैरानी से आंखें फाड़े रीमा राठौर की फुर्ती को देख रहे थे। उनकी जिन्दगी का यह पहला मौका था जब उन्होंने किसी इंसान को गोलियों से बचते देखा था—वो भी इतने करीब से।

इधर रिवॉल्वर खाली हुई तो तीसरे ने खीझते हुए रिवॉल्वर रीमा राठौर पर दे मारी।

मगर रीमा राठौर ने वहां भी चोट नहीं खाई और एक कुशल फील्डर की तरह रिवॉल्वर को लपक लिया। उसने खाली रिवॉल्वर उंगलियों में घुमाई और क्रूरता से मुस्कुराई—

“तेरी पारी तो खत्म हो गई—अब मेरी पारी शुरू होती है।”

कहने के साथ ही उसने रिवॉल्वर पूरी शक्ति से उसके सिर पर दे मारी।

अचूक निशाना और खतरनाक प्रहार।

रिवॉल्वर की नाल सीधा उसकी कनपटी में जा धंसी।

ऐसे जैसे उसने रिवॉल्वर नहीं बल्कि चाकू फैंका हो।

बुरी तरह से चीख पड़ा वह और अपना हाथ जैसे ही रिवॉल्वर निकालने के लिये उठाया—तभी रीमा राठौर की टांग चल गई।

वार सीधा रिवॉल्वर के दस्ते पर हुआ। और रिवॉल्वर उसके भेजे में आधी से ज्यादा जा धंसी।

वह फर्श पर गिरकर छटपटाने लगा।

उससे निगाहें हटाकर रीमा राठौर ने पहले और दूसरे की तरफ खतरनाक निगाहों से देखा। उसकी आंखों से बरसती मौत देख दोनों के रौंगटे खड़े हो गये। बदन इस तरह कांपने लगे जैसे उन्हें मलेरिया हो गया हो।

रीमा खतरनाक भाव लिये उनकी तरफ बढ़ी।

अपने साथी की खौफनाक हो रही मौत को वो दोनों देख ही रहे थे—अब मौत उन्हें अपनी तरफ बढ़ती नजर आ रही थी।

“ह....हमें माफ कर दो।” एक हाथ जोड़ते हुए घिघियाया।

“किसके लिये उठाकर लाये थे तुम मुझे?” रीमा राठौर उनके सामने आकर फुंफकारी।

“ज....जगवीर के लिये।” दूसरा भर्राये स्वर में बोला।

रीमा राठौर के होंठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

“जगवीर कहां है?” वह बोला।

“ह....हमें नहीं पता।” पहला कांपते स्वर में बोला।

रीमा राठौर झुकी और उसके बालों को पकड़कर खड़ा कर दिया।

“लगता है मरकर ही भौंकोगे तुम।” वह फुंफकारी।

“ह....हम सच कहते हैं....हम....हम नहीं जानते। हमें तो तारे ने कहा था कि नटराज में छः सौ सात कमरे में तु....म ठहरी हो—तुम्हें उठाकर ले आयें।”

“तारा कौन?”

“व....वो।” पहले ने तीसरे की तरफ इशारा किया।

रीमा राठौर ने एक बार तीसरे की तरफ देखा।

ठण्डा पड़ चुका था वह।

उसने पुनः पहले की तरफ देखा और गुर्राई—

“मुझे कैसे उठाया?”

“त....तुम्हारे आने से पहले ह....हमने कमरे में जहरीली गैस छोड़ दी थी।”

“कैसे?”

“चौखट के नीचे से....अ....और हमने खुद गोली खा ली थी—ताकि गैस का असर हम पर न हो, फिर....।” सब कुछ बताता चला गया वो। उसने यह भी बताया कि वो स्थानीय गुण्डे हैं—और तारे के अण्डर काम करते हैं—तारे के बारे में भी उसने यही बताया, साथ ही यह भी कहा कि उसकी पहुंच काफी ऊपर तक थी।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

तारा अब उस स्थिति में था कि उससे कुछ भी नहीं जाना जा सकता था क्योंकि मुर्दे बोलते नहीं।

“कपड़े उठा मेरे।” उसने दूसरे को घूरते हुए कहा।

दूसरा उठा और कोने में पड़े रीमा राठौर के कपड़े उठा लाया।

रीमा राठौर ने पहले को धक्का देकर नीचे गिराया और फिर शर्ट के बटन खोलने लगी।

उसने दूसरे से अपने कपड़े लिये। बड़े इत्मिनान से उन्हें पहना और फिर शर्ट उठा ली।

उसने दोनों को कहर भरी निगाहों से देखा और गुर्राई—“तुम जगवीर के कुत्ते तो हो—लेकिन तुम्हें उसका पता नहीं मालूम इसी वजह से तुम्हारी जान बची है—वर्ना अब तक इसकी तरह तुम भी लाशों में तब्दील हो चुके होते।”

दोनों के चेहरों पर हल्की-सी राहत उभर आई। लेकिन खौफ अभी भी बरकरार था।

“फिर भी....सांप तो हो ही तुम....! क्या पता कब डस लो।” रीमा राठौर बोली—“इलाके की पुलिस के आने तक तुम बेहोश ही रहो तो बेहतर होगा।”

कहने के साथ ही उसने अपने सामने खड़े दूसरे की कनपटी पर घूंसा दे मारा।

दूसरा उछलकर पीछे गिरा।

एकबारगी उसने उठने की कोशिश की—फिर वह अंधेरे की गर्त में डूबता चला गया।

उसी तरह उसने पहले को भी बेहोश कर दिया। उसने जरा भी प्रतिरोध नहीं किया।

दोनों को बेहोश कर रीमा राठौर पीछे खिड़की की तरफ बढ़ी।

खिड़की के करीब आकर उसने उसका पल्ला खोला और आवाज लगाई—

"भैया भीमसेन!"

शीघ्र ही भीमसेन खिड़की के बाहर खड़ा था।

"आ जाओ।"

कहते हुए रीमा राठौर पीछे हट गई।

भीमसेन खिड़की में से कूद कर भीतर आ गया।

भीतर आते ही उसकी नजरें बेहोश पड़े दोनों गुण्डों पर पड़ीं तो वह फौरन बोल पड़ा—

"य....यही थे वे दोनों जो आपको होटल से लेकर आये थे और यह....।" कहते हुए जैसे ही उसने तीसरे को देखा, उसका कलेजा कांप उठा। आवाज वहीं-की-वहीं ठहर गई।

लाश की कनपटी में घुसी रिवॉल्वर बड़ी ही भयानक लग रही थी।

तभी पीछे से रीमा राठौर ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

बुरी तरह से चिहुंक उठा भीमसेन और रीमा राठौर की तरफ देखा।

उसके पसीने से तर-बतर चेहरे को देख रीमा राठौर मुस्कुरा दी।

"कमाल है।" वह बोली—"रीमा राठौर का भाई—और इतने छोटे दिल का मालिक।"

"म....मैंने आज तक किसी की लाश नहीं देखी न....इसलिये।"

हड़बड़ाते हुए भीमसेन ने आस्तीन से मुंह पोंछा।

“अभी एक और है गेट पर।” रीमा राठौर बोली।

“वो भाग गया है।”

“क्या?”

“हां....आप ने जब मुझे बाहर भेजा तो मैंने सोचा कि क्यों न मैं गेट वाले को काबू करके आपका हाथ बटाऊं—मैंने सोच ही लिया—मगर हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उधर जब भीतर से गोली चलने की आवाजें आईं तो मैं और घबरा गया। समझ में नहीं आया कि क्या करूं। आखिर हिम्मत करके मैंने बाहर से भीतर झांका। उसने खिड़की की तरफ इशारा किया—उस वक्त यह आप पर रिवॉल्वर फैंक रहा था—जिसे आपने कैच कर लिया था। आपको कुशल देख मेरी हिम्मत बढ़ी और तब मैं गेटमैन को काबू करने के लिये गेट की तरफ बढ़ा। जब मैंने दूर गेटमैन को देखा तो वह मोबाईल पर किसी से बात कर रहा था—और फिर मेरे देखते-ही-देखते वह गेट खोलकर बाहर निकल गया।”

“ओह!” रीमा राठौर के मुंह से निकला—“फिर तो यहां ठहरना बेकार है।”

“क्या मतलब?”

“यहां मुझे जगवीर के लिये लाया गया था। लगता है भीतर हुई गोलीबारी की आवाज सुनकर गेटमैन ने जगवीर को सूचित कर दिया होगा। ऐसे में वह यहां आने की बेवकूफी हरगिज नहीं करेगा।”

“यह जगवीर वही तो नहीं—जिसका हाथ हाल ही में हुए बम धमाकों में था।”

“हां....उसी जगवीर की तलाश में मैं यहां आई थी।”

“ओह!”

“खैर, कोई बात नहीं....अब वह बचकर नहीं जा सकता। वह जिस भी बिल में छुपा है—मैं उसे निकाल लूंगी।”

भीमसेन कुछ नहीं बोला—बस सिर हिला दिया।

“आओ....चलें।” रीमा राठौर बोली।

दोनों बाहर की तरफ बढ़ गये।

भीमसेन ने ठीक ही कहा था—गेट पर से गेटमैन गायब था।

“आप यहीं रुको....मैं बाईक लेकर आता हूं।”

कोठी से बाहर आकर बोला भीमसेन और उधर बढ़ गया जिधर कि उसने बाईक खड़ी की थी।

रीमा राठौर वहीं गेट के पास खड़ी उसका इंतजार करने लगी।

¶¶

नटराज होटल में रीमा राठौर के कमरे में कुर्सियों पर आमने-सामने रीमा राठौर और भीमसेन बैठे थे।

भीमसेन के चेहरे पर इस वक्त ऐसी चमक थी जैसे उसने कोई बहुत बड़ा किला फतह कर लिया हो।

यह हकीकत ही तो थी।

रीमा राठौर उसके सामने बैठी थी—और उसने उसे अपना भाई बना लिया था। उस रीमा राठौर ने, जिसे सिर्फ साक्षात् देखने के लिये सिर्फ सपने ही लेता रहा था। मगर ऐसा मौका उसे कभी नहीं मिला था और जब मिला भी तो रीमा राठौर ने उससे रूखे स्वर में बात की थी—जबकि अब वह उसके सामने बैठी थी।

तभी वेटर कॉफी की ट्रे उठाये भीतर दाखिल हुआ।

कमरे में अब जहरीली गैस का प्रभाव खत्म हो चुका था।

कॉफी रखकर वेटर चला गया तो रीमा राठौर ने कॉफी का मग उठाया और भीमसेन की तरफ बढ़ाते हुए बोली—“पहले तो सॉरी....।”

“सॉरी—कैसी सॉरी?” कॉफी लेते हुए हैरानी दर्शाई भीमसेन ने।

“दरअसल खाने के दौरान मैं किसी से बात करने की कोशिश कम ही करती हूं। उस वक्त....।”

“मैं तो वो वक्त कब का भूल चुका हूं।” भीमसेन बोला—“अरे इस वक्त की खुशी के नीचे वह दुख कब का दफन हो चुका है।”

“कहां रहते हो?” रीमा राठौर अपना मग उठाते हुए बोली।

“दीनापुर में। देसराज कालोनी में घर है मेरा। बीवी है, दो छोटे-छोटे बच्चे हैं—राहुल और सोना। आप कभी हमारे यहां आना—रानी आपसे मिलकर बहुत खुश होगी। आपको नहीं पता कि आप औरत जात के लिये कितना बड़ा काम कर रही हैं।”

“अच्छा....।” रीमा राठौर बोली।

“हां।”

“वो कैसे?”

“हिन्दुस्तानी औरत के बारे में यही कहा जाता है कि वह हाड़मांस का वो जीव है जो सिर्फ घर की चारदीवारी में ही रखने लायक है। औरत का मतलब....घर का काम काज करने वाली—बच्चे पैदा करने वाली—पति की हर आज्ञा का पालन आंख मूंदकर करने वाली और उसकी सेवा करने वाली होता है। लेकिन आपने तो औरत जात का अर्थ ही बदल दिया है। आपकी देखा-देखी अब औरतें वो काम भी करने लगी हैं जिन पर युगों-युगों से सिर्फ पुरुष का वर्चस्व ही समझा जाता था। आज औरत क्या-क्या कर सकती है—यह आपको देखकर ही पता चलता है।”

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—बस कॉफी पीते हुए मुस्कुरा भर दी।

“आज तक तो मैंने आपकी बहादुरी के किस्से बस पढ़े और सुने थे, मगर आज अपनी आंखों से आपकी बहादुरी देख ली। आज मुझे खुद पर फख्र हो रहा है कि मैं भीमसेन गुप्ता रीमा राठौर का भाई हूं।”

कहते हुए भीमसेन का सीना गज भर चौड़ा हो गया।

रीमा राठौर हौले से हंसी—“कॉफी पियो।” वह बोली।

भीमसेन कॉफी पीने लगा।

कॉफी खत्म होने के पश्चात् रीमा राठौर ने कुर्सी की पुश्त से टेक लगाई और बोली—

“यहां क्या करने आये थे?”

“काम के सिलसिले में। कुछ ऑर्डर लेने थे।”

“कब तक रहोगे?”

“जब तक आप कहें।”

रीमा राठौर मुस्कुराई—“परसों राखी है, और....।”

“मैं समझ गया....परसों मैं अपनी बहन के हाथों से राखी बंधवा कर ही जाऊंगा। भला ऐसा मौका कैसे छोड़ सकता हूं मैं।” कहते हुए उसकी आवाज में जो खुशी टपक रही थी, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

“यहां कहां ठहरे हो?”

“यहीं—इसी होटल में—दो सौ तीन कमरे में।”

और फिर कुछ और बातें करने के पश्चात् भीमसेन सोने के लिये कमरे से निकल गया।

उसके जाने के पश्चात् रीमा राठौर ने कुर्सी की पुश्त से टेक लगाई और आंखें बन्द करके गहरी सोचों में डूब गई।

थोड़ी देर तक वह यूं ही बैठी रही—फिर वह झटके से सीधी हुई और फोन को अपने सामने घसीटकर रिसीवर उठाया और कोई नम्बर डायल करने लगी।

दूसरी तरफ से घण्टी बजने की आवाज आई तो वह दूसरी तरफ से फोन के उठाये जाने का इंतजार करने लगी।

“हैलो....!” शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई—“डी.आई.जी. रेजीडेंस....।”

“डी.आई.जी. साहब कहां हैं?” रीमा राठौर बोली।

“साहब सो रहे हैं....आप....?”

“रीमा राठौर....साहब से फौरन बात कराओ मेरी।” रीमा राठौर अधिकारपूर्ण स्वर में बोली।

“म....गर वो सो रहे हैं और....।”

“फौरन बात कराओ मेरी।”

जिस अंदाज से रीमा राठौर ने फोन पर आदेश दिया था—उसी से पता चलता था कि दूसरी तरफ वाले की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई है। करीब दो मिनट बाद ही फोन पर एक अलसाई आवाज आई।

“हैलो....।”

“डी.आई.जी. साहब।”

“यस....!”

“रीमा राठौर बोल रही हूं—फ्रॉम मुम्बई।”

“ओह आप....! फरमाइये।” दूसरी तरफ से आ रही आवाज में छाया आलस एकदम से दूर हो गया।

“पहचान लिया?”

“अजी आपको कौन नहीं जानता। इतनी बड़ी वकील और कानून की भक्त। आप तो हमारे हिन्दुस्तान की शान हैं। कहिये....कैसे याद किया?”

“इस वक्त मैं आप ही के शहर में हूं।”

“लगता है.....किसी खास वजह से आई हैं आप।”

“हां....गृह मंत्रालय से जगवीर को पकड़ने का काम मुझे सौंपा गया है। और मुझे पता लगा है कि वह यहीं इसी शहर में छुपा हुआ है।”

“ओह नो।”

“ओह यस।”

“कहां छुपा हुआ है वो?”

“यह अभी नहीं पता मुझे—आप फौरन सिटी थाने पहुंच जाइये।”

“इस वक्त?” दूसरी तरफ से हैरानी जताई गई।

“जी हां....!”

“कोई खास बात है क्या?”

“आप वहां पहुंचें—बाकी बातें वहीं करेंगे।”

“ओ.के.!” गहरी सांस छोड़ी गई दूसरी तरफ से—“मैं पहुंच रहा हूं।”

“थैंक्यू।”

कहकर रीमा राठौर ने रिसीवर रखा और कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गई।

वह बेड के करीब आई और सिरहाने को उठाकर उसके नीचे रखी अपनी रिवॉल्वर उठाकर अपनी जीन्स की बैल्ट में फंसाई और ऊपर शर्ट कर ली।

और फिर वह कमरे से बाहर निकल गई।

कुछ ही देर में वह एक टैक्सी में बैठी थाने जा रही थी।

वक्त था रात के साढ़े बारह बजे।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

फोन की घण्टी घनघनाई।

कांशी राणा ने झपटने वाले अंदाज में रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—“हैलो।”

“मैं बोल रहा हूं।”

दूसरी तरफ से जगवीर की आवाज सुनकर कांशी राणा का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

उसी के फोन का ही तो इंतजार कर रहा था वह।

कांशी राणा को जगवीर ने कह जो रखा था कि उसे प्रसाद मिलेगा—और तब कांशी राणा ने भी उससे कहा था कि रीमा राठौर के काबू में आने के पश्चात् वह उसे इत्तला जरूर कर दे।

“शिकार फंसा?” तुरंत बोला कांशी राणा।

“फंसा तो मगर....।”

“मगर क्या?” पूछते हुए कलेजा धड़क गया कांशी राणा का।

“मालूम नहीं क्या हुआ?”

“क्या मतलब?”

“अभी थोड़ी देर पहले मुझे तारे का फोन आया था कि रीमा राठौर आ गई है। तब मैंने उसे कहा कि वह उसे नंगा करके बेड पर बांध दे।”

“फिर?”

“उससे थोड़ी देर बाद ही सुक्खे का फोन आ गया। उस वक्त मैं रास्ते में ही था। उसने कहा कि भीतर गोलियां चल रही हैं—और उसने मुझे वहां न पहुंचने के लिये कहा।”

“उसने बताया नहीं कि गोलियां कैसे चल रही हैं?”

“यह तू जाकर पता कर कि वहां क्या हुआ है। कहीं रीमा राठौर मर तो नहीं गई। या उसने तारे वगैरह को तो नहीं मार डाला।”

“ओह!”

“और अगर वह बच निकली है तो फौरन उसके होटल जा और उसे खत्म कर दे।”

“य....यह क्या कह रहे हो तुम?”

“मैं तेरी भलाई के लिये कह रहा हूं। अगर वह बच गई है और उसे पता चल गया है कि मैंने उसे उठवाया था तो वह सीधा तेरा गिरेबान पकड़ेगी। क्योंकि उसने तुम्हीं से कहा था मुझे ढूंढने के लिये—ऐसे में उसे जरा भी शक नहीं रह जायेगा कि तू मुझसे मिला हुआ है।”

“ओह नो।”

“इसलिये उसका फौरन मरना बहुत जरूरी हो जाता है—तभी तेरी गर्दन बच सकती है।”

“वो तो ठीक है।” कांशी राणा उलझे स्वर में बोला—“मगर एक कमसिन लौंडिया बंधी होने के बाद....वो भी नंगी हालत में बंधी होने के बाद कैसे भाग सकती है।”

“वही तो कह रहा हूं—तू फौरन पहले कोठी जा और पता कर। क्या पता तारे ने अपने ही साथियों को किसी बात पर मार डाला हो—और सुक्खे ने यूं ही घबराकर फोन कर दिया हो।”

“हूं....!” हुंकार भरी कांशी राणा ने—“तुम ठीक कह रहे हो। मैं अभी वहां जाता हूं।”

कहकर उसने रिसीवर रखा और खड़ा हो गया।

उसके जेहन में जगवीर की आखिरी बात ही फिट बैठी। उसे यही सही लगा कि तारे ने ही अपने साथियों पर गोली चलाई है और रीमा राठौर अभी भी वहीं बंधी हुई है और वो भी निर्वस्त्र।

यानि उस को भुनाने का पूरा मौका।

जगवीर द्वारा जो प्रसाद उसे मिलना था, अब उसे लग रहा था कि उसका भोग ही वह लगायेगा और प्रसाद जगवीर को मिलेगा।

उसने टेबल पर रखी अपनी कैप उठाई और उसे सिर पर डालते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

इधर कांशी राणा की जिप्सी अभी थाने के गेट में ही थी कि तभी रीमा राठौर की टैक्सी ऐन उसके सामने आकर रुकी।

कांशी राणा ने फौरन जिप्सी रोकी और टैक्सी की तरफ देखा।

टैक्सी का पिछला दरवाजा खुला और जैसे ही उसने उसमें से रीमा राठौर को बाहर निकलते देखा—उसका कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

वह तो उसके निर्वस्त्र बंधी होने के सपने ले रहा था—मगर वह तो साक्षात् उसके सामने खड़ी थी।

वह भी पूरे कपड़ों में। बस शर्ट के ऊपरी दो बटन खुले हुए थे। वैसे ही जैसे सुबह देखा था उसने।

रीमा राठौर ठण्डे अंदाज में चलते हुए जिप्सी के ड्राइविंग डोर के करीब आई और मुस्कुराई—

“कहीं जा रहे हो इंस्पेक्टर?”

“हां....हां....!” हड़बड़ाया कांशी राणा—“राऊंड पर जा रहा हूं।”

“बड़ी ही सख्त ड्यूटी है पुलिस की।”

“क्या करें....ड्यूटी तो ड्यूटी है।” गहरी सांस छोड़ी कांशी राणा ने—“न रात को नींद....न दिन का चैन....।”

“मैं तो होटल में तुम्हारा इंतजार ही करती रही।” रीमा राठौर बोली—“याद है न मैंने दस बजे का वक्त दिया था तुम्हें—और तुम आये ही नहीं। क्यों?”

“मैं....मैं तो....।”

“आओ....अन्दर चलकर बात करते हैं।”

इन्कार करने का तो सवाल ही नहीं था। सो उसने वहीं से जिप्सी बैक कर दी और परिसर में ले जाकर रोक दी।

उसके जिप्सी से बाहर निकलने तक रीमा राठौर भी उसके करीब पहुंच गई।

दोनों साथ-साथ चलते हुए कांशी राणा के ऑफिस में पहुंचे।

“बैठो....!” रीमा राठौर स्वयं एक कुर्सी पर बैठते हुए बोली।

कांशी राणा टेबल के पहलू से निकलकर अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

“हां....अब बोलो—क्यों नहीं पहुंचे तुम होटल में?”

“मैं गया तो था....मगर वहां आप नहीं मिलीं।” हल्की-सी हड़बड़ी में बोला कांशी राणा।

“किसी से पूछा कि मैं कहां हूं?”

“ह....हां....रिसेप्शनिस्ट से।”

“मगर वो तो कह रही थी कि उससे कोई पुलसिया मिलने नहीं आया।”

“वो झूठ बोल रही है। मैं उसके मुंह पर कह सकता हूं।”

“अच्छा।”

“मैं सच कहता हूं। आपके यहां से जाते ही मैंने अपने सारे मुखबिरों को खबर कर दी—। मगर रात नौ बजे तक कोई भी सूचना नहीं मिली मुझे और....।”

“फिर झूठ....।”

“यह सच है।”

“बकवास कर रहे हो तुम। और तुम्हारा झूठ यहीं से पकड़ा जाता है कि रिसेप्शन पर औरत नहीं, आदमी की ड्यूटी है।”

कांशी राणा का चेहरा पसीने-पसीने हो गया।

“म....गर मैं....।”

“जगवीर कहां है?” इस बार रीमा राठौर का स्वर सख्त था।

“म....मुझे क्या पता....मैं तो....।”

“बकवास बन्द करो अपनी!” फुंफकारी रीमा राठौर—“तुम जानते हो कि जगवीर कहां है और तुम उससे मिले हुए हो।”

“त....तुम मुझ पर इल्जाम लगा रही हो।”

“अभी तो मैं तुम्हें जूते भी लगाऊंगी।” रीमा राठौर की आंखों में कहर बरस उठा।

“ऐ....।” झटके से खड़ा हो गया कांशी राणा—“क्या समझती हो तुम खुद को—मेरे ही थाने में मुझे धमका रही हो—जानती हो एक इंस्पेक्टर को धमकी देने के जुर्म में मैं तुम्हें अभी इसी वक्त गिरफ्तार कर सकता हूं।”

“रीमा राठौर को गिरफ्तार करोगे तुम! मुझे गिरफ्तार करोगे!”

“करूंगा....ऐसे....।” कांशी राणा ने चुटकी बजाई।

“तो करो....देखती हूं कितना दम है तुम में।” रीमा राठौर जहर उगलते हुए बोली—“मगर एक बात दिमाग में अभी से बिठा लो....मुझे तो तुम गिरफ्तार करोगे सो करोगे—तुम खुद को गिरफ्तार समझो।”

“क्या मतलब?” हड़बड़ाया कांशी राणा।

“अभी पता चल जायेगा।”

इधर रीमा राठौर ने बात पूरी की, उधर डी.आई.जी. ने ऑफिस में प्रवेश किया।

रात के इस वक्त डी.आई.जी. को अपने सामने देख बुरी तरह से बौखला उठा कांशी राणा—साथ ही उसका हाथ अपने आप ही उसके माथे पर जा पहुंचा।

डी.आई.जी. के स्वागत में रीमा राठौर भी खड़ी हो गई।

डी.आई.जी. ने बड़ी गर्मजोशी से रीमा राठौर से हाथ मिलाया और बोला—

“खैरियत तो है मिस रीमा राठौर जो रात के इस वक्त....।”

“खैर ही तो नहीं है डी.आई.जी. साहब।” रीमा राठौर गम्भीरता से बोली।

“मैं समझा नहीं।”

“जब कानून के रक्षक ही कानून को कुचलने में लग जायेंगे तो खैर कहां से रहेगी—जब खाकी वर्दी वाले गुण्डे-मवालियों से मिल जायेंगे तो खैर कहां रहेगी। जब पुलिस वाले पब्लिक का दर्द बांटने की बजाये दर्द देने वालों के तलवे चाटने लगेंगे तो खैर कहां रहेगी।”

“य....यह आप क्या कह रही हैं मिस रीमा राठौर....आप पुलिस पर इल्जाम लगा रही हैं।”

डी.आई.जी. की आवाज में नाराजगी थी।

“एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है डी.आई.जी. साहब—और आपके तालाब की गंदी मछली यह है।”

रीमा राठौर ने उंगली भाले की तरह कांशी राणा की तरफ सीधी की।

“आप जानती हैं मिस रीमा राठौर कि आप क्या कह रही हैं? आप एक पुलिस ऑफिसर पर इल्जाम लगा रही हैं।”

“सारी दुनिया जानती है कि रीमा राठौर किसी पर तभी उंगली उठाती है जब उसे पूरा यकीन हो जाता है कि वो वाकई में गुनहगार है।”

“क्या गुनाह किया है इसने?”

“जगवीर को छुपा रखा है इसने। जगवीर जिस पर सैंकड़ों मासूमों के खून का इल्जाम है। जिसके पीछे पूरी इण्डिया की पुलिस हाथ धोकर पड़ी है—उसी जगवीर को यह जनाब पनाह दिये हुए हैं।”

“य....यह झूठ है।” कांशी राणा ने रीमा राठौर की बात का विरोध किया—“मैं स....च कहता हूं सर कि मैं उसे जानता तक नहीं।”

बात करते-करते कांशी राणा ने होंठ भींच लिये—क्योंकि डी.आई.जी. का हाथ ऊपर उठ गया था, जो उसे चुप रहने का हुक्म था।

“आप....” डी.आई.जी. की निगाहें रीमा राठौर के चेहरे पर फिक्स हुईं—“इंस्पेक्टर कांशी राणा पर बहुत बड़ा इल्जाम लगा रही हैं। क्या इतना बड़ा आरोप लगाने का आपके पास कोई प्रमाण है—या कोई ऐसी दलील है जो यह मानने को बाध्य करती हो कि आप सही कह रही हैं।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—

“इस शहर में मेरी आमद पूरी तरह से गुप्त रखी गई थी—ताकि जगवीर को किसी भी सोर्स से पता न चल सके कि सरकार को उसके यहां छुपे होने का पता चल चुका है। सरकार को यह तो पता था कि वह इसी शहर में कहीं छुपा है—लेकिन यह नहीं पता था कि वह कहां छुपा है। सो मजबूरन मुझे दोपहर को कांशी राणा से मिलना पड़ा—मैंने इसे अपनी आमद के बारे में बताया—और दस बजे तक अपनी रिपोर्ट पेश करने को कहा। लेकिन यह नहीं आया—हां, जगवीर के आदमी मुझे बेहोश कर मुझे अगवा करके जरूर ले गये।”

“ओह!”

“मगर मैं बच निकली। जगवीर को मेरे निकल जाने का पता चल चुका था—सो वह मेरे पास नहीं आया....वर्ना अब तक तो वह ऊपर पहुंच चुका होता....।”

रीमा राठौर ने डी.आई.जी. को सारी बात बताई—लेकिन उसने बीच में भीमसेन का नाम नहीं आने दिया। फिर वह बोली—

“अब आप खुद ही सोचिये—जगवीर को मेरे यहां आने का पता कैसे लगा? यहां तक कि उसे होटल और कमरे का नम्बर भी पता था। जिसमें मैं ठहरी हुई थी। जबकि इसका पता सिर्फ और सिर्फ इसे ही था।”

उसने कांशी राणा की तरफ उंगली सीधी की।

कांशी राणा के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगीं।

अगर रीमा राठौर अकेली होती तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि वह उसे गोली मार देता—लेकिन डी.आई.जी. की वहां मौजूदगी से वह कुछ नहीं कर सकता था—साथ ही उसे अब यह भी पता चल गया था कि वह लड़की कोई छोटी-मोटी हस्ती नहीं है—बल्कि बहुत ऊंची चीज है। वर्ना डी.आई.जी. खुद चलकर थाने नहीं आता।

रीमा राठौर की बात डी.आई.जी. को ठीक लगी। तभी तो उनकी सख्त निगाहें सीधा कांशी राणा के चेहरे पर जा टिकी थीं।

“मिस रीमा राठौर क्या कह रही हैं?” वे सख्त स्वर में बोले।

कांशी राणा ने जोरो से थूक सटकी।

“म....मैं बेगुनाह हूं सर....मुझ पर आरोप लगाया जा रहा है। हो सकता है सैंटर से ही किसी ने जगवीर को खबर कर दी हो।”

“बेशक ऐसा हो सकता है।” रीमा राठौर बोली—“लेकिन किसी को यह नहीं पता था कि मैं नटराज होटल के छह सौ सात नम्बर में ठहरूंगी। सिवाये तुम्हारे।”

कांशी राणा की बोलती बन्द।

“यू आर सस्पैंडिड इंस्पेक्टर।” डी.आई.जी. के स्वर में सख्ती उभर आई—“तुम जैसे देशद्रोही की हमारे विभाग को कोई जरूरत नहीं।” उन्होंने रीमा राठौर की तरफ देखा—“आप अपने ढंग से इससे पूछताछ कर सकती हैं मिस रीमा राठौर—पूरी पुलिस फोर्स जगवीर को पकड़ने के लिये आपको तैयार मिलेगी।”

“थैंक्यू सर!” रीमा राठौर ने बड़ी अदा से सिर हिला दिया। साथ ही उसके होंठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई।

¶¶

थाने के टॉर्चर सैल में कांशी राणा लोहे की कुर्सी पर बैठा था।

उसके सामने एक अन्य कुर्सी पर रीमा राठौर बैठी थी। डी.आई.जी. रीमा राठौर को कांशी राणा से मालूमात हासिल करने का जिम्मा सौंप गये थे....और यह कह गये थे कि पता चलते ही वह एस.पी. को फोन कर दे। वे एस.पी. को कह देंगे कि उसके हुक्म का पालन किया जाये।

इस तरह कुछ वक्त के लिये उस थाने की एस.एच.ओ. रीमा राठौर बन गई थी—और कांशी राणा इस वक्त उसके सामने बैठा था।

वर्दी अब कांशी राणा के बदन पर नहीं थी। उसे तो डी.आई.जी. ने अपने सामने ही उतरवा लिया था—और अब वह पायजामे-कुर्ते में था।

कांशी राणा की रंगत इस वक्त पीली पड़ी हुई थी। मगर भीतर-ही-भीतर वह स्वयं को मजबूत कर रहा था।

वह जानता था कि अगर उसने जुबान खोल दी तो उसकी नौकरी तो जायेगी ही—साथ में उसे वही सजा मिलेगी जो जगवीर को मिलेगी। सो नौकरी बचाने और सजा से बचने के लिये उसने अपने होंठ बन्द रखने का फैसला कर लिया था।

रीमा राठौर को वह अभी भी एक नाजुक और कमसिन हसीना समझ रहा था। जिसकी मार को उसने अपने बदन पर ऐसा समझना था मानो वह उसे फूलों से मार रही हो।

हां....इतना जरूर समझ गया था कि वह कोई मामूली छोकरी नहीं—बल्कि बहुत पहुंची हुई चीज है।

उसके सामने रीमा राठौर बिल्कुल शांत बैठी उसके चेहरे पर हो रहे परिवर्तनों को देख रही थी—जैसे वह उसके चेहरे को देखकर ही उसके मन के भावों को पढ़ रही हो।

आखिर वह कुर्सी से उठी और उसके सामने आ खड़ी हुई।

“देखो कांशी राणा!” वह बड़े ही शांत भाव में बोली—“जगवीर एक ऐसा मुजरिम है—जिसे आज नहीं तो कल पकड़ ही लिया जायेगा—और जब भी वह पकड़ा गया

तो मेरी प्राथमिकता यही रहेगी कि मैं उसे गोली मार दूं। क्योंकि ऐसे शख्स को जेल की रोटी खिलाना भी सरकार का नुकसान होगा। अब ऐसे आदमी को, जिसकी मौत ने उसे देख लिया है, तुम बचाने की कोशिश कर रहे हो। चन्द रुपयों की खातिर तुमने अपनी नौकरी को तो दांव पर लगाया ही साथ ही अपनी जिंदगी भी दांव पर लगा दी। मेरी मानो तो उसका पता बता दो—मैं अभी भी तुम्हें और तुम्हारी नौकरी को बचा सकती हूं। बस तुम उसका पता बता दो कि वह कहां छुपा है।"

"मैं नहीं जानता।"

थूक सटकते हुए बोला कांशी राणा।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और टॉर्चर रूम में बांह फैलाते हुए बोली—

"यह टॉर्चर सैल देख रहे हो न कांशी राणा—न जाने इसी सैल में तुमने कितने मुजरिमों के मुंह खुलवाये होंगे। मतलब यह कि यहां पड़े हर औजार का पता है तुम्हें कि किसे किस तरह प्रयोग किया जाता है। और यह भी पता है कि किस मुजरिम पर कौन-सा औजार यूज करने से वह जल्द ही जुबान खोल देगा। क्या यह अच्छा लगेगा कि अब वही औजार तुम पर आजमाये जायें? मैं अभी भी कहती हूं—बता दो कि जगवीर किस जगह पर छुपा है?"

"म....मैं सच कहता हूं—मैं कुछ नहीं जानता।" कांशी राणा बोला—"और एक बात तुम भी गांठ बांध लो।"

"क्या?"

"तुमने मुझ बेगुनाह को फंसाया है—मुझे नौकरी से निकाला है। और मैं वो शख्स हूं जो अपना बदला लेकर ही चैन की सांस लेता है। देख लेना—बहुत जल्द मैं तुमसे ऐसा बदला लूंगा कि तुम्हारे दांतों तले पसीना आ जायेगा।"

रीमा राठौर का चेहरा एकदम से सख्त हो उठा। आंखों में अंगारे दहकने लगे।

"मैं कहती हूं कि तूने यह शब्द क्यों बोले कांशी राणा!" वह गुर्राई—"इसलिये न कि मेरे दिल में यह बात बैठ जाये कि तु सचमुच बेगुनाह है। मगर तू जानता नहीं कि रीमा राठौर क्या चीज है? मैं वो बला हूं जो सामने वाले के हलक में हाथ डालकर उसके भीतर के बन्द दरवाजों को खोल दे। तू चीज ही क्या है। रीमा राठौर के सामने तो बड़े-बड़े सूरमाओं की जुबान खुल जाती है।"

“जुबान उन्हीं की खुलती है जिसने अपने भीतर गुनाह छुपा रखे होते हैं—और मेरे भीतर ऐसा कुछ भी नहीं। जब मैं कुछ जानता नहीं तो बताऊंगा कहां से।”

“खैरियत जमा रख—तू बोलेगा—और सब कुछ बोलेगा। तू बतायेगा कि जगवीर कहां है। तू यह भी कबूल करेगा कि तू उसका यार है—तू यह भी भौंकेगा कि तूने उससे कितना रुपया खाया है। सब कुछ बोलेगा तू।”

“कोशिश करके देख ले।”

“वो तो करूंगी ही। तुझ जैसे कुत्ते पर कौन-सा पट्टा सूट करेगा—मैं यह जानती हूं।” रीमा राठौर गुर्राई—“अभी तक तो मैं तेरे साथ नर्मी से पेश आ रही थी—अब तुझे पता चलेगा कि रीमा राठौर क्या चीज है।”

कहने के साथ ही उसने उसकी कनपटी पर घूंसा दे मारा।

कांशी राणा पहले तो हड़बड़ाया—फिर उसकी गर्दन एक तरफ लुढ़क गई।

रीमा राठौर का नपा-तुला घूंसा इतनी ही जोर से लगा था कि वह ज्यादा-से-ज्यादा पांच मिनट ही बेहोश रहे।

उसे बेहोश कर रीमा राठौर उसके कपड़े उतारने लगी।

करीब पांच मिनट बाद जब कांशी राणा को होश आया तो स्वयं को कुर्सी पर नंगा बंधा देख पहले तो हड़बड़ाया फिर उसके होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“लगता है—!” वह रीमा राठौर को देखते हुए बोला—“मर्दों को नंगा देखने का बहुत शौक है तुम्हें।”

“देखने का ही नहीं—उनके साथ बिछने का भी शौक है।” रीमा राठौर मुस्कुराई—“अब तक पता नहीं कितने ही मर्दों को खा चुकी हूं मैं। अगर तू जुबान खोलने के ऐवज में मेरी सवारी करने की शर्त रखता तो यकीनन मैं हां कर देती।”

कांशी राणा ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला—फिर होंठ बंद कर लिये।

रीमा राठौर मुस्कुराई और उसके करीब आकर उसके कंधों पर हाथ रखते हुए बोली—

“अब तुम देखो मेरा कमाल....।”

“वो तो देख ही रहा हूं।” कांशी राणा उसकी फीगर को देखते हुए बोला, जो कि उसके झुकने से कांशी राणा की आंखों के ऐन सामने बाहर को चमक रही थीं।

“यह कमाल तो कुछ भी नहीं—अभी तो कमाल देखोगे— वो भी गर्दन झुका कर देखोगे।”

कहकर रीमा राठौर सीधी हुई और एक तरफ बढ़ गई।

उससे तीन-चार कदम ही दूर फर्श पर एक दस्ताना पड़ा था, जो कि डॉक्टर यूज करते हैं। उसके साथ में एक पुड़िया पड़ी थी।

रीमा राठौर ने दस्ताना उठाकर अपने दायें हाथ पर चढ़ाया, फिर पुड़िया उठा ली।

कांशी राणा धड़कते दिल से उसको देखे जा रहा था।

रीमा राठौर उसकी तरफ मुड़ी और उसके सामने आकर पुड़िया उसके सामने कर उसे खोला।

पुड़िया में रखी वस्तु को देख न चाहते हुए भी कांशी राणा का कलेजा दहल उठा।

लाल पिसी हुई मिर्च थी पुड़िया में।

“लाल मिर्च है यह।” बोली रीमा राठौर—“ज्यादा नहीं....सिर्फ पचास ग्राम है। अगर यह पचास ग्राम मिर्च तुम बर्दाश्त कर गये तो मैं विश्वास कर लूंगी कि तुम बेगुनाह हो। और हां—पानी नहीं है अन्दर—इसलिये जब भी जुबान खोलना—बर्दाश्त की हद टूटने से पांच मिनट पहले खोलना, क्योंकि पानी आने में पांच मिनट तो लग ही जायेंगे।”

कहने के साथ ही रीमा राठौर ने दायें हाथ से मिर्ची की चुटकी भरी और उसकी जांघों के जोड़ पर फैंक दी।

“अब नजरें झुकाओे, और गर्दन भी नीची करके कमाल देखो।” रीमा राठौर कुटिलता से हंसी।

कांशी राणा कुछ नहीं बोला—बस होंठों को भींचे नीचे देखने लगा।

कुछ पलों तक तो उसे कुछ खास असर नहीं हुआ—फिर धीरे-धीरे मिर्च ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया।

पहले तो उसे हल्की-सी हड़कन शुरू हुई—फिर धीरे-धीरे उसे लगने लगा कि वहां आग लग रही हो।

पैर कुर्सी के पायों के साथ बंधे हुए थे उसके और हाथ हत्थों से—सो वह न तो जांघों को भींच सकता था न ही हाथों से मसल सकता था।

नतीजा—वह अपने कूल्हे हिलाने लगा।

"लगता है अभी पूरा मजा नहीं आया—लो—अब आ जायेगा मजा।"

कहने के साथ ही रीमा राठौर ने चुटकी भर मिर्च और वहां गिरा दी।

मिर्च की जलन के कारण उसको पसीना आने लगा—और जितना पसीना बढ़ता—जलन उतनी तेज होती जाती।

पहले तो कांशी राणा के मुंह से सी-सी की आवाजें निकलीं। फिर कराहें निकलीं और फिर वह जोर-जोर से चीखने लगा।

बुरी तरह से तड़प रहा था वह—लेकिन बंधा होने की वजह से कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

उसे ऐसा लग रहा था कि मानो उसकी जांघों के बीच की जगह तेजाब से जला दी गई हो।

"क्यों....मजा आ रहा है न?" उसे चीखते देख कुटिलता से हंसी रीमा राठौर—"अभी तो शुरूआत है—अभी तो सिर्फ एक-डेढ़ ग्राम मिर्च ही गिरी है—असली मजा तो तब आयेगा जब पूरी-की-पूरी मिर्च तुम्हारे ऊपर होगी।"

"न....हीं....प....पानी डालो....म....मैं....मर रहा हूं....प्लीज....।"

"सॉरी....पानी दूर है....।"

"मैं मर जाऊंगा।"

"तेरे जैसों का मर जाना ही बेहतर है।"

"आ....आ....ह....।"

चीखते हुए वह सिर इधर-उधर झटकने लगा। अपने कूल्हे बार-बार उचकाने लगा।

लेकिन मिर्च का प्रभाव कम होने की बजाये और भी उग्र होता चला गया।

तीन मिनट....सिर्फ तीन मिनट में ही टूट गया वह।

कांशी राणा जो अपने भीतर को पूरी तरह से दृढ़ किये हुए था—वह हल्के से टॉर्चर से ही टूट गया।

“अ....आ....पानी....मैं बताता हूं....सब कुछ बताता हूं....प्लीज....पानी डालो....वर्ना मैं जल जाऊंगा।”

रीमा राठौर दरवाजे की तरफ मुड़ी और ऊंचे स्वर में बोली—“पानी लाओ।”

कहकर उसने पुनः कांशी राणा की तरफ देखा—“पानी आने में पांच मिनट लगेंगे—तब तक बताओ—कहां है जगवीर?”

“प...पांच मिनट में तो मैं जल जाऊंगा।”

“ऐसे ही बातें करते रहोगे तो देर होती रहेगी। इसलिये जल्दी बताओ।”

“वो पुराने घर में है—आ....ह....उफ....।”

“पुराना घर कहां है?”

चीखते-कराहते कूल्हे उछालते हुए कांशी राणा ने बताया।

“पुराने घर में कहां छुपा है वो?”

कांशी राणा ने बेसमेंट में जाने का रास्ता बताया।

“और कौन-कौन है वहां पर?”

“पांच-छः साथी हैं उसके आ....ह....सी....सी....” सब कुछ बताता चला गया वह।

जब रीमा राठौर ने उससे सब कुछ जान लिया तो वह अपने स्थान से हिली और उसके पीछे चली गई।

कांशी राणा ने गर्दन पीछे घुमाई तो पलभर के लिये तो वह सारी जलन ही भूल गया।

उसके पीछे पानी की बाल्टी पड़ी थी—साथ में सरसों का तेल भी पड़ा था।

यानि बाहर की तरफ मुंह करके उसने उसे दिखाने के लिये ही हांक लगाई थी—जबकि पानी और तेल उसने पहले से ही तैयार कर रखा था।

रीमा राठौर ने पहले मिर्च की पुड़िया को बंद करके नीचे रखा—फिर दस्ताना उतारा—फिर उसने बाल्टी उठाई और दूसरे हाथ से तेल की बोतल उठाकर उसके सामने आ खड़ी हुई।

उसने बोतल नीचे रखी—फिर बाल्टी को उठाकर ऊपर किया और धीरे-धीरे उसकी जांघों के बीच पानी डालने लगी।

पानी बर्फीला था—तभी तो कांशी राणा को पूरी ठण्डक का अहसास होने लगा था।

उसकी जलन खत्म होने लगी।

"यह तो एक ट्रेलर था कांशी राणा।" रीमा राठौर बाल्टी में से पानी गिराते हुए बोली—"रीमा राठौर के पास तो ऐसे-ऐसे नुस्खे हैं कि चट्टान भी मुंह खोल दे। रहा न घाटे में। नौकरी भी गई—सजा भी मिली और मैं भी नहीं मिली। अगर पहले ही हां कर देता तो आज की रात तू मेरे साथ कलाबाजियां खा रहा होता।"

कांशी राणा कुछ नहीं बोला—बस सी-सी करता रहा।

पानी डालकर रीमा राठौर ने तेल की बोतल उठाई और उसे उलटकर आधी से ज्यादा खाली कर दिया।

"यह तेल तुझे राहत पहुंचायेगा। अब तू यहां आराम कर, मैं चली तेरे यार को खत्म करने।"

कहकर वह वहां से हटी और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

कुछ ही देर में वह कांशी राणा के ऑफिस में टेबल पर बैठी एस.पी. का नम्बर डायल कर रही थी।

¶¶

करीब पौन घण्टे बाद पुलिस की दो गाड़ियां उस स्थान पर रुकीं, जहां पर कि कांशी राणा ने अपनी जिप्सी रोकी थी जब वह जगवीर से मिलने गया था।

दोनों गाड़ियों के पीछे एम्बेसडर थी—और उसके पीछे एक खुली जिप्सी जिसमें कि एस.पी. के बॉडीगार्ड थे।

जिप्सी के रुकते ही उसमें से पांचों बॉडीगार्ड बाहर कूदे और एम्बेसडर को चारों तरफ से घेर लिया।

तभी एम्बेसडर का पिछला दरवाजा खुला और उसमें से पहले एस.पी. बाहर निकला, फिर उसके पीछे-पीछे रीमा राठौर बाहर आई।

आगे की गाड़ियों से हथियारबन्द सिपाही कूद-कूदकर बाहर निकलने लगे।

"पुराना घर किधर है?" रीमा राठौर ने एस.पी. से पूछा—साथ ही इधर-उधर गर्दन घुमाई।

मगर सिवाये अंधेरे के कुछ भी नजर नहीं आया।

"उधर!" एस.पी. ने दाईं तरफ इशारा किया।

रीमा राठौर ने सिपाहियों की तरफ देखा और कड़े शब्दों में बोली—

"पुराने घर में जगवीर छुपा हुआ है—उसे किसी भी सूरत में गिरफ्तार करना है—और अगर वह भागने की कोशिश करे तो बेशक उसे गोली से उड़ा दिया जाये।"

"एक्शन!" तभी एस.पी. ने आदेश दिया।

तुरंत सभी सिपाही मुड़े और पुराने घर की तरफ बढ़ने लगे।

रीमा राठौर ने एस.पी. के बॉडीगार्ड की तरफ देखा और बोली—

"तुम अपने ऑफीसर की बॉडी को गार्ड करो—मैं चली।"

"किधर....!" हड़बड़ाया एस.पी.।

"रीमा राठौर को सिर्फ हुक्म देने की आदत नहीं—उसे फील्ड में रहना ज्यादा अच्छा लगता है।"

"मगर आप....।"

"खातिर जमा रखिये—जगवीर की मौत का सेहरा आप ही के सिर बंधेगा।"

रीमा राठौर हंसी और बॉडीगार्डों के बीच में से निकलकर अंधेरे में गायब हो गई।

एस.पी. वहीं खड़ा सोचता रहा कि वह क्या करे....क्या न करे।

आखिर उसने भी एक्शन में आने का मन बनाया और वह भी पुराने घर की तरफ बढ़ गया।

बॉडीगार्ड उसे निरंतर घेरे हुए थे।

¶¶

'पिंक....पिंक....!'

वॉकी-टॉकी ने आवाज लगाई तो युवती के साथ चिपक कर सो रहे जगवीर की आंखें फौरन खुल गईं।

जगवीर के साथ-साथ युवती की भी आंखें खुल गईं।

जगवीर उससे अलग हुआ और अपने करीब ही पड़े वॉकी-टॉकी को उठाकर उसका बटन दबाया और वॉकी-टॉकी को मुंह के पास ले जाते हुए बोला—

"क्या बात है?"

"खतरा....।" दूसरी तरफ से घबराई आवाज आई—"पुलिस पुराने घर को चारों तरफ से घेर रही है।"

सुनकर जगवीर पहले तो बुरी तरह से चौंका, फिर उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

उसे समझते देर नहीं लगी कि कांशी राणा पुलिस के हत्थे चढ़ गया है और उसने सब कुछ भौंक दिया है।

"खत्म कर दो सभी को।" वह गुर्राया—"एक भी बचकर नहीं जाना चाहिये।"

"लेकिन वे तादाद में हमसे कई गुना ज्यादा हैं।" आवाज आई।

"मगर उन्हें तुम्हारी पोजीशन का तो नहीं पता।"

"मगर हम....।"

“बकवास नहीं हरामखोर—मुकाबला करो।”

कहकर उसने वॉकी-टॉकी बन्द किया और उसे परे फैंककर खड़ा हो गया।

“आप खड़े क्यों हो गये सरकार?” युवती बैठते हुए बोली।

“यहां से हमारा दाना-पानी उठ चुका है।” जगवीर खूंटी पर लटके अपने कपड़ों की तरफ बढ़ते हुए बोला।

“ओह!”

“और....!” जगवीर खूंटी पर अपनी पैंट की जेब में से रिवॉल्वर निकालते हुए बोला—“तेरा दाना-पानी इस दुनिया से उठ चुका है।”

“न....हीं....।” हौले से चीखी युवती।

रिवॉल्वर ने उसकी रंगत को एकदम से पीला कर डाला था।

“सॉरी डार्लिंग—जगवीर को फालतू के बोझ लादने का कोई शौक नहीं। मैं जहां भी जाऊंगा—मुझे वहां नई छोकरी हासिल हो जायेगी।”

“न....हीं....म....मुझे मत मारो।”

“खून करना तो मेरी आदत है। अगर यह आदत छूट गई तो मैं फौरन मर जाऊंगा—और मौत से मुझे बहुत डर लगता है—इसलिये विदा।”

कहकर उसने ट्रिगर दबा दिया।

‘धांय....!’

उस छोटे से कमरे में गोली की आवाज ऐसे गूंजी जैसे एटमबम फटा हो।

गोली सीधी युवती की छाती में जा समाई और वह पीछे को गिरकर छटपटाने लगी।

जगवीर ने रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारी और फिर अपने कपड़े उतारकर उन्हें पहनने लगा।

कपड़े पहनकर उसने रिवॉल्वर पैंट की जेब में डाली और एक एमरजेंसी लाईट उठाकर सामने दीवार की तरफ बढ़ा।

दीवार के करीब आकर उसने एमरजेंसी लाईट उधर उठाई और दीवार को इस तरह से देखने लगा जैसे वह वहां पर कुछ ढूंढ रहा हो।

शीघ्र ही उसकी निगाहें एक उभरी हुई ईंट पर जा टिकीं।

उसने बायें हाथ से लाईट को पकड़ा और दाहिना हाथ ऊपर कर उस ईंट को भीतर की तरफ दबाया।

तुरंत प्रतिक्रिया हुई।

दीवार एक तरफ हल्की-सी गड़गड़ाहट के साथ हटने लगी। और सामने एक लम्बी सुरंग नजर आने लगी।

एमरजेंसी लाईट सम्भाले वह उस सुरंग में दाखिल हुआ और आगे बढ़ने लगा।

सुरंग में सीलन भरी बदबू फैली हुई थी—मगर जगवीर को जैसे उसकी कोई परवाह नहीं थी।

वह आगे बढ़ता जा रहा था।

¶¶

‘धांय....!’

एक तेज धमाका हुआ।

“आ....ह....!”

गोली एक सिपाही की बांह में जा घुसी और राईफल उसके हाथों से छूटकर नीचे गिर पड़ी।

उसके साथ चल रहे सिपाहियों ने फौरन स्वयं को नीचे गिरा लिया।

अभी उन्होंने ढंग से पोजीशन भी नहीं ली थी कि उन पर हमला शुरू हो गया था।

जख्मी हुए सिपाही ने भी स्वयं को नीचे गिरा लिया था।

ठीक तभी—

‘रेट....ट....ट....ट....!’

गोलियों की बाढ़ एक झाड़ी के पीछे से निकली और नीचे गिरे पड़े सिपाहियों के ऊपर से होते हुए निकल गई।

अपने साथी को गोली लगते देख अन्य सिपाही तैश में आ गये—और उन्होंने भी अपनी राईफलों के मुंह खोल दिये।

'धांय....धांय....धांय।'

दोनों तरफ से गोलियां चलने लगीं।

तभी पुराने घर में से भी गोलियां चलने लगीं।

दोनों तरफ से गोलियों का आदान-प्रदान होने लगा।

गोली-बारी के बीच-बीच में इंसानी चीखें भी उठ रही थीं—और वे चीखें गुण्डों की थीं।

जैसे ही कोई चीख उठती—सिपाहियों में एक नया जोश भर जाता।

'धांय....धांय....' और 'रेट....रेट....' की आवाजों से चारों दिशायें दहल रही थीं।

सिपाही गोलियां चलाने के साथ-साथ पुराने घर की तरफ भी रेंगते हुए बढ़ रहे थे।

ज्यादा देर नहीं लगी उन्हें दुश्मन पर काबू पाने में।

सिर्फ दस मिनट लगे।

दस मिनट में सारा खेल खत्म हो गया।

पुराने घर से गोलियों की बाढ़ आनी बन्द हो गई थी।

"जवानों—आगे बढ़ो।" तभी एस.पी. की आवाज वहां गूंजी।

अपने अफसर की आवाज सुन कई सिपाही पोजीशनों से निकले और पुराने घर की तरफ भागे।

टार्चों की रोशनी से वहां रोशनी की कई लकीरें नाचने लगीं।

कुछ ही देर में पुराने घर पर पुलिस का कब्जा हो गया।

एस.पी. अपने गार्डों से घिरा पुराने घर में प्रविष्ट हुआ और सीधा उस दीवार के सामने आ खड़ा हुआ—जहां पर कि पहले कांशी राणा खड़ा था।

रीमा राठौर ने वहां रास्ता पैदा करने का तरीका उसे बता ही दिया था—सो दो मिनट तक वह दीवार को देखता रहा—और फिर उसके मुंह से हैरत भरी सिसकारी निकल गई जब उसने वहां रिक्त स्थान पैदा होते देखा।

गार्डों की टार्चें तुरंत रिक्त स्थान की तरफ उठ गईं।

मगर सामने कोई खतरा पेश नहीं आया।

“आओ।” कहते हुए एस.पी. ने भीतर कदम रखा और सीढ़ियां उतरने लगा।

पीछे-पीछे कतार में उसके बॉडी गार्ड—और उनके पीछे सिपाही उतरने लगे।

शीघ्र ही एस.पी. बेसमेंट में था।

मगर पंछी उड़ चुका था।

बेसमेंट में युवती की लाश के साथ कुछ अन्य सामान पड़ा था।

मगर उड़ चुके पंछी ने बता दिया था कि वह किस दिशा में उड़ा है।

सुरंग सामने नजर आ रही थी।

एस.पी. ने गार्डों की तरफ देखे बिना ही एक हाथ एक तरफ फैलाया और बोला—“टॉर्च—।”

तुरंत एक टॉर्च उसके फैले हाथ पर आ थमी।

“आगे बढ़ो।” वह टॉर्च की रोशनी सुरंग में फैंकते हुए बोला—“जगवीर इसी रास्ते से भागा है।”

तुरंत तीन गार्ड सुरंग में प्रवेश कर गये—जिनमें से दो के हाथों में टॉर्च थी।

“तुम लोग यहां की तलाशी लो।” एस.पी. ने सिपाहियों को आदेश दिया—“और ऊपर जाओ।”

कहकर वह भी टॉर्च सम्भाले सुरंग में दाखिल हो गया।

उसके पीछे उसके दोनों गार्ड भी दाखिल हुए और आगे बढ़ने लगे।

¶¶

जगवीर की सुरंग यात्रा का अन्त करीब आठ मिनट बाद एक कुएं के तल में हुआ।

वह एक सूखा कुआं था—जिसकी एक साईड में वो सुरंग थी जिसमें से कि वो अभी-अभी निकला था।

कुएं में सूखे पत्ते तथा सूखी घास के तिनकों के अलावा ईंट-रोड़े बिखरे हुए थे।

तभी उसे अपने करीब ही हल्की-सी सरसराहट सुनाई दी।

न चाहते हुए भी जगवीर का कलेजा धड़क उठा—और उसी के साथ ही उसकी निगाहें सरसराहट की तरफ घूम गईं। ठीक तभी सूखे पत्तों में से एक फन ऊपर उठा।

एमरजैंसी लाईट में उस काले नाग को देख जगवीर का कलेजा मुंह को आ गया—जो अपना फन उठाये उसे ही घूर रहा था। और उसके ऐन सामने मौत खड़ी थी जो किसी भी वक्त उस पर झपट सकती थी।

मगर मौत झपट नहीं पाई उस पर—उससे पहले ही जगवीर ने स्वयं को सम्भाल लिया और रिवॉल्वर निकालकर बिना कोई वक्त गंवाये गोली चला दी।

'धांय....!'

गोली नाग के फन को कुचलती हुई निकल गई—और उसी के साथ ही फन जैसे उठा था—वैसे ही नीचे गिर पड़ा।

राहत भरी गहरी सांस छोड़ी उसने और एमरजैंसी लाईट में पूरे कुएं में देखा कि कोई और जहरीला जीव तो नहीं वहां पर। कोई भी नजर नहीं आया उसे।

पूरी तरह से आश्वस्त होकर उसने कुएं की दीवारों पर निगाह मारी तो अपने पीछे उसे सीढ़ी नजर आई।

दीवार में सरिये फिट करके ऊपर को जाती सीढ़ियां बनाई गई थीं।

उसने रिवॉल्वर जेब में डाली—एमरजैंसी लाईट का कुण्डा मुंह से पकड़ा और फिर एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ने लगा।

शीघ्र ही वह आखिरी सीढ़ी पार कर कुएं की मुंडेर पर गया और फिर एमरजेंसी लाईट को दांतों से निकालकर हाथ में पकड़ते हुए मुंडेर से धरती पर छलांग लगा दी।

"आ गये मेरे मियां मिट्ठू।"

तभी उसके पीछे से आवाज उभरी।

बिजली की-सी गति से चौंकते हुए वह पीछे मुड़ा।

सामने रीमा राठौर खड़ी थी।

"मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी मेरे राजा।" रीमा राठौर बड़ी अदा से बोली।

"कौन हो तुम?" अपनी हैरत को भीतर-ही-भीतर दबाने की कोशिश करते हुए गुर्राया जगवीर।

"वही—जो बिस्तर पर बंधी तुम्हारे आने का इंतजार कर रही थी—मगर तुम हरजाई नहीं आये—सो मजबूरन मुझे यहां आना पड़ा।"

जगवीर की आंखें फट पड़ीं।

"र....री....मा....रा....ठौर।" उसके होंठों से अस्फुट स्वर निकला।

"यस माई डियर जगवीर।" रीमा राठौर कूल्हों पर हाथ टिकाते हुए बोली—"हैरान हो रहे हो मुझे यहां देखकर कि मुझे कैसे पता चल गया कि तुम यहां से निकलोगे। ऐसे पुराने घरों के बारे में मैंने काफी जानकारियां एकत्र कर रखी हैं जिनमें मैकेनिज्म होता है। मैं जानती हूं जिस पुराने मकान में ऐसे गुप्त बेसमेंट वगैरह होते हैं—वहां बाहर निकलने के लिये गुप्त दरवाजे भी होते हैं। और ऐसे रास्ते कुएं—खंडहर या गुफा वगैरह ही होते थे—वो भी वहां से काफी दूर—सो मैं पुराने घर में तुम्हें ढूंढने की बजाये इधर-उधर निकल पड़ी। अंधेरे में मुझे यह कुआं भी दिखाई नहीं दिया था मगर तुम्हारी चलाई गोली की आवाज जब कुएं से गूंजती हुई बाहर निकली तो सीधा मेरे कानों में पड़ी। और मैं सीधी इधर आई और जब मैंने नीचे झांका तो मेरे सपनों का राजकुमार मुंह में एमरजेंसी लाईट पकड़े ऊपर आ रहा था। और....।"

बात अधूरी ही रह गई उसकी—तभी जगवीर ने रिवॉल्वर निकाली और बिना किसी चेतावनी के ट्रिगर दबा दिया।

गोली रीमा राठौर की तरफ लपकी।

मगर वह तो बात करने के दौरान ही सतर्क थी—सो बिजली की-सी फुर्ती से एक तरफ छलांग लगा दी।

गोली उसके कान को हवा देती हुई निकल गई।

अभी रीमा राठौर नीचे गिरी ही थी कि जगवीर ने पुनः फायर कर दिया।

'धांय....!'

दंग रह गया वह।

रीमा राठौर के बदन ने अभी जमीन को छुआ ही था जब उसने फायर किया था। मगर वह जमीन को छूते ही पुनः उछल गई—जैसे किसी गेंद को जमीन पर फैंका गया हो और वह पुनः जमीन से लगते ही उछल गई है।

किसी इंसान के बस का काम नहीं हो सकता था यह।

मगर वह तो अपनी आंखों से देख रहा था—वो भी एक इंसान को।

ऐसे में हैरत तो होनी ही थी उसे।

और जब तक वह हैरत के समुद्र से बाहर निकलता—रीमा राठौर का जिस्म पुनः उछला और उसके पैर की जबरदस्त ठोकर जगवीर के रिवॉल्वर वाले हाथ पर पड़ी।

जगवीर को ऐसा लगा मानो उसके हाथ से कोई पहाड़ आ टकराया हो।

इतना जबरदस्त वार तो किसी मर्द का नहीं सहा था उसने—और वह तो एक औरत थी।

रिवॉल्वर उसके हाथ से छिटककर परे जा गिरी।

जब तक वह सम्भलता—रीमा राठौर की टक्कर उसकी छाती पर पड़ी।

जगवीर उछलकर पीछे जा गिरा और एमरजेंसी लाईट उसके ऊपर आ गिरी।

जगवीर को ऐसा लगा जैसे उसके सीने की पांच-सात हड्डियां चटक गई हों।

अब उसे अहसास हो रहा था कि वह मामूली-सी नाजुक-सी हसीना कोई छोटी-मोटी चीज नहीं—बल्कि बहुत बड़ी तोप थी।

अपने दर्द की परवाह न करते हुए वह तेजी से उठा और पागल भैंसे की तरह रीमा राठौर की तरफ झपटा।

और जैसे ही वह रीमा राठौर के करीब पहुंचा—रीमा राठौर उछली और हवा में ही अपनी टांगें विपरीत दिशा में फैला लीं।

जगवीर उसकी टांगों के नीचे से आगे को निकल गया और हड़बड़ाते हुए रुककर जैसे ही पलटा—

"ठाक....!"

रीमा राठौर की लात उसके मुंह पर पड़ी।

जगवीर चीखता हुआ उछलकर पीछे जा गिरा।

उसका मुंह एक ही वार से लहूलुहान हो गया।

फिर भी उसने स्वयं को सम्भाला और जैसे ही उसने खड़ा होने की कोशिश की—उसका शरीर ढीला पड़ा तथा निगाहें रीमा राठौर के हाथ में थमी रिवॉल्वर पर टिक गईं, जिसकी इकलौती आंख उसी को घूर रही थी।

"यूं तो तू तड़प-तड़पकर मरने के लायक है।" रीमा राठौर फुंफकारी—"जितने बेगुनाहों का तूने खून बहाया है उतनी ही बार तू फांसी पर चढ़ाया जाये—तो भी सजा पूरी नहीं होगी तेरी—मगर मेरे पास इतना वक्त नहीं कि मैं तुझे तेरे गुनाहों के हिसाब से सजा दूं....सो....।"

उसने बात अधूरी छोड़ दी। और उसकी बात को पूरा किया उसकी रिवॉल्वर ने।

'धांय....धांय....!'

एक के बाद एक दो शोले उगले उसकी रिवॉल्वर ने।

पहली गोली सीधी उसके माथे में जा धंसी और दूसरी गोली पहली गोली के ठीक ऊपर लगी।

क्या मजाल जो जगवीर के माथे में हुए सुराख में एक सूत का भी इजाफा हुआ हो।

वह वहीं पीठ के बल पलटा और पसर गया।

गहरी सांस छोड़ते हुए उसने रिवॉल्वर अपनी जीन्स की बैल्ट में फंसाई और एक तरफ गिरी पड़ी एमरजेंसी लाईट को उठा लिया, जो कि अभी भी जल रही थी।

वापस जाने के लिये उसने मुंह पुराने घर की तरफ किया—और फिर एक बार कुएं की तरफ देखा।

ठीक तभी कुएं में से पीली लाईट बाहर को निकली।

तुरंत वह कुएं के करीब आई और कुएं में झांका।

मुस्कुरा पड़ी वह।

एस.पी. सरिये की सीढ़ियां चढ़ता ऊपर आ रहा था और उसके पीछे तीन और सीढ़ियां चढ़ रहे थे। एक कुएं के तल में खड़ा टॉर्च की रोशनी ऊपर फैंक रहा था।

रीमा राठौर हटकर एस.पी. का इंतजार करने लगी।

शीघ्र ही इंतजार खत्म हुआ।

एस.पी. बाहर आया—और जैसे ही उसकी नजर रीमा राठौर पर पड़ी—वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

“अ....आप यहां....?”

“यस....!” रीमा हंसी—“मैं यहां....।”

“आ....प यहां कैसे पहुंच गईं?” हैरानी से बोला एस.पी.।

रीमा राठौर ने उसे बताया—फिर जगवीर की लाश की तरफ इशारा करते हुए बोली—

“आपका मुजरिम!”

एस.पी. ने जगवीर की लाश की तरफ देखा और फिर रीमा राठौर की तरफ हैरानी से देखने लगा।

“अ....आपने मारा उसे?”

“नहीं....इसे तो आपने मारा है—पूरा आधा घण्टा गोलीबारी हुई—तब जाकर यह मरा। मैं तो सिर्फ खानापूरी के लिये आपके साथ थी।”

एस.पी. पहले तो हड़बड़ाया, फिर मुस्कुरा पड़ा—

“थैंक्यू।”

“इट्स ओ.के.—अब प्लीज मुझे वापस मेरे होटल में छोड़ दें—आप जो चाहे करते रहें।”

एस.पी. ने तुरंत सिर हिलाया और बोला—

“मैं खुद आपको छोड़ने जाऊंगा—इस तरह मैं ज्यादा-से-ज्यादा देर आपके साथ रहने का गर्व तो पा सकूंगा।”

रीमा राठौर बोली कुछ नहीं—बस मुस्कुरा दी।

¶¶

होटल नटराज के कमरा नम्बर छह सौ सात में रीमा राठौर और भीमसेन थे।

भीमसेन कुर्सी पर बैठा था और रीमा राठौर उसके सामने खड़ी थी।

पंजाबी सलवार-कमीज में वह बहुत जंच रही थी और हैरत की बात तो यह थी कि उसने अपने सिर को दुपट्टे से ढांप रखा था।

उसके हाथों में थाली थी जिसमें कि चावल के कुछ दाने केसर के अलावा एक राखी पड़ी थी।

लाल धागों से बनी हुई थी वह राखी।

भीमसेन ने सिर पर तौलिया रखा हुआ था।

रीमा राठौर ने बड़े प्रेम से पहले केसर का टीका भीमसेन के माथे पर लगाया, फिर चावल के दाने लगाये और फिर थाली में से राखी निकालकर थाली को टेबल पर रखा और बड़े ही स्नेह से भीमसेन की बढ़ी कलाई पर वह धागा बांधकर राखी को चूम लिया।

“भगवान करे मेरे भाई की उम्र हजारों-हजारों साल हो।”

उसने भीमसेन को दिल से दुआ दी।

भीमसेन ने भी उस राखी को चूमा—फिर रीमा राठौर ने अपने भाई का मुंह मीठा किया और हाथ आगे बढ़ाते हुए बोली—

“बहन का नजराना।”

भीमसेन ने जेब में हाथ डाला और एक तह किया हुआ चैक निकालकर उसके हाथ पर रख दिया।

“गरीब भाई बस इतना ही दे सकता है बहना।”

कहते हुए उसकी आवाज भर्रा गई।

रीमा राठौर ने चैक खोलकर देखा।

पचास हजार का चैक था वह—बियरर चैक।

“य....ह....कम हैं?” वह हैरानी से बोली।

“तुम्हारी हैसियत के अनुसार तो कुछ भी नहीं।”

“प्यार से भाई का दिया हुआ आशीर्वाद भी बहन के लिये करोड़ों अरबों का होता है। और तुम तो आशीर्वाद के साथ-साथ पचास हजार भी दे रहे हो।”

“भगवान करे मेरी बहन को किसी की भी नजर न लगे। वो अपने हर मकसद में कामयाब होती रहे और लोगों की भलाई करती रहे—कानून की सेवा करती रहे, और भारत माता की रक्षा करती रहे।”

“काफी लम्बा-चौड़ा आशीर्वाद दे दिया बहन को।”

रीमा राठौर हंसी।

भीमसेन भी हंस पड़ा।

“खैर....अब तो हमारा बहुत करीबी रिश्ता बन गया है भैया—जब कभी भी तुम्हें मेरी जरूरत महसूस पड़े—बस एक आवाज लगा देना। तुम्हारी बहन दौड़ी चली आयेगी।”

भीमसेन ने सिर हिला दिया।

¶¶

“बस....!” रीमा राठौर की आवाज भर्रा गई—“वही सिर्फ एक ही बार राखी बांध पाई मैं उसे....दोबारा राखी बांधने का मौका ही नहीं दिया उसने, उससे पहले ही वो....।”

रीमा राठौर की आवाज भर्रा कर चुप हो गई।

और सिकन्दर ठाकरे—

वह हैरानी से आंखें फाड़े रीमा राठौर को देखे जा रहा था।

उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह वही चुलबुली, सैक्सी, मर्दमार युवती है जिसे वह रोज देखा करता था—या कोई और है।

उसे वह कोई और ही नजर आ रही थी।

जिस रीमा राठौर को वह वर्षों से जानता था—वह तो पत्थर-दिल औरत थी—जिसके दिल में भावनाओं के लिये कोई जगह नहीं थी। रिश्ते-नाते उसके लिये कुछ भी नहीं थे।

अगर उसका किसी के साथ कोई रिश्ता था तो कानून के साथ।

मगर इस वक्त वह जिस रीमा राठौर को देख रहा था—वह तो कोई और ही नजर आ रही थी। वह वो नजर आ रही थी जिसके सीने में दिल भी था—और उस दिल में भावनायें और संवेदनायें भी थीं।

तभी तो वह अपने उस भाई के लिये रो रही थी जो उसका मुंहबोला भाई था।

ऐसे में जाहिर था उसे हैरत तो होनी थी।

कार की सीट पर बैठे-बैठे ही उसने पहलू बदला और कार ड्राईव कर रही रीमा राठौर के चेहरे को देखते हुए बोला—“फिर क्या हुआ?”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी—उल्टे हाथ से अपनी धुंधला रही आंखों को साफ किया और एक बार फिर वह अतीत की गहराइयों में गोते लगाने लगी।

उसके करीब छह महीने बाद एक दिन....।

¶¶

कमरे में ट्यूबलाईट का दूधिया प्रकाश फैला हुआ था और कमरे के बीचों-बीच पड़े शानदार डीलक्स साईज के डबलबैड पर रीमा राठौर पेट के बल लेटी थी। उसकी दोनों कोहनियां अपने सिरहाने पर टिकी हुई थीं और हाथों में कोई पत्रिका थी जिसे वह पढ़ रही थी।

उसके बदन पर कपड़े का एक रेशा तक नहीं था।

पार्वती उसकी पीठ पर किसी सुगंधित तेल की मालिश कर रही थी।

मालिश करने के साथ-साथ पार्वती उसके संगमरमरी बदन को ललचाई निगाहों से देखे जा रही थी।

हालांकि सैंकड़ों बार उसने रीमा राठौर के एक-एक अंग की अपने हाथों से मालिश की थी मगर उसका दिल कभी नहीं भरा। हर बार जब भी वह मालिश करती तो उसका दिल यही करता कि वह हमेशा-हमेशा उसके बदन पर हाथ फेरती रहे।

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

तभी बैड की पुश्त पर रखे फोन की घण्टी घनघना उठी।

पत्रिका पर से निगाहें हटाकर रीमा राठौर ने गर्दन ऊपर की तरफ टेढ़ी करके फोन को देखा—और फिर एक हाथ ऊपर उठाकर फोन को उठाकर अपने सामने रख रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोली—

“हैलो....।”

“मैं भीम....तुम्हारा भाई।”

दूसरी तरफ से भीमसेन की भर्राई आवाज सुनकर रीमा राठौर चौंक उठी।

"खैरियत तो है भैया?" वह माऊथपीस में बोली।

"तुमने कहा था बहना कि जब भी मुझे तुम्हारी जरूरत पड़े—आवाज लगा लेना। आ....आज तुम्हारे इस बदकिस्मत भाई को तुम्हारी जरूरत पड़ गई है बहन....।"

"क्या हुआ? कुछ बताओ तो सही।"

"तुम फौरन यहां आ जाओ। तुम्हारी जरूरत मुझे ही नहीं....पूरे दीनापुर को है मेरी बहन। प्लीज....।"

रीमा राठौर ने गर्दन दाईं तरफ मोड़कर वाल क्लॉक की तरफ देखा।

रात के साढ़े दस बज रहे थे।

"ओ.के.....मैं कल दोपहर तक तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगी।"

"मैं स्टेशन पर....!"

"मैं अपनी गाड़ी में ही आऊंगी....तुम्हारे घर का पता मालूम है मुझे—मैं पहुंच जाऊंगी।"

"मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।"

"मगर बात क्या है?"

"तुम....आओगी तो तुम्हें सब पता चल जायेगा।"

दूसरी तरफ से भीमसेन की आवाज आई और फिर सम्बंध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ते हुए रिसीवर क्रेडिल पर टिकाया और सीधी होकर बैड की पुश्त से टेक लगा ली। पार्वती ने चुपचाप अपने हाथ पीछे खींच लिये।

"क्या बात है मैडम....किसका फोन था?" वह उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोली।

"मेरे भाई का....!" रीमा राठौर ने उसे फोन पर हुई बात बताई, फिर बोली—"मेरे जाने की तैयारी करो....। मेरा भाई मुसीबत में है—इसलिये मेरा फौरन वहां पहुंचना

बहुत जरूरी है।”

पार्वती कुछ नहीं बोली—बस बैड से उतर गई।

रीमा राठौर भी बैड से उतरी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

और फिर—

पौन घण्टे बाद रीमा राठौर अपनी सैन्ट्रो ड्राईव करती अपनी आलीशान कोठी के आलीशान गेट से बाहर निकल रही थी।

¶¶

छह महीने पहले जिस भीमसेन को राखी बांधी थी, वो भीमसेन रीमा राठौर को कहीं से भी नजर नहीं आ रहा था।

जिस भीमसेन की सूरत उसके जेहन में थी—अब वह काफी बदली हुई थी।

उसका खिला रहने वाला चेहरा मुरझाया हुआ था—आंखें भीतर को धंसी हुई थीं—बाल बिखरे हुए थे, शेव बढ़ी हुई थी—और ऐसा लग रहा था जैसे वह कई महीनों से नहाया न हो। गर्दन पर जमी हुई मैल स्पष्ट नजर आ रही थी।

रीमा राठौर को देखकर पहले तो वह उसे खाली-खाली निगाहों से देखता रहा—फिर वह आगे बढ़ा और उससे लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगा।

रीमा राठौर चुप रही। बस उसकी पीठ पर थपकी देती रही।

उसने पूछा नहीं कि क्या हुआ? उसकी हालत ऐसे कैसे हो गई?

उसका चेहरा ही बता रहा था कि उसके साथ बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है।

वह अनर्थ क्या था—यह उसे मालूम नहीं था।

इसलिये उसने खुलकर भीमसेन को रो लेने दिया—ताकि उसके भीतर का बवाल बाहर आ जाये—उसके पश्चात् ही उसने उससे पूछने का मन बनाया हुआ था।

सुबह आठ बजे वह दीनापुर पहुंची थी और भीमसेन के घर पहुंचते-पहुंचते उसे साढ़े आठ बज गये थे।

मगर वह हैरान थी कि अभी तक किसी चाय वाले की भी दुकान तक नहीं खुली। बाजार बन्द मिले उसे—हां—लोगों को इधर-से-उधर जाते अवश्य देखा था उसने—यानि कोई कर्फ्यू वगैरह तो लगा नहीं था—फिर दुकानें क्यों नहीं खुलीं? यही सोचकर वह हैरान हो रही थी। आखिर यह सोचकर कि भीमसेन से पूछेगी—उसने अपना ध्यान उधर से हटा लिया।

काफी देर तक भीमसेन रीमा राठौर से लिपटकर फूट-फूटकर रोता रहा। आखिर वह उससे अलग हुआ और अपनी आंखों को पोंछते हुए वहीं फर्श पर बैठ गया।

“बैठो बहन!” वह एक कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए बोला और गहरी सांस छोड़ दी।

रीमा राठौर कुर्सी खींचकर उसके सामने बैठ गई।

“क्या हुआ?” वह गम्भीर स्वर में बोली।

“सब....सब बर्बाद हो गया।” भीमसेन की आवाज एक बार फिर भर्रा गई—“कुछ भी नहीं बचा।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और अपने घुटनों पर कोहनियां टिकाकर आगे को झुकते हुए गम्भीर लहजे में बोली—“तुम्हारी आवाज....तुम्हारा चेहरा ही बता रहा है भैया कि तुम्हें बहुत गहरी चोट लगी है। मगर अगर ऐसे ही रोते रहोगे तो मुझे क्या बताओगे। इसलिये पहले खुद पर काबू पाओ—फिर मुझे बताओ।”

भीमसेन ने पुनः अपनी आंखें पौंछीं और दो-तीन गहरी सांस छोड़कर खुद को काबू में करने की कोशिश की, फिर बोला—

“तुम्हारी भाभी—भतीजा-भतीजी....कुछ भी नहीं बचा बहना....इस दुनिया में तुम्हारा यह भाई बिल्कुल अकेला रह गया है....।”

“क्या?” बुरी तरह से चौंक उठी रीमा राठौर—“क्या हुआ उन्हें? कोई एक्सीडेंट या....।”

“रैना बद्री की हवस का शिकार हो गई और....।”

“यह बद्री कौन है?”

"बद्रीनाथ है उसका नाम। इस शहर में कानून की नहीं.....उसकी हुकूमत चलती है। बहुत बड़ा गुण्डा है वो और बहुत ऊंची राजनैतिक पहुंच रखता है।"

"ओह! मगर उससे तुम्हारी क्या दुश्मनी हो गई जो....।"

"मेरी क्या दुश्मनी हो सकती है उससे। मैं तो एक सीधा-सादा व्यापारी हूं—जिसकी दुनिया अपने बीवी-बच्चों तक ही सीमित थी।"

"तो फिर....!"

"वो तो ऐसा पिशाच है जिसकी नजर में जो भी औरत चढ़ गई, बस समझ लो रात को वह उसके बिस्तर पर पहुंच गई।"

"ओह नो।" रीमा राठौर ने हैरानी जाहिर की।

"मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूं। साथ ही बद्रीनाथ के बारे में भी बताता हूं।"

कहकर भीमसेन ने गहरी सांस छोड़ी और अपनी दुखभरी दास्तान रीमा राठौर को बताने लगा।

"करीब साल भर पहले बद्रीनाथ का आतंक शुरू हुआ था यहां। उससे पहले वह सत्ता पक्ष की पार्टी का एक नेता था जो कि अपने बाहुबल और गुण्डागर्दी के बल पर अपने नेता की चुनावों में मदद करता था, और बदले में उसे अपने नेता से ढेर सारी दौलत मिलती थी।

इस शहर में उसकी दहशत का डंका तब बजा—जब उसने अपने ही नेता को मार डाला। हकीकत का तो किसी को नहीं पता था, मगर बाद में जब विपक्षी नेता ने वकील से उसका केस लड़ा तो हकीकत सामने आ गई।

उस रोज वह अपने नेता, जो कि सत्ता पक्ष का एम.एल.ए. था, के साथ एक नृत्य समारोह में था।"

¶¶

स्टेज पर गायक हाथ में माईक पकड़े गाना गाने के साथ-साथ नाच भी रहा था। और एक अर्धनग्न युवती चमकीले और झिलमिल करते कपड़े पहने उसके साथ नाच रही थी।

साफ पता चल रहा था कि युवती को नाचना बिल्कुल नहीं आता। हां—उत्तेजक मुद्रायें बनाने में वह माहिर थी। बस यूं कह लो कि नाचने के नाम पर वह वहां मौजूद लोगों की भावनाओं को भड़का रही थी।

गायक जाना-माना था सो उसे देखने के लिये लोग भी बहुत आये थे।

सबसे आगे विशिष्ट व्यक्ति कुर्सियों पर विराजमान थे—जिनमें एम.एल.ए. रामरतन भी था।

रामरतन के करीब ही एस.पी., डी.एस.पी. और कुछ गणमान्य व्यक्ति थे।

रामरतन के ऐन पीछे वाली लाईन में उसके ऐन पीछे बद्रीनाथ बैठा था।

उस वक्त बद्रीनाथ का दबदबा तो बहुत था दीनापुर में मगर वह वहां का अभी बादशाह नहीं बना था।

रामरतन बड़ी तन्मयता से युवती के नृत्य को देख रहा था। गाने के बोल की तरफ उसका कोई ध्यान नहीं था और न ही वह युवती के पैरों को देख रहा था। वह तो बस उसके थिरकते अंग-प्रत्यंग को देख रहा था।

वह ही क्या—वहां मौजूद हर व्यक्ति की नजर उस युवती पर थी, जो अपनी उत्तेजक मुद्राओं से लोगों को हलकान कर रही थी।

रामरतन के पास बैठे एस.पी. और डी.एस.पी. की निगाहें भी युवती पर थीं।

और जैसे ही गाना खत्म हुआ, लोगों का शोर गूंजने लगा। लोग सीटियां बजाने लगे।

उसी शोर में एक हल्की-सी 'पिट' की आवाज उभरी। और उसी के साथ ही रामरतन की गर्दन एक तरफ लटक गई।

उसकी खोपड़ी के पृष्ठ भाग से भल-भल करके खून बहने लगा।

गर्दन लटकी और सीधा एस.पी. के कंधे पर जा लगी।

एस.पी. ने चौंककर रामरतन की तरफ देखा।

तब तक रामरतन के कंधे—उसकी शर्ट खून से लथपथ हो चुके थे।

इतने लोगों के बीच एम.एल.ए. का खून!

पलभर में ही शोर मच गया।

एस.पी. ने बिना कोई वक्त गंवाये बद्रीनाथ को दबोच लिया।

चूंकि वह ऐन रामरतन के पीछे बैठा था—और गोली रामरतन की खोपड़ी के पृष्ठभाग में लगी थी—सो सारा संदेह उसी पर जाता था।

स्टेज पर हो रहा कार्यक्रम फौरन बन्द कर दिया गया।

लोग वहां से भागने लगे—और पुलिस ने उस जगह को चारों तरफ से घेर लिया।

कुर्सी पर अभी भी रामरतन की लाश पड़ी थी—और बद्रीनाथ को चार सिपाही ऐसे दबोचे हुए थे जैसे उन्हें डर हो कि कहीं वह भाग न जाये।

और बद्रीनाथ ऐसे बैठा हुआ था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

¶¶

'खट्....खट्....खट्....।'

बूटों की आवाजों ने बद्रीनाथ की निगाहें हवालात के सींखचों वाले दरवाजे की तरफ घुमा दीं।

उस वक्त वह हवालात में बैठा हुआ था।

चेहरा अभी भी निश्चिंत था—जैसे कुछ हुआ ही न हो—जबकि वह जानता था कि इस वक्त शहर में क्या हो रहा होगा।

रामरतन के समर्थक पुलिस के कान खा रहे होंगे और जलूस निकालकर 'बद्रीनाथ को फांसी दो' के नारे लगा रहे होंगे। साथ ही लोग यह भी कह रहे होंगे कि बद्रीनाथ तो रामरतन का आदमी था—ऐसे में वह उसका खून कैसे कर सकता है। कुल मिलाकर शहर के हालात विस्फोटक थे, यह वह जानता था।

तभी हवालात के बंद दरवाजे के सामने एस.पी. के साथ इंस्पेक्टर और तीन हवलदार आकर रुके।

"दरवाजा खोलो।" इंस्पेक्टर ने एक हवलदार को आदेश दिया।

तुरंत उस हवलदार ने चाबी से ताला खोला और हवालात का दरवाजा खोलकर एक तरफ हट गया।

हवालात में पहले एस.पी. प्रविष्ट हुआ, उसके पीछे इंस्पेक्टर और उसके पीछे से हवलदार घुसे जो कि आगे बढ़कर बद्रीनाथ के दायें-बायें खड़े हो गये।

एस.पी. उसके सामने आकर रुका और गम्भीर स्वर में बोला—"इसमें तो कोई शक नहीं बद्रीनाथ कि यह खून तुमने ही किया है?"

"बेशक!" बद्रीनाथ बेखौफ बोला—"इतनी जल्दी भला और कौन कर सकता है खून....। रामरतन के पीछे मैं ही तो बैठा हुआ था।"

"तो तुम कबूल करते हो कि खून तुमने ही किया है?"

"हां....करता हूं।"

एस.पी. के चेहरे पर हैरानी उभरी। वह तो यह सोच रहा था कि उसे सख्ती बरतनी पड़ेगी उसका मुंह खुलवाने के लिये। मगर वह तो पहले ही सब बताने के लिये तैयार बैठा था।

"क्यों?" स्वयं की हैरानी पर किसी तरह से काबू पाते हुए एस.पी. ने पूछा—"क्यों किया तुमने ऐसा? जबकि तुम रामरतन के सबसे विश्वसनीय आदमी थे।"

बद्रीनाथ के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई। मगर वह तुरंत गम्भीर हो गया।

"चार साल पहले का बदला लिया है मैंने।" कहते हुए उसकी आवाज में विषाद भर आया।

"क्या मतलब?"

"मेरी बहन के साथ रेप किया था उस कुत्ते ने—और मेरी बहन को आत्महत्या के लिये मजबूर कर दिया था—लेकिन मरने से पहले मेरी बहन ने मुझे उस कुत्ते के बारे में बता दिया था।"

"ओह!"

"बस मैं मौके की तलाश में जुट गया। मैं जानता था कि मैं उसे सीधे तौर पर नहीं मार सकता—क्योंकि उसे मारने के लिये उसके पास पहुंचना जरूरी था। सो मैंने

पहले दीनापुर में अपनी बदमाशी का दबदबा बनाया—और इस तरह मैं रामरतन की आंखों में चढ़ गया। नेताओं को ऐसे बदमाशों की जरूरत होती ही रहती है। इस तरह मैं उसके करीब पहुंचा और फिर धीरे-धीरे मैं उसका इतना बड़ा विश्वास पात्र बन गया कि वह मुझ पर आंख मूंदकर विश्वास करने लगा। अब बस मुझे किसी बढ़िया मौके की तलाश थी....।"

"और वह मौका आज मिला तुम्हें?"

"नहीं....मौका तो आज भी नहीं था। इस तरह तो मैं उसको कई बार मार चुका होता।"

"तो फिर बेमौके क्यों मारा तुमने उसे?"

"तैश में आ गया था मैं—स्टेज पर जो लड़की नाच रही थी—उसे वह पाना चाहता था। इसके लिये उसने बांह पीछे करके मुझे इशारा भी कर दिया था। बस मैं बर्दाश्त नहीं कर सका—मुझे लगा कि वह मुझसे मेरी बहन को मांग रहा है।"

"ओह!"

"बस मैंने रिवॉल्वर निकाली और उसकी खोपड़ी में गोली उतार दी।"

"मगर मुझे तो गोली की आवाज नहीं आई।"

"मैं हमेशा रिवॉल्वर पर साइलैंसर लगाकर रखता था।"

"कहां है वो रिवॉल्वर?"

"वो तो मैंने तुरंत पीछे फैंक दी थी।"

एस.पी. ने गहरी सांस छोड़ते हुए इंस्पेक्टर को देखा और बोला—

"मर्डर वेपन की तलाश की जाये।"

"यस सर।"

"और इसका बयान दर्ज करके चालान काटकर सुबह अदालत में पेश करो।"

"यस सर।" इंस्पेक्टर तत्परता से बोला।

¶¶

एस.पी. अभी थाने से निकला ही था कि एक मारुति थाने के गेट के करीब आकर रुकी और उसमें से करीब चालीस साल का गोरा-चिट्टा व्यक्ति बाहर निकलकर थाने के फाटक की तरफ बढ़ा।

उसके बदन पर काले कोट से साफ पहचाना जा सकता था कि वह वकील है।

हां....वह वकील ही था।

प्रकाश बोस नाम था उसका।

अपने गोरे चेहरे की वजह से वह कहीं से भी बंगाली नजर नहीं आता था। मगर उसके नाक-नक्श उसके बंगाली होने की चुगली कर रहे थे। अपने दायें हाथ में वह एक फाईल दबाये फाटक पर खड़े संतरी को नजरंदाज करते हुए थाने में प्रवेश कर गया।

संतरी उसे जानता था—तभी तो उसने उसे रोका तक नहीं।

थाने के लम्बे-चौड़े प्रांगण को पार करते हुए वह दायीं तरफ कोने में बने कमरे की तरफ बढ़ा, जिसके बाहर एक लकड़ी की तख्ती पर एस.एच.ओ. लिखा हुआ था। उसके नीचे इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा लिखा हुआ था।

बिना इजाजत लिये प्रकाश दरवाजे में प्रवेश कर गया।

वह इंस्पेक्टर का ऑफिस था।

इंस्पेक्टर दिलबाग राणा उस वक्त अपनी कुर्सी पर बैठा कॉफी के घूंट भर रहा था।

प्रकाश बोस को देखकर वह पहले तो चौंका, फिर होंठों पर जबरदस्ती मुस्कान लाते हुए बोला—

“आईए वकील साहब—बैठिये।”

“शुक्रिया....।” प्रकाश बोस आगे बढ़कर एक विजिटर कुर्सी पर बैठते हुए बोला।

उसकी आवाज में बंगाली का पुट साफ नजर आ रहा था।

“कॉफी पीयेंगे?”

“तोम (तुम) पिलाओगे तो जरूर पीयूंगा।” बेशर्मी से मुस्कुराया प्रकाश बोस।

दिलबाग सिंह राणा ने एक सिपाही बुलाकर उसे कॉफी लाने के लिये कहा—फिर प्रकाश बोस की तरफ देखते हुए बोला—

“खैरियत तो है वकील साहब—इतनी रात को....।”

“अभी अमको (हमको) खोबर (खबर) मिली कि रामरतन का खोन (खून) हो गया—सो अम फौरन भागा आया।”

“क्यों?”

“अरे दादा....इत्ता....बड़ा केस मिल रोहा (रहा) है....कैसे छोड़ेगा।”

“क्या मतलब?” बुरी तरह से चौंका दिलबाग सिंह राणा।

“अभी मोतलब नई समझा तोम....अम बद्रीनाथ का वकील बनने आया।”

एक और झटका लगा दिलबाग सिंह राणा को।

“अ....आप तो रामरतन के विरोधी बिहारी लाल के वकील हैं।”

“हैं....तो?”

“आप बद्रीनाथ का केस लड़ेंगे।”

“क्यों नई लड़ सकता अम?”

“मगर....।”

“देखो दादा....अम सिर्फ वकील होता है। वो बात अलग है कि बिहारी लाल अपना केस सिर्फ अमको ही देता है। उनके अलावा अम और लोगों का भी तो केस लड़ता है।”

दिलबाग सिंह के होंठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान उभर आई।

“तुम मुस्कुरा रहा है?”

“नहीं....बस यूं ही किसी दोस्त की याद आ गई—कभी पानीपत गये हो?”

“ऊहूं....क्यों?”

“पानीपत बस अड्डे से आगे तहसील है—और तहसील से थोड़ा आगे एक ढाबा है। अवतार ढाबा।”

“तो?”

“वहां जाओ तो खिल्ला का नाम लेना और उससे मेरा नाम लेकर चिकन बनवाना। ऐसा चिकन मिलेगा कि तबीयत फड़क उठेगी।”

प्रकाश बोस का दिमाग चकराकर रह गया। वह यहां आया किस काम से था—और यह इंस्पेक्टर अवतार और खिल्ला के चिकन का जिक्र छेड़ बैठा।

तभी सिपाही कॉफी लेकर आ गया।

उसने कॉफी का मग दिलबाग सिंह राणा के सामने रखा और बाहर निकल गया।

“लीजिये वकील साहब—कॉफी पीजिये—बिल्कुल फ्री।” अपना मग टेबल पर रखते हुए मुस्कुराया दिलबाग सिंह राणा—“और ऐसे ही जब कभी पानीपत जाओ तो अवतार ढाबे से मेरे लिये चिकन लेते आना।”

प्रकाश बोस एक बार फिर चकराया।

“यह तोम बार-बार पानीपत का जिक्र क्यों करता है दादा?” वह अपना मग उठाते हुए बोला।

“उसका माल ही ऐसा बनता है कि हर एक के सामने जिक्र करता रहता हूं। एक बार खाया था, बस उसके बाद जाने का मौका ही नहीं मिला। तब से हर एक को कहता रहता हूं कि अगर वह पानीपत जाये तो अवतार ढाबे से चिकन लेकर आये।”

कुछ नहीं बोला प्रकाश बोस—बस कॉफी खत्म करने लगा।

कॉफी पीकर उसने फाईल सम्भाली और खड़ा हो गया।

“अब बद्रीनाथ से मिलना मांगता।”

“वो तो मिलाना ही पड़ेगा। वर्ना मुझे उल्टा लटका दोगे।”

कहकर दिलबाग सिंह राणा ने बैल पर हाथ मारा।

तुरंत एक सिपाही भीतर प्रविष्ट हुआ।

“वकील साहब को बद्रीनाथ के पास पहुंचा दो।”

“यस सर....आईए साहब।” सिपाही वकील से बोला।

प्रकाश बोस सिपाही के साथ ऑफिस से बाहर आ गया।

“इधर....!” बाहर आते ही सिपाही बाईं तरफ बांह लम्बी करते हुए बोला।

प्रकाश बोस बाईं तरफ मुड़ गया।

“सुनो....!” वह सिपाही के साथ चलते हुए बोला।

“जी साहब....!”

“यह पानीपत किदर है?”

सिपाही के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“अवतार ढाबे पर जाना है क्या?” वह बोला।

प्रकाश बोस हड़बड़ाया—“तोम कैसे जानता?”

“सर हर एक से ऐसे ही बात करते हैं।”

“क्या मतलब?”

“खातिर जमा रखिये साहब—बहुत जल्द आप पानीपत भी जान जायेंगे—अवतार ढाबे के बारे में भी जान जायेंगे—और खिल्ला का भी आपको पता चल जायेगा।”

प्रकाश बोस के चेहरे पर उलझन उभर आई। यह पहेली उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आई।

“लीजिये....आपके मुवक्किल की हवालात आ गयी।” तभी बोला सिपाही और दाईं तरफ इशारा किया।

“तोम जाओ—अम अकेले में उससे बात करेगा।”

सिपाही के इशारे वाली हवालात की तरफ देखते हुए बोला प्रकाश बोस।

सिपाही वहां से उल्टे पांव हो गया।

¶¶

प्रकाश बोस को हवालात के दरवाजे के पास खड़े देख बद्रीनाथ की आंखों में तेज चमक उभर आई।

तुरंत वह अपने स्थान से उठा और सींखचों के करीब आकर धीमे स्वर में बोला—

“मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।”

“और अम आ गया।”

प्रकाश बोस ने बांहें फैलाईं और कंधे उचकाये।

“बिहारी बाबू....।”

“उनका नाम मत लो।”

“मगर....!”

“सिर्फ काम का बात करने का....। बिहारी बाबू की बात बिहारी बाबू के सामने करना।”

बद्रीनाथ ने चुपचाप सिर हिला दिया।

“क्या कहानी सुनाया यहां?” प्रकाश बोस ने पूछा।

बद्रीनाथ ने एस.पी. को सुनाई सारी कहानी उसे सुना दी। बोला—“यही कहानी सुनाने को कहा था न तुमने?”

“हां....!”

“अब?”

प्रकाश बोस ने अपनी फाईल में से दो कागज निकाले और जेब से पेन निकालकर कागज पर एक जगह निशान लगाते हुए पेन और कागज उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—

“निशानी वाली जगह पर साईन कर दो।”

कागज और पेन लेकर बद्रीनाथ ने उसके लगाये निशानों पर साईन किये और वापस उसे देते हुए बोला—

“मेरी जमानत हो जायेगी न?”

“चिंता मत करो दादा....कल ही तुम्हारा जमानत हो जायेगा।”

“और हां, अगर ऐसा नहीं हुआ तो इतना जान लो कि मैं तो मरूंगा ही, साथ में बिहारी बाबू को भी नहीं छोड़ूंगा....मैं....।”

“अरे दादा....क्यों इतना लम्बा सोचता—बोला तो—कल हो जायेगा तुम्हारा जमानत।”

बद्रीनाथ कुछ नहीं बोला—बस दांत भींचे उसे घूरता रहा।

“अम चलूं?”

बद्रीनाथ ने दांत भींचे हुए ही सिर हिला दिया।

प्रकाश बोस वहां से हटा—दो-चार कदम आगे बढ़ा—फिर गुद्दी खुजाते हुए वापस लौट आया।

“कुछ भूल गये क्या?” उसे पुनः अपने सामने खड़ा देख बोला बद्रीनाथ।

“कुछ पूछना था दादा।” प्रकाश बोस उलझे स्वर में बोला।

“क्या?”

“यह पानीपत किधर को होता?”

बद्रीनाथ के होंठों पर भी वैसी मुस्कान फैल गई—जैसी सिपाही के होंठों पर फैली थी।

“अवतार ढाबा भी पूछो किधर है—मालिक का नाम भी पूछो खिल्ला क्यों है?”

प्रकाश बोस हैरानी से आंखें फाड़े उसे देखने लगा।

“त....तो....म भी जानता अवतार ढाबे के बारे में?” वह आंखें फाड़े बोला।

“हां....तभी तो....।”

“यह क्या चक्कर है....अम कुछ समझा नहीं?”

“मैं समझाता हूं। इंस्पेक्टर दिलबाग समझ गया है कि रामरतन का खून क्यों हुआ है। और वह अपनी जुबान बन्द रखने की कीमत मांग रहा है।”

“म....मगर यह पानीपत....यह अवतार ढाबा....खिल्ला....यह सब।”

“पानीपत बिहारी बाबू हैं—अवतार ढाबा उनकी जेब—चिकन नोट और खिल्ला का मतलब वो भी खुश तुम भी खुश।”

“कमाल है....बहुत बढ़िया तरीका चुना है उसने पैसा मांगने का।”

“किसी को शक भी नहीं होता।”

“तो क्या पानीपत वगैरह कुछ नहीं?”

“है क्यों नहीं—पानीपत भी है—वहां तहसील के आगे अवतार ढाबा भी है—उसके मालिक का नाम खिल्ला भी है और वह चिकन भी बहुत बढ़िया बनाता है।”

“ओह! यानि अगर कोई इंस्पेक्टर के इस डायलॉग पर उस पर रिश्वत मांगने का आरोप लगाये तो वह साबित कर सकता है कि उसने रिश्वत नहीं मांगी—वहां वाकई अवतार ढाबा है।”

“बेशक।”

“अम समझ गया—तोम चिन्ता मत करना—अम सब सम्भाल लेगा।”

बद्रीनाथ कुछ नहीं बोला—बस सिर हिला दिया।

¶¶

“बद्रीनाथ को।”

“फांसी दो....फांसी दो....।”

अदालत के बाहर रामरतन के समर्थकों की भीड़ खड़ी नारे लगा रही थी।

पूरी अदालत का परिसर लोगों से खचाखच भरा हुआ था।

ऐसे ही अदालत के भीतर भी सिर-ही-सिर नजर आ रहे थे। लोग एक-दूसरे से बातें कर रहे थे।

“अब तो यह सरकार गई कि गई।” एक अपने करीब बैठे व्यक्ति से बोला।

“वो कैसे?” दूसरा बोला।

“रामरतन की मौत के साथ ही यह सरकार अल्पमत में आ गई है। अब मुख्यमंत्री को जो चार निर्दलीय विधायक हैं, उनसे सौदा करना होगा। उनमें से किसी एक के समर्थन से ही सरकार रह पायेगी। वर्ना अविश्वास प्रस्ताव आने पर समझो सरकार गिरी ही गिरी।”

“ऐसा नहीं होगा।” तभी एक अन्य जो अगली सीट पर बैठा था—गर्दन पीछे मोड़ते हुए बोला—“देख लेना, मुख्यमंत्री अपना बहुमत साबित कर लेगा।”

“यह तो वक्त ही बतायेगा कि कौन बहुमत में आता है।” पहला बोला।

“अगर रामरतन की मौत पर सरकार गिर जाती है—तो समझ लो आजाद विधायकों का समर्थन नहीं मिलने वाला सरकार को।”

अन्य ने बीच में टांग अड़ाई।

सभी उसकी तरफ देखने लगे।

“वो कैसे?” अगली सीट वाला बोला।

“रामरतन की मौत से सरकार अल्पमत में आई है तो जाहिर है कि इस खून के पीछे विपक्ष का हाथ है। और विपक्षी विधायक के वकील का बद्रीनाथ का केस लड़ना भी इसी तरफ इशारा करता है।”

“तो?”

“तो यह कि विपक्ष ने हर तरफ से अपने हाथ पक्के करके ही रामरतन को ऊपर रवाना किया है। यानि निर्दलियों को उसने पहले ही खरीद लिया है। ऐसे में सरकार अपना बहुमत साबित नहीं कर पायेगी।” ठीक तभी मजिस्ट्रेट अपने चेम्बर से निकलकर अदालत में प्रविष्ट हुए।

वहां मौजूद लोग उनके सम्मान में खड़े हो गये।

अपनी कुर्सी के आगे आकर मजिस्ट्रेट ने सिर को हल्के से झुकाकर सभी का अभिवादन स्वीकार किया और अपनी कुर्सी पर बैठ गये।

सभी लोग भी अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये।

उसी के साथ ही एक बार फिर खुसर-फुसर शुरू हो गई।

"आर्डर-आर्डर....।"

तभी मजिस्ट्रेट की गम्भीर और भारी आवाज के साथ मेज पर हथौड़े की आवाज गूंजी।

अदालत में सन्नाटा छा गया।

अब सभी की निगाहें मजिस्ट्रेट की तरफ थीं।

"मुलजिम को अदालत में पेश किया जाये।" मजिस्ट्रेट बोले।

शीघ्र ही सिपाहियों से घिरा बद्रीनाथ अदालत में आया और कटघरे में खड़ा हो गया।

उधर अदालत के बाहर इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा के पास प्रकाश बोस का असिस्टेंट खड़ा बातें कर रहा था।

"वकील साहब ने एक आदमी पानीपत रवाना कर दिया है इंस्पेक्टर साहब। आपने अवतार ढाबे की इतनी तारीफ की कि उन्होंने आज सुबह ही एक आदमी रवाना कर दिया। बहुत जल्द ही वह वापस आयेगा और आपके लिये बढ़िया चिकन लेकर आयेगा।"

दिलबाग सिंह राणा के होंठों पर मुस्कान नाच उठी। आंखों में चमक उभर आई।

"आह!" उसने ठण्डी सांस छोड़ी—"कई दिन हो गये अवतार ढाबे का चिकन खाये हुए—आज छककर खाऊंगा।"

"चिंता मत कीजिये—पतीला भरकर मिलेगा आपको चिकन।" असिस्टेंट बोला।

"मैं इंतजार करूंगा।"

दिलबाग सिंह राणा बोला और अदालत के दरवाजे की तरफ कदम बढ़ा दिये।

इधर अदालत में कार्यवाही शुरू हो चुकी थी।

“मीलार्ड....!” सरकारी वकील अपनी बात को सामने रखते हुए कह रहा था—“यह....!” उसने बद्रीनाथ की तरफ इशारा किया—“बद्रीनाथ है....पूरे दीनापुर में यह एक बदमाश के नाम से जाना जाता है। दीनापुर का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इसे न जानता हो। कल रात यही बद्रीनाथ एम.एल.ए. रामरतन के ऐन पीछे बैठा था। उस वक्त स्टेज पर रंगारंग प्रोग्राम चल रहा था। रामरतन के पास एस.पी. और डी.एस.पी. भी बैठे थे। इतने लोगों के बीच पुलिस की मौजूदगी में इसने रिवॉल्वर निकाली और रामरतन की खोपड़ी में गोली उतार दी। इतने शातिर और खतरनाक आदमी की जमानत करना दूर—उसे फौरन सजा देना ही ठीक रहेगा। लेकिन कानून की भी कुछ मर्यादायें होती हैं मीलार्ड। इसलिये उन मर्यादाओं का पालन करते हुए मैं पहले एस.पी. को बतौर गवाह अदालत में पेश करने की इजाजत चाहूंगा, जो कि इस खून के चश्मदीद गवाह हैं।”

“इजाजत है।”

मजिस्ट्रेट धीर-गम्भीर स्वर में बोले।

¶¶

“आपका नाम....?”

अदालत में गवाहों के कटघरे में खड़े एस.पी. के करीब आकर पूछा सरकारी वकील ने।

“रमेश.....रमेश राजपूत....आई.पी.एस.।” एस.पी. बोला।

“आप जानते हैं इसे?” सरकारी वकील ने बद्रीनाथ की तरफ इशारा किया।

“जी हां....यह बद्रीनाथ है।” बद्रीनाथ को देखते हुए बोला एस.पी.।

“आपने अपनी आंखों से जो कुछ भी देखा—कानों से जो भी सुना—प्लीज अदालत को बताइये।”

एस.पी. ने अदालत को रामरतन के खून से लेकर बद्रीनाथ से हवालात में मिलने तक की सारी बात बता दी।

"थैंक्यू मिस्टर रमेश राजपूत।"

सरकारी वकील ने कहा और फिर मजिस्ट्रेट की तरफ देखते हुए पुरजोर लहजे में बोला—

"एस.पी. रमेश राजपूत की गवाही ही चीख-चीख कर कह रही है कि मरहूम एम.एल.ए. रामरतन का खून बद्रीनाथ ने ही किया है। इसलिये मैं अदालत से अपील करूंगा कि मुलजिम बद्रीनाथ की जमानत को नामंजूर करते हुए इसे कम-से-कम एक महीने की पुलिस रिमाण्ड पर भेजा जाये। दैट्स आल मीलार्ड।" कहते हुए सरकारी वकील ने सिर को झुकाया और पीछे हटकर अपनी कुर्सी की तरफ बढ़ गया।

प्रकाश बोस की तरफ उसने देखा तक नहीं, जो कि अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ था।

"मीलार्ड....!" वह आगे बढ़कर बोला—"अपने फाजिल दोस्त की जिरह से मैं सिर्फ इतना प्रभावित हुआ हूं कि मेरे जेहन में सिर्फ यह उभरा है कि इन्हें वकालत छोड़कर कोई उपन्यासकार बन जाना चाहिये।" उसने एक नजर सरकारी वकील पर डाली—फिर पुनः मजिस्ट्रेट की तरफ देखते हुए बोला—

"पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने सिर्फ एक कहानी गढ़ी है—काल्पनिक कहानी—वो भी ऐसी कहानी—जिसमें एक नहीं कई लूज प्वाईंट हैं।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?" मजिस्ट्रेट बोले।

प्रकाश बोस ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"सबसे पहले तो मैं अदालत को यह बता देना चाहता हूं कि बद्रीनाथ का कोई भी रिश्तेदार नहीं है। इसकी मां ने सिर्फ इसे ही पैदा किया था—और इसके पैदा होने के पांच साल बाद वह चल बसी थी। मुम्बई की झौंपड़ पट्टी में जाकर इसकी तस्दीक की जा सकती है। सोलह साल की उम्र में इसके सिर से बाप का साया उठ गया—और बीस साल की उम्र में वह दीनापुर में आ गया। फिर ऐसा कैसे हो सकता है कि स्वर्गीय रामरतन ने बद्रीनाथ की बहन की इज्जत लूट ली—जबकि इसकी कोई बहन ही नहीं थी।"

"मगर बद्रीनाथ ने तो मुझे यही कहानी सुनाई थी।" एस.पी. बोला।

“वो कहानी बद्रीनाथ ने नहीं सुनाई—बल्कि पुलिस ने अपने पास से बनाई है।”

“मगर....!”

“हकीकत यह है मीलार्ड कि मेरा मुवक्किल मरहूम रामरतन के पास नौकरी करता था—और रामरतन जी को बद्रीनाथ पर कितना विश्वास था—यह रामरतन जी के परिवार वालों से—उनके जानने वालों से बखूबी जाना जा सकता है। ऐसे में बद्रीनाथ उनका खून कैसे कर सकता है। मीलार्ड, मेरे मुवक्किल ने कोई खून किया ही नहीं—उसे जानबूझकर फंसाया गया है।”

“यह झूठ है मीलार्ड।” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपनी कुर्सी से खड़ा हो आगे बढ़ते हुए पुरजोर स्वर में बोला—“एस.पी. साहब ने खुद अपनी आंखों से बद्रीनाथ को खून करते देखा था। इस हत्या के चश्मदीद गवाह हैं वह।”

प्रकाश बोस ने गहरी सांस छोड़ी। उसने एक नजर सरकारी वकील पर डाली, फिर एस.पी. की तरफ देखते हुए बोला—

“क्या आपने बद्रीनाथ को खून करते हुए देखा था?”

“हां....!” एस.पी. बोला।

“कैसे?”

एस.पी. ने बताया।

“आपने यह तो नहीं बताया कि आपने बद्रीनाथ को खून करते हुए देखा था। आप तो यह कह रहे हैं कि जब रामरतन जी का सिर आपके कंधे पर गिरा, तभी आपने पीछे देखा।”

“हां।”

“क्या उस वक्त बद्रीनाथ के हाथ में रिवॉल्वर या पिस्तौल वगैरह था?”

“नहीं....उस वक्त बद्रीनाथ खड़ा होकर भागने की कोशिश कर रहा था।”

“बद्रीनाथ भागने की कोशिश नहीं कर रहा था मीलार्ड—बल्कि वह यह देखने के लिये खड़ा हुआ था कि गोली किसने चलाई।”

“मगर पोस्टमार्टम की रिपोर्ट साफ बताती है कि गोली नजदीक से चलाई गई थी—और जिस ऐंगल से गोली चलाई गई थी—उसी ऐंगल में बद्रीनाथ बैठा हुआ था।” एस.पी. गम्भीरता से बोला।

“उस हिसाब से बद्रीनाथ पर संदेह तो किया जा सकता है मगर उस पर आरोप नहीं लगाया जा सकता मीलार्ड। बद्रीनाथ के पीछे सैंकड़ों लोग बैठे थे। मगर किसी ने भी उसे हत्या करते हुए नहीं देखा और जिसकी पीठ बद्रीनाथ की तरफ थी....” प्रकाश बोस ने एस.पी. की तरफ उंगली की—“वह चश्मदीद होने का दावा कर रहा है। अंधे को भी नजर आ रहा है कि मेरे मुवक्किल को जानबूझकर फंसाया जा रहा है।”

“बद्रीनाथ को फंसाया नहीं जा रहा मीलार्ड—बल्कि इसने हकीकत में रामरतन का खून किया है।” सरकारी वकील विरोध भरे स्वर में बोला।

“यह कैसा केस है मीलार्ड?” प्रकाश बोस हाथों को फैलाते हुए बोला—“साफ नजर आ रहा है कि बद्रीनाथ को फंसाया जा रहा है। एस.पी. साहब अपनी थ्योरी के आधार पर ही बद्रीनाथ को खूनी साबित करने पर तुले हुए हैं। रामरतन जी के पीछे सैंकड़ों लोग थे—उनमें से ही किसी ने गोली मारी हुई हो सकती है। फिर भी अगर खून बद्रीनाथ ने ही किया है तो मर्डर वैपन कहां है?”

“उसे बद्रीनाथ ने पीछे कहीं फैंक दिया था।” सरकारी वकील बोला।

“किसी ने उसे मर्डर वैपन फैंकते देखा? क्या मेरे फाजिल दोस्त के पास ऐसा कोई गवाह है जिसने मेरे मुवक्किल को खून करके मर्डर वैपन पीछे फैंकते देखा है?”

सरकारी वकील को काटो तो खून नहीं। प्रकाश बोस के इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

“और फिर मीलार्ड—अगर....” प्रकाश बोस दुगुने जोश से अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—“मान लें, अगर बद्रीनाथ ने मर्डर वैपन फैंका भी तो वो गया कहां?”

“किसी ने उसे उठा लिया होगा।” सरकारी वकील ने दलील दी।

“वाह!” प्रकाश बोस ने ताली पीटी—“क्या जवाब मिला है मीलार्ड—बद्रीनाथ द्वारा फैंकी रिवॉल्वर को किसी ने उठा लिया। वो भी उस वक्त जब पूरे पण्डाल में

रामरतन जी के कत्ल का हल्ला मचा हुआ था। यानि उठाने वाले ने जानबूझकर खुद के पैरों में कुल्हाड़ी मारी और खुद को फंसाने का पूरा बंदोबस्त कर लिया।”

सरकारी वकील हड़बड़ाकर उसे देखने लगा।

“मीलार्ड—स्पष्ट नजर आ रहा है कि मेरे मुवक्किल को बिना वजह फंसाया जा रहा है। पुलिस अपनी नाकामी को छुपाने के लिये एक बेगुनाह को फंसाकर अपने सिर से जंजाल उतार रही है। ऐसे में अगर मेरे मुवक्किल को सजा मिलती है तो लोगों का कानून पर से विश्वास उठ जायेगा....इसलिये मेरी अदालत से अपील है कि मेरे क्लाईंट बद्रीनाथ की जमानत करने की बजाये उसे सीधे बरी किया जाये। दैट्स आल मीलार्ड।”

¶¶

“रामरतन मर्डर केस के पक्ष और विपक्ष की दलीलों को अदालत ने सुना। पुलिस द्वारा कोई सबूत पेश नहीं किया गया। सिर्फ मकतूल रामरतन के पीछे बैठे होने की वजह से बद्रीनाथ खूनी नहीं माना जा सकता। इसलिये अदालत बद्रीनाथ को संदेह का लाभ देते हुए बरी करती है और पुलिस को आदेश देती है कि असली मुजरिम को ढूंढकर उस पर मुकदमा दायर किया जाये।”

मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला सुनाया और उस पर अपने दस्तखत करके खड़े हो गये।

¶¶

“जानता है बद्री....यह कोठी कितने की है?” बिहारी लाल शानदार ड्राईंगरूम में बैठा हाथ फैलाते हुए बोला।

उसके सामने बद्रीनाथ सोफे पर बैठा था। दोनों के बीच पड़ी सैंटर टेबल पर स्कॉच की बोतल पड़ी थी तथा दो पैग भरे हुए पड़े थे।

बद्रीनाथ के बरी हो जाने के एक हफ्ते बाद आज बिहारी लाल उससे मिला था—वो भी इस वक्त—रात के साढ़े दस बजे। और वह सात दिन बद्रीनाथ ने इसी कोठी में ही गुजारे थे।

बरी होने के बाद प्रकाश बोस ने उसे वहीं रहने के लिये कहा था—और यह भी कहा था कि कोई अच्छा-सा मुहूर्त देखकर बिहारी लाल खुद उससे मिलने आ जायेगा।

उन सात दिनों में बद्रीनाथ से अगर कोई मिलने आया तो वो उसके आदमी ही आये थे। वो आदमी जो उसके गुर्गे थे।

बद्रीनाथ ने दायें-बायें देखा। फिर बिहारी लाल की तरफ देखते हुए बोला—“पचास-साठ लाख की तो होगी। मगर तुम यह क्यों पूछ रहे हो?”

“लगता है अभी जमीन का मोल आंकने की तुझे अक्ल नहीं।” मुस्कुराया बिहारी लाल—“पचास-साठ कह रहा है तू जबकि अस्सी लाख की तो सिर्फ जमीन-जमीन है। डेढ़ करोड़ रुपया है इस कोठी की कीमत।”

“ओह!”

“रामरतन को खत्म करने के लिये मैंने तुझसे पचास लाख का सौदा किया था—और यह वादा भी किया था कि मैं तुझे अदालत से साफ छुड़ाऊंगा।”

“हां....तुमने अपना वादा निभाया—। मुझे बरी करा दिया।”

“साथ ही बतौर एडवांस तुझे तीस लाख रुपया भी दे दिया था।”

“मुझे पता है—और अब मुझे बाकी का तीस लाख मिलना है। लेकिन एक बात समझ में नहीं आई।”

“क्या?”

“तुमने सौदा करते वक्त यह शर्त क्यों रखी कि मैं रामरतन को अपने ही हाथों से मारूं—और वो भी सरेआम मारूं। जबकि तुम्हें तो सिर्फ उसकी मौत से मतलब था।”

“तुम्हारे फायदे के लिये।” बिहारी लाल ने उंगली उसकी तरफ सीधी की।

“क्या मतलब?” बुरी तरह से चौंका बद्रीनाथ—“इसमें मेरा फायदा कहां से आ गया?”

बिहारी लाल के होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान फैल गई।

“यही तो कमाल है सियासी खोपड़ी का।” उसने अपनी कनपटी ठकठकाई—“बहुत सोच-विचार करके ही मैंने तुम्हें उसे सरेआम मारने की शर्त रखी थी।”

“वो तो ठीक है—मगर इसमें मेरा फायदा क्या हुआ?”

बिहारी लाल के होंठों पर फैली मुस्कान और भी तेज हो गई।

उसने अपना पैग उठाया और एक ही सांस में उसे खाली कर वापस टेबिल पर रखकर आस्तीन से अपने होंठों को पौंछा और बद्रीनाथ की तरफ देखते हुए बोला—

“रामरतन के मरने से पहले दीनापुर में तुम्हारा दबदबा जरूर था लेकिन आतंक नहीं था तुम्हारा। मगर अब....अब तुम्हारा आतंक फैल गया है दीनापुर में। एक दहशत-सी फैल गई है लोगों के दिलों में।”

“ओह!”

“अब तुम्हें इस आतंक को कैश करना है। दीनापुर में इतना आतंक फैला दो कि लोग तुम्हारे नाम से ही थर-थर कांपने लगें। तुम्हारे आगे इंसान तो क्या प्रशासन भी सिर उठाने की जुर्रत न कर सके।”

“वो तो मैं कर लूंगा। दीनापुर का तख्त सम्भालने का जो सुनहरी मौका मेरे हाथ लगा है—उसे मैं किसी भी सूरत में नहीं छोड़ूंगा—लेकिन!”

“लेकिन क्या?”

“एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही?”

“क्या?” मुस्कुराया बिहारी लाल।

“इससे तुम्हें क्या हासिल होगा? राजा मैं बनूंगा। आतंक मेरा फैलेगा और मुझे राजा बनाने के लिये तुम पैसा पानी की तरह बहा रहे हो। मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।”

बद्रीनाथ उलझे स्वर में बोला।

“तुम्हें तो यह भी समझ में नहीं आ रहा होगा कि मैंने रामरतन का खून क्यों करवाया?”

“हां....अगर यह खून तुमने चुनाव से पहले कराया होता तो बात समझ में भी आती—मगर इलैक्शन हुए तो छह महीने बीत चुके हैं। तुम छह महीने पहले ही रामरतन

से हार चुके थे—वो भी तीस हजार वोटों के भारी अंतर से हारे थे। फिर छह महीने बाद....।"

"यही तो मौका था रामरतन को मारने का।"

"क्या मतलब?" चौंका बद्रीनाथ।

"यह सियासी चालें हैं बद्री—तुम्हारे जैसे आदमी की खोपड़ी में आसानी से घुसने वाली नहीं।"

"तुम समझाओगे तो घुस भी जायेंगी।"

बिहारी लाल ने अपने लिये नया पैग तैयार किया और उसे आधा खाली करके वापस टेबल पर रखते हुए बद्रीनाथ की आंखों में झांकते हुए बोला—

"अगर मैं रामरतन को इलैक्शनों से पहले मरवा देता तो इलैक्शन रद्द जरूर हो जाते—लेकिन लोगों के दिलों में मेरे लिये नफरत बैठ जाती—और मैं दोबारा इलैक्शन होने पर किसी भी सूरत में न जीत पाता।" बिहारी लाल ने बैठे-बैठे पहलू बदला और अपनी बात को आगे बढ़ाया—

"और फिर उस वक्त मेरा तुमसे कोई रिश्ता भी तो नहीं था। मगर इलैक्शनों के दौरान मैंने तुम्हारी ताकत पहचान ली थी—सो मैंने दिमाग से काम लिया और इलैक्शन हार गया। उसके बाद मैंने प्रकाश बोस के माध्यम से तुमसे सम्पर्क किया और पचास लाख में सौदा तय कर रामरतन का खून करवा दिया।"

"तो?"

"मैं जानता हूं कि इस खून के पीछे मेरा हाथ होने का संदेह किया जायेगा और नये विधायक के चुने जाने के दौरान सत्ता पक्ष का जो भी व्यक्ति खड़ा होगा—लोगों की सहानुभूति उसकी तरफ होगी। ऊपर से सरकार भी यह इलैक्शन जीतने के लिये एड़ी चोटी का जोर लगा देगी।"

"वो तो लगायेगी ही और मुझे यह भी पता है कि अब एक माह के अन्दर-अन्दर इलैक्शन भी होंगे—क्योंकि रामरतन के मरने से सरकार अल्पमत में आ गई है।"

"बिल्कुल....और निर्दलियों को हमने खरीद रखा है। यानि अब सरकार गिरी कि गिरी। इधर सरकार गिरी—उधर हम सत्ता में आये। और सत्ता में मेरी भागीदारी

बतौर गृहमन्त्री के तौर पर होनी निश्चित है। लेकिन....”

“लेकिन क्या?”

“सरकार विधान सभा का सत्र अब तभी बुलायेगी—जब रामरतन की खाली हो चुकी सीट पुनः उसके कब्जे में आ जायेगी।”

“और यह सीट हर हाल में तुमने जीतनी है।” मुस्कुराया बद्रीनाथ।

“बेशक....!”

“और उसके लिये मुझे अभी से आतंक पैदा करना होगा। ताकि कल को इलैक्शनों के दौरान मेरे कहने पर लोग तुम्हें ही वोट दें।”

“बिल्कुल।”

मुस्कुराते हुए गहरी सांस छोड़ी बद्रीनाथ ने।

“वाकई बड़ी कुत्ती चीज हो तुम....।”

“हा....हा....हा....।”

बेशर्मी से हंसा बिहारी लाल और पैग उठाकर उसे खाली किया और वापस टेबल पर रख दिया।

“लेकिन एक बात का ध्यान रखना बद्रीनाथ।”

सहसा ही बिहारी लाल की आवाज में क्रूरता उभर आई।

बद्रीनाथ का पैग उसके होंठों की तरफ बढ़ते-बढ़ते रुक गया। आंखें सिकुड़ गईं।

“क्या?”

वह बोला।

“तुम जो मर्जी करो—हथियार बेचो—लोगों की रगों में नशे का जहर भर दो। जहां कहीं भी तुम फंसोगे, मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा। किंग कोबरा बन जाओ तुम। मगर इस बात का ध्यान रखना कि अपना जहर मुझ पर फैंकने की जुर्रत मत करना। कल को दीनापुर का राजा बनने के पश्चात् तुम यह मत सोचने लगना कि मैं

भी उन कीड़े-मकौड़े में शामिल हो गया हूं जिन्हें तुम रोज अपने जूतों तले कुचलते हो। उस सूरत में तुम किसी भी हालत में नहीं बच पाओगे।”

“क्या मतलब?”

“वो रिवॉल्वर मेरे कब्जे में है जिससे तुमने रामरतन का खून किया था—और उस पर तुम्हारी उंगलियों के निशान हैं—और बैलिस्टिक रिपोर्ट पुलिस के पास। बस मिलान करने की देर होगी कि तुम सीधा फांसी के तख्ते पर। बस यूं समझ लो कि मैं तुम्हें राजा बना सकता हूं तो खाक में भी मिला सकता हूं। इसलिये भूलकर भी मेरी दुम पर पांव रखने की कोशिश मत करना।”

बद्रीनाथ के होंठों पर मुस्कान उभर आई।

उसने पैग वापस टेबल पर रखा और उसकी तरफ देखते हुए बोला—

“आप निश्चिंत रहिये बिहारी लालजी....आपने मुझे पचास लाख दिये—यह डेढ़ करोड़ की कोठी दी—अपना हाथ मेरी पीठ पर रखा। बद्रीनाथ इतना बेगैरत नहीं कि जिस कटोरे में चाटे, उसी को फोड़ दे।”

“बस ऐसे ही बने रहना।”

“मगर आपको रिवॉल्वर कहां से मिल गई?”

बद्रीनाथ के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

“इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा को मिली थी वह रिवॉल्वर।”

“ओह।”

“पूरे दो लाख का चिकन वो भी पानीपत के अवतार ढाबे का अकेला ही डकार गया—तब जाकर रिवॉल्वर दी उसने।”

“ओह....ओह।”

“एक बात और।”

“क्या?”

“मुझसे कभी सीधे सम्पर्क मत करना।”

“वो मैं समझता हूं....आप निश्चिंत रहिये।” मुस्कुराते हुए बोला बद्रीनाथ।

बिहारी लाल सोफे से खड़ा हो गया।

“अब तुम पीयो—मैं चला।” वह बोला।

“लेकिन अभी तो बोतल पड़ी है।” बद्रीनाथ खड़ा होते हुए बोला।

“वो तुम खाली करो—मुझे देर हो रही है। ओह हां....।”

“जी।”

“हफ्ते के अन्दर-अन्दर तुम्हारी दीनापुर में इतनी दहशत फैल जानी चाहिये कि लोग तुम्हारे नाम से ही कांपने लगें।”

“आप निश्चिंत रहें। हफ्ता तो बहुत दूर है। तीन-चार दिनों में ही आपको सब पता चल जायेगा।”

“और हफ्ते बाद किसी बढ़िया से हुस्न को मेरी सेवा में भेज देना।” कहते हुए बिहारी लाल ने बाईं आंख दबा दी।

“हा....हा....हा।”

बद्रीनाथ जोरों से हंस पड़ा।

बिहारी लाल भी हंसा—और फिर कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

फोन की घण्टी घनघनाई।

इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा ने जम्हाई लेते हुए रिसीवर की तरफ बांह लम्बी की।

“हैलो।”

रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए वह माऊथपीस में बोला—“इंस्पेक्टर राणा स्पीकिंग।”

“बद्री बोल रहा हूं।”

दूसरी तरफ से बद्रीनाथ की आवाज सुन दिलबाग सिंह राणा सतर्क होकर बैठ गया।

“कहो।” वह बोला। अब उसकी आवाज में गम्भीरता थी।

“कल पानीपत गया था मैं।”

“तो?” दिलबाग सिंह की आंखें सिकुड़ गईं।

“वहां तहसील से थोड़ा आगे अवतार ढाबा है। मैंने वहां से चिकन खाया।”

“तो मैं क्या करूं?”

“मुझे पता था कि तुम्हें अवतार ढाबे का चिकन बहुत पसंद है तो मैं वहां से चिकन बना लाया तुम्हारे लिये।”

“मेरे लिये?” आंखें चमकने लगीं दिलबाग सिंह राणा की।

“हां....आकर अपना चिकन ले जाओ—कहीं ऐसा न हो कि पड़े-पड़े खराब हो जाये।”

“मैं अभी पहुंचता हूं—कहां पहुंचूं?”

दूसरी तरफ से पता बताया गया।

“ओ.के.—मैं आ रहा हूं।”

बोला दिलबाग सिंह राणा और कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

¶¶

सैंटर टेबल पर बैग खुला हुआ पड़ा था जिसमें कि पांच-पांच सौ के नोटों की गड्डियां भरी पड़ी थीं।

दिलबाग सिंह राणा आंखें फाड़े नोटों को घूर रहा था।

उसके चेहरे से ही पता चल रहा था कि उसका कलेजा किस कदर धड़क रहा है। और यह भी जाहिर हो रहा था कि इतना मोटा पैसा उसे पहली बार मिल रहा था।

"पूरे पांच लाख हैं।" तभी उसके सामने वाले सोफे पर बैठा बद्रीनाथ बोला—"मेरा ख्याल है इतना बड़ा चिकन अगर तुम्हें हर महीने मिले तो....।"

"तो मैं तो पागल ही हो जाऊंगा।"

खुशी से आवाज कांप रही थी दिलबाग सिंह राणा की।

"लेकिन इतना बड़ा चिकन खाने के एवज में मुझे भी तुम्हारी सेवायें दरकार हैं।"

"मेरी बीवी बड़ी खूबसूरत है—कहो तो उसे भेज दूं तुम्हारी खातिरदारी के लिये।"

राल टपकाते हुए मुस्कुराया दिलबाग सिंह राणा।

"त....तुम अपनी बीवी दोगे मुझे?" हैरानी जताई बद्रीनाथ ने।

"मेरी मां और बहन नहीं है—वर्ना इतने बड़े चिकन के लिये तो मैं उन्हें भी तुम्हारे नीचे बिछा देता—मेरी बीवी आज ही तुम्हारे पास....।"

"उसकी कोई जरूरत नहीं....।"

"तो फिर?"

"इस शहर में क्या हो रहा है क्या नहीं—तुम्हें कुछ भी देखने की जरूरत नहीं। बस अपनी आंखें बन्द रखो और ऐश से हर महीने अवतार ढाबे का चिकन खाओ।"

"जब इतना बड़ा चिकन हर महीने मिलता रहेगा तो किसी और को देखने की फुर्सत ही कहां मिलेगी मुझे। तुम बेफिक्र होकर जो मर्जी करो। मुझे तो चिकन से मतलब है।"

कहते हुए दिलबाग सिंह राणा ने दांत दिखा दिये।

बद्रीनाथ के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

¶¶

रामलाल चौक के बीचोंबीच एक पुरानी खटारा जीप आकर रुकी।

चलता चौक था—ऐसे में जीप के चौक के बीच में रुकने से ट्रेफिक तो रुकना ही था—और लोगों का ध्यान भी उधर जाना था।

तभी जीप में से छह व्यक्ति बाहर निकले।

छह में से चार स्टेनगन से लैस थे—एक के हाथ में मोटा डण्डा था—जबकि छठे ने सफेद रंग की तह की हुई चादर उठा रखी थी।

उनके उतरते ही जीप थोड़ा आगे बढ़कर रुक गई।

स्टेनगनें देख लोगों में दहशत-सी फैल गई।

दुकानदारों की निगाहें भी अब उधर आ गई थीं।

तभी चादर वाले ने चादर खोली और सड़क पर बिछा दी।

'तड़....तड़....तड़....।'

तभी एक स्टेनगनधारी ने हवा में गोलियां चला दीं।

राह चलते लोग चीखकर वहां से भागने लगे।

"कोई नहीं भागेगा।" तभी हॉकी वाला गुण्डा दहाड़ा—"अगर किसी ने भागने की जुर्रत की तो अपनी मौत का वह खुद जिम्मेदार होगा।"

सभी के पांव वहीं के वहीं जाम हो गये।

लोग खौफजदा हो उसकी तरफ देखने लगे।

"यह...." हॉकी वाले ने हॉकी बिछी हुई चादर की तरफ की— "बद्रीनाथ की चादर है—हर हफ्ते यह चादर यहां पर बिछा करेगी। कोई भी दुकानदार इसमें सौ से कम नहीं डालेगा। आज पहला दिन है—इसलिये बोहनी करो।"

मगर कोई भी दुकान से बाहर नहीं निकला।

हां—डरे जरूर हुए थे सभी।

हॉकी वाले ने चारों तरफ निगाहें दौड़ाईं—किसी को भी न आते देख उसका गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा।

तुरंत उसने एक दुकान की तरफ इशारा किया।

उसी वक्त एक स्टेनगन का रुख उधर हुआ और—

‘तड़....तड़....तड़....।’

पलभर में ही दुकानदार का लहुलुहान शव उसकी गद्दी पर लुढ़का नजर आने लगा।

“सभी खत्म हो जायेंगे।” हॉकी वाला दहाड़ा—“बाहर निकलो वर्ना....।”

दुकानदार ऐसे बाहर निकले जैसे उनकी दुकानों में आग लग गई हो।

चादर पर सौ-सौ के नोटों का ढेर लगने लगा।

उसके बाद हॉकी वाले ने वहां खड़े लोगों को भी चादर में नोट डालने का हुक्म दिया।

सभी के सामने ताजा-ताजा खून हुआ था—लोग बुरी तरह से डरे हुए थे।

ऐसे में विरोध करने का हौंसला किसी में भी नहीं हुआ और लोग एक-एक करके चादर पर नोट फैंकने लगे।

¶¶

सिर्फ सात दिनों में ही बद्रीनाथ का पूरे दीनापुर में इतना आतंक फैल गया कि लोगों ने अब रात को घरों से निकलना बन्द कर दिया।

इन सात दिनों में तीन औरतों की सरेआम भरे बाजार में इज्जत लूटी गई—दुकानदारों से हफ्तावसूली की गई। कईयों को लूटा भी गया।

शुरू-शुरू में कुछ लोगों ने हिम्मत दिखाते हुए बद्रीनाथ के खिलाफ थाने में जहर उगला था। थाने में तो उन्हें कोई मदद नहीं मिली—हां—उनमें से तीन को बद्रीनाथ के गुण्डों ने ऊपर जरूर पहुंचा दिया।

बस उसके बाद किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वो थाने जाकर बद्रीनाथ के खिलाफ कुछ बोल सके।

दीनापुर के जो छोटे-मोटे बदमाश थे—वे या तो दुबक गये थे—या बद्रीनाथ की छत्रछाया में आ गये थे।

नतीजा—

बद्रीनाथ दीनापुर में आतंक के बादशाह के रूप में जाना जाने लगा।

और आठवें दिन ही बद्री ने वहां पर नशे का कारोबार शुरू कर दिया।

उसने पूरे शहर में अपने एजेंट फैला दिये—जिन्हें आदेश था कि पहले एक हफ्ते तक वे मुफ्त में जवान लड़कों को पुड़िया दें। फिर उसके बाद बेचना शुरू कर दें।

¶¶

'ट्रिन....ट्रिन....।'

फोन की घण्टी घनघनाई।

बद्रीनाथ ने रजाई से सिर निकालकर सामने वालक्लॉक की तरफ देखा।

सुबह के नौ बज रहे थे।

जम्हाई लेते हुए उसने साइड स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"अभी तक सो रहा है?"

दूसरी तरफ से बिहारी लाल की आवाज सुनकर बद्रीनाथ के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

"बस जरा लेट सोया था....।"

"किसी लौंडिया से लगकर सो रहा होगा—तभी अभी तक सो रहा है।"

बद्रीनाथ की निगाहें अपने बराबर में घूम गईं.....रजाई में से एक गोरा-चिट्टा चेहरा उसे ही देख रहा था।

युवती के चेहरे को देखकर ही अनुमान लगाया जा सकता था कि रजाई में छुपा जिस्म बहुत ही शानदार है।

"फरमाईये।" वह बोला।

“तू तो किसी लौंडिया के साथ बदन रगड़कर अपनी सर्दी दूर कर रहा है—और मैं यहां बर्फ में लगा हुआ हूं। अब तो पूरे दीनापुर पर तेरा राज चल रहा है। आज रात को ही मेरे लिये किसी बढ़िया से हीटर का बंदोबस्त कर।”

“हो जायेगा मालिक। कहां भेजूं?”

दूसरी तरफ से पता बताया गया।

“ओ.के.—रात नौ बजे आपके पहलू को गर्म करने के लिये बढ़िया-सा हीटर आपको मिल जायेगा।”

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

बद्रीनाथ ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और रजाई को अपने तथा युवती के ऊपर से पैरों की तरफ धकेल दिया।

बद्रीनाथ कुछ देर युवती के साथ पड़ा रहा—फिर उठा और बेड से उतरते हुए बोला।

“कपड़े पहन और जा।”

युवती कुछ नहीं बोली—बस बैठकर एक तरफ पड़ी अपनी ब्रा उठाकर पहनने लगी।

बद्रीनाथ बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

अब तक बद्रीनाथ का आतंक पूरे दीनापुर में बहुत ज्यादा बढ़ गया था।

उसके आतंक का आलम यह था कि इलैक्शनों के दौरान बिहारी लाल के सामने किसी की भी खड़े होने की जुर्रत नहीं हुई। यहां तक कि सत्ता पक्ष का भी कोई कैंडीडेट खड़ा होने की हिम्मत नहीं जुटा पाया और बिहारी लाल निर्विरोध चुन लिया गया—और उससे एक हफ्ते बाद ही सरकार ने अपना विश्वास मत खो दिया।

विरोधी दल सत्ता में आ गया।

बिहारी लाल ने गलत नहीं कहा था।

वह गृहमन्त्री बन गया।

बिहारी लाल गृहमन्त्री बना तो बद्रीनाथ ने दिलबाग सिंह राणा का चिकन घटा दिया। अब उसे हर महीने पांच की बजाये दो मिलने लगा।

दिलबाग सिंह राणा जानता था कि बिहारी लाल का हाथ बद्रीनाथ की पीठ पर है—और उसे पता था कि अब उसकी औकात कुछ भी नहीं रह गई—सो उसने वक्त की नजाकत को समझते हुए दो लाख पर ही संतोष करना उचित समझा।

नहा-धोकर वह बाथरूम से निकला और बैड के करीब आकर ताली बजाई—

'तड़....तड़....।'

अभी तक वह पूरी तरह से नंगा था।

ठीक तभी पीछे वाले कमरे का दरवाजा खुला और सिर से पांव तक निर्वस्त्र एक युवती ने कमरे में कदम रखा। उसके दायें हाथ में हैंगर था जिसमें कि बद्रीनाथ के कपड़े लटक रहे थे।

बद्री ने उससे लेकर कपड़े पहने।

कुछ ही देर में वह कोठी के हॉल कमरे में प्रविष्ट हुआ।

हॉल में स्टेनगनों से लैस दस आदमी खड़े थे जिनके सिर उसे देखते ही झुक गये।

शान से सीना चौड़ा करते हुए बद्रीनाथ आगे बढ़ा और एक तरफ रखी सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठ गया।

"जग्गू!" उसने आवाज लगाई।

तुरंत कमरे में से एक क्रूर चेहरे वाला व्यक्ति बाहर निकला और उसके सामने आकर सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"हुक्म मालिक।" वह बोला।

"रिपोर्ट दो।"

"हफ्ता वसूली में कल मालिक को तेरह लाख मिले।"

बद्रीनाथ के माथे पर बल पड़ गये। आंखें सिकुड़ गईं।

“पिछले हफ्ते तो चौदह लाख मिले थे। इस बार तेरह कैसे हुए? जबकि चौदह के पंद्रह होने चाहिये थे।”

जग्गू के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

“वो....वो मालिक....।”

“बद्री को घाटा पसंद नहीं।” फुंफकारा बद्रीनाथ—“और न ही उसे ऐसे कुत्ते पसंद हैं जो अपने मालिक को घाटा पहुंचाते हैं।”

“न....हीं मालिक....म....मैं कल फिर....। न....हीं मालिक....म....मुझे माफ कर दो।”

अपनी बात बीच में ही छोड़ दी थी उसने। बद्रीनाथ का हाथ उठते देख लिया था उसने।

उसका हाथ उठते ही स्टेनगनों से लैस गुण्डों की स्टेनगनें उसकी तरफ तन गईं।

और जैसे ही उसका हाथ नीचे गिरा—

‘तड़....तड़....तड़....!’

एक स्टेनगन गर्ज उठी।

दर्जनों गोलियां जग्गू के जिस्म में जा समाईं।

वह जोरों से उछला और फर्श पर गिरकर छटपटाने लगा।

दो-चार झटके लेने के पश्चात् वह ठण्डा हुआ तो एक तरफ पहले से ही खड़ा एक गुण्डा आगे बढ़ा और जग्गू की टांग को पकड़कर उसे घसीटते हुए बाहर ले गया—ऐसे जैसे किसी इंसान की न होकर वह कुत्ते की लाश हो।

तुरंत एक अन्य आदमी एक बाल्टी उठाये आया और बाल्टी को फर्श पर रखकर उसमें से पौंछा निकालकर खून साफ करने लगा।

कुछ ही देर में वहां ऐसा नजर आने लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

“ननकू....!”

बद्रीनाथ ने आवाज लगाई।

कुछ ही पलों में ठिगने कद का मगर खतरनाक नजर आने वाला ननकू उसके सामने सिर झुकाये खड़ा था।

“हुक्म मालिक....।”

“रिपोर्ट।”

“स्मैक की किल्लत हो रही है मालिक। ग्राहक बढ़ गये हैं। सिर्फ कल-कल में ही दीनापुर में दस किलो स्मैक खप गई।”

“वैरी गुड....!” मुस्कुरा पड़ा बद्री—“जोजफ को फोन कर दे। बीस किलो स्मैक और भेज दे।”

“वो मैंने कर दिया है मालिक। बीस किलो मांगा था मैंने—मगर उसके पास फिलहाल पंद्रह किलो ही है। मैंने वही लाने को कह दिया है।”

“शाबाश....और स्मैक के दाम डेढ़ गुना कर दे।”

“जो आज्ञा।”

“जा।”

ननकू ने सिर झुकाया और वहां से हट गया।

इसी तरह बद्रीनाथ बारी-बारी से अपने आदमियों को बुलाकर उनसे रिपोर्ट मांगता रहा। फिर आखिर में उसने आवाज लगाई—

“जैकी....!”

शीघ्र ही भैंसे की तरह भारी-भरकम काला-कलूटा व्यक्ति उसके सामने खड़ा था।

“शहर का क्या हाल है?” पूछा बद्रीनाथ ने।

“आप तो जानते ही हैं मालिक।” जैकी बोला—“अब लोगों के झगड़ों के फैसले थानों या अदालतों में नहीं होते—बल्कि आपके हुजूर में होते हैं। किसी भी चीज की जरूरत को महसूस करते ही वो चीज मिल जाती है।”

बद्रीनाथ के होंठों पर विजयी मुस्कान फैल गई।

सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

“शाम तक हमें एक हसीन चेहरा चाहिये।”

“मिल जायेगा मालिक।”

“चेहरा ताजा हो—गुलाब की तरह खिला हुआ। उम्र भी ज्यादा न हो—एकदम से कुंआरा माल होना चाहिये।”

“ऐसा ही होगा मालिक। रात आप नये चेहरे के साथ....।”

“उसे मेरे पास नहीं लाना।” बद्रीनाथ उसकी बात को काटते हुए बोला—“मन्त्री जी को चाहिये।”

“जी मालिक।”

बद्रीनाथ ने उसे वो पता बताया जो बिहारीलाल ने उसे बताया था। और बोला—“शाम आठ बजे वह वहीं पहुंच जाना चाहिये।”

“जो हुक्म मालिक।”

कहते हुए जैकी ने सिर को झुका दिया।

¶¶

“यह गुलदस्ता वहां रख दे स्वीटी।”

रेनू खिड़की की जाली पर कपड़ा मारते हुए बोली।

आठ साल की स्वीटी ने मेज पर रखे गुलदस्ते को उठाकर दीवार में लगे शो केस में रख दिया।

आज सुबह से ही रेनू घर की सफाई में लगी हुई थी। घर को सजाने में वह अपनी तरफ से कोई कोर कसर नहीं छोड़ रही थी।

फिर भी क्या मजाल जो उसके चेहरे पर हल्की-सी भी थकान उभरी हो। बल्कि उसका चेहरा तो खुशी से चमक रहा था।

एक तरफ सोफे पर बैठा छह वर्ष का बंटी मासूम-सी सूरत बनाये मां को देख रहा था।

दोनों भाई-बहन अभी थोड़ी देर पहले ही स्कूल से लौटे थे। और दोनों ही अभी तक स्कूल की ही ड्रेस में थे।

“कौन आ रहा है मम्मी?” तभी स्वीटी रेनू के करीब आकर बोली।

रेनू ने कपड़ा नीचे रखा और बैठकर अपनी स्वीटी के गालों को हाथ में लेते हुए बोली—

“तुम्हारी मौसी आ रही है।”

“मौसी आ रही है।” खुशी से उछल पड़ी स्वीटी।

मौसी का नाम सुनकर बंटी भी सोफे से उतरकर अपनी मां के पास आ गया।

“क्या तुमने मौछी को देखा है मां?”

वह भोलेपन से बोला।

रेनू का चेहरा गम्भीर हो गया।

बहुत बड़ी बात पूछ डाली थी उस नन्हें मासूम ने।

दस साल हो गये थे उसे अपने परिवार वालों से मिले हुए।

अपने मां-बाप की मर्जी के खिलाफ चलकर परिवार से बगावत करते हुए उसने भीमसेन से शादी की थी।

उसकी भीमसेन से शादी क्या हुई—उसके परिवार वालों ने उससे नाता ही तोड़ दिया। मां ने तो यहां तक कह दिया कि वह हमारे लिये मर गई।

रेनू को इस बात का दुख तो बहुत लगा था। मगर भीमसेन के प्यार ने उसकी खुशियों पर दुख को हावी नहीं होने दिया।

जिस वक्त उसने भीमसेन से शादी की थी—उस वक्त उसकी छोटी बहन डोली दस साल की थी।

शादी को दस साल हो गये—बंटी और स्वीटी भी बड़े हो गये—लेकिन रेनू के परिवार वालों का कलेजा नहीं पसीजा।

मगर आज सुबह दस बजे जब उसे डोली का फोन आया तो पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि वह जो सुन रही है वो सुन भी रही है या उसके कान बज रहे हैं।

लेकिन जब डोली ने यह कहा कि वह तीन बजे वाली ट्रेन से मां के साथ दीनापुर उससे मिलने आ रही है तो उसे तो जैसे पंख ही लग गये।

दस साल बाद उसकी मां और बहन आ रही थीं। ऐसे में उसका क्या हाल होना था इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था।

उसने पहले भीमसेन के ऑफिस में फोन कर अपनी मां और बहन के आने की खबर दी। सुनकर भीमसेन की भी खुशी का पारावार नहीं रहा। उसने फोन पर कह दिया कि वह तीन बजे रेलवे स्टेशन पहुंच जायेगा। और फिर रेनू घर की सफाई में जुट गई।

उसकी मां आ रही थी—ऐसे में वो चाहती थी कि मां को उसका घर चमकता हुआ नजर आये—और वही वह कर रही थी।

उसके बच्चों ने न तो कभी नानी को देखा था—और न ही मौसी को। ऐसे में बंटी का पूछना स्वाभाविक ही था कि क्या तुमने मौसी को देखा है।

उसने प्यार से बंटी के सिर पर हाथ फेरा और बोली—

“हां बेटा—तुम्हारी मौसी को देखा है मैंने और तुम्हारी नानी को भी।”

“नानी क्या होती है मम्मी?” बंटी मां के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला।

“मेरी मम्मी तुम्हारी नानी हुई।”

“न-नानी....।”

“ज्यादा बात नहीं पूछते बेटे....जाओ कपड़े बदलो।”

बंटी ने मासूमियत से सिर हिला दिया।

“और जब तुम्हारी मौसी और नानी आयें तो उनके पैरों को छूकर पैरी पौना करना।”

“जैसे रोज पापा को करता हूं।”

“हां....अब जाओ और कपड़े बदलो। स्वीटी तुम भी चेंज करो।” रेनू स्वीटी से बोली।

¶¶

‘वां SSSS....!’

ट्रेन का प्रेशर हार्न बजा तो स्टेशन पर एक हलचल-सी मच गई।

ढाई घण्टे देर से पहुंची थी ट्रेन।

साढ़े पांच बज रहे थे अब—जबकि ट्रेन को वहां तीन बजे पहुंचना था।

एक बैंच पर बैठा भीमसेन भी खड़ा हो गया और ट्रेन को देखने लगा जो अपनी रफ्तार को कम करते हुए रुक रही थी।

अपने सैलफोन से उसने रेनू को ट्रेन के लेट हो जाने की खबर कर दी थी।

रेनू का फोन आने के बाद कि उसकी सास और साली आ रही थी—जितनी खुशी उसे हुई थी, उतनी शायद रेनू को भी नहीं हुई होगी। फोन आने के बाद उसका काम में मन ही नहीं लगा। वह तो बस यही इंतजार कर रहा था कि कब पौने तीन बजें और वह अपने दफ्तर से निकले।

पौने तीन की बजाये वह ढाई बजे ही निकल गया और पौने तीन बजे स्टेशन पहुंच गया।

मगर जब वहां उसे पता चला कि ट्रेन ढाई घण्टे लेट है तो उसके चेहरे पर मायूसी-सी छा गई। मगर वह स्टेशन से बाहर नहीं निकला।

तब से अब तक वह स्टेशन पर ही बैठा रहा था।

ट्रेन धीरे-धीरे रुक रही थी और भीमसेन हर डिब्बे के दरवाजे को देखते हुए अपनी सास को ढूंढ रहा था।

तभी उसे एक खिड़की में अपनी सास खड़ी हुई नजर आई।

खुशी से उसका चेहरा दमकने लगा।

तुरंत वह उस डिब्बे की तरफ भागा—और ट्रेन के खड़े होते ही वह डिब्बे के दरवाजे के सामने खड़ा हो गया।

सवारियां उतरने लगीं।

तभी पहले उसकी सास प्लेटफार्म पर उतरी—फिर उसके पीछे-पीछे डोली उतरी।

अपनी साली को देखकर वह दंग रह गया।

दस साल पहले जब उसने डोली को देखा था तो उसकी नाक बहती देखी थी उसने। शक्ल भी कोई खास नहीं थी उसकी।

मगर अब—

अब तो ऐसा लग रहा था जैसे सारे जहां की जवानी और खूबसूरती ऊपर वाले ने उसे ही बख्श दी थी।

अंग-अंग लश्कारे मार रहा था उसका।

उसने डोली पर से निगाहें हटाईं और अपनी सास की तरफ बढ़ा जो कि थोड़ा आगे बढ़ गई थी। भीमसेन को नहीं देखा था उसने, सो वह उसकी तलाश में इधर-उधर गर्दन घुमा रही थी।

"प्रणाम मां जी।"

वह अपनी सास के करीब आकर उसके पैरों में झुकते हुए बोला।

उसकी सास ने पहले तो हड़बड़ाकर उसे देखा फिर प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए भर्राये स्वर में बोली—"भीम....।"

"जी हां—भीम।"

"जीते रहो बेटे—भगवान तुम्हारी उम्र लम्बी करे।"

"जीजू....!" तभी डोली की खनकती आवाज उसके कानों में पड़ी।

भीमसेन ने उसकी तरफ देखा।

"डोली!" वह मुस्कुराया और प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा।

“यस डोली....कैसी लग रही हूं?”

“अपनी दीदी से पूछना। लाईये मां जी—मुझे दीजिये।” भीमसेन अपनी सास के हाथ से बैग लेते हुए बोला।

और वह दोनों के आगे चलते हुए स्टेशन से बाहर आ गया।

पार्किंग के सामने आकर उसने बैग नीचे रखा और बोला—“आप यहीं रुकिये—मैं गाड़ी लेकर आता हूं।”

कहकर वह पार्किंग में गया और अपनी मारुति-800 चलाता हुआ बाहर आ गया।

यह कार उसने अभी हाल ही में ली थी।

कार रोककर वह बाहर निकला—पिछला दरवाजा खोला और बोला—“बैठिये मांजी—तुम भी बैठो डोली।”

“मैं तो अपने जीजू के पास बैठूंगी।”

डोली बड़ी अदा से बोली और बोनट के आगे से निकलकर आगे की सीट पर बैठ गई।

भीमसेन ने बैग पिछली सीट पर अपनी सास के करीब रखा और दरवाजा बन्द करके ड्राइविंग सीट पर बैठ गया।

“रेनू कैसी है?”

कार के रेंगते ही पूछा उसकी सास ने।

“आप खुद ही देख लीजियेगा मांजी।” बोला भीमसेन।

“अपनी मां को याद भी करती है कि नहीं?”

पूछते हुए बुढ़िया की आवाज भर्रा गई।

भीमसेन ने गहरी सांस छोड़ी।

“शादी के बाद शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरा हो जब रेनू ने आपको याद न किया हो। बंटी और स्वीटी ने आपको देखा तो नहीं....मगर उन्हें अपने ननिहाल के हर

शख्स का पता है।"

"फिर तो मेरा भी पता होगा?" डोली चहकी।

"खुद ही जाकर देख लेना।"

भीमसेन गम्भीरता से मुस्कुराया।

इसी तरह की बातों में पता ही नहीं चला कब वे घर पहुंच गये।

रेनू दरवाजे पर ही खड़ी थी। उसके हाथ में एक कटोरी थी जिसमें सरसों का तेल था।

कार घर के दरवाजे के सामने आकर रुकी तो पिछला दरवाजा पहले खुला और उसमें से रेनू की मां ऐसे बाहर निकली जैसे उसे अपनी बेटी की जुदाई और ज्यादा बर्दाश्त नहीं हो पायेगी।

अपनी मां को देख रेनू की आंखों में पानी भर आया।

बड़ी मुश्किल से वह अपनी रुलाई को रोके हुए थी।

अपनी मां के पीछे-पीछे डोली उतरी।

दोनों मां-बेटी दरवाजे के करीब आईं तो रेनू ने झुककर पहले चौखट के दोनों कोनों पर थोड़ा-थोड़ा तेल डाला, फिर भीगी पलकों से अपनी मां को देखते हुए भीतर आने का इशारा किया।

मां ने कदम भीतर रखा तो रेनू उससे बेतहाशा लिपट गई और जोर-जोर से रोने लगी।

मां की आंखों से भी झर-झर आंसू गिरने लगे।

दस सालों बाद मां-बेटी का मिलन हो रहा था।

गंगा-जमुना तो बहनी ही थी।

जब दोनों को गले मिले थोड़ी देर हो गई तो पीछे भीमसेन के पास खड़ी डोली भर्राये गले से बोली—

“दीदी....!”

रेनू ने उसकी तरफ देखा और मां से अलग हो गई।

डोली भीतर दाखिल हुई और रेनू से लिपट गई।

एक बार फिर आंखों से बरसात होने लगी।

अभी वे ढंग से गले मिल भी नहीं पाई थीं कि तभी पीछे किसी गाड़ी के रुकने की आवाज आई।

पीछे खड़े भीमसेन ने गर्दन सड़क की तरफ जैसे ही मोड़ी—उसका कलेजा धक से रह गया।

“रेनू अन्दर भागो!”

वह जोरों से चीखा और तेजी से आगे बढ़कर दोनों बहनों को धक्का दे दिया।

चीखती हुई दोनों बहनें भीतर की तरफ गिरीं।

मगर भीमसेन ने इसकी परवाह नहीं की और उसने भी भीतर छलांग लगा दी और तेजी से मुड़कर दरवाजे को बन्द करते हुए चीखा—

“अन्दर भागो—बद्री के आदमी आ गये।”

बद्री का नाम सुनकर रेनू की रंगत पीली पड़ गई।

“हे भगवान—हमारी लाज रखना।”

वह सम्भलते हुए बड़बड़ाई और डोली को खड़ा करते हुए चीखी—“जल्दी उठ डोली!”

डोली हैरान।

उसकी मां भी हैरान।

उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। हां—इतना जरूर समझ गई थीं वे कि कोई बड़ी मुसीबत आ गई है।

इधर भीमसेन ने दरवाजा बन्द किया और जैसे ही सिटकनी थोड़ी सी ही ऊपर की कि—

‘धड़ाक....!’

दरवाजा जोरों से खुला और पूरे वेग से भीमसेन के चेहरे से टकराया।

भीमसेन कराहता हुआ उछलकर पीछे जा गिरा और उसका सिर का पृष्ठ भाग फर्श से जा टकराया।

मगर अपने दर्द की—अपने खून की चिंता न करते हुए वह तेजी से उठा।

इज्जत का मामला था।

मगर—जैसे ही वह खड़ा हुआ, एक जबरदस्त घूंसा उसके मुंह पर पड़ा।

भीमसेन चकराकर नीचे गिर पड़ा।

तभी जैकी की ठोकर उसके कूल्हों पर पड़ी। साथ ही उसकी फुंफकार उसके कानों में पड़ी।

“हरामखोर....इतना शानदार माल अपने घर में लेकर आया है और मालिक को बताया तक नहीं तूने—जानता नहीं कि इस शहर में पैर रखने वाली हर जवान लड़की का पहले मालिक भोग लगाते हैं।”

“न....हीं जैकी....।”

भीमसेन ने पलटकर जैकी के पैरों को पकड़ लिया।

“मेरी इज्जत खराब न करो। भगवान के वास्ते मेरी इज्जत.... आह....।”

जैकी की ठोकर पुनः उसके कूल्हों पर पड़ी।

“साले भगवान का नाम लेता है। जानता है दीनापुर का भगवान कौन है—मालिक है दीनापुर का भगवान। जाओ लेकर आओ उस छोकरी को। साली स्टेशन से यहां तक आई तो छत्तीस फोन इसकी खूबसूरती के आ गये—जरा देखूं तो सही—ऐसा क्या हुस्न समेटे हुए है वह।”

जैकी का आदेश मिलते ही उसके साथ आये पांचों गुण्डे भीतर की तरफ बढ़े।

तभी भीमसेन उछलकर खड़ा हुआ और उन पांचों पर छलांग लगा दी।

“हरामजादो....!” वह चीखा—“मेरे जीते जी तुम मेरी इज्जत को छू भी नहीं सकते।”

उससे इतने बड़े दुस्साहस की किसी को भी उम्मीद नहीं थी—तभी तो वे एकदम से सम्भल नहीं पाये और भीमसेन तीन गुण्डों को लिये नीचे ढेर हो गया।

गिरते ही वह सम्भला और गिरे हुए गुण्डों पर पिल पड़ा।

तभी!

धांय....!

जैकी की रिवॉल्वर से गोली निकली और भीमसेन की पीठ में जा धंसी।

भीमसेन के होंठों से हृदयविदारक चीख उबली और वह वहीं गिर पड़ा।

“सालो....!” जैकी दहाड़ा—“हराम की खा-खाकर चर्बी बढ़ गई है तुम्हारी, जो एक आदमी नहीं सम्भाला जा रहा था तुमसे—अब जाओ।”

पांचों गुण्डे हड़बड़ाते हुए भीतर की तरफ लपके।

¶¶

रेनू के बैडरूम में डोली मां से चिपकी हुई बुरी तरह से डरी हुई बैठी थी। उसकी मां की भी रंगत पीली पड़ी हुई थी।

ऐसा ही हाल रेनू का था।

बंटी और स्वीटी आपस में चिपके बैड के एक कोने पर बैठे डरी-डरी आंखों से दरवाजे की तरफ देख रहे थे।

बाहर से उठा-पटक की आवाजें आ रही थीं।

‘धांय....!’

तभी गोली चलने की आवाज आई और फिर भीमसेन की तेज चीख उनके कानों में पड़ी।

रेनू का कलेजा उछलकर उसके मुंह को आ गया।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसके कि वह करे तो क्या करे। अपनी मां-बहन के पास बैठे या अपने पति के लिये दरवाजा खोलकर बाहर जाये।

अभी वह इसी उलझन में थी कि तभी दरवाजे पर धाड़-धाड़ ठोकरें बजने लगीं।

डोली चीखकर अपनी मां से और भी ज्यादा लिपट गई।

"न....हीं....!" तभी एकाएक ही रेनू के चेहरे पर सख्ती उभर आई—"मेरे जीते जी मेरी बहन को कोई नहीं छू सकता।"

उसने इधर-उधर किसी चीज की तलाश में निगाहें दौड़ाईं तो उसकी नजरें एक मोटे डण्डे पर जा अटकीं। लपककर उसने डण्डा उठाया और दरवाजे के करीब आ खड़ी हुई।

'भड़ाक....!'

तभी दरवाजा सिटकनी की साकेट को उखाड़ते हुए खुला—और एक गुण्डा भीतर घुसा।

रेनू ने पूरी शक्ति से उसके सिर पर डण्डा दे मारा।

वार इतना जबरदस्त था कि एक ही बार में गुण्डे का सिर खुल गया और वह वहीं गिर पड़ा।

तब तक दूसरा और तीसरा गुण्डा भी भीतर आ चुके थे।

रेनू का डण्डा पुनः घूमा।

एक और गुण्डा फर्श चाटने लगा।

और जब तीसरी बार रेनू का डण्डा घूमा तो गुण्डे ने उसे हवा में ही पकड़कर जोरों से झटका दिया।

रेनू के हाथ से डण्डा निकल गया और वह मुंह के बल नीचे गिरी।

गिरते ही वह सम्भली और घायल शेरनी की तरह दहाड़ते हुए गुण्डों से उलझ गई।

गुण्डे तीन—और वह अकेली।

कहां तक जूझ सकती थी वह उनसे।

कुछ ही देर में वह लहुलुहान फर्श पर पड़ी थी।

“हरामजादी....मालिक के रास्ते का रोड़ा बन रही थी।” एक गुण्डे ने रेनू के कूल्हे पर ठोकर मारी।

रेनू का जिस्म लुढ़ककर परे हो गया।

उसके पश्चात् गुण्डों ने डोली को देखा—जो अपनी मां से लिपटी थर-थर कांप रही थी।

“वाकई लाजवाब है।” एक बोला—“मालिक तो इसे देखते ही बाग-बाग हो जायेंगे।”

“यह मालिक के लिये नहीं बेवकूफ, नेता जी के लिये है। मन्त्री जी आज रात इसका उद्घाटन करेंगे।” कहते हुए वह डोली की तरफ बढ़ा।

डोली अपनी मां से और भी ज्यादा चिपक गई।

“म....मां....मुझे इन दरिंदों से बचाओ....।”

वह डरी आवाज में बोली।

मगर मां ने कुछ नहीं किया। न ही कुछ कहा।

बस फटी-फटी आंखों से गुण्डों को देखे जा रही थी।

उसकी आंखों में अब जीवन नहीं था।

अपनी बड़ी बेटी को अपने तथा अपनी छोटी बहन के लिये गुण्डों से जूझते देखकर ही उसके दिल की धड़कन ने उसका साथ छोड़ दिया था।

दो गुण्डे उसके करीब पहुंचे और डोली की बांह पकड़कर अपनी तरफ खींचा।

“नहीं....!” गिड़गिड़ाई डोली—“मुझे मत ले जाओ....भगवान के लिये मुझे छोड़ दो।”

“हा....हा....हा....” एक गुण्डे ने अट्टाहस लगाया—“तुझे छोड़ दें—अरे अगर तुझे छोड़ दिया तो मालिक हमें नहीं छोड़ेंगे और मरना हमें कबूल नहीं।”

“द....दीदी....।” तभी बंटी अपनी बहन से चिपके हुए ही डरी-डरी आवाज में चीखा।

मगर गुण्डों ने उनकी तरफ देखा तक नहीं।

एक गुण्डे ने डोली को अपने कंधे पर लटकाया और दरवाजे से बाहर निकल गया।

पीछे-पीछे अन्य गुण्डे भी निकल गये।

रेनू के डण्डे से घायल हुए दोनों गुण्डे भी उठकर निकल गये थे—और अपने पीछे छोड़ गये थे बरबादी की दास्तान।

बैड पर रेनू की मां मरी पड़ी थी।

दोनों मासूम अभी भी एक दूसरे से चिपके हुए थे।

फर्श पर रेनू लहुलुहान पड़ी थी।

कमरे में मौत-सा सन्नाटा छाया हुआ था।

थोड़ी देर बाद बंटी ने स्वीटी को छोड़ा और लटककर बैड से उतरकर अपनी नन्हीं-नन्हीं टांगों से चलता हुआ रेनू के करीब आया और उसके सीने पर हाथ रखकर उसे हिलाने लगा।

“मां....मां....उथो (उठो) मां....वो मौछी को ले गये....उथो मां....।”

रेनू की मूर्छा टूटी।

उसने धीरे-धीरे आंखें खोलीं।

कुछ पलों तक तो वह यूं ही छत को घूरती रही—फिर वह झटके से उठकर खड़ी हो गई।

सबसे पहले उसकी नजरें अपनी मां पर पड़ीं—जो कि फटी-फटी आंखों से दरवाजे की तरफ देख रही थी।

“मां....!”

वह चीखी और आगे बढ़कर अपनी मां की लाश से लगकर रोने लगी।

कुछ देर रोने के उपरांत वह सीधी हुई और बाहर भागी।

बाहर दरवाजे के करीब भीमसेन को पड़ा देख वह पुनः चीखी।

सब कुछ उजड़ चुका था उसका।

मां मर गई। पति मर गया—उसकी बहन को गुण्डे उठाकर ले गये।

पहली बार आई थी उसकी मां और बहन घर में।

अभी तो उन्होंने उससे बात भी नहीं की थी।

ढंग से गले भी नहीं मिले थे वे कि यह कहर टूट पड़ा उन पर।

अब वह न तो समाज को मुंह दिखा सकती थी—न अपने बाप को।

फिर क्या करे वह?

सोचते हुए एकाएक ही उसका चेहरा सख्त हो उठा।

उसने खुद को भी खत्म कर देने का फैसला कर लिया।

मगर तभी उसकी निगाहें बंटी और स्वीटी पर जा टिकीं, जो कि दरवाजे के पास खड़े अपनी मां को टुकुर-टुकुर देख रहे थे।

“मेरे बाद इन बच्चों का क्या होगा?” वह बड़बड़ाई—“नहीं....मैं इन्हें अनाथ नहीं होने दूंगी।”

बड़बड़ाते हुए वह सीधी किचन की तरफ बढ़ी।

किचन में आकर उसने प्लास्टिक का डिब्बा शैल्फ से उतारा जिसमें कि चने की दाल पड़ी नजर आ रही थी।

उसने डिब्बे का ढक्कन खोला और उसमें हाथ डालकर हिलाया।

शीघ्र ही उसका हाथ बाहर निकला तो उसकी उंगलियों में सल्फास की गोली दबी हुई थी।

ऐसे ही उसने दो और डिब्बों से तीन और गोलियां निकालीं और फिर दो छोटे गिलासों में पानी डालकर एक-एक गोली घोल दी।

इधर दोनों मासूम किचन तक अपनी मां के पीछे-पीछे आ पहुंचे थे।

रेनू ने दोनों गिलास उठाये और उनके पास आकर डबडबाये स्वर में बोली—“लो बच्चो—यह पी लो।”

बच्चे पहले ही बुरी तरह से डरे हुए थे। सो बिना किसी आना-कानी के उन्होंने गिलास पकड़े और पी गये। इधर रेनू ने बाकी की दो गोलियां उनके पानी पीते ही निगल लीं।

शीघ्र ही जहर ने अपना असर दिखाया—और तीनों मां-बच्चे वहीं गिरकर छटपटाने लगे।

¶¶

“अ....आ....ह....!”

भीमसेन के होंठों से कराह उबली और उसने आंखें खोल दीं।

उसकी पीठ में भयानक जलन हो रही थी।

किसी तरह से अपनी पीड़ा पर काबू पाते हुए वह उठा और लड़खड़ाते हुए भीतर की तरफ बढ़ा।

“रे....नू....डोली....बं....टी....।”

उसने आवाजें लगाईं।

जैसे ही वह किचन के करीब से निकला, उसकी नजरें रेनू तथा अपने दोनों बच्चों पर पड़ीं।

तीनों मरे पड़े थे।

“रे....नू....।”

वह जोरों से चीखा और वहीं गिर पड़ा।

एक बार फिर बेहोशी की गर्त में डूबता चला गया वह।

ठीक तभी बाहर पुलिस की जिप्सी आकर रुकी।

¶¶

‘अ....आ....ह....!’

भीमसेन ने कराहते हुए आंखें खोलीं तो खुद को नर्म बिस्तर पर पड़े पाया।

उसकी पीठ पर पट्टी बंधी हुई थी तथा अन्य घावों पर मरहम लगा हुआ था।

अपने आस-पास हल्का शोरगुल सुन उसने दायें-बायें देखा तो खुद को अस्पताल में पड़ा पाया।

“मैं लाया हूं तुझे यहां।”

तभी उसे अपने पीछे से आवाज आई और फिर इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा उसके पीछे से निकलकर उसके बाईं तरफ आकर लोहे के एक स्टूल पर बैठ गया।

“अहसान मान मेरा!” वह बोला—“जो तुझे वक्त रहते यहां ले आया वर्ना अगर गोली का जहर फैल जाता तो तू किसी भी सूरत में न बचता।”

भीमसेन कुछ नहीं बोला—बस टुकुर-टुकुर उसे देखने लगा।

भीमसेन ही क्या पूरा दीनापुर दिलबाग सिंह राणा के बारे में जानता था कि वह बद्रीनाथ का वफादार कुत्ता है और बद्रीनाथ पर गृहमन्त्री बिहारी लाल का हाथ है।

“क्या जरूरत थी तुझे इतना बड़ा पंगा लेने की।” दिलबाग सिंह राणा उसे समझाने वाले अंदाज में बोला—“तू तो जानता ही है कि मालिक जिस चीज को पाना चाहता है, उसे पाकर ही दम लेता है और फिर जैकी तो तेरी साली को लेने आया था। तेरी जोरू को तो लेने नहीं आया था—जो खामखां उलझ गया उनसे।

क्या मिला तुझे?

सास मर गई तेरी—तेरी बीवी ने अपने बच्चों के साथ आत्महत्या कर ली—और खुद तू यहां पड़ा है। फिर भी अपनी साली को नहीं बचा पाया तू।

ले ही गये न वे उसे।

यदि तू पहले ही उन्हें आराम से ले जाने देता तो तुझे गोली नहीं लगती—तेरी बीवी और बच्चे नहीं मरते। की न बेवकूफी।

अब महीना भर पड़ा रह बिस्तर पर। उसके बाद उठना।

अब बोल....क्या रिपोर्ट लिखूं तेरी?”

भीमसेन की आंखों में आंसू भर आये।

कुछ भी नहीं बोला वह—बस मुंह परे फेर लिया।

“लगता है अभी अक्ल नहीं मरी तेरी। अगर तू रिपोर्ट लिखवाता तो....।”

दिलबाग सिंह राणा ने बात अधूरी छोड़ दी। मगर उस अधूरी छोड़ी बात में जो धमकी छुपी हुई थी—उसे भीमसेन बखूबी समझ रहा था।

“ठीक है....” गहरी सांस छोड़ते हुए खड़ा हो गया दिलबाग सिंह राणा—“मैं चलता हूं—अभी उम्र ही क्या है तेरी—दूसरी शादी कर लेना। शादी होगी तो बच्चे भी हो जायेंगे। अब ठीक होकर अपना काम सम्भाल।”

कहकर उसने भीमसेन की तरफ पीठ की और कदम आगे बढ़ा दिया।

भीमसेन की आंसुओं से भरी आंखों में कहर उभर आया।

‘बस....’ वह बड़बड़ाया—‘बद्री ने जितनी बर्बादी मचानी थी मचा ली। अब उसकी जिंदगी के उल्टे दिन शुरू हो गये हैं—और तेरे दिन भी पूरे हो चुके हैं कुत्ते।’

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

इस वक्त उसके दिमाग में कितने ज्वालामुखी दहक रहे थे—यह वह ही जानता था।

¶¶

भीमसेन ने अपने आंसुओं को पौंछा और अपने सामने बैठी रीमा राठौर की तरफ देखते हुए बोला—

“बत्तीस दिन बाद मैं कल ही अस्पताल से निकला और घर आकर सबसे पहले तुम्हें ही फोन किया।”

“ओह!” रीमा राठौर के होंठों से निकला।

“मेरा तो सब कुछ बर्बाद हो ही चुका है बहना। लेकिन वो कमीना बद्री किसी और का घर बर्बाद न करने पाये—इसलिये चण्डी बनकर टूट पड़ो उस पर। शायद

ऊपर वाले ने तुम्हें मेरी बहन बनाया ही इसीलिये था कि तुम्हारे ही हाथों उस कमीने का अंत हो।"

"चिंता मत करो भैया....।" रीमा राठौर के दांत भिंच गये—"तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। यूं समझ लो कि बद्री की जिंदगी की उल्टी गिनती अब शुरू हो गई है।"

उसने एक गहरी सांस छोड़ी और उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोली—

"मैं तुम्हारे परिवार को तो वापस नहीं ला सकती भैया—मगर इतना वादा जरूर करती हूं कि अपनी भाभी—अपने भतीजों की मौत का मैं बद्री से ऐसा बदला लूंगी कि आगे से कोई भी गुण्डा इस शहर में नया बद्री बनने से पहले सौ बार सोचेगा। और उस गृहमन्त्री की तो मैं वो हालत करूंगी कि वो सारी नेतागिरी भूल जायेगा....लेकिन....।"

"लेकिन क्या बहन?"

"जब तक बद्री का काम-तमाम नहीं हो जाता—तब तक तुम मुझसे दूर ही रहना।"

"क्....यों?"

चौंका भीमसेन।

"मैं नहीं चाहती कि किसी को हमारे रिश्ते का पता चले। इस तरह तुम मुसीबत में पड़ सकते हो। तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है।"

"मैं मौत से नहीं डरता।" दृढ़तापूर्वक बोला भीमसेन—"यूं भी जीने के लिये अब मेरे पास रह ही क्या गया है?"

"क्यों? मैं नहीं हूं क्या? क्या अपनी बहन को भूल गये तुम?"

"मगर बहन....।"

"चिंता मत करो—मुझे जब भी तुम्हारी जरूरत होगी मैं खुद तुमसे सम्पर्क कर लूंगी। और हां....तुम मेरे यहां आने के बारे में भी किसी को कुछ नहीं बताना।"

इस बार कुछ नहीं बोला भीमसेन—बस सिर हिला दिया।

"तुम्हें यहां इस तरह रहना है—जैसे बहुत डरे हुए हो तुम बद्री से।"

भीमसेन ने पुनः सिर हिला दिया।

¶¶

“चलो....चलो....जल्दी करो....चादर में नोट डालो।”

एक गुण्डा हाथ में हाकी पकड़े खड़ा था तथा उसके दायें-बायें तीन अन्य गुण्डे हाथों में स्टेनगनें पकड़े खड़े थे।

चौक के बीच में सफेद रंग की चादर बिछी हुई थी और आस-पास के दुकानदार चादर पर नोट फैंककर बारी-बारी से वापस जा रहे थे।
बिछी हुई चादर के करीब ही जीप खड़ी थी जिसमें कि वो गुण्डे आये थे।

दोनों तरफ खड़े आदमी उड़े रंगों से कभी गुण्डों को देख रहे थे तो कभी चादर पर पड़े नोटों के ढेर को।

सभी को पता था कि दुकानदारों के बाद नोट डालने की उनकी बारी है। मगर क्या मजाल कोई जो चुपके से भी वहां से खिसकने की कोशिश भी
कर रहा हो।

यह बद्रीनाथ की दहशत ही थी जो कोई वहां से हिलने की भी कोशिश नहीं कर रहा था।

सभी चुपचाप सहमे खड़े उन गुण्डों के मुंह से निकलने वाले आदेश का इंतजार कर रहे थे कि कब वह आर्डर करे और कब वो चादर में नोट डालें।

और मजे की बात यह थी कि आसपास खड़े लोगों में कोई भी औरत नहीं थी।

वजह साफ थी।

सभी औरतें जानती थीं कि फलां दिन किस बाजार में बद्रीनाथ के गुण्डे उगाही करते हैं। बस उस दिन वो उधर का रुख ही नहीं करती थीं।
वजह एक तो टैक्स देने की थी, दूसरी अब तक चार बार खतरनाक वाकया हो चुका था।

चार बार चार युवतियों की इज्जत भरे बाजार में लूट ली गई थी। सभी के सामने उन्हें नंगा करके उनसे सामूहिक बलात्कार किया गया था और किसी माई के लाल में

इतनी हिम्मत पैदा नहीं हुई थी कि वह आगे बढ़कर विरोध भरे दो शब्द भी बोल सके।

बोल सकते भी तो नहीं थे वो।

क्योंकि लोग जानते थे कि मुंह से जुबान निकालने का मतलब होगा मौत को गले लगाना और जान हर किसी को प्यारी थी।
जिन युवतियों की इज्जत लुटी—उनमें से दो ने तो आत्महत्या कर ली—एक पागल हो गई और एक के घरवालों ने उसे किसी दूसरे शहर में भेज दिया।

"अबे ओ हरामखोर!" हाकी वाले ने एक दुकानदार को गाली दी—"अपनी मां की शादी में नहीं आया हुआ तू....जल्दी कर।"
दुकानदार घबराया हुआ तेजी से आगे बढ़ा और सौ का नोट निकालकर मन-ही-मन उन्हें हजारों गालियां निकालते हुए चादर पर पड़े नोटों के ढेर पर डाल दिया।

"पींऽऽ पींऽऽ....।"

तभी किसी कार का हॉर्न वहां गूंजा।

दायीं तरफ खड़े लोगों की गर्दनें पीछे घूम गईं। साथ ही सभी के चेहरों पर हैरानी भी उभरी।

उस वक्त किसी की हिम्मत वहां से गुजरने की नहीं थी—और एक कार आगे जाने के लिये रास्ता मांग रही थी। और जब लोगों ने कार की ड्राइविंग सीट पर एक हसीन-तरीन युवती को देखा तो न चाहते हुए भी लोगों के कलेजे दहल गये।

"बेचारी....अब नहीं बचेगी यह।" एक मन-ही-मन बड़बड़ाया।

"अब एक बार फिर मुझे किसी बेबस की इज्जत लुटते हुए देखना पड़ेगा।"

एक अन्य भीगे स्वर में बड़बड़ाया।

हॉर्न की आवाज ने गुण्डों को भी आकर्षित किया।

तभी तो उनकी गर्दनें उधर घूम गई थीं।

"किस हरामी में इतनी हिम्मत पैदा हो गई है?" हॉकी वाला गुर्राया—"जरा हम भी तो देखें।"

उसके गुर्राने की देर थी कि लोग काई की तरह फट गये।

गुण्डों की नजरें सीधी कार पर जा पड़ीं जो कि लोगों के बीच से रेंगते हुए आगे बढ़ने लगी थी।

गुण्डों की नजरें कार ड्राईव कर रही युवती पर पड़ीं तो उनकी राल टपक पड़ी।

“यह तो हूर है।” एक ने राल टपकाई।

“यह तो खुद ही हमारी गोद में गिरने आ रही है।” दूसरे ने चटकारा लिया।

“अरे बेवकूफ—गोद में गिरने नहीं—नीचे बिछने आ रही है।” तीसरे ने कहा।

तभी कार रेंगती हुई उनके करीब आकर खड़ी हो गई।

कार का ड्राइविंग डोर खुला और उसमें से टाईट जीन्स पहने रीमा राठौर बाहर निकली। ऊपर उसने शार्ट टॉप पहन रखी थी जिसमें कि उसकी नाभि तथा उससे ऊपर का थोड़ा हिस्सा नजर आ रहा था।

“वाह!” हॉकी वाले ने चटकारा लिया—“क्या हसीन माल है। ऐसा माल तो मालिक की खिदमत में पेश होना चाहिये।”

उसकी बात खत्म होते-होते रीमा राठौर चादर के करीब आई और उस पर पड़े नोटों को देखकर गुण्डों की तरफ देखा—
“हराम की खाने की इतनी ही आदत है तो अपनी बहनों को कोठे पर क्यों नहीं बिठा देते?”

वह गुर्राई।

“यह तो जुबान भी चलाती है।” एक स्टेनगनधारी ने हैरानी जाहिर की।

“लगता है दीनापुर की नहीं है यह।” दूसरा बोला—“वर्ना इधर का रुख ही नहीं करती—और अगर करती भी तो ऐसे नहीं बोलती....बल्कि डर के मारे कुर्बान हो जाती और हमारे आगोश में आ जाती।”

“तो कोई बात नहीं—अब ले लेते हैं।”

तीसरे ने कहा और स्टेनगन का रुख रीमा राठौर की तरफ करते हुए गुर्राया—

“ऐ छोकरी....कपड़े उतार और चुपचाप इन नोटों पर लेट जा। हम इन्हीं नोटों पर तेरी जवानी से खेलेंगे।”

रीमा राठौर के होंठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई।

“कपड़े तो अब तुम्हारे उतरेंगे हरामजादो।” वह सर्द स्वर में बोली—“बद्री ने दीनापुर में जितना कहर बरपाना था बरपा लिया—उसके पापों का घड़ा अब भर चुका है—बस अब उसके फूटने भर की देर रह गई है।”

सुनकर चारों गुण्डे पलभर के लिये हक्के-बक्के रह गये।

एक लड़की इतनी बड़ी बात कह गई—उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था।

“यह बाई चांस नहीं आई।” एक हैरानी से बोला—“बल्कि जानबूझकर आई है—तभी तो मालिक के बारे में ऐसी बात कर रही है।”

“लगता है दिमाग फिरा हुआ है इसका।”दूसरा बोला।

“तूने दिमाग का क्या करना है।” तीसरा बोला—“हमें तो इसका हुस्न कैश करना है—चल शुरू हो जा और इसके कपड़े....।”

दूसरे ने अपनी स्टेनगन हॉकी वाले को पकड़ाई और रीमा राठौर की तरफ गर्दन अकड़ाते हुए बढ़ा।

इधर-उधर खड़े लोगों के कलेजे धड़क रहे थे।

हां—कुछ तमाशबीन इसे एक तमाशे की तरह ले रहे थे और रीमा राठौर के बदन को देखने के वक्त का इंतजार कर रहे थे।
गुण्डा जैसे ही रीमा राठौर के करीब पहुंचा—

‘ठाक....!’

रीमा राठौर की लम्बी टांग सीधी उसके पेट में जा लगी।

गुण्डा बुरी तरह से चीखते हुए पीछे जा गिरा।

लोगों के कलेजे उछलकर उनके हलक में आ फंसे।

एक ही प्रहार में अपने साथी की बुरी हालत होती देख तीनों सकते में आ गये। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि हसीन नजर आने वाली वह लड़की हकीकत में बहुत ही खतरनाक है।

तीनों की निगाहें आपस में मिलीं और उसी के साथ ही तीनों की स्टेनगनें रीमा राठौर की तरफ उठ गईं।

“चुपचाप कपड़े उतार वर्ना हमारी गोलियां तेरे जिस्म को....।”

बात अधूरी ही रह गई उसकी।

रीमा राठौर की रिवॉल्वर कब उसके हाथ में आई और उसने गोलियां चलाईं....किसी को कुछ भी पता नहीं चला।

अचूक निशाना।

तीन बार ‘धांय....धांय....धांय....’ हुई और गोलियां स्टेनगनों की बैरलों में जा धंसीं।

वे तीनों तो तब हड़बड़ाये जब उन्हें झटका लगा।

उसी हड़बड़ी में एक ने ट्रिगर दबा दिया।

मगर ‘तड़....तड़’ की बजाये फटाक की आवाज हुई।

स्टेनगन की बैरल फट गई और बारूद के कई टुकड़े उस गुण्डे के चेहरे पर जा लगे।

स्टेनगन छोड़ बुरी तरह से चीखते हुए वह हाथों में चेहरे को थामे वहीं बैठ गया।

अपने साथी की हालत देख बाकी के दोनों गुण्डे पहले तो हड़बड़ाये फिर स्टेनगनें एक तरफ फेंक दीं।

“चाहती तो बड़े आसानी से गोली से उड़ा सकती हूं तुम सबको।” तभी रीमा राठौर गुर्राई—“मगर मैं ऐसा करूंगी नहीं—क्योंकि मैं इन लोगों के दिलों से बद्री का डर निकालना चाहती हूं और ऐसा तभी होगा जब तुम्हें जूतों से पीटा जाये।”

कहकर रीमा राठौर ने रिवॉल्वर जेब में डाली और टांगों तथा हाथों को फैलाकर खड़ी हो गई।

अब तक तीसरा, जो कि रीमा राठौर की ठोकर खाकर गिरा था, सम्भलकर खड़ा हो चुका था।

तीनों खतरनाक भाव चेहरों पर समेटे रीमा राठौर की तरफ बढ़े।

मगर उन्हें क्या मालूम था कि वे किस बला से उलझ रहे हैं।

जैसे ही वे उसके करीब पहुंचे—रीमा राठौर जैसे बिजली बन गई।

देखने वालों को ऐसा नजर आ रहा था जैसे बिजली से बनी कोई चीज बार-बार कौंध रही हो।

गुण्डों की चीखें गूंज रही थीं वहां।

ज्यादा देर नहीं लगी रीमा राठौर को उन्हें ढेर करने में।

कुछ ही देर में तीनों टूटे-फूटे सड़क पर पड़े गहरी सांसें ले रहे थे। तीनों की बाजुएं तोड़ डाली थीं रीमा राठौर ने। अब उनके चेहरे पर आतंक के भाव थे।

रीमा राठौर अब उन्हें हसीन-तरीन युवती नजर नहीं आ रही थी—बल्कि वे तो उसे साक्षात् दुर्गा के रूप में देख रहे थे।

“चलो....कपड़े उतारो अपने।”

रीमा राठौर जेब से सिगरेट का पैकेट निकालते हुए बोली।

यह रीमा राठौर का आतंक ही था जो उन्होंने पहले ही हुक्म पर कपड़े उतारने शुरू कर दिये।

इस बीच रीमा राठौर ने सिगरेट सुलगा ली।

“तू भी उतार।” रीमा राठौर ने बारूद से घायल गुण्डे के पास आकर ठोकर मारी।

सारे गुण्डे कपड़े उतारने लगे। और रीमा राठौर कश लगाते हुए उन्हें नंगा होते देख रही थी।

कुछ ही देर में चारों-के-चारों गुण्डे पूरी तरह से नंगे पड़े थे।

रीमा राठौर ने पैरों से सभी के कपड़ों को इकट्ठा किया और उन्हें गौर से देखते हुए बोली—“अच्छा हुआ मैंने कपड़े नहीं उतारे—वर्ना तुम चारों छक्कों से मेरा तो कुछ भी न बनता। खैर....अब आवाज लगाओ कि जिस-जिसने चादर पर नोट डाले हैं—वो आकर ले जायें।”

गुण्डों को काटो तो खून नहीं।

ऐसा हुक्म वे दे नहीं सकते थे—मगर साक्षात् मौत उनके सामने खड़ी थी। न करने का मतलब था मौत।

“अ....अपने-अपने पैसे ले जाओ।”

एक गुण्डा कराहते हुए बोला।

और फिर चारों गुण्डे सड़क पर ऐसे बैठ गये मानो अपना नंगापन दिखाते हुए उनकी जान निकली जा रही हो।

इधर वहां खड़े लोग जहां आश्चर्य में डूबे हुए थे—वहीं खुश भी हो रहे थे।

रीमा राठौर के पहले ही प्रयत्न से उनके दिलों में उन गुण्डों का डर काफी हद तक निकल गया था।

मगर यह डर फिर भी बना हुआ था कि उसके जाने के बाद गुण्डों का कहर फिर से उन पर टूट पड़ेगा।

फिर भी दुकानदार आये और एक-एक करके अपने पैसे उठाकर वापस लौटने लगे। कुछ ही देर में चादर पूरी तरह से खाली नजर आने लगी।
“खड़े हो जाओ!” गुर्राई रीमा राठौर।

गुण्डे गर्दनें झुकाये खड़े हो गये।

अपने हाथ उन्होंने आगे कर रखे थे।

“ऐसे ही अपने मालिक बद्री के पास जाओ—और उससे कह दो कि मौत ने उसके घर का रास्ता देख लिया है। अब वह किसी भी सूरत में नहीं बचेगा।”

चारों लड़खड़ाते हुए जीप की तरफ बढ़े और वैसे ही वे जीप में बैठकर वहां से गये—

“हुर्रे....।”

एक युवक ने नारा लगाया और आगे आकर खुशी से नाचने लगा।

नाचने के साथ-साथ उसकी आंखों से आंसू भी बह रहे थे।

नाचता हुआ वह रीमा राठौर के सामने आया और खड़ा होकर फफक पड़ा।

“मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो?” वह हाथ जोड़ते हुए बोला—“लेकिन तुममें मुझे अपनी बहन नजर आ रही है। मेरी बहन की इन्हीं गुण्डों ने इसी चौक पर इज्जत लूटी थी—और उसने घर में छत से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। मगर मरने से पहले उसने मुझसे इतना जरूर कहा था कि बद्री औरतों की सरेआम इज्जत लूटता है—देख लेना—एक औरत ही उसकी मौत का कारण बनेगी। आज....आज मुझे अपनी बहन की बात सच होती नजर आ रही है। अरे लोगों—तुम भी नाचो—खुशियां मनाओ—आज शैतान को मात मिली है।”

कहकर वह पुनः नाचने लगा। ऐसे जैसे खुशी से पागल हो रहा हो वह।

उसकी देखा देखी और भी कई लोग खुशी से नाचने लगे।

रीमा राठौर के होंठों पर एक मनमोहक मुस्कान नाच रही थी।

¶¶

“म....मालिक....।”

अपने प्यादे की घबराई आवाज सुनकर बुरी तरह से चौंका बद्रीनाथ....।

उस वक्त वह डिनर करने जा रहा था।

डायनिंग टेबल पर गोश्त के तरह-तरह के व्यंजन रखे थे और एक अर्धनग्न युवती उसके करीब खड़ी अपने हाथ से उसे स्कॉच पिला रही थी।

बद्रीनाथ के गैंग के जितने भी लोग थे—सभी को आदेश था कि जब तक बहुत जरूरी न हो—खाना खाने के वक्त उससे बात न की जाये।
ऐसे में उसकी घबराई आवाज सुनकर चौंकना स्वाभाविक ही था।

‘अवश्य ही कोई गम्भीर बात हुई है।’

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

“क्या है?” वह उसे घूरते हुए बोला।

“र.....रगडू आया है मालिक।”

बद्रीनाथ के माथे पर बल पड़ गये। आंखों में गुस्सा उभर आया।

“हरामखोर....!” वह गुर्राया—“वह रामलाल चौक में उगाही करने गया था। वापस नहीं आयेगा तो क्या देश छोड़कर भागेगा?”

“व....वो नंगा है मालिक।”

“क्...या....?” बुरी तरह से उछल पड़ा बद्रीनाथ।

“उसके तीनों साथी भी नंगे हैं—और सभी घायल हैं।”

“घायल भी हैं।” एक और झटका लगा बद्रीनाथ को—“और उगाही?”

“खाली हाथ आयें हैं मालिक।”

बद्रीनाथ झटके से खड़ा हो गया।

आंखों में कहर बरसने लगा—चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो उठा उसका।

¶¶

“शाबाश....शाबाश मेरे शेरों.....बिना कपड़ों के तुम कितने खूबसूरत और बहादुर नजर आ रहे हो।”

बद्रीनाथ के जहर में डूबे शब्दों को सुन चारों के सिर झुक गये।

बद्रीनाथ इस वक्त अपने सिंहासन पर बैठा था, और रगडू तथा उसके साथी उसी अवस्था में उसके सामने खड़े थे जैसे रीमा राठौर ने उन्हें भेजा था।

“कमाई करने क्या गये—उल्टे अपने कपड़े उतरवा आये। वाह! क्या इज्जत बनाई है अपने मालिक की।”

चारों की झुकी गर्दनें और ज्यादा झुक गईं।

“हरामजादों....!” गुर्रा उठा बद्रीनाथ—“नंगे तुम नहीं हुए.....नंगा तो मुझे किया है उन्होंने। बद्री का सारा आतंक पलभर में ही खत्म कर दिया तुमने।”

उसने पलभर के लिये अपनी जुबान को रोका—फिर गुर्राया—

“दीनापुर में किसकी इतनी हिम्मत हो गई कि उसने मेरे खिलाफ सिर उठाया? कौन थे वो माई के लाल जिन्होंने तुम्हारी यह हालत कर दी?”

“व....वो एक लड़की थी मालिक।”

रगडू सिर झुकाये हुए ही कांपते स्वर में बोला।

“लड़की.....!” बुरी तरह से उछल पड़ा बद्रीनाथ—“वो भी एक?”

रगडू ने कुछ नहीं कहा—बस झुके सिर को हां में हिला दिया।

“मुंह सीधा कर हरामजादे।”

रगडू ने हड़बड़ाकर उसकी तरफ देखा।

“एक लड़की ने तुम्हारी यह हालत कर दी?” बद्रीनाथ को जैसे विश्वास नहीं हुआ।

“ह....हां मालिक।” थर्राये स्वर में बोला राजू।

“एक छोकरी से पिटकर आये हैं मेरे शेर।”

रगडू ने जोरों से थूक सटकी।

“क्या वो गामा पहलवान की लड़की थी?”

“न....हीं....व....वो....तो बहुत ही खूबसूरत और जवान छोकरी थी मालिक....।”

“खूबसूरत और जवान छोकरी?” हैरानी दर्शाई बद्रीनाथ ने।

“हां मालिक....!” रगडू के साथ खड़ा नंगा बोला—“खूबसूरत इतनी कि हाथ लगाओ तो मैली हो जाये और जवान इतनी कि देखते ही होश उड़ जायें।”

“देखने में नाजुक ऐसी नजर आती थी मानो फूल लगने से भी उसे जख्म हो जाये।” उसके साथ वाला नंगा बोला—“मगर जब उसने हाथ-पैर हिलाये तो उसने हमारी यह हालत कर दी।”

“खामोश....!” दहाड़ा बद्रीनाथ।

चारों ने हड़बड़ाते हुए सिर झुका लिये।

“अपने मालिक के सामने उसके दुश्मन की तारीफ कर रहे हो हरामजादो।”

चारों में से कोई कुछ नहीं बोला। बस सिर झुकाये खड़े रहे।

“कौन थी वो?”

रगडू ने सिर उठाया और थर्राये स्वर में बोला—“ह....हमने उसे पहले कभी नहीं देखा।”

“हरामजादो....उसका नाम तो गूंजा होगा वहां।”

“न....हीं....वो कार में आई थी। इस शहर की तो वह हरगिज नहीं थी....वर्ना अब तक वह आपके गुलामों में से किसी की निगाह में जरूर चढ़ जाती।”

“यानि इसका पता नहीं चल सकता कि वह कौन है।” गहरी सांस छोड़ी बद्रीनाथ ने।

“उ....उसकी कार का नम्बर याद है मुझे।”

“बोल—वही बोल।”

रगडू ने नम्बर बताया।

बद्रीनाथ ने सिर हिलाते हुए हुंकार भरी और बोला—

“इस दुनिया में तुम चारों ऐसे ही आये थे—जैसे खड़े हो—और अब ऐसे ही जाओगे।”

चारों के रंग पीले पड़ गये।

“न....हीं....मालिक ऐसा मत कहो। हम....।”

“पिटे हुए मोहरों से बद्री को नफरत है।” फुंफकारा बद्रीनाथ और अपने हाथ को ऊपर उठाया।

उसी वक्त वहां खड़े उसके बॉडीगार्डों की गनें उनकी तरफ तन गईं।

“न....हीं....मालिक....ह....हमें माफ कर....।”

‘तड़....तड़....तड़....!’

बात पूरी नहीं कर पाया रगडू कि बद्री का हाथ नीचे गिरा—और उसी के साथ ही चार गनें एक साथ गरजीं।

बेशुमार गोलियां चारों के जिस्मों में जा समाईं और देखते-ही-देखते चारों की लाशें वहां पड़ी नजर आ रही थीं।

बद्रीनाथ ने नफरत भरी निगाह उनकी लाशों पर डाली और जेब से मोबाईल निकालकर कोई नम्बर डायल करने लगा।

“हैलो....!” शीघ्र ही दूसरी तरफ से दिलबाग सिंह राणा की आवाज उसके कान के पर्दे से टकराई।

“तेरा बाप बोल रहा हूं।”

गुर्राया बद्रीनाथ।

“ओह मालिक आप।” दूसरी तरफ से दिलबाग सिंह राणा की हड़बड़ाती आवाज आई।

“एक नम्बर नोट कर....।”

“हुक्म....।”

बद्रीनाथ ने रगडू द्वारा बताया नम्बर बताया और बोला—

“कार का नम्बर है यह—और इसकी मालिक एक छोकरी है। पता कर उसका—ढूंढ उसे—कहीं से भी ढूंढ और पकड़कर मेरे पास लेकर आ।”

“खैरियत तो है मालिक.....जो आप....?”

“उस हरामन ने मेरे चार कुत्तों की बांहें तोड़कर उन्हें नंगा करके मेरे पास भेजा है।”

“य....यह आप क्या कह रहे हैं मालिक....एक अकेली लड़की ऐसा कैसे कर सकती है?”

“वही तो मुझे भी विश्वास नहीं हो रहा। जरा मैं भी तो देखूं—कौन है वो—जिसने इतना बड़ा कारनामा कर दिखाया है?”

“आप चिंता मत कीजिये—अगर वो छोकरी इसी शहर में है तो वह कहीं भी छुपी हो—तीन-चार घण्टे में आपके सामने होगी।”

बद्रीनाथ ने फोन बन्द किया और नफरत से लाशों को देखने लगा—जिन्हें चार आदमी घसीटते हुए ले जा रहे थे।

¶¶

होटल गोल्ड में कमरा नम्बर एक सौ तीन में ठहरी थी रीमा राठौर और इस वक्त वह अपने कमरे में बैठी अपने मोबाईल से अपने चीफ रंगनाथन को फोन कर रही थी।

नम्बर मिलाकर उसने ओ.के. का बटन दबाया और फोन कान से लगा लिया।

“हैलो रीमा।” शीघ्र ही दूसरी तरफ से उसके कान में चीफ रंगनाथन की आवाज पड़ी।

“नमस्कार सर।” रीमा राठौर आदर भरे स्वर में बोली।

“फोन कैसे किया?”

“एक जरूरी काम है सर—और वो काम फौरन से पेश्तर करना है।”

“काम बोलो।”

“गृहमन्त्री बिहारी लाल से फौरन इस्तीफा दिलवाना है—अगर वह इस्तीफा नहीं देता तो मुख्यमन्त्री अपनी पावर का इस्तेमाल करते हुए उसे फौरन मन्त्रिमण्डल से निकाल दें।”

“ऐसा ही होगा—और कुछ?”

“और मुख्यमन्त्री से मेरी फोन पर बात करायें।”

“ओ.के.। पांच मिनट बाद तुम्हें मुख्यमन्त्री का फोन मिल जायेगा। खुश?”

“थैंक्यू सर।”

दूसरी तरफ से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने फोन कान से हटाया और उसे बैड पर रखकर बैड की पुश्त से टेक लगा ली।

इस वक्त उसका दिमाग उसके भाई भीमसेन के बारे में सोच रहा था।

उसका भरापूरा परिवार खत्म हो गया था। साली बिहारी लाल के पास पहुंच गई थी।

'क्या भीमसेन की साली अभी बिहारी लाल की कैद में है, या मर गई है?'

यह सवाल अचानक ही रीमा राठौर के जेहन में आया।

अभी तक उसने डोली के बारे में कुछ नहीं सोचा था—मगर अब उसकी सोचें उसकी तरफ घूम गईं थीं।

अगर डोली जिन्दा है तो निश्चय ही वह बिहारी लाल की कैद में होगी। यानि पहले उसे आजाद कराना जरूरी है और अगर डोली की शादी भीमसेन से करा दी जाये तो डोली की लुट चुकी इज्जत को आंचल मिल जायेगा और भीमसेन का घर भी बस जायेगा।

अपनी यह सोच उसे ठीक लगी थी।

हालांकि दोनों की उम्र के अन्तर का भी ख्याल आया था उसे। मगर यह अन्तर इतना बड़ा भी नहीं था कि शादी न हो सके।

"अब बस यह पता चलना चाहिये कि डोली जिन्दा है। उसके पश्चात् सोचा जायेगा।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाई।

तभी मोबाईल का म्यूजिक बज उठा।

रीमा राठौर का ध्यान भंग हुआ।

उसने फोन की तरफ देखा और फिर उसे उठाकर ओ.के. का बटन दबाकर कान से लगा लिया।

"हैलो।" वह बोली।

“मैं मुख्यमन्त्री बोल रहा हूं।” दूसरी तरफ से मुख्यमन्त्री की आवाज आई—“ऊपर से आपसे फोन करने का हुक्म मिला था।”

“बिहारी लाल....।”

“उसे मैंने डिसमिस कर दिया। बस आधे घण्टे में सारी कागजी कार्यवाही पूरी हो जायेगी।”

“थैंक्यू।”

“कहिये—क्या काम था आपको?”

रीमा राठौर ने पहले दीनापुर के हालात बताये—फिर बोली—

“इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा को खून मुंह लग गया है। अगर यह खून फौरन उसके मुंह से नहीं छूटा तो....।”

“मैं आपकी बात समझ गया हूं। एक घण्टे के अन्दर-अन्दर दिलबाग सिंह राणा का तबादला हो जायेगा और उसकी जगह दूसरा इंस्पेक्टर पहुंच जायेगा।”

“इंस्पेक्टर ईमानदार होना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि....।”

“आप बेफिक्र रहें—आपको शिकायत नहीं मिलेगी।”

“थैंक्यू।”

“और कुछ?”

“थैंक्यू।”

“ओ.के.!” दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बंध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने फोन कान से हटाकर बैड पर रखा और एक भरपूर अंगड़ाई लेकर खड़ी हुई और अपने कपड़े उतारने लगी।

कपड़े पहनकर सोने में उसे हालांकि कोई खास दिक्कत नहीं होती थी मगर कपड़े उतारकर सोने में वह खुद को ज्यादा रिलेक्स अनुभव करती थी।

रीमा राठौर ने एक भरपूर अंगड़ाई ली और बैड पर बैठकर लेट गई।

अपनी नग्नता का उसे जरा भी अहसास नहीं था।

पूरी तरह से निश्चिंत थी वह।

बाकी का काम सुबह करने की सोचकर वह अब नींद लेने की कोशिश कर रही थी।

मगर—

ऐसा हो न सका।

अभी उसे लेटे पांच-दस मिनट ही हुए थे कि तभी—

'खट....खट....खट....।'

दरवाजे पर दस्तक हुई।

रीमा राठौर की आंखें फौरन खुलीं।

"कौन?" वह लेटे-लेटे ही दरवाजे की तरफ देखते हुए ऊंचे स्वर में बोली।

"पुलिस....!" बाहर से रौबदार आवाज आई।

रीमा राठौर बुरी तरह से चौंकी—मगर अगले ही पल उसके होंठों पर मुस्कान फैल गई।

वह बैड से उठी—उतरी और चादर उठाकर उसकी बुक्कल मारते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ी।

दरवाजे के करीब आकर उसने हाथ ऊंचा कर सिटकनी गिराई और दरवाजा खोल दिया।

सामने चार सिपाहियों के साथ दिलबाग सिंह राणा खड़ा था।

रीमा राठौर की नंगी टांगों को देख—तथा ऊपर चादर लपेटे देख दिलबाग सिंह राणा समझ गया कि वह चादर के नीचे नग्न है।

उसकी मांसल टांगों और चेहरे को देखकर ही वह समझ गया कि चादर के नीचे का माल पूरे चौबीस कैरेट का है।

तभी तो राल टपक पड़ी थी उसकी।

“कहो....!” रीमा राठौर उसे गहरी निगाहों से घूरते हुए बोली।

दिलबाग सिंह राणा ने हल्की-सी हड़बड़ी के साथ खुद को सम्भाला और बोला—

“यू आर अण्डर अरैस्ट।”

“क्यों?” रीमा राठौर के माथे पर बल पड़ गये—“क्या किया है मैंने?”

“आय....हाय....बोल तो ऐसे रही है जैसे कुछ किया ही न हो बेचारी ने? रामलाल चैक पर जो हुड़दंग तूने मचाया था....वो क्या कुछ नहीं था? चार आदमियों को सरेआम पीट-पीटकर तूने उनकी हड्डियां तोड़ डालीं और पूछ रही है तुमने किया क्या है।”

“और वो जो कर रहे थे—उसके बारे में क्या कहोगे तुम? बद्री के इशारे पर दीनापुर को लगातार लूटा जा रहा है। सरेआम कत्ल हो रहे हैं। भरे बाजारों में औरतों की इज्जत लूटी जा रही है। क्या कभी कुछ किया है तुमने बद्री या उसके कुत्तों के खिलाफ?”

“बकवास कर रही हो तुम।” हल्के से हड़बड़ाया दिलबाग सिंह राणा—“अगर यहां ऐसा कुछ होता तो यहां के लोग बद्री के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज न करते।”

“तो क्या मेरे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है तुमने?”

“हां—उन चारों ने कराई है रिपोर्ट दर्ज।”

“वारंट है तुम्हारे पास मेरी गिरफ्तारी का?”

“ऐ....!” एकाएक ही फुंफकार उठा दिलबाग सिंह राणा—“मुझे कानून सिखाती है। चुप करके साथ चल मेरे—वर्ना यह चादर खींच कर तुझे नंगा करके अपने साथ ले जाऊंगा।”

“तू ऐसा कर सकता है क्योंकि तुझे पानीपत के अवतार ढाबे का बढ़िया चिकन जो हासिल होता रहता है।”

“क्...या?” हड़बड़ा उठा दिलबाग सिंह राणा।

“सब कुछ जानती हूं मैं तेरे बारे में।” रीमा राठौर गुर्रायी—“और खातिर जमा रख—तेरा बंदोबस्त भी कर दिया है मैंने। सिर्फ पांच मिनट बाद ही तेरे तबादले के कागज लेकर नया इंस्पेक्टर यहां आ जायेगा।”

“हा....हा....हा....!” जोरों से हंस पड़ा दिलबाग सिंह राणा—“अरी बिल्लो.....दिलबाग सिंह राणा को नहीं जानती तू....सीधे गृहमन्त्री तक पहुंच है मेरी। एस.पी. तो क्या आई.जी. भी मेरा तबादला नहीं कर सकता।”

“बिहारी लाल की बात कर रहा है न तू।” रीमा राठौर अर्थ भरी मुस्कान मुस्कुराई—“जरा बात तो कर उससे—वो तो कब का मन्त्रिमण्डल से निकाला जा चुका है।”

“क्...या?” बुरी तरह से उछल पड़ा दिलबाग सिंह राणा।

“यस माई डियर दिलबाग सिंह राणा। यही नाम है न तुम्हारा?”

दिलबाग सिंह राणा के चेहरे की रंगत तेजी से बदली।

“कौन.....हो तुम?” इस बार उसका लहजा बदला हुआ था। वह समझ गया कि जो औरत गृहमन्त्री की कुर्सी छीन सकती है—वह कोई छोटी-मोटी चीज नहीं हो सकती—बल्कि बहुत बड़ी तोप होगी वह।

उसके सवाल पर रीमा राठौर के होंठों पर फैली मुस्कान में तीखापन आ गया।

“मेरे बारे में तू बस इतना जान ले कि मैं यहां बद्री की बादशाहत खत्म करने आई हूं।” वह बोली—“रही तेरी बात तो तेरी जगह लेने वाला नया इंस्पेक्टर तेरी पूरी रिपोर्ट तैयार करके ऊपर भेज देगा और फिर तू सीधा जेल में....क्योंकि तब पूरा दीनापुर तेरे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर लेगा।”

सुनकर दिलबाग सिंह राणा पहले तो हड़बड़ाया—फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर सख्ती उभर आई।

“मैं नहीं जानता कि तू!” वह फुंफकारा—“जो बोल रही है सच बोल रही है या सिर्फ मुझे डराने को बोल रही है। अगर तू सच बोल रही है तो मेरा कैरियर तो खत्म हुआ ही समझो।”

“सो तो हुआ ही।” हंसी रीमा राठौर।

“जब मैं खत्म हो रहा हूं तो तुझे कैसे छोड़ सकता हूं। मैं खत्म होऊंगा तो तू भी खत्म होगी। जहां मुझे इतने अपराधों की सजा मिलेगी वहां तेरी इज्जत लूटकर तुझे खत्म करने की सजा भी मिल गई तो क्या फर्क पड़ेगा।” इस अप्रत्याशित हमले के लिये रीमा राठौर कतई तैयार नहीं थी।

तभी तो वह अपना बचाव नहीं कर पाई।

नतीजा—

चंद क्षणों को लड़खड़ाई और चादर उसके बदन का साथ छोड़ दिलबाग सिंह राणा के कब्जे में पहुंच गई।

लड़खड़ाते ही रीमा राठौर सम्भली—मगर तभी दिलबाग सिंह राणा ने उसे भीतर की तरफ धकेला और स्वयं भी भीतर प्रवेश कर गया।
पीछे-पीछे चारों सिपाही भी भीतर घुस गये और एक ने मुड़कर दरवाजा बन्द किया और सिटकनी चढ़ा दी।

पीछे को लड़खड़ाकर रीमा राठौर स्थिर हुई तो दिलबाग सिंह राणा ने उसके संगमरमरी बदन को घूरते हुए चटकारा लिया।

“वाह....!” वह उसके उभारों को देखते हुए मुस्कुराया—“लगता है ऊपर वाले ने तुझे खूब फुरसत में बनाया है।”

रीमा राठौर ने खुद को ढकने की जरा भी कोशिश नहीं की। पता नहीं कितनी ही बार वह कईयों के आगे बेलिबास हो चुकी थी।

वह क्रूरता से मुस्कुराई।

“खुशकिस्मत हो तुम लोग जो जिन्दगी के आखिरी लम्हों में मेरे हुस्न के दीदार हो गये। अब तुम्हारा तबादला किसी और शहर में नहीं—सीधा ऊपर होगा। वो भी तुझ अकेले का नहीं—बल्कि तुम पांचों का।”

कहते हुए रीमा राठौर ने चारों सिपाहियों की तरफ बांह लहराई।

“हा....हा....हा....” ठहाका लगाया दिलबाग सिंह राणा ने—“तबादला मेरा नहीं तेरा होगा मेरी जान....वो भी मालिक के पास। मगर उससे पहले मैं तेरा भोग लगाऊंगा।”

“तो आजा—तू कोशिश कर ले।”

रीमा राठौर दोनों हाथ आगे कर उसे अपनी तरफ आने का इशारा करते हुए बोली।

“बहुत बेसब्री हो रही है न....पकड़ो इसे और डाल दो बैड पर।”

चारों सिपाही रीमा राठौर की तरफ बढ़े।

अब उन्हें क्या मालूम था कि वे किस बला की तरफ बढ़ रहे हैं। उनकी निगाहें तो बस रीमा राठौर के अंग-प्रत्यंग को देखे जा रही थी—और भीतर उन्हें झटके-पर-झटके लग रहे थे।

मगर—

वे न तो उसे छू पाये—न ही पकड़ पाये।

जैसे ही वे उसके करीब पहुंचे—रीमा राठौर के हाथ बिजली की-सी फुर्ती से घूमे।

अगले ही पल चारों की चीखें कमरे में गूंजीं और वे फर्श पर पड़े नजर आये।

खुद दिलबाग सिंह राणा भी हक्का-बक्का रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि उसके चारों मातहत गिरे कैसे। मगर वे गिरे हुए थे और वह उन्हें देख रहा था।

“तू भी आजा राणा।” गुर्राई रीमा राठौर—“अवतार ढाबे का चिकन खाकर तेरी चर्बी बहुत बढ़ गई है। आज सारी चर्बी उतारूंगी तेरी।”

दिलबाग सिंह राणा समझ गया कि उसे सीधे हाथों से काबू नहीं किया जा सकता। सो उसने तुरंत अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकाली और रीमा राठौर पर तानते हुए गुर्राया—

“मैं नहीं जानता कि तू कौन है— न ही मुझे पता है कि तूने मेरा ट्रांसफर कराया है। मुझे फिलहाल तो यही पता है कि तू यहां की शान्ति भंग करने आई है और तूने मेरे सिपाहियों को पीटा है—इसलिये मैं तुझे गोली मार रहा हूं।”

कहने के साथ ही उसने ट्रिगर दबा दिया।

‘धांय....!’

गोली रिवॉल्वर की नाल से निकली तो ठीक....मगर शायद रीमा राठौर के थर्राते उरोजों को देखकर रास्ता भटक गई और पीछे दीवार में जा धंसी।

रीमा राठौर एक नशीली मुस्कान मुस्कराई।

“लगता है रिश्वत देकर बना था तू इंस्पेक्टर। इतना करीबी निशाना चूक गया।” वह बोली—“चल दोबारा ट्राई कर—शायद इस बार तू सफल हो जाये।”

दिलबाग सिंह राणा हैरान।

अपने निशाने पर उसे खुद से भी ज्यादा यकीन था।

मगर निशाना फिर भी चूक गया था।

शायद रीमा राठौर के गदराये बदन को देखकर वह हड़बड़ा गया हो। यही सोचकर उसने पुनः फायर कर दिया।

‘धांय....!’

गोली पुनः रीमा राठौर की तरफ लपकी।

बस थोड़ा-सा बायीं तरफ हटी थी वह।

गोली उसकी बगल से होते हुए पुनः पीछे दीवार में जा धंसी।

“तू फिर चूक गया राणा।” रीमा राठौर हंसी—“चल एक मौका और देती हूं तुझे।”

झल्लाकर दिलबाग सिंह ने उस पर लगातार फायरिंग शुरू कर दी।

‘धांय....धांय....धांय....धांय....।’

दिलबाग सिंह राणा की पूरी रिवॉल्वर खाली हो गई। लेकिन रीमा राठौर को खराश तक नहीं आई।

हर गोली पर वह बस थोड़ा-सा दायें-बायें हो जाती और गोली उसे गर्म हवा देते हुए निकल जाती।

संग आर्ट में माहिर जो थी वह।

उधर दिलबाग सिंह राणा हैरान।

अपनी जिंदगी में पहली बार वह किसी ऐसे शख्स को देख रहा था जो कि गोलियों को भी चकमा देने की कला जानता था। वो भी किसी मर्द को नहीं बल्कि एक औरत को देख रहा था।

"बस....!" तभी रीमा राठौर की फुंफकार उसके कानों में पड़ी—"तेरी पारी खत्म हुई—अब मेरी पारी शुरू होती है।"

कहने के साथ ही रीमा राठौर का जिस्म अपने स्थान से उछला और वह उड़ती हुई उसकी तरफ लपकी।

उसके सिर की भरपूर टक्कर सीधी दिलबाग सिंह राणा के सीने पर पड़ी।

दिलबाग सिंह राणा भैंसे की तरह डकराता हुआ पीछे जा गिरा।

रीमा राठौर तुरंत उसके सीने पर सवार हो गई और आगे को झुककर उसके बालों को पकड़कर गुर्राई—

"ऊपर वाले का शुक्र मना कि तू आखिरी वक्त में मेरे जिस्म के दीदार कर रहा है।"

कहकर उसने दोनों हाथों से उसका चेहरा पकड़ा और विशेष अंदाज में उसकी गर्दन को झटका दिया।

'कड़क' की आवाज हुई।

दिलबाग सिंह राणा की गर्दन की हड्डी टूट गई और वह वहीं छटपटाने लगा।

रीमा राठौर उसके ऊपर से उठी और सीधा अपने बैड की तरफ बढ़ी।

उसने बैड पर बिछे गद्दे के कोने को उठाकर उसके नीचे से अपनी रिवॉल्वर निकाली और चारों सिपाहियों की तरफ देखा।

"नहीं....!" उसके इरादे भांप एक घिघियाया—"ह....हमें माफ कर दो....हम....।"

'धांय....धांय....धांय....धांय....!'

रीमा राठौर ने उसकी बात पूरी नहीं होने दी और चारों के सीनों में गोली उतार दी।

चारों कुछ पलों के लिये छटपटाये फिर स्थिर हो गये।

रीमा राठौर ने रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारी और उसे बैड पर फैंककर एक नजर दिलबाग सिंह राणा पर डाली।

वह भी अपने सिपाहियों की तरह नर्क की तरफ रवाना हो चुका था।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और अपने कपड़े पहनने लगी।

कुछ ही देर में वह जीन्स तथा टॉप में थी।

कपड़े पहनकर वह लाशों के बीच से होते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ी।

इतना शोर-शराबा हुआ था—गोलियां चली थीं—उसे विश्वास था कि बाहर जरूर भीड़ इकट्ठी हो गई होगी। उसने सिटकनी गिराई और दरवाजा खोला।

उसकी सोच एकदम सही थी।

बाहर होटल का मैनेजर तथा कई वर्कर खड़े थे और उनके पीछे ग्राहकों की भीड़ थी।

रीमा राठौर को देख मैनेजर तो हैरत में पड़ गया—और जब उसकी नजर भीतर पड़ी दिलबाग सिंह राणा की तथा सिपाहियों की लाशों पर पड़ी तो वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

“य....यह....त....तुम....अ....आपने....?”

“हां....मैंने मारा है इन्हें।”

रीमा राठौर ठण्डे स्वर में बोली।

“ल....लेकिन यह तो पुलिस....।”

“घबराओ नहीं—कुछ नहीं होगा आपके होटल को।” वह बोली और वापस मुड़कर बैड के करीब आ गई।

मोबाईल उठाकर उसने थाने का नम्बर मिलाया।

“हैलो।” उधर से आवाज आई—“इंस्पेक्टर शेखर स्पीकिंग।”

“तुम ही नये इंस्पेक्टर हो क्या?” रीमा राठौर बोली।

“यस....मैं अभी-अभी आया हूं—आप....।”

“रीमा राठौर बोल रही हूं।” धीमे स्वर में बोली रीमा राठौर।

“ओह....अ....आप....आपके बारे में मुझे....।”

“ज्यादा बात नहीं....सीधे होटल गोल्ड आ जाओ—यहां इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा और उसके चार सिपाहियों की लाशें पड़ी हैं....।”

“क्...या?” बुरी तरह से चौंकती आवाज पड़ी रीमा राठौर के कान में।

“चैंको नहीं....उन्हें मैंने मारा है। मेरी इज्जत लूटना चाहते थे।”

“ओह।”

“तुम पांचों लाशों को समेटो—मैं तुम्हें थाने में मिलूंगी।”

“ज....जी....।”

रीमा राठौर ने मोबाईल ऑफ किया और उसे जेब में डालकर दरवाजे की तरफ मुड़ी और कमरे से बाहर आकर मैनेजर से बोली—
“नया इंस्पेक्टर आ रहा है—घबराओ नहीं—कुछ भी नहीं पूछेगा तुमसे—बस लाशों को उठायेगा और चला जायेगा।”

मैनेजर में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उसे रुकने को भी कहता।

जिस औरत ने एक साथ पांच खून कर दिये हों—उसे रोकने का जिगरा किसी के भी पास नहीं था।

रीमा राठौर लिफ्ट की तरफ बढ़ी तो कारीडोर में लगी भीड़ काई की तरह फटने लगी।

उनके बीच में से होते हुए रीमा राठौर सीधी लिफ्ट में जा पहुंची।

कुछ ही देर में वह अपनी कार में बैठी थाने की तरफ जा रही थी।

वह जानती थी कि अगर वह वहां रहती तो थोड़ी देर बाद ही उससे कई लोग सवाल करना शुरू कर देते—और फिलहाल वह किसी के भी सवाल का जवाब देने के मूड में नहीं थी।

इसीलिये उसने वक्त रहते ही वहां से निकल जाना ठीक समझा था।

¶¶

चार घण्टे बाद इंस्पेक्टर शेखर बुरी तरह से थका-मांदा अपने ऑफिस में प्रविष्ट हुआ तो उस वक्त रात के दो बज रहे थे।
ऑफिस में प्रवेश करते ही वह बुरी तरह से चौंक उठा।

सामने कुर्सी पर बैठी रीमा राठौर सिगरेट के कश लगा रही थी।

हालांकि शेखर ने उसे पहले कभी नहीं देखा था—फिर भी वह पहचान गया कि वह रीमा राठौर ही है। फिर भी अपनी तसल्ली के लिये पूछा—
"आप रीमा राठौर....?"

"ठीक पहचाना....।" रीमा राठौर सिगरेट के टोटे को ऐशट्रे में मसलते हुए बोली—"बैठो।"

शेखर टेबल के पहलू से होते हुए अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

उसने घण्टी पर हाथ मारा।

तुरंत एक सिपाही भीतर प्रविष्ट हुआ।

"दो कॉफी।" वह बोला।

सिपाही फौरन उल्टे पैर वापस मुड़ गया।

"काफी थके हुए लग रहे हो?" रीमा राठौर उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोली।

"जी हां....!" फीकी हंसी हंसा शेखर—"थकावट तो होगी ही—दो सौ किलोमीटर का सफर करके यहां आया—अभी इस थाने का चार्ज भी ढंग से नहीं सम्भाला था कि आपका फोन आ गया। आप कब आईं?"

"बस उन पांचों का खून करके सीधी यहां आ गई।"

हंसते हुए बोली रीमा राठौर।

"ओह!"

“ऊपर से क्या आर्डर मिला है तुम्हें?”

“यही कि जो आप हुक्म करें—मुझे पूरा करना है।”

“मुझे जानते हो?”

“आपका नाम तो बहुत सुना है। आपके कारनामों को पढ़ा भी बहुत है। लेकिन दर्शन आज ही हुए आपके। सच पूछिये—जब मुझे यह कहा गया कि मुझे आपके साथ काम करना है तो उस वक्त मैं खुद को किस कदर रोमांचित महसूस कर रहा था—यह मैं ही जानता हूं।”

रीमा राठौर हल्के अंदाज में हंसी।

तभी सिपाही एक ट्रे में कॉफी के दो मग उठाये भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसने ट्रे को टेबल पर रखा—फिर एक-एक मग दोनों के सामने रखकर खाली ट्रे को उठाकर वापस चला गया।

“कॉफी पीजिये।” शेखर अपना मग उठाते हुए बोला।

रीमा राठौर ने अपना मग उठाकर एक घूंट भरा और मग को वापस टेबल पर रखते हुए बोली—

“अब क्या करोगे तुम?”

शेखर ने मग होंठों से हटाया और रीमा राठौर की तरफ देखते हुए बोला—

“यह तो आपने बताना है कि मुझे क्या करना है। मुझे तो बस आंख मूंदकर वही करते जाना है जो आप कहेंगी। मैंने तो आपसे यह भी नहीं पूछा कि आपने इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह राणा को क्यों मारा—उसके साथ चार सिपाहियों का खून क्यों किया—जबकि यह एक बहुत बड़ा जुर्म है। हां—इतना मैं जरूर कहूंगा कि राणा एक बहुत ही घिनौना और कमीना इंसान था। ऐसा मुझे होटल में मौजूद लोगों के खिले चेहरों को देखकर ही पता चला था।”

“तुम ठीक कह रहे हो।” गहरी सांस छोड़ते हुए रीमा राठौर ने अपना मग उठाया—“दीनापुर एक तरह से नर्क बन चुका है—और इसे नर्क बनाने में दिलबाग सिंह राणा का पूरा योगदान था—वह बद्रीनाथ का कुत्ता बना हुआ था और....।”

रीमा राठौर ने शेखर को बद्रीनाथ—बिहारी लाल के बारे में वो सब कुछ बताया जो कि उसे भीमसेन से पता चला था।

बताने के साथ-साथ वह कॉफी भी खत्म कर रही थी।

उसकी बात पूरी होते-होते कॉफी भी खत्म हो गई।

रीमा राठौर ने खाली मग टेबल पर रखा और कुर्सी की पुश्त से टेक लगाते हुए शेखर की तरफ देखते हुए बोली—

“तुम चाहो तो आज की बची हुई रात आराम कर सकते हो। सुबह तुमने बद्रीनाथ के पीछे पड़ जाना है। उसके अड्डों पर छापे मारो और जहां कहीं भी उसके कुत्ते तुम्हारे सामने भौंकने की या तुम्हें काटने की कोशिश करें—उनकी टांगे बांहें तोड़ डालो।”

“मैं समझ गया। सुबह आठ बजे ही मैं इस अभियान पर निकल पडूंगा।”

जोश में भरा हुआ था शेखर का स्वर।

“ओह हां....मेरे बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिये।”

“क्या?”

“यही कि मैं रीमा राठौर हूं।”

“क्यों?” हैरानी जताई शेखर ने।

“क्योंकि इससे उस शख्स की जान को खतरा हो सकता है जिसने मुझे यहां बुलाया है। मैं बद्रीनाथ के अंत तक उस शख्स को सामने नहीं लाना चाहती।”

“ओह! मैं समझ गया—आप निश्चिंत रहें।”

सिर हिलाते हुए बोला शेखर।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—“तुम बद्रीनाथ के कुत्तों से निपटो—तब तक मैं बिहारी लाल को देखती हूं।” कहते हुए उसकी आंखों में एक अजीब-सी सख्ती उभर आई थी।

¶¶

“कोई लड़की आई है मालिक।”

“लड़की!”

“लड़की का नाम सुनकर ही बिहारी लाल का कलेजा धड़क उठा।

कल उसे मन्त्रिमण्डल से निकाल दिया गया था—और वहां से वह सीधा अपनी कोठी पर आया था।

मन्त्री पद छिन जाने से उसे थोड़ी मायूसी जरूर हुई थी—मगर उसने हार नहीं मानी थी।

अपनी ताकत को जानता था वह और उसे खुद पर भरोसा था कि वह सरकार को डराकर, धमकाकर या दबाव डालकर फिर से मन्त्री बन जायेगा।

इसलिये वह अपनी ताकत को अभी भी वैसा ही समझ रहा था—जैसी मन्त्री होते हुए समझता था। मगर उसे पता नहीं था कि दिलबाग सिंह राणा की पहले इस शहर से ट्रांसफर हुई—फिर वह दुनिया से ही ट्रांसफर कर गया।

वह तो रात बारह बजे घर आया था—और आते ही सीधा अपने बैडरूम में पड़ गया।

पहले तो उसका दिल किया कि रात को गर्म पहलू के साथ लगकर रंगीन कर लिया जाये। मगर चूंकि वह मायूस था—सो उसने आराम करना ही उचित समझा।

तब का सोया वह अभी आधा घण्टा पहले ही उठा था और इस वक्त वह नाश्ते की टेबल पर बैठा था और एक नौकरानी उसके आगे नाश्ता लगा रही थी कि तभी नौकर ने आकर किसी लड़की के आने की सूचना दी।

“हां मालिक।” नौकर जो कि चेहरे से नौकर कम और जल्लाद अधिक नजर आ रहा था, बोला—“पत्रकार कह रही है खुद को।”

पत्रकार का शब्द सुनकर ही बिहारी लाल का चेहरा बुझ गया। साथ ही उसके चेहरे पर हैरानी उभरी।

उसे मन्त्रिमण्डल से निकाल दिया गया है—इसका पता तो मीडिया को आज दोपहर बाद लगना था। क्योंकि मुख्यमन्त्री ने उससे कहा था कि वह आज दोपहर

तक अपना इस्तीफा दे दे, नहीं तो वह खुद उसे डिसमिस कर देंगे।

यह पत्रकार उससे मिलने क्यों आई है?

क्या उसे पता चल गया है? या वह किसी और काम से यहां आई है?

अब यह तो उसके आने पर ही पता चलेगा।

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया और बोला—"ले आ उसे।"

नौकर ने सिर को थोड़ा झुकाया और उसकी तरफ पीठ करके बाहर निकल गया।

शीघ्र ही वह वापस लौटा तो उसके पीछे-पीछे रीमा राठौर थी।

रीमा राठौर का रूप-लावण्य देख बिहारी लाल को अपना गला खुश्क होता महसूस होने लगा।

अपनी जिंदगी में उसने बड़ी-बड़ी रूपसियां देखी थीं—मगर ऐसा हुस्न वह पहली बार देख रहा था।

ऊपर से रीमा राठौर ने पोशाक ही ऐसी पहन रखी थी।

ऐसे में बड़े-बड़े ब्रह्मचारियों के कलेजे डोल जायें—फिर वह तो एक इंसान था—वो भी ठरकी।

अगर वह पत्रकार बनकर न आई होती तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि वह अब तक उस पर सवार हो चुका होता।

"नमस्ते।" तभी रीमा राठौर बड़ी अदा से सिर को हल्के से झटका देते हुए बोली।

बड़ी मुश्किल से अपने आप पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बिहारी लाल ने थूक सटकी और सामने वाली कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए बोला।

"बैठो।"

रीमा राठौर आगे बढ़कर उसके सामने बैठ गई।

"नाश्ता?"

"जरूर करूंगी।" रीमा राठौर मुस्कुराई।

बिहारी लाल ने नौकरानी को इशारा किया और रीमा राठौर की तरफ देखा।

मगर उसकी निगाहें उसके चेहरे से फिसलकर उसकी शानदार गोलाइयों पर जा अटकीं।

अपनी तरफ से पूरा जोर लगाकर उसने उसके उभारों से निगाह हटाई और बोला—"कैसे आना हुआ?"

"पहले नाश्ता कर लिया जाये।" रीमा राठौर बोली—"फिर आराम से आपका इंटरव्यू लूंगी। कहीं ऐसा न हो कि मेरे पूछे प्रश्न आपको बुरे लगें—और मुझे भूखे ही यहां से वापस जाना पड़े।"

बिहारी लाल हो-हो करके हंसा।

"काफी दिलचस्प हो।"

"सभी ऐसा कहते हैं।"

"कहां से आई हो?"

"दिल्ली से।" रीमा राठौर बोली।

इससे पहले कि बिहारी लाल कुछ और पूछता, रीमा राठौर अपने सामने रखे नाश्ते पर झुक गई।

उसके झुकने से उसकी गोलाइयां और भी ज्यादा उजागर होकर बिहारी लाल के भीतर खलबली मचाने लगीं। उसे झांकने के साथ-साथ वह भी नाश्ता करने लगा।

रीमा राठौर ने नाश्ता खत्म करके रूमाल से अपना मुंह पौंछा और फिर बिहारी लाल की तरफ देखा।

वह भी अपने हाथ पौंछ रहा था।

"कहां इंटरव्यू लिया जाये आपका?" पूछा रीमा राठौर ने।

"आओ—ड्राईंगरूम में चलते हैं।" कहते हुए बिहारी लाल खड़ा हो गया।

रीमा राठौर भी खड़ी हो गई।

बिहारी लाल उसे ले अपने शानो-शौकत से सजे ड्राईंगरूम में आया।

“बैठो।” वह स्वयं एक सोफे की तरफ बढ़ते हुए सामने वाले सोफे की तरफ इशारा करते हुए बोला।

रीमा राठौर कांच की सैंटर टेबल के बराबर से होते हुए सोफे पर जा बैठी।

उसने अपने पर्स में से एक छोटा-सा टेप रिकॉर्डर निकालकर उसे ऑन किया और टेबल पर रख दिया।

“पूछो—क्या पूछना चाहती हैं आप?”

इस बार बिहारी लाल की आवाज सम्भली हुई थी।

सामने टेपरिकार्डर चल रहा था—उसकी आवाज उसमें कैद हो रही थी। ऐसे में सम्भलकर बोलना ही था उसे।

“हमें पता चला है कि—” रीमा राठौर उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोली—“आपको मन्त्रिमण्डल से निकाल दिया गया है।”

“न....हीं....!” गहरी सांस छोड़ी बिहारी लाल ने—“हमें अभी तक निकाला नहीं गया है। हां—आज दोपहर को हम मन्त्री पद से इस्तीफा देने जा रहे हैं।”

“क्यों?”

“कुछ पर्सनल जिम्मेदारियां हैं—उन्हें पूरा करने के लिये मेरा मन्त्री पद छोड़ना जरूरी हो गया है। हां, जब भी मेरी जिम्मेदारी पूरी होगी—मैं पुनः मन्त्री बन जाऊंगा।”

“लेकिन हमारे सूत्रों से तो हमें यह मालूम पड़ा है कि आपको निकाला गया है—और उसकी वजह भी बताई गई है।”

“क्या वजह बताई गई है तुम्हें?”

“यही कि आपके सम्बंध यहां के सबसे बड़े गुण्डे बद्रीनाथ से हैं। बद्रीनाथ यहां दिनदहाड़े अपराध करता है और आप उसे कानून की मार से बचाते हैं।”

“यह झूठ है।” विरोध भरे स्वर में बोला बिहारी लाल—“मेरा सम्बन्ध किसी भी अपराधी छवि वाले से नहीं।”

“क्या यह भी झूठ है कि बद्रीनाथ आपके कहने पर आपकी मनपसंद लड़कियों को उनके घरों से उठवाकर आपके पास भेजता था—ताकि आप उससे अपनी हवस की पूर्ति कर सकें।”

“छी....छी....कैसी गंदी बात कर रही हो तुम....मैं तो....?”

“अभी कुछ वक्त पहले ही डोली नाम की लड़की को आपके पास लाया गया था—और मुझे पता है कि वो अभी भी आपके कब्जे में है।”

बिहारी लाल एकदम से भड़क उठा।

झपटकर उसने टेपरिकार्डर उठाया और उसे ऑफ करके एक तरफ फैंकते हुए गुर्राया—

“कौन है तू? और डोली के बारे में किसने बोला तुझे?”

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान फैल गई। गहरी सांस छोड़ते हुए वह खड़ी हो गई और बोली—

“आपने जिस तरह मेरा टेपरिकार्डर फैंका है—उससे मुझे मेरा जवाब मिल गया है। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि आपके बारे में मैंने जो जाना वो सच है।”

“क्या मतलब?”

“कल का अखबार पढ़ लीजियेगा—आपको सब मतलब पता चल जायेगा।” रीमा राठौर बोली—“होटल गोल्ड में ठहरी हुई हूं मैं—आज शाम तक आपका इंतजार करूंगी—उसके पश्चात् मैं अपनी रिपोर्ट दिल्ली भेज दूंगी।”

“क्या मतलब?”

“बड़े भोले हैं आप भी मन्त्रीजी। अरे सच्चाई छुपाने के लिये पर्दा चाहिये—वो भी रेशम का। और रेशम कितना महंगा है—वो तो आप जानते ही हैं। पांच लाख रुपये मीटर चल रहा है रेशम।”

कहकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

दरवाजे के करीब आकर वह रुकी—मुड़ी और बोली—

“जो टेप रिकार्डर आपने फैंका—वो तो सिर्फ दिखावा था। असली रिकार्डर तो यह है।”

कहते हुए उसने अपनी स्कर्ट ऊपर उठा दी।

उसकी बायीं जांघ के ऊपर एक चैकोर डिब्बा बंधा देख बिहारी लाल का कलेजा धड़क उठा।

“आपका सिर्फ यह कहना कि मुझे डोली के बारे में किसने बोला—आपको मुसीबत में डालने के लिये बहुत है। अब चलती हूं—नाश्ते के लिये शुक्रिया।”

कहते हुए उसने स्कर्ट छोड़ी और दरवाजे से बाहर निकल गई।

बिहारी लाल कुछ पल तो सकते की-सी अवस्था में वहीं खड़ा रहा—फिर एकाएक ही उसे जैसे होश आया।

तुरंत वह फोन की तरफ झपटा और जल्दी-जल्दी कोई नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

‘पिंग....पिंग....पिंग....।’

बद्रीनाथ की जेब में रखे मोबाईल की घण्टी बजी।

उस वक्त बद्रीनाथ नहा-धोकर अभी कपड़े पहनकर तैयार ही हुआ था।

उसने जेब से मोबाईल निकालकर स्क्रीन पर नजर मारी और फिर मोबाईल कान से लगाते हुए बोला—

“हैलो।”

“जैकी बोल रहा हूं मालिक।” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“बोल....।”

“राणा का खून हो गया है।”

“क्या?” बुरी तरह से उछल पड़ा बद्रीनाथ।

“उसके साथ चार सिपाहियों का भी खून हो गया है मालिक।”

“य....यह क्या कह रहा है तू?”

हैरानी से बोला बद्रीनाथ—जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो।

“मैं ठीक कह रहा हूं मालिक—रात को किसी ने होटल गोल्ड में पांचों को गोली से उड़ा दिया।”

“किसने किया—पता कर।” गुर्राया बद्रीनाथ।

दिलबाग सिंह राणा बेशक उससे हर माह अवतार ढाबे का चिकन लेता था—मगर वह उसका पक्का वफादार था। उसकी तरक्की के शुरूआती दिनों में उसने उसके प्रति पूरी वफादारी निभाई थी।

पूरा साथ दिया था उसने उसका।

एक ओर जहां बिहारी लाल ने उसे ऊंचा उठाने में मदद की थी—वहीं दूसरी ओर दिलबाग सिंह राणा ने शहर में उसके खिलाफ उठने वाली आवाज को दबाया था।

ऐसे में जाहिर था कि उसकी मौत से उसे गहरा सदमा पहुंचना था। तभी तो उसने कातिल के बारे में पूछा था।

“अभी तक बस यही पता लगा है मालिक कि पांचों को एक लड़की ने गोली से उड़ाया है।”

“क्या?” एक और झटका लगा बद्रीनाथ को—“एक लड़की ने मारा राणा को?”

“हां मालिक।” जैकी की आवाई आई—“और मैं उस लड़की का पता लगा रहा हूं।”

“लगा—और जैसे ही उसका पता चले—साली को पकड़कर मेरे पास लेकर आ। फिर मैं बताऊंगा हरामन को कि मेरे आदमी को मारने की क्या सजा होती है।”

“जी मालिक।”

“और कुछ?”

“नया इंस्पेक्टर आ गया है—शेखर है उसका नाम।”

“कमाल है—नया इंस्पेक्टर आ भी गया?”

“वो तो कल ही आ गया था। रात को राणा तथा अन्यों की लाशों का पंचनामा उसी ने ही तैयार किया था।”

“यानि राणा का तबादला हो गया था यहां से।” सोच भरे स्वर में बोला बद्रीनाथ।

“लगता तो ऐसा ही है मालिक।”

“खैर—तू शाम को मिलना उस नये इंस्पेक्टर से।”

“जी मालिक।”

“और कुछ?”

“फिलहाल तो यही खबर है मालिक।”

बद्रीनाथ ने मोबाईल कान से हटाकर अपनी जेब में डाला और दिलबाग सिंह राणा के बारे में सोचने लगा।

अभी उसने सोचना शुरू ही किया था कि उसका मोबाईल पुनः बजने लगा।

“पिंग....पिंग....पिंग....।”

उसने जेब में हाथ डालकर मोबाईल निकाला और स्क्रीन पर निगाह मारी।

बिहारी लाल का नम्बर देख उसने गहरी सांस छोड़ी।

“अब नई लौंडिया मांगेगा।” वह बड़बड़ाया—“पता नहीं क्या कुश्ता खाता है जो जरा भी ढीला नहीं पड़ा।”

“जी मन्त्री जी।”

वह मोबाईल ऑन कर कान से लगाते हुए बोला।

“मन्त्री गया भाड़ में।”

दूसरी तरफ से बिहारी लाल की घबराई आवाज सुनकर बुरी तरह से चौंका बद्रीनाथ।

“क्या बात है—खैरियत तो है?”

“खैरियत नहीं है तभी तो फोन किया है।” आवाज आई—“एक साली पत्रकार अभी-अभी मेरी कोठी से निकली है। उसके टेपरिकॉर्डर में मेरी आवाज कैद है। अगर वो आवाज दिल्ली पहुंच गई तो न तू बचेगा न मैं। जल्दी से अपने आदमी रवाना कर। वो होटल गोल्ड की तरफ गई है। पहुंचनी नहीं चाहिये—समझा?”

“समझ गया—मैं अभी आदमी भेजता हूं। दिखने में कैसी है वो?”

“सफेद स्कर्ट टॉप पहने जो भी बेहोश कर देने वाला हुस्न समेटे हो समझ लो वही है।”

“जी मन्त्री जी मैं....।”

बात बीच में ही रह गई उसकी—दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया था।

गहरी सांस छोड़ते हुए बद्रीनाथ ने मोबाईल जेब में डाला और आवाज लगाई—

“काकू....।”

कुछ ही देर में एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति उसके सामने खड़ा था।

¶¶

बिहारी लाल की कोठी से निकलकर रीमा राठौर ने अपनी कार की तरफ देखा तक नहीं जो कि थोड़ी दूर सड़क के नीचे खड़ी थी।
वह पैदल ही आगे बढ़ने लगी।

थोड़ा आगे चलकर उसने एक रिक्शा रुकवाया और उसमें बैठ गई।

“गोल्ड होटल।” वह बोली।

“दस रुपये लगेंगे मेम साब।” रिक्शा पोलर गद्दी पर बैठे हुए ही पीछे देखते हुए बोला।

“दस ही दूंगी....चलो।” रीमा राठौर बोली।

रिक्शा पोलर ने गर्दन सीधी की और पैडल पर पैर का दबाव बढ़ाया।

पहिये आगे को घूमने लगे—और रिक्शा सड़क पर दौड़ने लगी।

अभी रिक्शा थोड़ी ही दूर पहुंची थी कि तभी पीछे से एक फीयेट निकलकर रिक्शा से आगे निकली और खड़ी हो गई।

मजबूरन रिक्शा वाले को ब्रेक मारनी पड़ी। साथ ही उसने कार के बराबर से निकलने के लिये हैंडल भी मोड़ दिया।

तभी कार के चारों दरवाजे एक साथ खुले और ड्राईवर समेत पांच आदमी बाहर निकलकर रिक्शे की तरफ बढ़े।

उन्हें देखते ही रिक्शा पोलर थर-थर कांपने लगा।

उसकी शक्ल से ही पता चल रहा था कि वह उन्हें बद्रीनाथ के प्यादों के रूप में पहचानता है।

इधर रीमा राठौर के होंठों पर एक जहरीली मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

जो वह चाहती थी वही हो रहा था।

पांचों गुण्डे रिक्शे के करीब पहुंचे तो रिक्शा पोलर सड़क पर खड़ा हो हाथ जोड़ते हुए घिघियाया।

“मैं....मैं इसे नहीं जानता साहब....मैं तो....।”

‘तड़ाक....!’

तभी एक गुण्डे का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

रिक्शा वाला चीखता हुआ एक तरफ जा गिरा।

दूसरा गुण्डा रीमा राठौर को गहरी निगाहों से घूरते हुए गुर्राया—

“नीचे उतर।”

डरने की एक्टिंग करते हुए रीमा राठौर रिक्शा से नीचे उतर आई।

“पत्रकार है न तू?” तीसरा गुण्डा बोला।

थूक सटकते हुए रीमा राठौर ने हां में सिर हिलाया—“ह.... हां....!” वह फंसे स्वर में बोली।

“चल गाड़ी में बैठ।” तीसरा गुर्राया।

“क्यों?” डरे लहजे में बोली रीमा राठौर।

“हमारा इन्टरव्यू नहीं लेगी क्या....चल।”

“न....हीं....मैं नहीं बैठूंगी।”

कहने पर रीमा राठौर रिक्शा से नीचे उतर आई।

“बैठेगा तो तेरा बाप भी।”

कहते हुए दूसरे ने रीमा राठौर की बांह पकड़ी और उसे अपनी तरफ खींचा।

रीमा राठौर उसकी तरफ लड़खड़ाई और उसकी गोलाइयां सीधी दूसरे के सीने से जा टकराई।

दूसरे ने झपटकर उसकी कमर में बांहें डालीं और उसे उठा लिया।

“छ....छोड़ दे मुझे....कमीने कुत्ते छोड़ दे मुझे।”

एक असहाय नारी की तरह रीमा राठौर उसकी पकड़ से निकलने की कोशिश करने लगी। जबकि हकीकत इससे बिल्कुल उलट थी।
वह तो सिर्फ एक्टिंग कर रही थी। आजाद होने का उसका कोई इरादा नहीं था।

दूसरा उसे उठाये हुए कार के पिछले दरवाजे के सामने आया और उसे उतारकर कार के भीतर धकेल दिया।

तभी दूसरी तरफ के दरवाजे से पहला भीतर घुसा और रीमा राठौर को दबोच लिया।

रीमा राठौर गला फाड़कर ‘बचाओ-बचाओ’ चीख रही थी।

लोग उसे देख भी रहे थे—मगर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उसकी मदद के लिये जोखिम उठाता।

और सभी के देखते-देखते वो रीमा राठौर को सरेआम अगवा करके वहां से ले गये।

कार के वहां से चले जाने के पश्चात् उसी स्थान पर लोगों की भीड़ इकट्ठी होनी शुरू हो गई—जहां पर कि कार खड़ी थी।

लोग एक-दूसरे से रीमा राठौर के बारे में बातें करने लगे। मगर उनके चेहरे बता रहे थे कि ऐसा सब कुछ देखने व सहने की उन्हें आदत-सी हो गई है।

¶¶

काफी लम्बा चक्कर लगाकर कार वापस उसी सड़क पर आ गई जहां से कि उसने रीमा राठौर को अगवा किया था।

ऐसा इसलिये किया गया था कि उसे यह पता न चले कि उसे बिहारी लाल की कोठी पर लाया गया है।

कार बिहारी लाल की कोठी के मेन गेट के आगे से निकली और थोड़ी आगे जाकर दायीं तरफ मुड़ गई।

रीमा राठौर कार के फर्श पर उन गुण्डों के पैरों में दबी हुई थी।

एक गुण्डे के पैर उसके उभारों पर थे और दूसरे के उसकी जांघों के जोड़ पर।

अपने-अपने अंदाज में दोनों ही आनन्द ले रहे थे।

कुछ ही देर में कार कोठी की पिछली साईड में थी।

पीछे का गेट खुला हुआ था—सो कार गेट में प्रवेश कर गई।

छोटा-सा ड्राईव-वे पार कर कार दायीं तरफ की दीवार के सामने आकर रुकी।

ठीक तभी दीवार का काफी बड़ा हिस्सा जमीन में धंस गया—और सामने नीचे जाती ढलान नजर आने लगी।

कार आगे बढ़ी और ढलान पर उतरते हुए काफी लम्बे-चौड़े हॉल में आ खड़ी हुई।

दायें-बायें के गुण्डों ने अपनी-अपनी साईड के दरवाजे खोले और बाहर आ गये।

बाहर आते ही एक ने रीमा राठौर की टांगें पकड़ीं और उसे बाहर की तरफ घसीटा।

घिसटने से रीमा राठौर की स्कर्ट ऊपर को सरकी—और देखते ही देखते उसकी पैंटी नजर आने लगी।

जांघ पर काली चौकोर डिबिया अभी भी बंधी थी।

जैसे ही रीमा राठौर का सिर कार से बाहर निकला—उसने हाथ पीछे कर लिये—ताकि उसके सिर को चोट न लगे।

उसके उल्टे हाथ फर्श से जा टकराये और तभी गुण्डों ने उसकी टांगें भी छोड़ दीं।

रीमा राठौर तड़पकर खड़ी हुई और अपनी स्कर्ट को व्यवस्थित करते हुए डरी-डरी निगाहों से उन्हें देखने लगी।

“कैसी हो मैडम?”

तभी पीछे से बिहारी लाल की आवाज रीमा राठौर के कानों में पड़ी।

बिजली की-सी फुर्ती से रीमा राठौर पीछे मुड़ी।

बिहारी लाल एक कमरे के खुले दरवाजे में से निकल रहा था।

“इतना तगड़ा नाश्ता किया—और इन्टरव्यू में दो सवाल ही पूछे—यह तो गलत है न।” बिहारी लाल उसकी तरफ बढ़ता हुआ बोला।
रीमा राठौर के होंठ थरथराये। बोली कुछ नहीं वह।

बिहारी लाल उसके करीब आकर रुका और उसके गालों पर उंगली फेरते हुए बोला—

“डोली के बारे में पूरा तो पूछा नहीं तूने—और न ही अपने बारे में कुछ बताया कि तेरा नाम क्या है—तू किस अखबार की रिपोर्टर है—बस एक सवाल किया और चलती बनी। यह तो कोई बात न हुई न।”

“देखो....!” रीमा राठौर फंसे स्वर में बोली—“त....तुम....नहीं जानते मैं कौन हूं....।”

“अभी जान लूंगा—जब तेरे कपड़े उतरेंगे।” कुटिलता से हंसा बिहारी लाल—“फिलहाल तो मैं पहले तुझे यह बोलूंगा कि डोली मेरे पास है। उससे बढ़िया चीज उसके बाद मिली ही नहीं—मगर आज वो चीज मुझे मिल गई है—तू तो डोली से कई गुना हुस्न से मालामाल है।”

कहते हुए उसने हल्के-से उसकी छातियों को दबा दिया।

रीमा राठौर ने हड़बड़ाते हुए उसका हाथ पीछे झटक दिया।

“हाय....” बिहारी लाल ने अपने सीने पर हाथ मारा—“क्या अदा है।”

“डोली कहां है?” रीमा राठौर ने उसके अंदाज पर ध्यान न देते हुए पूछा।

“डोली से मिलने को मरी जा रही है तू—लगता है उसकी कोई सगेवाली है तू। कोई बात नहीं—तेरी तमन्ना अभी पूरी किये देता हूं।” वह हंसा और कमरे की तरफ इशारा किया—“जा मिल ले डोली से।”

रीमा राठौर ने एक बार अपने पीछे खड़े पांचों गुण्डों को देखा—फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

वह जैसे ही दरवाजे में प्रविष्ट हुई—उसका कलेजा धक से रह गया।

दायीं तरफ बैड पर डोली बैठी थी।

पूरी तरह से निर्वस्त्र।

उसके दायें पैर में लोहे का कड़ा बंधा हुआ था जो एक मजबूत जंजीर के जरिये दीवार में लगे हुक में कसा हुआ था।

ऐसे जैसे किसी जानवर को बांधा गया हो।

अर्ध विक्षिप्त-सी नजर आ रही थी डोली। उसकी आंखों में जीने की कोई तमन्ना नजर नहीं आ रही थी। बाल बिखरे हुए थे उसके।

मगर उसका खूबसूरत बदन इस हालत में भी लश्कारे मार रहा था।

हालांकि रीमा राठौर ने डोली को पहली बार देखा था। मगर उसका जो हुलिया भीमसेन ने बयान किया था, वह उससे पूरी तरह से मिलता था। सो उसने फट से

उसे डोली के रूप में पहचान लिया।

“डोली....!” वह धीमे स्वर में बोली।

डोली जो कि उस वक्त दूसरी तरफ देख रही थी—ने तुरंत उसकी तरफ देखा।

रीमा राठौर को देख उसके चेहरे पर किसी तरह का कोई भाव नहीं उभरा—बस उसे देखती रही वह।

“देख लिया।” तभी दरवाजे की तरफ से आवाज आई।

रीमा राठौर ने झटके से गर्दन पीछे मोड़ी।

अब उसके चेहरे पर आतंक नहीं बल्कि कहर टपक रहा था। आंखें अंगारा हो उठी थीं।

“अगर देश के सारे लीडर तेरे जैसे हों तो देश को खत्म होने में देर नहीं लगेगी।” वह गुर्राई—“इसलिये सरकार ने तेरे जैसे कुत्तों की दुम सीधी करने के लिये पुलिस को ईजाद किया।”

“मगर कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।” बिहारी लाल जहरीली हंसी हंसा—“उल्टे हमारी दुम सीधी करते-करते पुलिस खुद टेढ़ी हो जाती है।”
“मगर आज वो दुम सीधी होगी—और ऐसी होगी कि फिर कभी टेढ़ी नहीं पड़ेगी।”

फुंफकार उठी रीमा राठौर।

उसकी आवाज सुनकर बिहारी लाल के माथे पर बल पड़ गये।

आंखें सिकुड़ गईं।

“तेरी आवाज से पता चल रहा है कि तू वो नहीं जो खुद को बता रही है।”

वह गुर्राया।

“तू ठीक समझा बिहारी लाल।” रीमा राठौर जहरीली मुस्कान मुस्कुराई।

“कौन है तू?”

“चिंता मत कर—जब मैं डोली को लेकर यहां से जाऊंगी तो तुझे जरूर बताकर जाऊंगी।”

बिहारी लाल के होंठ एकाएक ही फैल गये। फिर एकाएक ही वह शैतानों की तरह हंसने लगा।

“हा....हा....हा.....सुनो....।” उसने पांचों गुण्डों की तरफ देखते हुए रीमा राठौर की तरफ इशारा किया—“क्या कह रही है यह....यह....यहां से जायेगी....और साथ में डोली को लेके जायेगी....हा....हा....हा....।”

रीमा राठौर के होंठों पर जहर फैल गया। बोली कुछ नहीं वह बस पीछे हटी और डोली के सिर पर हाथ रखकर बोली—“मैं तुम्हें आजाद कराने आई हूं डोली।”

डोली कुछ नहीं बोली—बस डरी-डरी निगाहों से उसे देखने लगी।

रीमा राठौर की सांत्वना से उसकी आंखों में आशा का एक कण भी नहीं उभरा।

साफ नजर आ रहा था।

दरवाजे में पांच गुण्डे खड़े थे और उनके आगे सबसे बड़ा गुण्डा बिहारी लाल था।

छह-छह कुत्तों में से वह उसे कैसे बचाकर ले जा सकती थी।

मगर उसे क्या पता था कि वह किसके बारे में ऐसा सोच रही है।

तभी बिहारी लाल आगे बढ़ा और रीमा राठौर के सामने आ खड़ा हुआ।

“अब मैं तुझे सबके सामने नंगी करूंगा और इन सभी के सामने तेरी आबरू को तार-तार करूंगा।”

“तू मुझे हाथ तो लगाकर देख बिहारी लाल फिर देख कैसा करंट लगता है तुझे।”

“और झटके खाने का मुझे बड़ा शौक है।”

कहकर जैसे ही उसने रीमा राठौर की टॉप के गले की तरफ हाथ बढ़ाया—

ठीक तभी—

ढिशुम—

रीमा राठौर का घूंसा पूरे वेग से उसके पेट में पड़ा।

बिहारी लाल को ऐसा लगा जैसे उसे हाथ नहीं हथौड़ा मारा गया हो।

आंखें बाहर को उबल पड़ीं उसकी।

मुंह भाड़ की तरह खुल गया और वह पेट पकड़े आगे को झुक गया।

तभी रीमा राठौर का घुटना उसके मुंह पर पड़ा।

बिहारी लाल उछलकर पीछे जा गिरा।

बिहारी लाल को इस तरह गिरते देख पांचों गुण्डे हैरत में पड़ गये।

उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वो जो देख रहे हैं—वो सच है। मगर उन्हें बिहारी लाल की चीख ने सपने से जगा दिया।

“अबे हरामखोरो....।” बिहारी लाल फर्श पर पड़े पेट पकड़े चीखा—“खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो—पकड़ो इस हरामन को—कर दो नंगा।”
पांचों गुण्डे हड़बड़ाये—फिर सम्भलकर तेजी से रीमा राठौर की तरफ लपके।

वे पांच थे—और सामने एक—वो भी औरत जात। जाहिर था कि पांचों के लिये उस पर काबू करना उसके लिये मामूली बात थी।
यह उन पांचों की सोच थी।

मगर उनकी सोच को झटका तब लगा—जब उन्होंने रीमा राठौर के हाथों-पैरों का कमाल देखा।

किसी को समझ में नहीं आया कि क्या हुआ। उन्हें तो बस अपने जिस्मों पर ठोकरें लगती महसूस हुईं—और उनके मुंह से चीखें उबलने लगीं।

जिसे वे इतनी आसानी से सरेआम अगवा करके ले आये थे वही अब उनके लिये मौत बनी हुई थी।

रीमा राठौर के हाथ-पैर तेजी से चल रहे थे—और पांचों की खूब धुलाई हो रही थी।

बस पिट ही रहे थे वो।

हाथ उठाने का भी मौका नहीं मिल रहा था उन्हें।

ज्यादा देर नहीं चला वह ड्रामा।

शीघ्र ही पांचों फर्श पर पड़े नजर आ रहे थे।

सभी-के-सभी लहुलुहान थे—और उनकी हड्डियां टूटी हुई थीं।

रीमा राठौर ने रुख बिहारी लाल की तरफ किया जो कि अभी भी फर्श पर पेट पकड़े बैठा था।

उसे अपनी तरफ बढ़ते देख बिहारी लाल के चेहरे की रंगत पीली पड़ने लगी।

रीमा राठौर उसके करीब आई—झुकी और उसके बालों को पकड़कर उसे अपने सामने खड़ा कर दिया।

“मुझे नंगा करेगा तू?” वह उसके बालों को झिंझोड़ते हुए गुर्राई—“मेरी सवारी करेगा।”

बिहारी लाल पीड़ा से कराह उठा।

जिस औरत ने उसकी आंखों के सामने पांच मर्दों की ऐसी-तैसी फेर दी—उसके सामने उसकी औकात ही क्या थी।

“चेन खोल इसकी।”

रीमा राठौर गुर्राई और उसे बैड की तरफ धकेला।

बिहारी लाल लड़खड़ाते हुए मुंह के बल बैड पर बैठा डोली की जांघ पर गिरा।

उसने उसकी जांघ पर हाथ रख अपना चेहरा ऊपर उठाया और रीमा राठौर की तरफ मुड़कर कांपते स्वर में बोला—

“च....चाबी....ऊ....ऊपर है।”

रीमा राठौर के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

“झूठ पढ़ने की महारत हासिल है मुझे हरामजादे। चाबी तेरे पास ही है। चुपचाप खोल—वर्ना मैं चाबी तेरी लाश से हासिल कर लूंगी।”

बिहारी लाल ने हड़बड़ाते हुए जेब में हाथ डाला और जेब से चाबी निकालकर उससे डोली की टांग आजाद कर दी।

“इधर आओ डोली।” रीमा राठौर ने डोली की तरफ देखा।

डोली बैड से उतरी और लड़खड़ाते कदमों से चलते हुए रीमा राठौर के करीब आ खड़ी हुई।

रीमा राठौर ने बिहारी लाल की तरफ देखा और मुस्कुराई—

“मुझे तो नंगा कर नहीं सका तू—अब मैं तुझे नंगा होने के लिये कहती हूं....। कपड़े उतार अपने।”

“न....हीं....!” हड़बड़ाते हुए बिहारी लाल ने अपने सीने पर ऐसे हाथ रखे मानो उसकी इज्जत को खतरा हो गया हो।

“कोई बात नहीं....मैं खुद ही तुझे नंगा किये देती हूं।”

कहकर वह उसके करीब आई और उसकी कलाई पकड़कर एक जबरदस्त झटका दिया।

‘कड़क....!’

एक हल्की-सी आवाज हुई और बिहारी लाल के कंधे की हड्डी टूट गई।

पीड़ा भरी तेज चीख उबल पड़ी उसके होंठों से।

“यह बांह तो बेकार हो गई तेरी—अब दूसरी बांह बेकार करती हूं—उसके बाद तेरे कपड़े उतारने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी।”

“न....नहीं....!” चीखा बिहारी लाल—“मैं उतारता हूं।”

“शाबाश....उतार।”

बिहारी लाल पीड़ा से कराहता एक हाथ से ही अपने कपड़े उतारने लगा।

उसकी कमीज जमीन पर गिरी तो रीमा राठौर ने उसे झुककर उठा लिया और डोली को देते हुए बोली—

“इसे पहन लो।”

अब तक डोली को पूरा विश्वास हो गया था कि वह आजाद हो जायेगी। सो उसने तुरंत कमीज लेकर पहन ली।

और फिर उसने बिहारी लाल की उतरी धोती भी उल्टी-सीधी अपनी कमर पर बांध ली।

इधर बिहारी लाल अब सिर्फ कच्छे में खड़ा था।

रीमा राठौर ने अपनी स्कर्ट को ऊपर उठाया और अपनी जांघ से लगी चौकोर डिबिया उतारकर बिहारी लाल की आंखों के सामने की और बोली—

“इस शक्तिशाली टेपरिकार्डर में तेरी अब तक की सारी बातें टेप हो चुकी हैं बिहारी लाल। तेरा राजनैतिक जीवन तो खत्म हुआ ही—सामाजिक जीवन भी खत्म हुआ समझो। क्योंकि अब तू बाकी की उम्र जेल में ही बितायेगा।”

बिहारी लाल कुछ नहीं बोला—बस थूक सटककर रह गया।

“चाहूं तो तुझे खत्म करके आराम से जा सकती हूं।” रीमा राठौर बोली—“लेकिन मैं चाहती हूं कि तेरा हश्र देखकर उन राजनीतिज्ञों को अक्ल आये जो तेरी तरह से सोचते हैं। इसी वजह से तुझे जिंदा छोड़कर जा रही हूं।” कहकर उसने डोली की कलाई पकड़ी और बोली—

“आओ डोली।”

“एक मिनट दीदी!” तभी डोली अपनी कलाई छुड़ाते हुए बोली।

रीमा राठौर रुक गई।

डोली बिहारी लाल के सामने आई।

‘तड़ाक्!’

तभी उसका भरपूर थप्पड़ बिहारी लाल के गाल पर पड़ा।

“आक्....थू....!”

डोली ने उसके मुंह पर थूक दिया।

“मेरा ख्याल है तेरे लिये इतनी सजा ही बहुत है।” वह गुर्राई—“अगर तेरे में जरा-सी भी गैरत है तो डूबकर मर जाना।”

कहकर वह मुड़ी और रीमा राठौर के करीब आ गई।

“चलो दीदी।” वह बोली।

“बिहारी लाल!” रीमा राठौर बोली—“डोली का यह चांटा मेरी मार से कहीं ज्यादा भारी है—इसे याद रखना।” कहकर वह डोली को साथ लिये बाहर आ गई।

बाहर हाल में फीयेट खड़ी थी।

रीमा राठौर आगे बढ़कर उसकी ड्राइविंग सीट पर बैठ गई— जबकि डोली उसके बराबर वाली सीट पर बैठ गई।

रीमा राठौर ने कार स्टार्ट की और उसे बैक करते हुए ऊपर चढ़ाने लगी।

कुछ ही देर में कार कोठी के पिछले गेट से बाहर निकल रही थी।

¶¶

‘पिंग....पिंग....!’

मोबाईल बजते ही बद्रीनाथ ने जेब से मोबाईल निकाला और उसे ऑन कर कान से लगाते हुए बोला—

“हैलो।”

“मैं....मैं कालू बोल रहा हूं मालिक।” दूसरी तरफ से घबराई आवाज आई।

न चाहते हुए भी बद्रीनाथ का कलेजा धड़क उठा।

सुबह से मनहूस खबरें ही सुन रहा था वह।

पहले राणा की मौत की खबर आई—फिर बिहारी लाल का फोन आ गया। उसके आधा घण्टा बाद ही उसके जुए के अड्डे पर पड़े पुलिस के छापे का फोन आ गया—और दस मिनट बाद ही उसके उस गोदाम पर पड़े छापे की खबर आई जहां पर कि उसका करोड़ों का नशे का माल पड़ा था।

उसने उसी वक्त जैकी को यह कहकर रवाना कर दिया कि वह खान को अभी न आने दे, जो कि उसके लिये दस किलो स्मैक लेकर आ रहा था।

जैकी के जाने के आधा घण्टे बाद अब फिर फोन आ गया।

कालू की आवाज घबराई हुई थी।

जाहिर था कि दिल धड़कना ही था उसका।

“बोल....!” किसी तरह से खुद पर काबू करते हुए वह बोला।

“प....पुलिस की रेड पड़ी है मालिक। ह....हमें चारों तरफ से घेर लिया गया है। अ....अब क्या करूं मालिक?”

“हरामजादे।” दहाड़ उठा बद्रीनाथ—“मुझसे पूछ रहा है कि क्या करूं। खुद नहीं सोच सकता। इतना जान ले कि अगर मेरा नुकसान हुआ तो तेरी खैर नहीं।”

“ल....लेकिन मालिक....।”

“भून दे सारे पुलसियों को....। एक भी जिन्दा नहीं बचना चाहिए।” वह दहाड़ा—“खत्म कर दे सबको।”

“ज....जी मालिक।”

झल्लाकर उसने मोबाईल बन्द किया और जेब में रख लिया।

इतना वक्त लग गया था—उसे अपना साम्राज्य स्थापित करने में—और वो सारा साम्राज्य एक ही दिन में उसे तहस-नहस होता नजर आ रहा था।

“न....हीं....!” वह फुंफकारा—“मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानूंगा। मेरे पतन में जो भी सहायक बनने की कोशिश करेगा—मैं उसे दुनिया से उखाड़ फैंकूंगा।”

‘पिंग....पिंग....!’

तभी उसका मोबाईल फिर से बजा।

एक झल्लाहट-सी उभर आई उसके चेहरे पर।

उसने जेब से मोबाईल निकाला और स्क्रीन पर निगाह मारी।

बिहारी लाल का नम्बर था।

उसने ओ.के. का बटन दबाकर मोबाईल कान से लगाया।

“जी मन्त्री जी।”

“मन्त्री गया भाड़ में।” दूसरी तरफ से घबराई आवाज आई—“लुटिया डूब गई मेरी।”

“यह क्या कह रहे हैं आप?”

“वो हरामन मुझे नंगा करके डोली को साथ लेकर चली गई।”

बुरी तरह से उछल पड़ा बद्रीनाथ।

“य....यह आप क्या कह रहे हैं मन्त्री जी! एक औरत ने आपको नंगा कर दिया।”

“न केवल मुझे नंगा किया—बल्कि तेरे पांचों मुस्टंडों के हाथ-पैर भी तोड़ डाले उसने। मेरी भी बाजू तोड़ डाली।”

“ए....ऐसा कैसे हो सकता है?”

हैरानी से बोला बद्रीनाथ।

“ऐसा ही हुआ है बद्री। वह कोई मामूली औरत नहीं। मुझे तो लगता है कि मुझे मन्त्रिमण्डल से निकालने के पीछे उसी का हाथ था।”

“क्...या....आप....।”

“मैं मन्त्री नहीं रहा अब।”

“राणा को भी एक लड़की ने ही मारा था। वो भी होटल गोल्ड में। यह भी गोल्ड में....कहीं यह वही तो नहीं?”

“वही है।” दूसरी तरफ से आवाज आई—“कुछ कर बद्री—वर्ना न तू राजा रहेगा—न तेरा दबदबा रहेगा। अगर एक बार लोगों के हाथ उठ गये तो तुझे इस दुनिया में छुपने की जगह कहीं नहीं मिलेगी। बड़ा हुक्म चला लिया तूने—अब बाहर निकल और उस हरामन को पकड़कर सरेआम मार उसे—ताकि लोगों के दिलों में तेरा डर पुनः बैठ जाये।”

“आप ठीक कह रहे हैं मन्त्री जी।” बद्रीनाथ की आवाज में कहर उभर आया—“अपना आतंक बनाये रखने के लिये अब मुझे खुद ही बाहर निकलना पड़ेगा।”

“तेरी फीयेट ले गई है वो—और अवश्य ही वह पहले गोल्ड में ही जायेगी—उसके पश्चात् ही वह बाहर निकलेगी।”

जवाब नहीं दिया बद्रीनाथ ने। बस मोबाईल ऑफ करके जेब में रखा और हॉल की तरफ बढ़ने लगा। पहले एक लड़की ने ही रामलाल चौक में उसके आदमियों के हाथ-पैर तोड़े थे और उन्हें नंगा करके भेजा था। फिर राणा और उसके चार सिपाहियों को भी लड़की ने ही मारा—और अब एक लड़की बिहारी लाल की ऐसी तैसी फेर उसके घर से डोली को ले गई।

“कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी हो रही बर्बादी के पीछे भी उसी लड़की का ही हाथ हो।”

यह बात उसके जेहन में आते ही उसके जबड़े भिंच गये।

आंखों में चिंगारियां भरने लगीं।

¶¶

“जी....जू....।”

भीमसेन के सीने से लगकर फूट-फूटकर रो रही थी डोली।

खुद भीमसेन की आंखों से भी आंसू बह रहे थे।

उसके हाथ डोली की पीठ को थपक तो जरूर रहे थे—मगर उसे खुद समझ नहीं आ रहा था कि वह डोली को हौंसला दे तो कैसे दे।

खुद वह भी लुट चुका था। उसकी बीवी मर गई—बच्चे मर गये।

सब कुछ ही तो उजड़ चुका था उसका।

अब जो खुद उजड़ चुका हो—वह दूसरे को क्या हौंसला देता।

उनके पीछे रीमा राठौर खड़ी थी।

दोनों की हालत देख खुद उसका दिल भी भर आया था। मगर शीघ्र ही उसने अपने जज्बातों पर काबू पाया और आगे बढ़कर पीछे से डोली को पकड़ा और उसे भीमसेन से अलग करते हुए बोली—"बस....अब और नहीं रोना—अन्दर चलो।"

और वह डोली को सहारा दिये भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे भीमसेन भी अपने आंसू पौंछता हुआ ड्राईंगरूम में आ गया।

रीमा राठौर ने डोली को सहारा देकर सोफे पर बिठाया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली—

"मैं जानती हूं डोली कि दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है तुम पर। महीना भर हर रोज बिहारी लाल तुम्हारी इज्जत लूटता रहा और तुम्हें जानवर की तरह बांध कर रखा। मैंने खुद तुम्हारी हालत देखी है।"

डोली की आंखें फिर से बहने लगीं।

"अब तो जिन्दा रहने का भी अधिकार खो चुकी हूं मैं। इज्जत लुट गई। दीदी को खा गई—अपने भांजे-भांजी को खा गई। मुझे तो मर जाना चाहिये।"

"हट पगली....ऐसा क्यों कहती है। जो कुछ हुआ.....उसमें तुम्हारा क्या कसूर था।"

"मगर दीदी....मुझ अभागिन को कौन अपनायेगा....कौन उस औरत की मांग में सिंदूर भरेगा जो लुट चुकी हो?"

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और उसके करीब बैठकर बोली—

"तेरे जीजा का भी कुछ नहीं बचा। उसकी बीवी मर गई—बच्चे खत्म हो गये।"

डोली रोते हुए भीमसेन को देखने लगी—जो कि लुटा-पिटा-सा उसकी तरफ देख रहा था।

"दस साल से वह तेरी बहन को हर सुख दे रहा था। तुम्हारी बहन को भीमसेन ने कभी किसी चीज की कमी नहीं आने दी थी—न पैसे की—न ही प्यार की।"

"म....मैं जानती हूं....मगर अब तो सब कुछ....।"

“उजड़ जाने से अधूरा हो गया है मेरा भाई। और तुम भी अधूरी हो गई हो। ऐसे में अगर तुम दोनों मिल जाओ तो पूरे हो जाओगे।”

बुरी तरह से उछल पड़ा भीमसेन और हैरानी से रीमा राठौर को देखने लगा।

डोली भी आंखें फाड़े उसे देखने लगी।

“य....यह क्या कह रही हो बहन....?” भीमसेन चौंकते हुए बोला।

“मैं ठीक कह रही हूं।”

“म....मगर मेरी उम्र तो देखो—और डोली तो अभी सिर्फ बीस साल की है—और फिर....?”

“दस-बारह साल का फर्क कोई ज्यादा बड़ा फर्क नहीं होता मेरे भाई।” रीमा राठौर समझाने वाले स्वर में बोली—“मर्द और घोड़ा कभी बूढ़ा नहीं होता।”

“ल....लेकिन....मैंने आज तक कभी भी डोली को ऐसी नजर से नहीं देखा।”

“डोली की तरफ से हां हो जाये तो फिर नजर भी बदल जायेगी।”

“ल....लेकिन....।”

“अब कुछ नहीं बोलोगे तुम—मुझे डोली से बात करने दो।”

भीमसेन गहरी सांस छोड़कर रह गया। उसके चेहरे पर असमंजस के भाव थे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहे तो क्या कहे।

रीमा राठौर ने डोली की तरफ देखा और बोली—

“तुम बोलो डोली—तुम क्या कहती हो?”

“मैं तो गला हुआ वो फल हूं दीदी—जिसे आप एक देवता के चरणों में चढ़ाना चाहती हैं।”

“तू कितनी पवित्र है....यह तू नहीं मैं जानती हूं—मैं यही चाहती हूं कि मेरे भाई का घर भी बस जाये और तुम्हारे सिर पर आंचल भी आ जाये। अगर तुम हां करती हो तो मैं तुम्हारे पापा से....।”

“पापा नहीं हैं मेरे....।”

“तो तुम्हारे भाई-बहनें....।”

“बड़ी बहन है। रामगढ़ में ब्याही हुई है।”

“ठीक है—तुम मुझे उसका नम्बर बताओ—मैं उसे यहीं बुला लेती हूं।”

डोली ने नम्बर बताया।

रीमा राठौर ने सैंटर टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और डोली का बताया नम्बर डायल करने लगी।

फोन पर उसने उसकी बड़ी बहन को सारे हालात बताये—और फिर अपने फैसले के बारे में बताया, जिसे उसकी बहन ने तुरंत स्वीकार कर लिया।

रीमा राठौर ने उसे सपरिवार यहां आने को कहा और फिर फोन रख दिया।

“अब तुम बाथरूम जाओ—नहाओ—और कपड़े बदलो।”

डोली खड़ी हो गई।

रीमा राठौर ने भीमसेन की तरफ देखा, जो कि सिर झुकाये बैठा था।

“क्या बात है—मेरे फैसले से खुश नहीं हो तुम?”

वह उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोली।

भीमसेन ने गहरी सांस छोड़ी।

“ऐसी बात नहीं है बहन।” वह बोला—“कोई भी बहन अपने भाई का बुरा नहीं सोच सकती। तुम्हारा फैसला सिर आंखों पर मगर....।”

“मगर क्या?”

“मैं कल से डर रहा हूं बहन। कल को बद्रीनाथ फिर से यहां आ धमकेगा। कुत्ते के मुंह से अगर हड्डी छिन जाये तो वह पागल हो उठता है। बिहारी लाल भी एक कुत्ता ही है—जिसके मुंह से तुम डोली को खींच लायी हो। ऐसे में जाहिर है कि वह पागल हो उठेगा—और बद्रीनाथ को कहेगा—और बद्रीनाथ सीधा यहां आ धमकेगा।”

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“चिंता मत करो।” वह बोली—“बद्रीनाथ का बिस्तर बांधकर ही मैं यहां से जाऊंगी। बिहारी लाल की टांगें तो काट दी हैं मैंने—उसकी सरकारी ताकत को खत्म कर दिया है। अब बस बद्रीनाथ ही उसकी ताकत रह गया है। आज या कल में वो भी खत्म हो जायेगी। उसके पश्चात् दीनापुर में फिर से वही अमनोचैन बहाल हो जायेगा—जो कि पहले कभी हुआ करता था।”

भीमसेन बोला कुछ नहीं मगर उसकी चमकती आंखें बता रही थीं कि वो आने वाले कल के सुनहरे सपनों की कल्पना कर रहा है।

शीघ्र ही डोली वापस कमरे में आई और रीमा राठौर के करीब बैठ गई।

उसका सिर झुका हुआ था।

साफ नजर आ रहा था कि अभी तक वह पिछले झटकों से उभर नहीं पा रही है।

एकदम से भूला भी कैसे जा सकता था उस मंजर को जो वह पिछले कई दिनों से भुगत रही थी। मगर रीमा राठौर को विश्वास था कि शादी के बाद उसके जख्म भर जायेंगे।

और फिर थोड़ी देर और दोनों से बातें करने के पश्चात् रीमा राठौर ने उनसे विदा ली और भीमसेन के मकान से निकलकर फीयेट में बैठी और वहां से चल पड़ी।

अब उसका रुख बिहारी लाल की कोठी की तरफ था।

उसकी अपनी कार जो वहीं खड़ी थी—उसी को लेने जा रही थी वह।

उस वक्त वह संजय चौक से निकल रही थी जब एकाएक ही—

‘तड़....तड़....तड़....!’

पीछे से गोलियों की आवाजें उभरीं और उसी के साथ ही उसकी फीयेट के पिछले दोनों पहिये धमाके के साथ बर्स्ट हो गये।

कार की गति भीड़ होने की वजह से काफी कम थी—इसलिये रीमा राठौर को उसे सम्भालने में कोई खास दिक्कत नहीं आई।

उसने कार रोकी और स्टीयरिंग पर हाथ रखे-रखे ही पीछे देखा।

चार कारें उसकी तरफ बढ़ती हुई उसे चारों तरफ से घेर रही थीं।

कारों की खिड़कियों में से झांकती गनों के रुख उसकी कार की तरफ थे।

गहरी सांस निकल गई रीमा राठौर के होंठों से और वह कार का दरवाजा खोलकर बाहर आ गई।

चारों कारें भी रुक गईं।

राह चलते लोग उनसे दूर खड़े होकर उधर देखने लगे।

“अरे....!” तभी भीड़ में एक आदमी बोला—“यह तो वही लड़की है।”

“कौन?” उसके करीब खड़ा एक अन्य व्यक्ति बोला।

“मैंने रामलाल चौक पर देखा था इसे। मालिक के गुण्डों को इस अकेली ने नंगा करके भेजा था।”

“तो फिर समझ लो आज यह नंगी होगी।” एक अन्य बोल पड़ा।

दोनों उसकी तरफ देखने लगे।

“वो काली गाड़ी मालिक की है।” तीसरे ने एक काली कार की तरफ इशारा किया—“और यह तो पूरा दीनापुर जानता है कि जब भी मालिक सड़क पर आता है—क्या होता है। अब इस लड़की के बचने के कोई चांस नहीं।” कहते हुए उसने गहरी सांस छोड़ी।

“मगर यह लड़की है कौन?” एक अन्य बोला।

“यह तो नहीं पता—मगर जो भी है—है बहादुर।” पहला बोला।

“अब सारी बहादुरी निकल जायेगी।” एक अन्य बोला।

“खड़ी कैसे है.....देखो तो!” एक और बोला—“जैसे मालिक इसे मारने नहीं इसकी पूजा करने आया हो। कोई परवाह ही नहीं इसे जैसे।”

“वैसे जो भी है—है दिलदार।” पहला बोला।

तभी कार के पिछले दरवाजे में से बद्रीनाथ बाहर निकला।

अन्य कारों से भी गुण्डे बाहर निकल आये।

सभी के हाथों में स्टेनगनें थीं—जिनका रुख रीमा राठौर की तरफ था।

यह सभी बद्रीनाथ के बॉडीगार्ड थे।

बद्रीनाथ गनों के साये में चलता रीमा राठौर के सामने आया और उसे कहर भरी निगाहों से देखते हुए गुर्राया—

“तो तू है वो जो मन्त्री जी के कब्जे से उस लौंडिया को उठाकर ले गई।”

रीमा राठौर के होंठों पर जहर भरी मुस्कान फैल गई।

“मैं वो भी हूं जिसने तेरे कुत्तों को नंगा करके तेरे पास भेजा था। मैं वो भी हूं जिसने राणा नाम के नासूर को इस शहर के जिस्म से काट दिया था। और अब मैं ही वो होऊंगी जो इस भरे चौक में—“रीमा राठौर ने बांहें फैलाईं—“जूतों से मार-मारकर तेरा मगज निकालूंगी।”

बद्रीनाथ की आंखों में चिंगारियां भरने लगीं।

उसके गुलामों के सामने वह उससे ऐसी बात कर रही थी—गुस्सा तो आना ही था उसे।

“तेरी यह मजाल हरामजादी।” वह फुंफकारा—“तू बद्रीनाथ को आंखें दिखाये। दो तीर क्या चला लिये खुद को तीरंदाज समझने लगी है तू। तू मेरी ताकत को नहीं जानती—बद्रीनाथ की आंखों में जब गुस्सा भरता है तो दीनापुर में खून के दरिया बहने शुरू हो जाते हैं।”

“देख रही हूं तेरी ताकत।” रीमा राठौर ने उसके गुलामों की तरफ इशारा किया—“यही है न तेरी ताकत। इसी ताकत के बलबूते पर तू लोगों पर जुल्म ढा रहा था न। अरे बेवकूफ, यह ताकत तो आज है—कल नहीं। यह ताकत तो किसी भी वक्त दगा दे सकती है। असली ताकत तो वो होती है—जो अपने भीतर हो....मुझे देख....मैंने जो कुछ भी किया—अपने बलबूते पर किया। मगर तू ऐसा नहीं कर सकता—क्योंकि तेरे अन्दर वो ताकत है ही नहीं।”

“लाशों पर पैर रखकर मैं आज जिस जगह पर पहुंचा हूं—तेरी बातों में आकर मैं उस जगह को छोड़ूंगा नहीं। पकड़ लो हरामन को।” उसने हुक्म दिया—“और लम्बा कर दो सड़क पर। और तब तक इससे रेप करते रहो जब तक कि यह कुतिया खत्म नहीं हो जाती।” कहकर उसने रीमा राठौर की तरफ देखा। और क्रूरता से मुस्कुराया—“पहले मेरे गुलामों से निपट ले—फिर मेरे साथ भिड़ने की सोचना।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

“ओ.के.।” वह बोली—“अब मेरा जूता तेरे गुलामों से निपटने के बाद ही तेरे सिर पर बजेगा।”

कहने के साथ ही उसका जिस्म रबड़ के बबुये की तरह उछला—और अगले ही पल वह कार की छत पर खड़ी थी।

उसने छत पर खड़े-खड़े अपनी तरफ बढ़ रहे गुण्डों की तरफ देखा।

दस थे वे।

वो जानती थी कि अगर दसों ने एक साथ अपनी गनों के मुंह खोल दिये तो उसका बचना मुहाल हो जायेगा।

संग आर्ट जानती थी वह।

एक क्या दो स्टेनगनों से भी वह खुद को बचा सकती थी—मगर दस गनों से निपटना नामुमकिन था। मगर वह यह भी जानती थी कि वे गुण्डे उसे खत्म करने की बजाये उसे नीचे बिछाने को तरजीह देंगे। क्योंकि एक तो उनके बाप का यह आदेश था—दूसरे उसका हुस्न ही ऐसा था कि देखने वाला बस एक ही बात सोचेगा कि काश उसे उसकी सवारी गांठने का मौका मिल जाये।

और ऐसे मौकों का फायदा उठाना खूब जानती थी रीमा राठौर।

जैसे ही वे उसके करीब आये—रीमा राठौर ने उन पर छलांग मार दी।

उसकी तरफ से ऐसे दुस्साहस की उम्मीद किसी को नहीं थी। सो सभी हड़बड़ा उठे।

तीन आदमियों को अपने साथ लिये रीमा राठौर सड़क पर जा गिरी।

गिरते ही वह सम्भली और झपटकर एक की स्टेनगन छीनी और—

‘तड़....तड़....तड़....!’

उसने बिना वक्त गवांये स्टेनगन का मुंह खोल दिया।

और जब तक गुण्डे सम्भलते—वे लाशों में तब्दील हो चुके थे।

हालांकि रीमा राठौर चाहती तो उन्हें आसानी से निहत्था कर सकती थी—मगर वह कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा थी वहां। ऐसे में द्वन्द युद्ध के दौरान कोई भी गन पर काबू करके भीड़ पर गोली चला सकता था।

और ऐसा वो हरगिज नहीं चाहती थी कि किसी बेगुनाह का खून बहे।

इसीलिये उसने उन सभी गुण्डों को गोली मार दी थी।

उसने गन नीचे फैंकी और बद्रीनाथ की तरफ घूमी।

बद्रीनाथ हैरानी से आंखें फाड़े कभी अपने गुलामों की लाशों को देख रहा था तो कभी रीमा राठौर को।

उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसके गुलाम इतनी जल्दी और इतनी आसानी से मर जायेंगे।

“तेरे यह गुलाम तो गये बद्री।” रीमा राठौर गुर्राई—“अब तेरी बारी है। और मैंने तेरे से वादा किया था कि तुझे जूते से मार-मारकर खत्म करूंगी—ताकि लोगों को भी पता चल जाये कि जूते में कितनी ताकत होती है।”

बद्रीनाथ का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।

आंखें ज्वालामुखी बन गईं।

उसकी बादशाहत को ललकारा जा रहा था।

जिन लोगों में उसका आतंक फैला हुआ था—उन्हीं लोगों के बीच वह उसे नंगा कर रही थी।

ऐसे में उसका आपे से बाहर होना जाहिर ही था।

जंगली भेड़िये की तरह वह रीमा राठौर की तरफ झपटा।

ठीक तभी रीमा राठौर इतनी ऊंची उछली कि उसके पैर बद्रीनाथ के सिर के बराबर पहुंच गये।

‘ठाक्!’

उसके सैंडिल की नोक सीधा बद्रीनाथ के माथे से टकराई।

बद्रीनाथ उछलकर पीछे जा गिरा।

उसका माथा फट गया—और वहां से खून की धारा बह निकली।

रीमा राठौर ने पैर सड़क पर टिकाये और झुककर अपने सैंडिल उतारने लगी।

उधर गिरते ही बद्रीनाथ तड़पकर खड़ा हुआ।

अब उसे समझ आई थी कि उसके सामने खड़ी लड़की कोई मामूली औरत नहीं थी। वह अपने अन्दर बला की ताकत रखती है।

आस्तीन से माथा पौंछते हुए वह बांहें फैलाये रीमा राठौर की तरफ बढ़ा।

तभी रीमा राठौर सीधी हुई।

अब उसके दोनों हाथों में सैंडिल थे।

“इन्हीं जूतों से पिट-पिटकर मरेगा अब तू।” रीमा राठौर फुंफकारी।

बद्रीनाथ ने जवाब नहीं दिया—बस उस पर छलांग लगा दी।

‘खड़ाक....!’

रीमा राठौर का दायां हाथ घूमा।

सैंडिल की हील बद्रीनाथ के मुंह पर पड़ी।

बेचारा रीमा राठौर तक पहुंच भी नहीं पाया—और परे जा गिरा।

एक और जगह से खून बहना शुरू हो गया।

बद्रीनाथ जैसे पागल हो गया और उसका पागलपन तब और बढ़ गया जब भीड़ में से एक आवाज गूंजी—

“एक जूता मेरे नाम का भी लगाना।”

बद्रीनाथ झटके से खड़ा हुआ और उस तरफ देखते हुए दहाड़ा जिधर से आवाज आई थी।

“हरामजादो....जरा इस कुतिया से निपट लूं—फिर देखना क्या हालत करता हूं तुम्हारी—पूरे शहर को खून में डुबो दूंगा—एक को भी....आह।”

पीछे से जूता पड़ा उसके सिर पर।

चीखता हुआ बद्रीनाथ मुंह के बल गिरा।

लोग हैरान भी हो रहे थे और खुश भी हो रहे थे।

खुश इसलिये हो रहे थे कि एक रावण का अंत वे अपनी आंखों से देख रहे थे—और हैरान इसलिये हो रहे थे जिसका आतंक पूरे दीनापुर में फैला हुआ था—जिसके नाम से बड़े-बड़ों की कंपकंपी छूट जाती थी—वो एक लड़की से जूतों से पिट रहा था—और उसे खुद हाथ उठाने का मौका तक नहीं मिल रहा था।

ऐसे में हैरानी तो होनी ही थी पब्लिक को।

बद्रीनाथ जब भी रीमा राठौर की तरफ झपटता तो रीमा राठौर अपना बचाव करते हुए उसके सिर पर सैंडिल दे मारती। अब तो उसका सिर कई जगहों से फट गया था।

खून से उसका चेहरा ही नहीं....कपड़े भी लथपथ हो गये थे।

धीरे-धीरे बद्रीनाथ की चाल में लड़खड़ाहट नजर आने लगी।

थकान और अधिक खून निकल जाने की वजह से वह बेहद कमजोर हो गया था।

तभी....!

‘खड़ाक!’

रीमा राठौर के सैंडिल की हील उसकी खोपड़ी पर पड़ी।

बद्रीनाथ लहराया और उसके घुटने मुड़ने लगे।

‘खड़ाक!’

पुनः जूता उसके सिर पर पड़ा।

बद्रीनाथ के घुटने जमीन पर जा टिके।

‘खड़ाक....!’

पुनः आवाज हुई।

बद्रीनाथ एक तरफ लुढ़क गया।

उसी के साथ ही भीड़ में खुशी भरा शोर गूंज उठा।

¶¶

अगले दिन डोली की बड़ी बहन पूरे परिवार के साथ आई— “और मैंने अपने सामने दोनों की शादी करवाई।” रीमा राठौर कार को ड्राईव करते हुए बोली—“मगर....” उसने गहरी सांस छोड़ी—“बेचारा एक महीना ही डोली के साथ रह पाया—” उसकी आवाज भर्रा गई—“अभी तो दोनों ने ढंग से जिंदगी के सपने भी नहीं देखे थे कि भीमसेन को मार डाला बाऊजी ने।” सिकंदर ठाकरे ने अफसोस भरी गहरी सांस छोड़ी।

“सचमुच बहुत बुरा हुआ डोली के साथ!” वह बोला—“बेचारी डोली—वह तो अभी पिछले सदमे से ही नहीं उभर सकी होगी कि इतना बड़ा सदमा और लग गया—पता नहीं कैसे बर्दाश्त कर पायेगी वह इस सदमे को। अभी तो उसकी मेहंदी भी नहीं उतरी होगी कि विधवा का लिबास उसके बदन पर पड़ गया। भला इससे बड़ा सदमा और क्या हो सकता है।” रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और फिर दांत भींचते हुए गुर्रा उठी—

“अब तो मेरे भाई की आत्मा को तभी शान्ति पहुंचेगी—जब उस बाऊजी की आत्मा उसके जिस्म से अलग होगी।”

“और उसी के लिये हम रामगढ़ जा रहे हैं।”

“हां।”

सिकंदर ठाकरे गहरी सांस छोड़ते हुए सामने देखने लगा।

¶¶

जोरावर हैरान!

उसको विश्वास नहीं हो रहा था कि वह जो देख रहा है, वो सच है।

दसों गुण्डे सिर झुकाये लुटे-पिटे से उसके सामने खड़े थे।

उनके झुके हुए सिर ही बता रहे थे कि वे खाली हाथ वापस आये हैं—और बुरी तरह से पिटकर आये हैं। फिर भी जोरावर ने पूछा।

“य....यह हालत किसने की तुम्हारी? रामपुर में ऐसा कौन सूरमा पैदा हो गया जिसने बाऊजी के गुलामों की यह हालत कर दी? अ....और तुम तो बिच्छू के साथ रीमा राठौर को लेने गये थे।”

दसों के झुके सिर और झुक गये।

“जवाब दो!” दहाड़ा जोरावर—“कहां है रीमा राठौर?”

बीच वाले ने सिर को उठाया और डरे लहजे में बोला—

“उ....उसी ने हमारी....यह....हालत की है मास्टर।”

“क्या?” बुरी तरह उछल पड़ा जोरावर।

“ह....हां मास्टर।”

“क्या पूरी फौज लेकर आई थी वो?”

“न....हीं....अ....केली थी वह।”

जोरावर की आंखें हैरानी से फैल गईं।

“एक अकेली छोकरी ने तुम्हारे थोबड़े बिगाड़ दिये।”

उस गुण्डे का सिर पुनः झुक गया।

“और बिच्छू कहां है?” गुर्राया जोरावर।

“व....वो र....रीमा राठौर के कब्जे में है।”

यह एक और झटका था जोरावर के लिये।

“बिच्छू रीमा राठौर के कब्जे में।” वह बड़बड़ाया—“उस अकेली औरत ने मेरे दस जांबाजों को बुरी तरह से मारा और बिच्छू को अपने कब्जे में कर लिया। विश्वास नहीं हो रहा। एक अकेली औरत इतनी बड़ी ताकतवर नहीं हो सकती।” कुछ देर तक तो वह यूं ही हैरानी के सागर में डूबता उतराता रहा—फिर उसने कुछ सोचा और बोला—

“दिखने में कैसी है वो?”

उसी गुण्डे ने सिर उठाया और बोला—

“उ....उसे देखकर तो हम भी धोखा खा गये थे मास्टर। हमने यही सोचा था कि जो बद्रीनाथ जी को मार सकती है—वो अवश्य ही बहुत हट्टी-कट्टी पहलवान सरीखी होगी।”

“तो क्या ऐसी नहीं है वो?”

“नहीं मास्टर....दिखने में तो वो ऐसी है मानो अगर उसे जोर से पकड़ा गया तो उसकी हड्डी टूट जायेगी। ऐसी कोमल नजर आती है वो—और खूबसूरती ऐसी कि देखने वालों को गश आ जाये। ल....लेकिन जब उसने हाथ-पैर चलाये तो पता चला कि नाजुक-सी नजर आने वाली वह खूबसूरत बला किस हद तक खतरनाक है।”

जोरावर की आंखें सिकुड़ गईं।

माथे पर सोचों भरी लकीरें फैल गईं।

“जिस औरत ने मेरे दस आदमियों को पीटा हो—उसने अवश्य ही बिच्छू का मुंह भी खुलवा लिया होगा। यानि उसे पता चल गया होगा कि भीमसेन मर गया है और जिस तरह से भीमसेन ने उसके बारे में बताया था—उससे इतना तो जाहिर होता ही था कि भीमसेन और उसका गहरा रिश्ता है। तभी तो वह उसके बुलाने पर बद्रीनाथ को मारने दीनापुर पहुंच गई थी।

अब वो औरत उसके बुलावे पर दीनापुर पहुंच सकती है। वह उसकी मौत की खबर सुनकर यहां जरूर पहुंचेगी।

यानि मुझे वक्त रहते उसके खिलाफ जाल तैयार करना होगा—ताकि यहां आकर गुम न हो—बल्कि सीधा मेरे जाल में आ फंसे।”

उसने तेजी से सोचा—फिर बोला—

“अगर तुम रीमा राठौर को दोबारा देखोगे तो पहचान लोगे?”

“यस मास्टर!” पहला बोला—“वो चीज ही ऐसी थी कि आदमी उसे एक बार देखने के बाद जिन्दगी भर उसे भूल नहीं सकता।”

“तो फौरन रामपुर में प्रवेश करने वाले हर रास्ते पर तैनात हो जाओ और वहां से रामपुर में प्रवेश करने वाली हर गाड़ी पर नजर रखो।”

“यस मास्टर।” सभी एक साथ बोले।

“जैसे ही किसी को उसका पता चले—वह फौरन मुझे खबर कर दे।”

“यस मास्टर।”

“और इतना याद रखो—अगर वह तुम्हारी निगाहों में आये बिना इस नगर में प्रवेश कर गई तो तुममें से एक भी जिन्दा नहीं बचेगा। अब दफा हो जाओ।”

दसों के दसों बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए मुड़े और कमरे से बाहर निकल गये।

उनके जाने के पश्चात् जोरावर वहीं फर्श पर बैठ गया।

अपना हाथ उसने माथे पर रखा और रीमा राठौर के बारे में सोचने लगा।

“जोरावर....ऐ जोरावर....।”

तभी बाहर से अयोध्या प्रसाद की आवाज सुन वह बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए खड़ा हो गया।

तभी अयोध्या प्रसाद उसके कमरे में दाखिल हुआ।

“अरे!” उसे देखते ही वह खिल उठा—“तू यहां छुपा बैठा है....और मैं तुझे बाहर ढूंढ रहा हूं।”

“म....मैं आप ही के पास आ रहा था बाऊजी।”

जोरावर बोला।

इस वक्त अयोध्या प्रसाद पहले से बेहतर नजर आ रहा था। मगर सिर्फ चेहरे से।

कपड़े वही थे उसके—पुराने—सब्जी और राल के दागों से भरे हुए मैले-कुचैले। बाल भी मिट्टी हो रहे थे। शेव भी गंदी हो रही थी। बस उसकी आंखें बता रही थीं कि इस वक्त उस पर पागलपन उतना नहीं जितना कि होता है।

“वो औरत मिल गई?” पूछा अयोध्या प्रसाद ने।

“जी....अ....अभी नहीं मिली।” फंसे स्वर में बोला जोरावर।

“क्यों?” पूछते हुए अयोध्या प्रसाद की आंखों के भाव एकदम से बदल गये।

अपना मनपसंद जवाब जो नहीं मिला था उसे—जाहिर था कि उसके पागलपन ने आंखें खोल लेनी थीं।

“वो....वो बाऊजी—रीमा राठौर अभी मुम्बई में नहीं है। अभी थोड़ी देर पहले ही बिच्छू का फोन आया था। वह उसके घर की निगरानी कर रहा है। जैसे ही वो आयेगी—बिच्छू उसे घसीटता हुआ आपके सामने पेश कर देगा।”

“हां....” अयोध्या प्रसाद ने बच्चों वाले अंदाज में ताली पीटी—“फिर मैं उस कमीनी से पूछूंगा कि उसने मेरे यार को क्यों मारा। जिस तरह उसने बद्री को जूतों से पीटा था—उसी तरह मैं भी उसे जूतों से मारूंगा। ऐ....तू मुझे बढ़िया जूता लाकर देना—असली चमड़े का।”

“ज....जी बाऊजी....मैं आज ही जूता ला दूंगा।” ना चाहते हुए भी जोरावर की आवाज भीग गई।

“और बिच्छू को फोन कर कि वह पता लगाये कि वो हरामन कहां गई हुई है। फिर उसे वहीं से उठाकर ले आये।”

“वह....तो मैंने कह दिया है बाऊजी।”

“अरे....तू तो बड़ा समझदार हो गया है रे।”

जोरावर कुछ नहीं बोला—बस सिर झुका लिया।

अयोध्या प्रसाद की हालत उससे देखी नहीं जा रही थी। तभी तो उसने सिर झुका लिया था।

“तो मैं जाऊं?” अयोध्या प्रसाद ने बच्चों की तरह इजाजत मांगी।

“हां....अ....आप आराम कीजिये।”

अयोध्या प्रसाद ने सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

उसके जाते ही जोरावर पुनः फर्श पर बैठ गया।

उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे।

“काश....” वह तड़पते हुए बोला—“एक बार वह कुतिया मुझे मिल जाये—फिर देखूंगा उसके दमखम को।”

“जोरावर अंकल!”

आवाज सुनकर जोरावर की गर्दन दरवाजे की तरफ घूम गई।

कबीर प्रवेश कर रहा था कमरे में।

जोरावर कुछ नहीं बोला—बस उसे देखता रहा।

“बिच्छू के साथी तो वापस आ गये हैं।” करीब आकर बोला कबीर—“मैंने देखा है एक को....।”

“हां....!”

“तो फिर रीमा राठौर....।”

“उसे नहीं ला सके वो हरामी।”

“क्या?” चौंका कबीर।

उत्तर में जोरावर ने सारी बात बताई और फिर आगे बोला—

“अब तो बस उसके शहर में घुसने की देर है। साली का वो हाल करूंगा कि आने वाले पचास सालों में कोई भी लड़की किसी मर्द के सामने गर्दन सीधी नहीं कर पायेगी।”

कबीर कुछ नहीं बोला, बस गहरी सांस छोड़कर रह गया।

“आप कैसे आये छोटे बाऊजी?” पूछा जोरावर ने।

कबीर ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।

“लगता है बाऊजी के साथ में तुम्हारी याददाश्त भी जवाब देने लगी है।”

“क्या?”

हड़बड़ाया जोरावर।

“आज हथियारों की खेप आ रही है—भूल गये क्या?”

“ओह! मैं तो सचमुच ही भूल गया था।”

“उसे मैं लेने जा रहा हूं।”

“हां....और काम होते ही मुझे फोन कर देना।”

सिर हिलाते हुए बोला जोरावर।

कबीर ने भी सिर हिला दिया।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....!’

फोन की घण्टी घनघनाई।

फर्श पर बैठे-बैठे ही जोरावर ने अपने करीब रखे फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

इस वक्त रात के दस बज रहे थे—और इस वक्त जोरावर सारे दिन की थकान उतार रहा था।

उसके सामने स्कॉच की बोतल रखी थी और साथ ही एक भरा हुआ पैग रखी था।

बोतल आधी के करीब खाली हो चुकी थी मगर जोरावर की आंखों में हल्का-सा सरूर तक नहीं उभरा था।

बोतल के करीब ही एक प्लेट में तन्दूरी चिकन रखी हुआ था।

जिस दिन अयोध्या प्रसाद आधा पागल हुआ था—उसी दिन से जोरावर ने पलंग त्याग दिया था। उसने कसम खा रखी थी कि जब तक अयोध्या प्रसाद ठीक नहीं हो जाता—वह फर्श पर ही बैठेगा—और फर्श पर ही सोयेगा—और तब से वह अपनी प्रतिज्ञा पर अमल कर रहा था।

“हैलो....!” वह माऊथपीस में बोला।

“मैं मातादीन बोल रहा हूं मास्टर।”

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुनकर जोरावर एकदम से सीधा होकर बैठ गया।

मातादीन उन्हीं दस में से एक था जो रीमा राठौर को लेने बिच्छू के साथ गये थे।

“हां बोल मातादीन।” वह व्यग्रता से बोला।

“वो रामपुर में प्रवेश कर गई है मास्टर।”

“कौन....रीमा राठौर?”

“यस मास्टर।”

“कहां है वो?”

“मैं उसकी कार का पीछा कर रहा हूं। होटल बैस्ट की तरफ जा रही है वो—कार का नम्बर है एम.आर. 4036।”

“वैरी गुड।”

“मगर वह अकेली नहीं है मास्टर।”

“क्या मतलब?”

“एक और आदमी भी है उसके साथ।”

“कोई बात नहीं—बहुत बढ़िया खबर दी तूने। मैं इकबाल को बैस्ट की तरफ भेजता हूं—तू उसे बस इशारा कर देना—बाकी वह खुद सम्भाल लेगा।”

“यस मास्टर।”

जोरावर ने पलंजर दबाया और कोई नम्बर मिलाने लगा।

“हैलो....एस.पी. रेजीडैंस।” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“मास्टर बोल रहा हूं।” गुर्राया जोरावर।

“ओह मास्टर....मैं अभी साहब को खबर करता हूं।”

जोरावर दूसरी तरफ से आवाज आने का इंतजार करने लगा।

शीघ्र ही आवाज आई।

“यस मास्टर।”

“इकबाल।”

“यस मास्टर—इकबाल ही बोल रहा हूं। खैरियत तो है जो इतनी रात गये....।”

“हमारा एक दुश्मन इस शहर में घुसा है। हमें चाहिये वो—जिन्दा।”

“मिल जायेगा।”

“एक लड़की है वो।”

“लड़की।” चौंकती आवाज।

“हां....लेकिन वह कोई मामूली लड़की नहीं इसलिये....!”

“वह चाहे कितनी भी खास क्यों न हो। पुलिस के सामने कुछ नहीं कर पायेगी वो। आप बस उसका नाम बताइये और यह बताइये कि वो कहां है—बाकी सब मुझ पर छोड़ दें।”

“रीमा राठौर है उसका नाम।”

“क्...या?” दूसरी तरफ से बुरी तरह से चौंकती आवाज आई।

“क्या बात है—चौंका क्यों तू?”

“क....कहीं आप उस रीमा राठौर की बात तो नहीं कर रहे मास्टर जो मुम्बई में है और वकील है?”

“तू जानता है उसे?” पूछते हुए माथे पर बल पड़ गये जोरावर के।

“उसे कैसे भूल सकता हूं।” दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई—“पहले मैं पुणे में एस.पी. लगा हुआ था। बहुत बढ़िया पैदा कर रहा था मैं वहां—शेरा का राज था उस वक्त वहां—मगर उसने वहां आकर ऐसा उत्पात मचाया कि न सिर्फ शेरा को खत्म कर दिया उसने—बल्कि मेरी भी ट्रांसफर करा दी।”

“और तू यहां आ गया।”

“हां....और किस्मत की बात देखिये मास्टर कि यहां मेरी पैदा वहां से भी बढ़िया हो रही है।”

“तूने देखा है उसे?”

“मैंने तो देखा हुआ है—मगर उसने मुझे नहीं देखा हुआ।”

“फिर भी सावधानी रखना।”

“आप निश्चिंत रहिये मास्टर—घण्टे-दो घण्टे में वो हरामन आपके हुजूर में पेश होगी।”

“मैं इंतजार कर रहा हूं।”

कहकर जोरावर ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

¶¶

“लो, रामपुर तो आ गया। अब क्या करना है?”

रामपुर में प्रवेश करने के थोड़ी देर बाद पूछा सिकंदर ठाकरे ने।

रीमा राठौर ने एक बार उसकी तरफ देखा—फिर पुनः सामने सड़क पर निगाहें जमाते हुए बोली—

“पहले तो थोड़ी देर सोकर आराम करेंगे—फिर शहर का जायजा लेंगे—उसके पश्चात् ही आगे क्या करना है—उसके बारे में सोचेंगे।”

“आराम कहां करेंगे?”

“किसी होटल में।”

तभी रीमा राठौर की निगाहें एक साइकिल सवार पर पड़ीं जो कि शहर की तरफ ही जा रहा था।

रीमा राठौर कार को उसके बराबर लाई और सिर को खिड़की से बाहर निकालकर ऊंचे स्वर में बोली—

“जरा सुनना।”

साइकिल सवार वहीं सड़क पर पैर लगाकर खड़ा हो गया और रीमा राठौर की तरफ देखा।

“यहां कोई बढ़िया से होटल का पता बतायेंगे आप?” रीमा राठौर बोली।

“करीब तीन किलोमीटर आगे होटल बैस्ट है।” साइकिल वाला आगे की तरफ बांह लम्बी करते हुए बोला—“बहुत बढ़िया होटल है।”

“सड़क पर ही है?”

“हां।”

“थैंक्यू।”

कहते हुए रीमा राठौर ने गर्दन वापस खींची और कार आगे बढ़ा दी।

साइकिल वाला वहीं खड़ा कुछ देर जाती हुई कार को देखता रहा, फिर गहरी सांस छोड़ते हुए पैडल मारने लगा।

“काश कि मेरी बीवी भी ऐसी बढ़िया होती।” वह बड़बड़ाया।

उधर कार चलाते हुए रीमा राठौर सिकंदर ठाकरे से बात कर रही थी।

“लो—होटल करीब ही मिल गया—अब पहले अपनी कमर सीधी कर लेना।”

सिकंदर ठाकरे कुछ नहीं बोला—बस गहरी सांस छोड़ दी उसने।

चार-पांच मिनट बाद ही कार होटल बैस्ट की पार्किंग में प्रवेश कर रही थी।

रीमा राठौर ने कार एक खाली जगह पर पार्क की और इंजन बन्द करके चाबी निकालकर बांह पीछे की ओर करके पिछले दरवाजे को लॉक कर दिया।

इधर सिकंदर ठाकरे ने भी अपनी तरफ से पिछले दरवाजे को लॉक किया और फिर अपनी साईड का दरवाजा खोलकर बाहर आया—लीवर को नीचे किया और दरवाजा बन्द कर दिया।

उधर रीमा राठौर भी बाहर आ गई।

उसने दरवाजा बन्द किया और चाबी से लॉक लगाकर पार्किंग के गेट की तरफ बढ़ी।

सिकंदर ठाकरे उसके साथ-साथ चलने लगा।

पार्किंग से पर्ची लेकर रीमा राठौर बाहर आकर होटल के गेट की तरफ बढ़ी।

अभी वे गेट के करीब ही पहुंचे थे कि तभी एक पुलिस की जिप्सी उनके पीछे से निकली और आगे आकर खड़ी हो गई।

दोनों के पैर वहीं जाम हो गये।

“लो....कर लो आराम....।” रीमा राठौर गहरी सांस छोड़ते हुए बोली।

“हमारा स्वागत करने आये हैं यह।” सिकंदर ठाकरे बोला।

“हां—अभी आयेंगे और हमारे गले में फूलों के हार डालकर कहेंगे कि हमने उनके शहर में पैर रखकर इस शहर को धन्य कर दिया है।”

“तुम मजाक कर रही हो?”

“अभी पता चल जायेगा। फिलहाल तुम अपना परिचय नहीं दोगे?”

रीमा राठौर एक इंस्पेक्टर और उसके साथ चल रहे पांच सिपाहियों को देखते हुए फुसफुसाई जो कि जिप्सी से निकलकर उनकी तरफ बढ़ रहे थे।

“यस....?” इंस्पेक्टर के अपने करीब आते ही रीमा राठौर बोली।

इंस्पेक्टर ने एक उड़ती निगाह उस पर डाली—फिर उसे नजरंदाज करते हुए सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा—

“कहां से आये हो तुम?”

जिस अंदाज से उसने रीमा राठौर को नजरंदाज किया था—उससे रीमा राठौर कुछ इस नतीजे पर पहुंच गई कि वो सचमुच की पुलिस है और किसी खास वजह से उन्हें रोक रही है। वर्ना अगर वो बाऊजी के आदमी होते तो ठाकरे से नहीं बल्कि उससे बात करते।

“मुम्बई से।” सिकंदर ठाकरे गम्भीर लहजे में बोला।

“यह तुम्हारी बीवी है?” इंस्पेक्टर ने रीमा राठौर की तरफ इशारा किया।

“हां!” ठाकरे से बोलने से पहले ही रीमा राठौर बोल पड़ी।

“मगर बात क्या है इंस्पेक्टर?” ठाकरे बोला।

“हमें तुम्हारी गाड़ी की तलाशी लेनी है।”

“शौक से लीजिये।” ठाकरे ने कंधे उचकाते हुए बांहों को थोड़ा फैलाया और रीमा राठौर की तरफ देखा—“डार्लिंग....चाबी....।”

रीमा राठौर ने बिना किसी एतराज के अपनी कार की चाबी इंस्पेक्टर को दे दी।

इंस्पेक्टर ने चाबी एक सिपाही को दी और बोला— “एम.आर. 4036।”

अपनी कार का नम्बर उसके मुंह से सुनकर रीमा राठौर बुरी तरह से चौंक उठी।

उसकी गाड़ी का नम्बर बोल रहा था वह—यानि भारी गड़बड़ है।

“ठहरो—।” तभी वह सख्त स्वर में बोली।

पार्किंग की तरफ बढते सिपाही के कदम वहीं रुक गये।

“बात क्या है?” इंस्पेक्टर ने पूछा।

“आप अपना आई.कार्ड दिखायेंगे इंस्पेक्टर?” वह बोली।

इंस्पेक्टर ने गहरी सांस छोड़ी और अपनी जेब से आई.कार्ड निकालते हुए बोला—“लगता है अपने पति से ज्यादा आप दुनियादार हैं। पति तो कुछ बोल नहीं रहा—और आप—लीजिये—अब आप ही तसल्ली कीजिये।”

उसने कार्ड रीमा राठौर की तरफ बढ़ाया।

रीमा राठौर ने कार्ड देखा।

सरकारी मोहर के साथ उस पर उसका फोटो छपा था।

नाम था इंस्पेक्टर बदन सिंह।

उसने आई.कार्ड वापस उसे दिया और सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

“क्या अब आपकी गाड़ी की तलाशी ली जा सकती है?” इंस्पेक्टर बदन सिंह बोला।

“वो तो हमने पहले ही मना नहीं किया था इंस्पेक्टर।” सिकंदर ठाकरे बोला—“मगर उससे पहले तलाशी लेने वाले की हम खुद तलाशी लेंगे।”

“कानून आप भी काफी जानते हैं मिस्टर।” मुस्कुराया बदन सिंह—“और मुझे ऐसे आदमी बड़े अच्छे लगते हैं। आप पहले तलाशी ले सकते हैं।”

और फिर सिकंदर ठाकरे ने दो सिपाहियों की तलाशी ली।

पूरी तरह से आश्वस्त होकर ही वह पीछे हटा।

“अब तलाशी आपके सामने ही होगी।” बदन सिंह बोला—“मेरी यही तो खासियत है कि मैं अंधेरे में तीर नहीं चलाया करता—चलिये....आप भी चलिये मैडम।” वह रीमा राठौर से बोला।

और फिर सभी पार्किंग में आ गये।

कुछ ही देर में वो रीमा राठौर की कार के सामने खड़े थे।

“तलाशी लो।” इंस्पेक्टर बोला।

एक सिपाही ने रीमा राठौर द्वारा दी गई चाबी से दरवाजा खोला और कार की तलाशी में जुट गया।

पिछली सीट पर पड़े रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे के बैग खोलकर उनकी बारीकी से तलाशी ली गई।

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे निरंतर कार की तरफ देखे जा रहे थे जिसमें घुसे दोनों सिपाही तलाशी ले रहे थे।

तभी एक सिपाही को उन्होंने बाहर निकलते देखा।

उसके हाथ में पोलीथीन का एक बन्द लिफाफा था—जो कि भूरे रंग के तेल-से भरा हुआ था।

बुरी तरह से उछल पड़ी रीमा राठौर।

“ब्राउन शुगर।” उसके होंठों से थर्राया स्वर निकला।

बदन सिंह ने चौंककर उसकी तरफ देखा—फिर उसके होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“बड़ी पहचान है ब्राउन शुगर की जो दूर से ही पहचान लिया।” वह बोला।

“ल....लेकिन यह हमारी नहीं है।” रीमा राठौर विरोध भरे स्वर में बोली।

“और हमने भी यह लिफाफा यहां प्लांट नहीं किया है, क्योंकि हमारी तलाशी तुम पहले ही ले चुके हो।”

“मगर हम....!”

“सॉरी....अब बाकी बातें थाने में होंगी।”

रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा जो कि अभी भी हैरानी से लिफाफे को देख रहा था, जो कि अब बदन सिंह के हाथों में पहुंच चुका था।

उसे खुद हैरानी हो रही थी कि ब्राउन शुगर गाड़ी में कैसे पहुंच गई।

रीमा राठौर पर वह संदेह कर नहीं सकता था—और खुद उसने रखी नहीं थी। फिर गाड़ी में कैसे पहुंची?

“काबू में कर लो इन्हें।” गुर्राया बदन सिंह।

दो सिपाहियों ने रीमा राठौर के पीछे पोजीशन ले ली—जबकि एक ने सिकंदर ठाकरे के कालर को ऐसे पकड़ लिया जैसे वह छोटे-मोटे अपराधियों को पकड़ता था।

पैदल ही वे पार्किंग से बाहर निकले और जिप्सी की तरफ बढ़े।

बदन सिंह के हुक्म पर दोनों की कलाइयों में हथकड़ी लगा दी गई और हथकड़ियों के दूसरे सिरे जिप्सी की बॉडी के फ्रेम के पाईप में लगा दिये गये।

हालांकि सिकंदर ठाकरे ने इसका विरोध भी किया था—मगर उसकी किसी भी बात पर ध्यान नहीं दिया गया। और फिर दोनों को लेकर जिप्सी वहां से रवाना हो गई।

थोड़ी दूर चलकर बदन सिंह ने डैश बोर्ड पर से फोन का रिसीवर उठाया और उसे कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो सर....इंस्पेक्टर बदन सिंह स्पीकिंग.....करीब आधा किलो ब्राउन शुगर के साथ एक दम्पति को पकड़ा है.....थाने ले जा रहा हूं सर....यस सर....ओ.के. सर....।"

उसने फोन डैश बोर्ड पर रखा और ड्राईवर से बोला—

"गाड़ी एस.पी. साहब के ऑफिस की तरफ ले चलो।"

ड्राईवर कुछ नहीं बोला—बस सिर हिला दिया।

थोड़ा आगे बढ़कर उसने जिप्सी बायीं तरफ मोड़ी और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

तभी रीमा राठौर ने ठाकरे को इशारा किया कि वह उसे अपने बारे में बता दे।

इशारा समझकर ठाकरे ने बदन सिंह की तरफ देखा और बोला—

"इंस्पेक्टर....!"

बदन सिंह ने गर्दन पीछे मोड़ी।

"हम नहीं जानते कि हमारी गाड़ी में ब्राउन शुगर कैसे पहुंची।"

"कोई बात नहीं....।" मुस्कुराया बदन सिंह—"पुलिस थर्ड डिग्री इस्तेमाल करेगी तो सब याद आ जायेगा। यहां तक कि यह भी याद आ जायेगा कि तुम ब्राउन शुगर लाते कहां से हो।"

“तुम मुझे नहीं जानते इंस्पेक्टर।” ठाकरे बोला—“तुम्हारी तरह मैं भी कानून का मुहाफिज हूं।”

“अच्छा।” व्यंग से आश्चर्य जताया बदन सिंह ने।

“यस....इंस्पेक्टर सिकंदर ठाकरे हूं मैं—मुम्बई में कार्यरत हूं।”

सुनकर पहले तो चौंका बदन सिंह, फिर उसके होंठ पुनः फैल गये।

“अगर तुम इंस्पेक्टर ठाकरे हो तो फिर तो यह रीमा राठौर होनी चाहिये। क्योंकि रीमा राठौर के बारे में मैंने काफी कुछ सुन रखा है—और उनके दोस्त सिकंदर ठाकरे के बारे में भी।”

“तुम ठीक कह रहे हो—यह रीमा राठौर ही है।”

बदनसिंह ने चौंककर रीमा राठौर की तरफ देखा।

“तुम रीमा राठौर हो?” वह उसकी तरफ उंगली करते हुए बोला।

“यस....आई एम रीमा राठौर।”

“एक्टिंग तो बढ़िया कर लेती हो।” वह आंखें फैलाते हुए बोला—“मैं जानता हूं कि तुम बेहद खूबसूरत हो। लेकिन खूबसूरत हो जाने से तुम रीमा राठौर नहीं बन जाओगी।”

“मगर....!”

“खबरदार, जो अब खुद को रीमा राठौर कहा तो।” गुर्रा उठा बदन सिंह —“अरी....तू तो उसके पैरों की धूल के भी बराबर नहीं। कहां वो—और कहां तू। और फिर अगर तू रीमा राठौर ही है तो यह जनाब सिकंदर ठाकरे तेरे पतिदेव कैसे हो गये। खुद को पति-पत्नी बताया था तुमने मुझे।”

“वो इसलिये बताया था कि हम यह समझे थे कि तुम पुलिस के नहीं, बाऊजी के आदमी हो। इसलिये अपनी पहचान छुपाने के लिये हमने झूठ बोला था।”

“फिर भी अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं तो!” ठाकरे बोला—“तुम मेरा आई.कार्ड देख सकते हो।”

कहकर सिकंदर ठाकरे ने अपना आई.कार्ड निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

बदन सिंह ने आई.कार्ड लेकर उसे देखा तो बुरी तरह से चौंक उठा।

उसके चेहरे पर एकाएक ही बदलाव नजर आने लगा।

“अ....आप....!”

“इंस्पेक्टर सिकंदर ठाकरे....और यह रीमा राठौर ही है।”

बदन सिंह ने थूक सटकते हुए रीमा राठौर की तरफ देखा।

“स....सॉरी मैम....।”

“इट्स ओ.के.।” रीमा राठौर मुस्कुराई।

“म....मगर मैं अपने फर्ज से मजबूर हूं।” बदन सिंह बोला—“ब्राउन शुगर आपकी गाड़ी से बरामद हुई है और यह आप ही के शब्द हैं कि कानून रिश्ते-नाते कुछ नहीं देखता।”

“तुम ठीक कह रहे हो बदन सिंह।” रीमा राठौर मुस्कुराई—“तुम ठीक रास्ते पर चल रहे हो।”

“लेकिन आपकी गाड़ी में ब्राउन शुगर पहुंच कैसे गई?”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

“मुझे तो यह काम पार्किंग के ठेकेदार का लगता है।” वह बोली—“अवश्य ही उसी ने हमारे पार्किंग से निकलते ही हमारी गाड़ी में ब्राउन शुगर प्लांट कर दी थी।”

“इसका मतलब तो यही निकलता है कि वह बाऊजी का गुलाम है।” सिकंदर ठाकरे बोल पड़ा।

“हां....और बाऊजी को हमारे यहां आने की खबर भी लग गई है। तभी तो उसने हमें फंसाने का बंदोबस्त पहले से ही कर लिया था।”

रीमा राठौर सोचपूर्ण अंदाज में बोली।

“इंस्पेक्टर।”

सिकंदर ठाकरे बोला।

“यस सर!” तत्परता से बोला बदन सिंह।

“यह बाऊजी कौन है?”

गहरी सांस छोड़ी बदन सिंह ने।

“बस यूं समझ लीजिये कि बाऊजी ही इस शहर का मालिक है।” वह बोला—“लेकिन आजकल उसकी हालत ठीक नहीं चल रही—आधा पागल हो गया है वो।”

“आधा पागल।” रीमा राठौर हैरानी से बोली।

“जी हां—और वो भी आपकी वजह से। आपने जब से बाऊजी के दोस्त बद्रीनाथ को मारा—उसी रोज से उस पर पागलपन छा गया। कभी वह ठीक हो जाता है तो कभी पागल।”

“ओह!”

“और डॉक्टरों ने उसका एक ही इलाज बताया है।”

“क्या?”

“उसके हाथों आपकी मौत। आपको मारकर ही वह ठीक हो सकता है।”

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

“कुत्ते की जब मौत आती है तो वह भेड़-बकरियों पर हमले करने शुरू कर देता है—ताकि दुनिया यही समझे कि वह बहुत खतरनाक है। मगर कुत्ते को यह नहीं पता होता कि चंद भेड़ बकरियां मारकर शेर नहीं बन गया। रहता है वह भी कुत्ता ही—और उसकी मौत भी कुत्ते की ही होगी।”

“आप उसे बहुत कम करके आंक रही हैं रीमा राठौर जी। बद्रीनाथ की तरह वह सिर्फ ताकत से काम नहीं लेता—बल्कि उसके पास दिमाग भी है।”

“एक पागल के पास क्या दिमाग होगा।”

“एक नहीं कई दिमाग हैं उसके पास।”

“ओह! तो तुम उसके गुलामों की बात कर रहे हो।”

ठीक तभी जिप्सी रुकी।

रीमा राठौर ने निगाहें उसके चेहरे से हटाईं और इधर-उधर देखा।

काफी बड़ा ग्राऊंड था वह—और सामने एक काफी लम्बी-चौड़ी किलेनुमा कोठी थी।

“ऐ....हथकड़ी खोलो।” बदनसिंह ने सिपाही को हुक्म दिया और स्वयं नीचे उतर आया।

शीघ्र ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे पूरी तरह से आजाद थे।

“आईये....।” बदन सिंह बड़े इज्जत भरे स्वर में बोला।

दोनों उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

रीमा राठौर हैरान थी कोठी देखकर।

किसी एस.पी. का इतना आलीशान और लम्बा-चौड़ा ऑफिस उसने आज तक नहीं देखा था।

“आपको हर वक्त चौकन्ना रहने की जरूरत पड़ेगी रीमा राठौर जी।” उनके आगे-आगे चलते हुए बोला बदन सिंह—“जहां भी आप चूकीं—समझ लीजिये कि आपकी शिकस्त....।” वह कोठी में प्रवेश करते हुए बोला। पीछे-पीछे रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे भी प्रवेश कर गये।

आगे हॉल था—जिसमें आगे की तरफ बढ़ते हुए बदन सिंह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कह रहा था—

“बस यूं समझ लीजिये रीमा राठौर जी कि पूरे रामपुर में उसके गुलाम फैले हुए हैं।”

“और पुलिस....वो कुछ नहीं कर रही उसके खिलाफ।” रीमा राठौर बोली।

“वो भी तो उसके गुलामों में है।”

“मगर तुम तो....।”

ठीक तभी रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे के ऊपर भारी-भरकम जाल आ गिरा।

दोनों बुरी तरह से हड़बड़ा उठे। और जब तक वे हड़बड़ाहट से निकलते—वे जाल में बुरी तरह से जकड़े जा चुके थे।

दोनों एक-दूसरे से इस तरह सटे हुए थे कि अपने हाथ-पैर कुछ भी नहीं हिला सकते थे।

बदन सिंह मुड़ा और उनके करीब आ खड़ा हुआ।

“पुलिस में बाऊजी के गुलामों में से एक गुलाम मैं भी हूं।”

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे आंखें फाड़े उसे देखने लगे।

बदन सिंह के होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

“देखा....इसे कहते हैं सेर को सवा सेर।” वह जहरीले अंदाज में हंसा—“तुम्हारी फुर्ती और ताकत का पता था हमें—अगर तुम्हें सीधे पकड़ने की कोशिश की जाती तो पूरी फौज बुलानी पड़ती और तब भी तुम मरकर ही हाथ आतीं—जबकि बाऊजी को तू जिंदा चाहिये। क्योंकि तुझे मारकर ही वो ठीक हो सकते हैं। इसलिये एस.पी. साहब ने मुझे तुझे पकड़ने के लिये यह चाल बताई।”

“ओह!”

“तूने ठीक कहा था—तुम्हारी कार में ठेकेदार ने ही ब्राउन शुगर रखी थी।” सीना चौड़ा करते हुए बोला बदन सिंह—“हर कार का ताला खोलने में महारत हासिल है उसे। जैसे ही तुम बाहर निकले—उसने फटाक से तुम्हारी कार में ब्राउन शुगर डाल दी—और मुझे तुम्हें पकड़ने का मौका मिल गया। तुम्हें किसी तरह का संदेह न हो—इसलिये मैंने तुझे इज्जत भरे शब्दों से बनाया। और तुम दोनों बेवकूफ बने अब मेरे जाल में फंसे हुए हो।”

“तू तो बहुत ही गिरा हुआ कमीना निकला रे।” सिकंदर ठाकरे नफरत भरे स्वर में बोला—“पैसा कानून से लेता है और पूंछ उस कुत्ते बाऊजी के सामने हिलाता है।”

“मैं ही क्या, यहां का हर पुलसिया बाऊजी का ही कुत्ता है—और समझदार कुत्ता वही होता है जो शेर की सेवा करे और उसकी छत्रछाया में रहे। इसी बहाने उसे हड्डी के कुछ टुकड़े भी मिल जाते हैं और संरक्षण भी। और जो कुत्ता शेर को आंख

दिखाता है—उस पर भौंकता है—उसका हाल बड़ा ही खतरनाक होता है। यानि वो समझदार नहीं—बल्कि बेवकूफ कुत्ता होता है।"

"तो फिर पुलिस की नौकरी ही क्यों की? क्यों खाई कसम कानून की रक्षा करने की?" फुंफकारा सिकंदर ठाकरे—"सीधे बाऊजी के पास लग जाता।"

"तो फिर बाऊजी की ताकत कैसे बढ़ती।" कुटिलता से हंसा बदन सिंह।

"तू तो....।"

"बस....बहुत भौंक लिया तूने।" तभी फुंफकार उठा बदन सिंह—"बंद कर अपनी चोंच—और रामनाम जपना शुरू कर दे—क्योंकि इस रीमा राठौर नाम की कुतिया के साथ-साथ अब तू भी सीधा ऊपर जायेगा।"

इधर उसकी बात खत्म हुई—उधर पांच-छह हट्टे-कट्टे व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुए।

"लो....आ गये तुम्हारी डोली उठाने वाले।" हंसा बदन सिंह और उनसे बोला—"यह रही बाऊजी की शिकार—और साथ में सिकंदर ठाकरे नाम का बोनस। मास्टर से कहना कि एस.पी. साहब की तरफ से तोहफा है।"

"मास्टर अन्दर ही हैं।" एक बोला—"तुम्हारा काम खत्म हुआ—तुम जाओ।"

बदन सिंह ने एक जहरीली मुस्कान दोनों पर डाली और उनके करीब से होते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उनकी बातों से रीमा राठौर समझ गई थी कि वह जगह एस.पी. का ऑफिस नहीं—बल्कि बाऊजी का अड्डा है। तभी तो गुण्डा कह रहा था कि मास्टर अन्दर है।

बोलने वाले गुण्डे ने रीमा राठौर को घूरा—और फिर अपने साथियों से बोला—

"इसका ध्यान रखो—मैं मास्टर को खबर करता हूं।"

कहकर वह भीतर की तरफ बढ़ गया।

बाकी गुण्डे जाल के चारों तरफ इस तरह खड़े हो गये मानो उन्हें डर हो कि वो जाल तोड़कर भाग न जायें।

इधर रीमा राठौर का दिमाग तेजी से काम कर रहा था।

दुश्मन के जाल में बुरी तरह से जकड़ी हुई थी वह—और चाल में भी फंस गई थी।

वह जानती थी कि अगर वह बाऊजी के सामने पहुंच गई तो फिर उसका बचना नामुमकिन हो जायेगा और जिस तरह से गुण्डे उन्हें घेरे हुए थे—उससे साफ जाहिर हो रहा था कि बाऊजी के गुलाम जरा भी रिस्क नहीं लेना चाहते।

काफी सोचने के पश्चात् भी जब उसे कुछ नहीं सूझा तो उसने खुद को वक्त की धाराओं के साथ छोड़ दिया।

"जो होगा देख लेंगे।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाई और आने वाले वक्त का इंतजार करने लगी।

शीघ्र ही जोरावर ने हॉल में कदम रखा।

जिस तरह से वह चल रहा था—उसी से ही रीमा राठौर समझ गई कि वह बाऊजी का बहुत ही खासमखास है।

वह जाल के करीब आया और रीमा राठौर को गहरी निगाहों से घूरते हुए गुर्राया—

"तो तू है रीमा राठौर।"

रीमा राठौर बोली कुछ नहीं....बस उसे देखती रही।

"बहुत तड़पा लिया तूने हमारे बाऊजी को।" वह गुर्राया—"अब तड़पने की बारी तेरी है। तेरे तड़पने से ही बाऊजी का पागलपन कम होगा—और तेरी मौत से उन्हें आराम हासिल होगा।"

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

"चिंता मत कर।" वह बोली—"मैं आ गई हूं—अब तेरे बाऊजी का पागलपन क्या—उसका बोलना भी बन्द कर दूंगी मैं। ऐसी आंखें बन्द करेगा वो कि अगला जन्म लेने के बाद ही आंख खुलेगी उसकी।"

"ठाक....?"

एक भरपूर ठोकर लगी रीमा राठौर के कूल्हों पर।

“हरामजादी!” फुंफकारा जोरावर—“बाऊजी को खत्म करने की बात करती है तू। अगर तू बाऊजी की दवा न होती तो अभी तेरी जुबान काटकर रख देता।”

“बांधकर खुद को बहुत बड़ा बहादुर समझता है कुत्ते।” रीमा राठौर भी फुंफकारी—“अगर खुद को इतना ही पहलवान समझता है तो एक बार हमें आजाद करके देख—तुम सभी की मां की....” रीमा राठौर के होंठों से गाली निकली—“तो रीमा राठौर नाम नहीं मेरा।”

“मैं जानता हूं तू कितनी बड़ी ताकतवर है। मगर चिंता मत कर—बाऊजी के सामने तू पूरी तरह से आजाद होगी—तू बाऊजी पर अपनी ताकत आजमाना—फिर देखूंगा तू कितने पानी में है। उठाओ इन्हें और गाड़ी में डाल दो।” उसने अपने गुण्डों को आदेश दिया।

तुरंत उन्हें घेरे खड़े गुण्डों ने उन्हें जाल समेत उठाया और बाहर की तरफ बढ़े।

बाहर एक बन्द बॉडी का ट्रक खड़ा था।

गुण्डों ने उन्हें बेदर्दी से ट्रक के भीतर फैंका और फिर दरवाजा बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया।

¶¶

“यह तो बुरे फंसे रीमा।” सिकंदर ठाकरे धीमे स्वर में बोला—“कमर सीधी क्या करनी थी—लेट भी नहीं पाये हम और पकड़े गये।”

दोनों के जिस्म धीरे-धीरे हिल रहे थे—जो यह जाहिर कर रहे थे कि ट्रक चल रहा है।

“वैसे इन हरामियों ने एक फायदा जरूर करा दिया है मुझे।” सिकंदर ठाकरे बोला।

“क्या?”

“आज तक मैं तुम्हारे साथ इस तरह से सटकर नहीं बैठा था। जिन्दगी के आखिरी लम्हों में ही सही—मौका तो मिला।”

“मौका मिला है तो मौके का फायदा उठा जाओ।”

रीमा राठौर हंसी।

“यही तो दिक्कत है—। हरामजादों ने जकड़ ही ऐसा रखा है कि हिल भी नहीं पा रहा—और तुम फायदा उठाने की बात कर रही हो।”

“लानत है तुम पर भी—इतना बढ़िया मौका मिला है—उसका भी फायदा नहीं उठा सकते। अरे मर्द बनो—जोर लगाकर तोड़ डालो इस जाल को—फाड़ डालो मेरे कपड़े....।”

“कपड़े तो फाड़ दूं—मगर यह जाल टूटे तब न। नाइलोन का बना है। हाथी भी खुद को आजाद न करा पाये।”

“फिर तो तुम्हें कोई फायदा न हुआ।”

“हां....फिलहाल तो ऐसा ही लगता है।”

“ए....ऐ मेरे कंधे पर यह क्या चुभ रहा है।” रीमा राठौर ने कनखियों से अपने कंधे की तरफ देखा—फिर गुर्राई—

“मुंह पीछे करो अपना—तुम्हारी मूंछें कांटों की तरह मेरे नाजुक कंधे पर चुभ रही हैं।”

“ऐ....!” गुर्राया सिकंदर ठाकरे—“खबरदार जो मेरी मूंछों के बारे में गलत शब्द बोले तो।”

“मेरे कंधे का मांस छिल गया है तुम्हारी मूंछों की रगड़ से—और तुम कहते हो कि मैं कुछ न कहूं। कितनी बार कहा है कटवा डालो इन्हें—मगर तुम हो कि....।”

“अगर तुम्हें मेरी मूंछों से इतनी ही चिढ़ हो रही है तो तुम ही अपना कंधा पीछे कर लो। मैं तो खुद को हिला भी नहीं पा रहा।”

“ठीक है—मैं ही अपना कंधा पीछे कर लेती हूं।”

कहा रीमा राठौर ने।

और अगले ही पल बुरी तरह से चौंक उठा सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर उससे थोड़ा पीछे हट गई थी।

“यह....सब....!”

“शीSSSS।” रीमा राठौर ने उसे बोलने नहीं दिया। और बात जारी रखने का इशारा किया।

मगर सिकंदर ठाकरे तो जैसे बात करना ही भूल बैठा था।

उसकी निगाहें रीमा राठौर के दायें हाथ पर टिकी हुई थीं जिसकी उंगलियों में स्टील का पतला-सा ब्लेड था और वो तेजी से जाल की डोरी पर चल रहा था।

जाल के दो बंधन कट चुके थे—और अब ब्लेड तीसरे बंधन को काट रहा था।

सिकंदर ठाकरे हैरान।

उसकी समझ में नहीं आया कि रीमा राठौर की उंगलियों में ब्लेड आया तो कहां से आया।

उसके देखते-ही-देखते तीसरा बंधन भी टूट गया।

रीमा राठौर उससे थोड़ा और पीछे हटी।

अब उसका हाथ कुछ हद तक आजाद हो गया था—सो चौथा बंधन कटने में पहले से भी आधा वक्त लगा।

अब वह अपना हाथ ही नहीं—बांह भी जाल से बाहर निकाल सकती थी—और उसने किया भी यही।

ब्लेड को छोड़ उसने उस कटे हुए जाल में से बांह बाहर निकाली और फिर डोरी का बंधन खोलने लगी जिसकी वजह से दोनों जाल में जकड़े हुए थे।

जैसे ही बंधन खुला—दोनों आजाद हो गये।

खुद को जाल से निकालकर रीमा राठौर ने ब्लेड उठाया और उसे अपने सैंडिल की हील खोलकर उसमें रखकर हील पुनः बन्द कर दी।

अब सिकंदर ठाकरे की समझ में आ गया था कि उसने ब्लेड कहां से प्राप्त किया था—लेकिन उसकी हील में और क्या-क्या है—यह वह नहीं देख पाया था। क्योंकि हील का रुख उसकी आंखों के सामने नहीं था।

और जब रीमा राठौर ने गर्दन उसकी तरफ घुमाई तो उसने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा।

वह यही पूछ रहा था कि अब क्या करना है।

सिर्फ जाल काटने से क्या होना था। एक तरह से वे अभी भी कैद थे।

लोहे के बंद कमरे में थे वे और बाहर से ताला लगा हुआ था।

अभी रीमा राठौर भी इस उलझन से निकलने का कोई रास्ता नहीं खोज पाई थी कि तभी—

'बड़ाम....!'

एक तेज धमाका हुआ उनके नीचे और उसी के साथ ही ट्रक लहराया।

दोनों अपना बैलेंस नहीं रख पाये और बॉडी से टकराकर वहीं गिर पड़े।

"लो....!" रीमा राठौर मुस्कुराई—"सुन ली ऊपर वाले ने।"

धमाके का मतलब तो समझ गया था सिकंदर ठाकरे कि टायर बर्स्ट हुआ है। मगर रास्ता कहां से मिला—यह समझ में नहीं आया उसे।

"उधर देखो।" रीमा राठौर ने दाईं तरफ इशारा किया।

सिकंदर ठाकरे ने उधर देखा तो सब समझ गया।

स्टैपनी पड़ी थी वहां।

यानि स्टैपनी बदलने के लिये अब उन्हें दरवाजा खोलना ही था। और वही मौका था उनके आजाद होने का।

तभी ट्रक रुका।

रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे को तैयार रहने का इशारा किया और खुद भी पीछे वाले दरवाजे के करीब आ गई।

तभी बाहर से ताला खुलने की आवाज आई।

और फिर—

जैसे ही दरवाजा खुला—रीमा राठौर ने लात चला दी।

दरवाजा खोलने वाला उछलकर पीछे जा गिरा।

सैंडल की नोंक पीछे उसके माथे पर पड़ी थी।

उसके गिरते ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे ने बाहर छलांग लगा दी।

इधर नीचे गिरते ही गुण्डा चीखा—

“अरे पकड़ो....दोनों बाहर आ गये हैं।”

उसी वक्त ट्रक के अगले हिस्से से भागते कदमों की आवाजें आईं।

हालांकि रीमा राठौर के लिये पांच-सात से निपटना कोई मुश्किल काम नहीं था। अगर उनके पास रिवाल्वरें भी होतीं तो भी उसे फर्क नहीं पड़ता।

लेकिन सिकंदर ठाकरे के लिये वह कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती थी।

सिकंदर ठाकरे संग आर्ट से बेखबर था—ऐसे में उसे गोली लग सकती थी—इसलिये वह फौरन चीखी—

“भागो ठाकरे!”

कहने के साथ ही उसने एक तरफ छलांग लगा दी।

सिकंदर ठाकरे भी उसके पीछे लपका।

सामने पतली गली नजर आई रीमा राठौर को। उसने उसी तरफ दौड़ लगा दी।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे। और उनके पीछे वे पांचों गुण्डे पूरी शक्ति से भाग रहे थे।

गली के अन्त में पहुंच कर रीमा राठौर ने भागते हुए ही गर्दन पीछे मोड़ी।

सिकंदर ठाकरे उसके पीछे-पीछे ही था—जबकि गुण्डे अभी आधी गली भी पार नहीं कर पाये थे।

उनके हाथ खाली थे—हां, एक के हाथ में ट्रक के टायर खोलने का पाना जरूर था।

रीमा राठौर ने गर्दन सीधी की और गली से बाहर आकर बाईं तरफ मुड़ गई।

जब तक गुण्डे बाहर निकलते, वे दोनों एक अन्य गली में प्रवेश कर चुके थे।

पांचों गुण्डे गली के सिरे पर खड़े होकर तलाश भरी निगाहों से उन्हें ढूंढ रहे थे। उनकी रंगत पीली पड़ी हुई थी और चेहरे खौफजदा हो रहे थे।

उन्हें मालूम था कि उनके खाली हाथ पहुंचने की सजा होगी मौत।

मगर वो दोनों तो हवा हो चुके थे।

¶¶

"तू कहां गया था रे जोरावर?"

जोरावर को देखते ही बोला अयोध्या प्रसाद।

उस वक्त अयोध्या प्रसाद फर्श पर बैठा था।

मक्खियां उसके गंदे कपड़े पर भिनभिना रही थीं—मगर उसे उनकी चिंता नहीं थी।

"आपकी दुश्मन रीमा राठौर को लेने गया था बाऊजी।" जोरावर बड़े ही अदब से बोला।

अयोध्या प्रसाद का चेहरा खिल उठा। तुरंत खड़ा हो गया वह और उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"वो आ गई?"

"हां बाऊजी—कालिया उसे ट्रक में लादकर ला रहा है।"

अयोध्या प्रसाद ताली पीटने लगा।

"वाह जोरावर....खुश कर दिया तूने।" उसके मुंह से निकली थूक की फुहार जोरावर के चेहरे पर पड़ी—"अब मैं अपने यार की मौत का बदला लूंगा।"

"हां बाऊजी—मैं भी चाहता हूं कि आप अपने हाथों से खत्म करें उसे।" जोरावर बोला।

"हां....मैं अपने हाथों से मारूंगा उस हरामन को।"

“मगर बाऊजी.....।”

“क्या?”

“वो बहुत ही खूबसूरत है। ऐसी कि हाथ लगाओ तो मैली हो जाये।”

अयोध्या प्रसाद ने उसे घूरकर देखा।

“वो खूबसूरत है तो क्या हुआ—मेरे यार को मारा है उसने—मैं उसे....।”

“वो बात नहीं बाऊजी....।”

“तो और क्या बात है?”

“आप नहा धो लें—कपड़े बदल लें—फिर देखियेगा उसे मारने में आपको कितना मजा आयेगा।”

“ही....ही....ही....तू ठीक कहता है....मैं बढ़िया कपड़े पहनकर नहा-धोकर उसको मारूंगा....। बुला किसी को....जो मुझे नहलाये।”

“जी....मैं अभी भेजता हूं।”

कहकर जोरावर ने उसकी तरफ पीठ कर ली।

मन-ही-मन शुक्र मना रहा था वह कि अयोध्या प्रसाद ने कपड़े बदलने के लिये और नहाने के लिये हां कर दी थी—वर्ना पहले जब भी उसने ऐसा कहा उसे फटकार ही मिली थी—और यह कहा, गया था कि उसके कपड़े ठीक हैं। कमरे से बाहर आकर उसने दो युवतियों को अयोध्या प्रसाद को नहलाने के लिये भेज दिया।

तभी उसके मोबाईल का म्यूजिक बजा।

उसने जेब से मोबाईल निकाला और उसकी स्क्रीन पर निगाह मारी।

कालिया का नम्बर था।

‘बड़ी जल्दी आ गया।’ वह मन-ही-मन बड़बड़ाया और फोन ऑन करके कान से लगाया—“हां, बोल कालिया। ले आया दोनों को?”

“व....वो भाग गये मास्टर।”

दूसरी तरफ से कांपती आवाज आई।

जोरावर के पैरों तले से धरती खिसक गई।

सिर पर जैसे आसमान गिर पड़ा।

“क्या बक रहा है हरामजादे!” वह फुंफकारा—“कैसे भाग गई वो?”

दूसरी तरफ से बताया गया।

जोरावर को काटो तो खून नहीं।

बोला कुछ नहीं वह—बस फोन जेब में वापस रख मरे कदमों से अपने कमरे की तरफ बढ़ने लगा।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रीमा राठौर भाग कैसे गई?

वो जाल से आजाद कैसे हो गई?

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे।

“क्या हुआ जोरावर अंकल?”

तभी कबीर की आवाज उसके कानों में पड़ी, जो कि उसी के कमरे में सोफे पर बैठा था।

“सब गुड़ गोबर हो गया छोटे बाऊजी.....सब गुड़ गोबर हो गया।” जोरावर की आवाज भर्रा गई।

“हुआ क्या?”

जोरावर ने उसे रीमा राठौर के फरार होने की बात बताई—फिर बोला—

“अब जब बाऊजी को पता चलेगा कि वह भाग गई तो उनका पागलपन और भी बढ़ जायेगा। अ....अब क्या करूं मैं—कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।”

“लेकिन मेरी खोपड़ी में एक रास्ता आ गया है।”

कबीर ने अपनी कनपटी ठकठकाई।

“क्या?”

“क्यों न हम किसी और लड़की को बाऊजी के सामने खड़ी कर दें और बाऊजी से कहें कि वही रीमा राठौर है। बाऊजी ने रीमा राठौर को देखा तो है नहीं—सो वे उसे ही रीमा राठौर समझकर खत्म कर देंगे।”

“फैंटेस्टिक....! यह आपने ठीक कहा छोटे बाऊजी।”

जोरावर का चेहरा एकदम से खिल उठा।

“तो फिर फौरन किसी खूबसूरत लड़की का बंदोबस्त कीजिये—ताकि बाऊजी को जरा भी संदेह न हो।”

जोरावर ने सिर हिलाया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

“उफ....बाल-बाल बचे।” सिकंदर ठाकरे हांफते हुए बोला—“अगर हम उस बाऊजी के अड्डे पर पहुंच जाते तो हमारी मौत निश्चित थी।”

“अहसान मानो मेरा जो तुम्हें बचा लिया।” रीमा राठौर मुस्कुराई।

“खाक अहसान मानूं....अच्छा-भला तुमसे सटकर लगा हुआ था—खूब मजा आ रहा था—मगर तुमने आजाद होकर सब गुड़ गोबर कर दिया।”

रीमा राठौर हंसी।

दोनों उस वक्त एक अंधेरी गली में बैठे अपनी सांसें दुरुस्त कर रहे थे।

“अब क्या किया जाये?” सिकंदर ठाकरे असल बात पर आते हुए बोला—“बाऊजी के हत्थे चढ़ने से तो हम बच गये। मगर इसका मतलब यह नहीं कि हाथ से निकल जाने के बाद वह तुम्हें भूल जायेगा। और वो मास्टर—वो तो मुझे बहुत ही खतरनाक नजर आ रहा था।”

“वो तो मैं भी जानती हूं—हमारी तलाश में वो जमीन-आसमान एक कर देगा।”

“और हम उससे बचते फिरते रहेंगे। करेंगे कुछ नहीं।”

“करेंगे कुछ नहीं—तो क्या धनिया लेने आये है हम यहां?”

“कोई रास्ता है तुम्हारे पास आगे बढ़ने का?”

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—बस बाहर की तरफ देखा।

तभी दो सिपाही हाथों में डण्डे लिये गली के आगे से निकले।

“वो रहा रास्ता।” वह धीमे स्वर में बोली और सिपाहियों की तरफ इशारा किया।

“यह सिपाही....यह क्या रास्ता देंगे?”

रीमा राठौर ने जवाब नहीं दिया—बस तेजी से उठी और उधर लपकी।

उसके गली से निकलने तक सिपाही कुछ कदम आगे बढ़ चुके थे।

रीमा राठौर बिल्ली की तरह दबे पांव उनकी तरफ लपकी और उनके सिरों पर जा पहुंची।

जब तक उन्हें अपने पीछे किसी के होने का अहसास होता—रीमा राठौर का जबरदस्त घूंसा एक की कनपटी पर पड़ा।

वह सिपाही वहीं गिर पड़ा।

अपने साथी को गिरते देख दूसरा सिपाही हड़बड़ा उठा।

ठीक तभी रीमा राठौर ने उसके हाथ से डण्डा छीनकर उसे दबोचा और खींचते हुए गली में ले आई।

“बाहर दूसरा बेहोश पड़ा है—उसे ले आओ।” वह ठाकरे से बोली।

सिकंदर ठाकरे की समझ में कुछ नहीं आया कि वह करना क्या चाहती है। मगर वह जो कर रही थी—उसे करना ही था—सो वह बाहर निकल गया।

इधर रीमा राठौर ने सिपाही की गर्दन छोड़ी और गुर्राई—

“मैं चाहती तो तेरे साथी को बेहोश करने की बजाये खत्म भी कर सकती थी। मगर मुझे व्यर्थ का खून-खराबा पसन्द नहीं। इसलिये मुझे मजबूर न करना—और जो कुछ भी मैं पूछूं उसका ठीक-ठीक जवाब देना।”

“क....कौन हो तुम?”

“तेरी मां....।”

हड़बड़ा उठा सिपाही।

“बदन सिंह के थाने में काम करता है तू?” रीमा राठौर गुर्राई।

“ह....हां....!” फंसे स्वर में बोला सिपाही।

“नाम क्या है तेरा?”

“स....सोमपाल....।”

“बदन सिंह कहां होगा इस वक्त?”

सोमपाल के चेहरे पर कड़वाहट फैल गई—जिसे रीमा राठौर ने नहीं देखा।

“अपने फ्लैट में नशे में धुत्त किसी लड़की का मानमर्दन कर रहा होगा।”

उसकी आवाज में छुपी कड़वाहट को फौरन भांप गई रीमा राठौर।

“क्या मतलब?”

“आज उसने रीमा राठौर....” बुरी तरह से उछल पड़ा सोमपाल—“क....कहीं तुम....आप रीमा राठौर तो नहीं....।”

“यह मेरे सवाल का जवाब नहीं।”

“म....मगर सवाल का जवाब चाहिये मुझे।”

“अगर मैं हां कहूं तो?”

“तो मैं समझूंगा कि ऊपर वाला है।” सोमपाल की आवाज में खुशी साफ महसूस की जा सकती थी—“थाने में जब मुझे आपके पकड़े जाने का पता चला तो मेरा दिल वहीं टूट गया। सच पूछिये तो मैं ऊपर वाले से यही दुआ करता था कि आप बाऊजी के हत्थे न चढ़ें—और वह पूरा पागल हो जाये। लेकिन जब मुझे आपके पकड़े जाने का पता चला तो भगवान पर से मेरा भरोसा ही उठ गया। मगर अब....अब मेरा भरोसा फिर से लौट आया है।”

“बोल लिया?” उसकी बात पर कोई प्रतिक्रिया न करते हुए बोली रीमा राठौर।

“मैं आपके रूखेपन का कारण समझ सकता हूं रीमा राठौर जी। आपको धोखा देकर फंसाया गया था और इसमें कानून के मुहाफिजों का ही हाथ था। लेकिन यकीन मानिये.....मैं उनमें से नहीं हूं। ऐसी बात नहीं कि मैं रिश्वत नहीं लेता—मुझे वो सब काम करने पड़ते हैं जिनका ऊपर से हुक्म होता है। लेकिन यकीन मानिये.....मैंने दिल से कभी कोई गलत काम नहीं किया। मुझे नहीं पता कि मेरे जैसे थाने में और कितने हैं। मुझे तो बस इतना पता है कि सिर्फ मैं ही ठीक हूं और मैं अकेला सभी से नहीं लड़ सकता, इसीलिये मन मारकर मुझे गलत काम करने पड़ते हैं। मैं आपसे यह नहीं पूछूंगा कि आप आजाद कैसे हुईं। मुझे तो सिर्फ आपकी आजादी से मतलब था....अब आप खुलकर पूछें—मैं आपको जितना भी जानता हूं सब बताने को तैयार हूं।”

“बदन सिंह के बारे में बता रहे थे तुम?”

“आपको उनके हवाले करके बहुत बड़ा काम किया है बदन सिंह ने—और उस काम के इनाम के तौर पर उसे नकदी के साथ-साथ लड़की भी मिली होनी चाहिये।”

“यानि इस वक्त वह जश्न मना रहा है।”

“हां!”

“फ्लैट कहां है उसका?”

सोमपाल ने पता बताया।

“बाऊजी के बारे में बताओ।”

“क्या?”

“यही कि यह है कौन—और यह मास्टर कौन है?”

“बाऊजी का असली नाम अयोध्या प्रसाद है—और मास्टर उर्फ जोरावर उसका दाहिना हाथ है। लेकिन मैं उसके बारे में कुछ खास नहीं जानता—हां, बदन सिंह आपको बहुत कुछ बता सकता है। वह अयोध्या प्रसाद के लड़के का बहुत मुंहलगा है।”

“अयोध्या प्रसाद का लड़का भी है?”

“पूरा जवान है—कबीर है उसका नाम। उसके ऐशो आराम का बंदोबस्त अक्सर बदन सिंह ही करता है।”

रीमा राठौर ने उससे कुछेक सवाल और किये फिर बोली—

“थैंक्यू सोमपाल—तुमने मुझे बहुत कोआपरेट किया।”

“आपको जब भी मेरी जरूरत पड़े तो फौरन मेरे घर फोन कर दीजियेगा। मेरी बीवी को अपने बारे में बता देना—फिर मेरी बीवी मुझसे सम्पर्क कर लेगी।”

“तुम्हारा फोन नम्बर?”

सोमपाल ने बताया—फिर बोला—

“अब मुझे भी बेहोश कर दें—ताकि मैं सभी से यह कह सकूं कि मैंने बेहोश करने वाले को नहीं देखा—और हमारी जेबों से पैसे भी निकाल लेना—ताकि यह स्थापित हो जाये कि हमें लूटने के लिये ही हमें बेहोश किया गया था।”

रीमा राठौर ने वही किया।

कुछ ही देर बाद वह दोनों सिपाहियों की जेब खाली कर सिकंदर ठाकरे के साथ गली से बाहर निकल रही थी।

शीघ्र ही दोनों एक टैक्सी में बैठे बदन सिंह के फ्लैट की तरफ बढ़ रहे थे।

¶¶

डबल बैड पर बदन सिंह एक युवती के सामने बैठा था।

दोनों के बदन बिल्कुल निर्वस्त्र थे।

कपड़े का एक रेशा तक नहीं था उनके जिस्मों पर।

दोनों के बीच स्काच की बोतल पड़ी थी जो कि आधी से ज्यादा खाली हो चुकी थी और दो पैग पड़े थे।

एक बदन सिंह के आगे—एक युवती के आगे।

एक घण्टे से ऊपर हो गया था दोनों को आमने-सामने बैठे हुए।

करीब डेढ़ घण्टा पहले युवती एक ब्रीफकेस लेकर आई थी बदन सिंह के पास।

ब्रीफकेस और युवती दोनों ही बदन सिंह के बतौर इनाम जोरावर की तरफ से भेजी गई थी।

हालांकि बदन सिंह अपनी अय्याशी का बंदोबस्त खुद ही करता था। मगर चूंकि वो इनाम बाऊजी की तरफ से आया था—इसलिये उसने उसे सिर माथे लिया।

ब्रीफकेस में ढाई लाख थे जिसे उसने एक तरफ रख दिया था—और फिर बोतल निकालकर युवती के साथ बैड पर आ गया।

नशे से दोनों की आंखें बोझिल हो रही थीं।

इधर युवती की निगाहें निरंतर एक ही स्थान पर टिकी हुई थीं। और उसका दिल कर रहा था कि वह अभी उठे और अपने लक्ष्य पर हमला कर दे।

मगर वह ऐसा कर नहीं सकी।

बदन सिंह को खुश करने आई थी वह—ऐसे में पहल उसी की तरफ से होनी चाहिये थी।

बदन सिंह ने बड़े इत्मिनान से पैग तैयार किया और उसे उठाते हुए बोला—

"चलो....खाली करो अपना पैग।"

युवती ने भी पैग उठा लिया।

बदन सिंह ने पैग खाली किया और वापस बैड पर रखने की बजाये एक तरफ झुकते हुए उसे बैड से नीचे फर्श पर रख दिया।

"यह सारा सामान भी रखो।" वह बोला—"अब हम बाकी का नशा तुम्हारे हुस्न से हासिल करेंगे।"

युवती तो चाहती ही यही थी—सो तुरंत वह इस काम में जुट गई।

और कुछ देर बाद—

कालबैल की एक आवाज मात्र से उसका तना हुआ जिस्म एकदम से ढीला पड़ गया।

“इस वक्त कौन आ मरा....।”

मेन डोर के करीब आकर उसने सिटकनी गिराई और दरवाजा खोलते हुए बोला—

“कौन....।”

अगला लफ्ज नहीं बोल पाया वह।

‘ढिशुम....।’

उसके मुंह पर घूंसा पड़ा।

कराहता हुआ वह पीछे लड़खड़ाया।

सम्भलकर जैसे ही उसने दरवाजे की तरफ देखा—उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गईं—ऐसे जैसे दुनिया का आठवां अजूबा देख रहा हो वह।

सामने रीमा राठौर खड़ी थी और सिकंदर ठाकरे उसकी तरफ पीठ किये दरवाजा बन्द कर रहा था।

“त....तुम....?” वह हैरानी से बस इतना ही कह पाया।

“क्यों....हैरानी हो रही है हमें अपने सामने देखकर कि हमें तो अयोध्या प्रसाद के अड्डे पर होना चाहिये था।”

कहने के साथ ही रीमा राठौर ने टांग चला दी।

बदन सिंह पेट पकड़े वहीं घुटनों के बल बैठ गया।

“अन्दर जाओ ठाकरे।” रीमा राठौर गुर्राई—“देखो कौन है भीतर—मैं इस हरामी से निपटती हूं।”

कहने के साथ ही रीमा राठौर ने अपना घुटना बदन सिंह के माथे पर दे मारा।

चीखता हुआ बदन सिंह पीछे पलट गया।

सिकंदर ठाकरे उन दोनों के करीब से निकलते हुए सीधे बैडरूम की तरफ बढ़ गया।

रीमा राठौर ने अपना पैर बदन सिंह के सीने पर रखा और गुर्राई—“तू क्या समझता था बदन सिंह कि तेरी चाल में फंसकर हम भगवान को प्यारे हो गये। अरे उल्लू के पट्ठे—मारने वाले से बचाने वाला कहीं बड़ा होता है। तभी तो देख ले—तेरे सामने खड़ी हूं मैं।”

बदन सिंह के मुंह से बोल नहीं फूटा।

कुछ कहने को होता उसके पास—तभी कहता न।

“तुझे जो करना था कर लिया—अब मेरी बारी है। तेरी भेजी मौत से मैं तो बच निकली—अब देखती हूं तू मेरे हाथों से कैसे बचता है।”

कहकर रीमा राठौर ने उसके सीने से पैर हटाया और उसके कूल्हों पर ठोकर दे मारी।

‘ठाक....!’

बदन सिंह पुनः चीखा और पीछे को लुढ़का।

तभी भीतर से युवती के चीखने की आवाज आई और फिर चुप्पी छा गई।

हड़बड़ाते हुए बदन सिंह ने उधर देखा।

तभी रीमा राठौर छलांग मारकर उसके सीने पर सवार हो गई और उसकी गर्दन दबोच ली।

“अपने आखिरी वक्त में ऊपर वाले को याद कर ले बदन सिंह।” वह गुर्राई।

“नहीं रीमा....।” तभी दाईं तरफ से सिकंदर ठाकरे की आवाज आई—“खत्म नहीं करना इसे।”

रीमा राठौर का सुर्ख हो रहा चेहरा सिकंदर ठाकरे की तरफ घूमा।

“क्यों?” वह फुंफकारी—“क्यों न मारूं इसे? इस कुत्ते ने हमें धोखा दिया और....।”

“मैं मानता हूं यह अयोध्या प्रसाद का गुलाम है—लेकिन है तो एक इंस्पेक्टर।”

“नहीं, मैं इसे जिन्दा नहीं छोडूंगी।”

“यह क्या हो गया है तुम्हें। तुम तो कानून की इज्जत करती हो। फिर भी गुस्से से काम ले रही हो। मत भूलो कि यह भी मेरी तरह ही एक इंस्पेक्टर है। अगर मुझे मेरा ऑफिसर कोई हुक्म दे तो मुझे मानना ही पड़ता है—चाहे वह हुक्म गलत ही क्यों न हो।”

“मगर....!”

“पुलिस वाला जब वर्दी पहनकर कसम खाता है तो वह सच्चे दिल से कसम खाता है रीमा। लेकिन उसके ऊपर बैठे लोग उसे भ्रष्ट होने पर मजबूर कर देते हैं।”

रीमा राठौर ने बदन सिंह की गर्दन छोड़ दी और गुर्राई—

“अगर तू वाकई कानून की इज्जत करता है तो अयोध्या प्रसाद के बारे में बोल, उसके लड़के कबीर के बारे में बोल....। वर्ना मैं भूल जाऊंगी कि तू एक इंस्पेक्टर है।”

मरता क्या न करता।

सब कुछ बताना पड़ा उसे।

जो कुछ भी रीमा राठौर ने पूछा—वह सब कुछ बताता चला गया वह।

जब रीमा राठौर उससे सब कुछ जान चुकी तो उसके होंठों पर एक विषैली मुस्कान नाच उठी।

सिकंदर ठाकरे भी मुस्कुराने लगा।

दोनों को मुस्कुराते देख बुरी तरह से बौखला उठा बदन सिंह।

“त....तुम....मुस्कुरा रहे हो?” वह हड़बड़ाते हुए बोला।

“तू क्या समझता था—धोखा देना सिर्फ तुझे ही आता है।” रीमा कुटिलता से बोली—“मैं जानती थी कि अयोध्या प्रसाद की नेमतें तेरे भीतर इस कदर घर कर चुकी हैं कि तू उसके खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकता। इसलिये हमने यह चाल चली ताकि मौत के खौफ से तू सब कुछ बता दे। और तूने यह सोचकर बता दिया कि तू हमारे जाते ही अपने बाऊजी को संकेत कर देगा। मगर तू डाल-डाल—हम पात-पात—क्यों कैसी रही?”

“य....यह धोखा है।”

“वो तो मैं पहले ही कह चुकी हूं। अब मर।”

कहकर रीमा राठौर ने उसकी गर्दन दबोच ली।

“न....हीं....मुझे मत मारो।” बदन सिंह स्वयं को छुड़ाने की कोशिश करते हुए घिघियाया—“मैं अब कभी भी जुर्म का साथ नहीं दूंगा।”

“सॉरी....तू विश्वास करने लायक कुत्ता नहीं।”

कहते हुए रीमा राठौर ने अपने हाथों को विशेष झटका दिया।

‘कड़क्....’ की हल्की-सी आवाज के साथ बदन सिंह की गर्दन की हड्डी टूट गई।

रीमा राठौर के नीचे दबे हुए ही वह छटपटाने लगा और फिर थोड़ी देर बाद वह शान्त हो गया।

मर चुका था वह।

रीमा राठौर उसके ऊपर से उठी और सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

“लड़की अन्दर बेहोश पड़ी है।” तुरंत बोला सिकंदर ठाकरे—“और भीतर से यह हासिल हुई है।” कहते हुए उसने जेब से रिवॉल्वर निकालकर उसे दिखाई।

“सर्विस रिवॉल्वर है?”

“नहीं!”

“फिर ठीक है....आओ....।”

“कहां?”

“अब बाकी की रात तो आराम कर लें—और आराम करने की इससे बढ़िया जगह और कहां मिलेगी।”

“मगर बैड पर तो लड़की बेहोश पड़ी है।”

“तो उसे नीचे पटक देते हैं।”

कहकर वह सिकंदर ठाकरे के पहलू से होते हुए भीतर प्रवेश कर गई।

बैडरूम में प्रवेश करते ही रीमा राठौर की निगाहें बेहोश पड़ी निर्वस्त्र युवती पर पड़ीं तो वह मुस्कुरा पड़ी।

“ठाकरे!” वह पीछे देखे बिना बोली।

“क्या?”

“सवार हो जाओ इस पर....मूंछें भी नहीं कटवानी पड़ेंगी और....।”

“बकवास नहीं।” आगे बढ़ते हुए बोला ठाकरे—“चुपचाप सो जाओ।”

कहते हुए उसने युवती की बांह पकड़ी और उसे बैड पर से खींच कर नीचे गिरा दिया।

रीमा राठौर आगे बढ़ी और बैड पर लेट गई।

सिकंदर ठाकरे उसके बराबर लेट गया—मगर एक निश्चित दूरी बना रखी थी उसने दोनों के बीच में।

ऐसा था ठाकरे का करेक्टर।

इसी वजह से ही रीमा राठौर उसकी दिल से इज्जत करती थी।

¶¶

“तुझे पता है न तुझे क्या करना है?”

“ह....हां....!”

वह खूबसूरत युवती सहमें अंदाज में बोली।

“क्या नाम है तेरा?”

“र....रीमा राठौर....।”

“बद्री को किसने मारा?”

“म....मैं....ने....।”

“शाबाश!” मुस्कुराया जोरावर—“ऐसे ही अपनी बात पर टिकी रहना।”

युवती ने थूक सटकते हुए सिर हिला दिया।

“और एक बात कान खोलकर सुन ले।” सहसा ही जोरावर का लहजा क्रूर हो उठा—“अगर तूने कोई गड़बड़ कर दी तो तेरी मां—दोनों बहनें—भाई—कोई भी जिंदा नहीं बचेगा।”

“न....हीं....म....मैं नहीं डरूंगी।”

बुरी तरह से कांप रही थी युवती की आवाज।

“घबरा नहीं—कुछ नहीं होगा तुझे। बस बाऊजी तुझे थोड़ा बहुत मारेंगे फिर तुझे छोड़ देंगे।”

युवती ने थूक सटकते हुए सिर हिला दिया।

“अब चलें बाऊजी के पास?”

युवती ने पुनः सिर हिलाया।

जोरावर ने झपटकर उसके बालों को पकड़ लिया और उसे एक तरह से घसीटते हुए अयोध्या प्रसाद के कमरे की तरफ बढ़ा।

बाल खिंचने से युवती के होंठों से दर्द भरी कराहें फूटने लगी थीं।

अभी घण्टा डेढ़ घण्टा पहले वह अपने परिवार के बीच बैठी थी।

खाना खा चुकी थी वह और सोने की तैयारी कर रही थी—मगर तभी उस पर आफत आ पड़ी।

बाहर से दरवाजा खटखटाया गया—और जब उसने दरवाजा खोला तो जोरावर को देख उसके होश उड़ गये।

रामपुर के वासियों की तरह वह भी उसे जानती थी—ऐसे में उसका डर जाना स्वाभाविक ही था।

उसकी चीख क्या गूंजी—उसका परिवार बाहर आ गया।

मगर किसी का विरोध होने से पहले ही जोरावार के साथ आये गुण्डों ने उन्हें घेर लिया। और उन्हें अपने गुण्डों की कैद में छोड़ जोरावर उसे यहां ले आया था।

रास्ते में उसने युवती को सब समझा दिया था कि उसे क्या करना है—और यह भी लालच दे दिया था कि अगर बाऊजी ठीक हो गया तो उसे इनाम भी मिलेगा और इन्कार की सूरत में उसके पूरे परिवार को खत्म करने की धमकी भी दे डाली थी उसने।

इन्कार का सवाल ही नहीं था।

युवती को हां करनी ही पड़ी—और अब वह उसके बालों को पकड़े बाऊजी के कमरे की तरफ बढ़ रहा था।

अयोध्या प्रसाद उस वक्त फर्श पर बैठा था।

उसके कपड़े अब साफ-सुथरे थे—चेहरा भी धुला हुआ था। दाढ़ी भी बना रखी थी उसने।

मगर उसके चेहरे पर छाया पागलपन उसकी सारी सुन्दरता को नष्ट कर रहा था।

"लीजिये बाऊजी!" कहते हुए जोरावर ने युवती को उसकी तरफ धकेला और उसके बाल छोड़ दिये—"आपकी मुजरिम।"

युवती चीखते हुई आगे को लड़खड़ाई और अयोध्या प्रसाद के सामने मुंह के बल गिरी।

अयोध्या प्रसाद ने झपटकर उसके बालों को पकड़ा और उसका चेहरा अपने सामने करते हुए गुर्राया—

"तो तू है वो रीमा राठौर—जिसने मेरे यार को मारा।"

अयोध्या प्रसाद की आंखों में छाये पागलपन को देख युवती बुरी तरह से घबरा गई।

"म....मैं....।"

"हरामजादी....मेरे बद्री को मारा तूने—मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

कहने के साथ ही युवती के बाल पकड़े हुए ही वह खड़ा हुआ और उसके बालों को इतनी जोर से झटका दिया कि वह कई फीट उछलकर फर्श पर जा गिरी।

मगर बाल नहीं छूटे अयोध्या प्रसाद की मुट्ठी से—हां, बालों ने उसकी खोपड़ी का साथ जरूर छोड़ दिया था।

गिरते ही युवती के होंठों से पीड़ा भरी तेज चीख उबली।

मगर अयोध्या प्रसाद को जैसे उसकी चीख सुनाई ही नहीं दी।

वह बालों को छोड़ पुनः उसकी तरफ झपटा और उसे खड़ा करके अपना दायें हाथ का घूंसा उसके मुंह पर दे मारा।

अयोध्या प्रसाद की जबरदस्त ताकत का नमूना सामने था।

एक ही घूंसे में युवती का भेजा बाहर निकल आया और वह उछलकर पीछे गिरकर छटपटाने लगी।

“मेरे यार को मारा तूने—।”

वह फुंकारता हुआ उसकी तरफ झपटा और झुककर एक पैर उसके पेट पर रखा और उसकी छातियों को पकड़कर झटके से अपनी तरफ खींचा।

अगले ही पल युवती की छातियां उसके सीने से उखड़कर उसके हाथों में नजर आने लगीं।

खून से लथपथ हो गये उसके हाथ।

बिल्कुल राक्षस नजर आ रहा था।

उसने युवती की छातियों को फैंका और उसे और फाड़ने के उद्देश्य से पुनः झुका।

“बस....बस बाऊजी बस।” तभी जोरावर सिंह भर्राये स्वर में बोला—“यह मर चुकी है।”

उसका यह रूप देखकर खुद जोरावर भी दहल उठा था।

झुके-झुके ही अयोध्या प्रसाद ने उसकी तरफ गर्दन मोड़ी और खा जाने वाली निगाहों से उसे देखने लगा।

“र....रीमा राठौर मर चुकी है बाऊजी।” जोरावर पुनः बोला।

अयोध्या प्रसाद सीधा हुआ और युवती की लाश से पैर हटाकर उसे घूरने लगा।

कुछ देर तक वह उसे यूं ही घूरता रहा, फिर गुर्राया—

“ले जाओ इस हरामन की लाश को यहां से।”

जिस अंदाज में वह बोला था, उसे सुनकर जोरावर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अयोध्या प्रसाद की आवाज में अब पागलपन नहीं था।

यानि ठीक हो चुका था वह।

कबीर की स्कीम कामयाब हो गई थी।

तुरंत वह खुद आगे बढ़ा और युवती की लाश की टांगें पकड़कर उसे घसीटते हुए बाहर ले गया।

वह बाहर निकला तो दो आदमी भीतर प्रविष्ट हुए, जिनमें से एक ने मांस के लोथड़ों को उठाया और बाहर निकल गया।

जबकि दूसरा कमरे के फर्श को साफ करने लगा।

इधर अयोध्या प्रसाद के चेहरे पर एक सुकून-सा नजर आ रहा था।

¶¶

“छोटे बाऊजी....छोटे बाऊजी।”

खुशी भरे स्वर में जोरावर ने कबीर को आवाज लगाई।

शीघ्र ही दरवाजा खुला। सामने कबीर खड़ा था।

“क्या बात है जोरावर अंकल?” कबीर बोला।

“आपकी स्कीम काम कर गई छोटे बाऊजी....बाऊजी ठीक हो गये।”

“सच?” खुशी से चहक उठा कबीर।

“बिल्कुल सच। जैसे ही उन्होंने रीमा राठौर को मारा—उनका पागलपन खत्म हो गया।”

“वैरी गुड....अब क्या कर रहे हैं पापा?”

“अभी गुस्से में हैं—और यह सभी जानते हैं कि जब वे गुस्से में होते हैं तो कोई भी उनके करीब नहीं फटकता। अब सुबह ही उनसे बात होगी।”

“यानि आज रात सैलीब्रेट किया जाये।”

“बेशक।”

“तुम पापा का ध्यान रखो अंकल....मैं चला।”

“कहां?”

“बदन सिंह के पास—मेरी रात रंगीन करने का बंदोबस्त वही करता है।”

“लेकिन इस वक्त वो खुद बिजी होगा—मैंने रीटा को ढाई लाख के साथ उसके पास भेजा था।”

“अब रीटा को वह तभी छुएगा जब मेरे लिये कोई कच्ची कली लेकर आयेगा।”

कहकर वह कमरे में घुसा और वार्डरोब की तरफ बढ़ गया।

ऐश करने का दिल तो उसका पहले ही कर रहा था। चार दिन हो गये थे उसे किसी गर्म पहलू के साथ लगे हुए....आज उसका बहुत दिल कर रहा था—लेकिन रीमा राठौर के हाथों से निकल जाने के पश्चात् उसने अपना मन मार लिया—मगर लेटते ही फिर से उसके भीतर अंगड़ाईयां फूटने लगी थीं। आखिर वह बदन सिंह के पास जाने के लिये खड़ा हो गया—कि तभी जोरावर की आवाज उसके कानों में पड़ गई।

और अब उसे बहाना मिल गया था रात रंगीन करने का।

कुछ ही देर में वह अड्डे से निकलकर अपनी कार स्वयं ड्राईव करता हुआ बदन सिंह के घर की तरफ बढ़ रहा था।

¶¶

‘डिंग....डां....ग....।’

कालबैल का म्यूजिक उभरते ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे की आंखें ऐसे खुलीं मानो वे सो नहीं रहे थे—बल्कि आंखें बन्द करके लेटे हुए थे।

दोनों की निगाहें आपस में मिलीं—मानो वे एक दूसरे से पूछ रहे हों कि रात के इस वक्त कौन हो सकता है।

“मैं देखती हूं।” रीमा राठौर बैड से उतरते हुए बोली।

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

रीमा राठौर बेडरूम से निकली और मेन गेट की तरफ बढ़ी।

“कौन?” मेन डोर के करीब आकर वह अपनी आवाज में शहद घोलते हुए बोली।

“कबीर।” बाहर से आवाज आई—“दरवाजा खोलो।”

कबीर का नाम सुनकर रीमा राठौर पहले तो चौंकी—फिर उसके होंठों पर एक क्रूर मुस्कान उभर आई।

उसने बांह ऊंची कर सिटकनी गिराई और दरवाजा खोला।

सामने कबीर खड़ा था।

लम्बा ऊंचा नौजवान।

रीमा राठौर को देख कबीर चौंक उठा।

“त....तू तो हमारे अड्डे से नहीं आई।”

“ज....जी....वो हुजूर ले के आये हैं मुझे।” रीमा राठौर हड़बड़ाने की एक्टिंग करते हुए बोली।

“चीज तो बड़ी मस्त है तू....।” कहते हुए कबीर ने उसके उभारों को हल्के से दबाया।

हड़बड़ाते हुए रीमा राठौर पीछे हटी और नाराजगी भरे स्वर में बोली—

“कौन हो तुम?”

“बदन सिंह का बाप हूं—कहां है वो?”

“वो तो अन्दर आराम कर रहे हैं।”

कबीर आगे बढ़ा और उसको पीछे धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

अन्दर प्रवेश करते ही वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

निगाहें दाईं तरफ पड़ी बदन सिंह की लाश पर जा टिकीं।

उसे समझते देर नहीं लगी कि वह इस वक्त दोस्तों में नहीं—बल्कि दुश्मनों के बीच खड़ा है।

तेजी से वो रीमा राठौर की तरफ मुड़ा।

दरवाजे के सामने रीमा राठौर कमर पर हाथ रखे टांगों को चौड़ा किये खड़ी थी।

होंठों पर जहर भरी मुस्कान—आंखों में क्रूरता।

“क....कौन हो तुम?”

कबीर उसे घूरते हुए गुर्राया।

“वही....!” रीमा राठौर सर्द स्वर में बोली—“जिसके लिये तेरा बाप पागल हो गया है।”

बुरी तरह से उछल पड़ा कबीर।

“र....री....मा....राठौ.....र....।”

“यस माई डियर कबीर।”

“और रीमा राठौर के साथ सिकंदर ठाकरे भी है।” तभी पीछे से आवाज आई।

हड़बड़ाते हुए कबीर ने गर्दन पीछे मोड़ी।

बैडरूम के दरवाजे में सिकंदर ठाकरे खड़ा था।

हाथों में रिवॉल्वर लिये—और चेहरे पर कठोरता लिये।

कबीर को काटो तो खून नहीं।

रास्ते में किसी जिस्म के संग लगने की कल्पना से जो गर्मी उसमें पैदा हुई थी—और जो झटके उसे रीमा राठौर से टच होने से लगे थे—वे सब खत्म हो गये थे।

अब तो उसे अपनी जान की पड़ी हुई थी।

तभी रीमा राठौर बड़े ही खूंखार भाव से उसकी तरफ बढ़ी।

¶¶

'ट्रिन....ट्रिन....।'

फोन की घण्टी घनघनाई।

अयोध्या प्रसाद ने बैड के करीब पड़े साईड स्टूल पर रखे फोन की तरफ देखा।

इस वक्त उसका चेहरा पूरी तरह से गम्भीर था।

पागलपन उसके चेहरे से गायब हो चुका था।

उसने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया और माऊथपीस में बोला—"हैलो।"

चेहरे की तरह उसकी आवाज में भी पूरी गम्भीरता थी।

"ठीक हो गया तू अयोध्या प्रसाद?"

दूसरी तरफ से जिस तरह से उसे 'तू' कहकर बुलाया गया—उसे सुनकर वह बुरी तरह से चौंका।

ऊपर से आवाज भी एक लड़की की थी।

"कौन है तू?" वह गुर्राया।

"वही....जिसे खत्म करके तू ठीक हुआ है।"

एक और झटका लगा उसे।

"री....मा....रा....ठौर....।"

"बिल्कुल ठीक पहचाना अयोध्या प्रसाद।"

अयोध्या प्रसाद का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।

“मुर्दे बोला नहीं करते कुतिया....और न ही प्रेतात्मायें फोन किया करती हैं। सच-सच बोल....कौन है तू?”

“रीमा राठौर....।” दूसरी तरफ से पुनः हंसी उभरी।

“बकवास करती है तू।”

“मैं बकवास नहीं कर रही बेवकूफ—बल्कि तेरे लौंडे ने तुझे ठीक करने के लिये किसी और लड़की को मेरा नाम देकर तेरे सामने पेश कर दिया और तू यह समझ बैठा कि तूने मुझे मार दिया।”

“तुझे कैसे पता?”

“जोरावर से पूछ ले।” दूसरी तरफ से आवाज आई—“क्योंकि हकीकत बताने के लिये इस वक्त तुझे सिर्फ जोरावर ही हासिल हो सकता है। और अपने लड़के से पूछने के लिये तुझे कहीं और जाना पड़ेगा।”

“कहीं और....।”

“वहां....जहां बद्री गया हुआ है।”

अयोध्या प्रसाद का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

अपने बेटे की मौत की कल्पना मात्र से ही उसके रौंगटे खड़े हो गये।

“म....मेरा बेटा....।”

“कबीर है न उसका नाम? जोरावर से पूछ ले कहां गया है—वहां से उसकी लाश उठवा ले। और हां....अब पागल नहीं होना—क्योंकि मैं चाहती हूं कि जब मैं अपने भाई भीमसेन की मौत का बदला तेरे से लूं तो तू पूरी तरह से ठीक हो।” उसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

अयोध्या प्रसाद को काटो तो खून नहीं।

जिस अंदाज से दूसरी तरफ से कहा गया था—उससे साफ नजर आ रहा था कि उसका बेटा नहीं रहा।

कुछ देर तक तो वह चेतना-शून्य-सा फोन को घूरता रहा— फिर एकाएक पूरी शक्ति से दहाड़ा—

“जोरावर....!....जोरावर....।”

जिस अंदाज में वह दहाड़ा था—उसे सुन उसके कमरे में जोरावर ही नहीं....साथ में दो व्यक्ति और भी बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए दाखिल हुए।

“क्...या....हुआ बाऊजी?” जोरावर बुरी तरह से हड़बड़ाये स्वर में बोला —“अ....आप ठीक तो हैं न?”

“कबीर कहां है?” दहाड़ा अयोध्या प्रसाद।

राहत भरी गहरी सांस छोड़ी जोरावर ने।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया। वह तो पता नहीं क्या सोचकर दहल उठा था—और यहां अयोध्या प्रसाद ने जो सवाल पूछा—वह कुछ भी नहीं था।

“जवान है छोटे बाऊजी—रात रंगीन करने गये हैं।” वह सामान्य अंदाज में बोला।

अयोध्या प्रसाद ने कहर-भरी निगाहों से उसे देखा।

“मैं ठीक कैसे हुआ?”

“रीमा राठौर को मारकर।”

“हरामखोर!” अयोध्या प्रसाद ने सिरहाने के बीच से रिवॉल्वर निकाल ली—“झूठ बोलता है। वह हरामजादी जिंदा है।”

जोरावर को काटो तो खून नहीं।

अयोध्या प्रसाद को इस हकीकत का पता कैसे चल गया— उस भेद को अभी तक सिर्फ वह और कबीर ही जानते थे।

“भौंक कुत्ते।”

जोरावर का सिर झुक गया।

“आप....ठीक कह रहे हैं बाऊजी....वो कुतिया हमारे हाथों से निकल गई थी—ऐसे में आपकी तबीयत और ज्यादा खराब हो सकती थी—इसलिये छोटे बाऊजी ने आपको ठीक करने की यह स्कीम बताई—और....और आप ठीक हो गये।”

“और मेरे ठीक होने की खुशी में कबीर ऐश करने चला गया।”

“ह....हां....!”

“कहां गया?”

“बदन सिंह के पास गया है। आप चिंता मत करें....वो....।”

“वो मर चुका है।” अयोध्या प्रसाद की आवाज भर्रा गई—“रीमा राठौर ने उसे मार डाला है।”

“न....हीं....!” थर्रा उठा जोरावर—“ए....ऐसा नहीं हो सकता।”

“ऐसा ही हुआ है हरामखोर।” गुस्से तथा दुख के मिले-जुले भाव थे उसकी आवाज में—“और वो तेरी बेवकूफी की वजह से मरा है।”

“म....मेरी बेवकूफी से....।”

“हां....!” दहाड़ा अयोध्या प्रसाद—“जब तू जानता था कि वह हरामन जिन्दा है तो तूने उसे अकेले बाहर क्यों भेजा—क्यों नहीं रोका उसे?”

जोरावर की गर्दन झुक गई।

सचमुच बेवकूफी हुई थी उससे।

“इतना याद रखना जोरावर।” उसकी झुकी गर्दन को घूरते हुए फुंफकारा अयोध्या प्रसाद—“अगर मेरे बेटे को कुछ हुआ तो तू भी जिन्दा नहीं रहेगा। फौरन जा वहां। अगर कबीर जिन्दा है तो लेके आ उसे। और अगर वो मर चुका है तो तू भी खुद को गोली मार लेना।”

जोरावर सिर झुकाये हुए ही पीछे हटा और कमरे से बाहर निकल गया।

“तुम भी दफा हो जाओ।”

अयोध्या प्रसाद ने वहां खड़े अन्य गुलामों को हुक्म दिया।

हड़बड़ाते हुए सभी बाहर निकल गये।

¶¶

दस गुण्डों के साथ जोरावर बदन सिंह के फ्लैट में पहुंचा।

फ्लैट का दरवाजा बन्द था।

मगर उसने कालबैल का बटन नहीं दबाया....बल्कि सीधे दरवाजे को ठोकर मारी।

दरवाजा कराहता हुआ पीछे दीवार से जा टकराया।

दरवाजा खुलते ही जोरावर के साथ आये गुण्डों की स्टेनगनें दरवाजे की तरफ तन गईं।

मगर सामने कोई नहीं था।

जोरावर ने रिवॉल्वर निकाली और उसे ताने हुए पूरी सावधानी रखते हुए भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसे यही आशंका थी कि रीमा राठौर ने वहां उसके लिये कोई जाल तैयार किया होगा।

मगर ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया उसे। और न ही उसे आगे कुछ समझने का मौका मिला।

सामने कबीर की लाश नजर आई उसे। उसके करीब ही बदन सिंह की लाश पड़ी थी।

कबीर की लाश देखकर जोरावर का चेहरा ऐसे हो गया जैसे उसने कबीर की नहीं—अपनी लाश देख ली हो। बुरी तरह से कांप उठा वह।

कबीर का मुंह खुला हुआ था और फटी हुई आंखें छत को देख रही थीं। साफ नजर आ रहा था कि उसे मारने से पहले काफी तकलीफ सहनी पड़ी थी—मगर कोई घाव नजर नहीं आ रहा था उसके चेहरे पर।

उसके पीछे खड़े उसके आदमी भी अपने छोटे बाऊजी की लाश देख रहे थे।

जोरावर की समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे।

आखिर उसने जेब से मोबाईल निकाला और अयोध्या प्रसाद का नम्बर मिलाने लगा।

इस वक्त उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे।

"हैलो....!" तभी दूसरी तरफ से अयोध्या प्रसाद की आवाज उसके कान में पड़ी।

"मैं जोरावर बोल रहा हूं।" जोरावर गम्भीर स्वर में बोला।

"बोल?"

"मैं छोटे बाऊजी की लाश के सामने खड़ा हूं बाऊजी।" वह बोला—"और आपके हुक्म के मुताबिक खुद को गोली मारने जा रहा हूं।"

कहते हुए उसने रिवॉल्वर अपनी कनपटी से लगा ली।

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

"प्रणाम बाऊजी। आपकी जितनी सेवा करनी थी—कर ली— अब विदा।"

कहने के साथ ही उसने ट्रिगर दबा दिया।

'धांय....!'

गोली उसकी दाईं कनपटी में घुसी और बाईं तरफ मोबाईल को तोड़ते हुए निकल गई।

जोरावर का जिस्म कटे वृक्ष की तरह नीचे गिर पड़ा।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

सभी गुण्डे मुंह फाड़े फटी-फटी आंखों से उसकी लाश को देख रहे थे।

किसी को कुछ समझने का मौका तक नहीं मिला कि यह क्या हो गया।

बहुत ही आसान मौत मरा था वह।

हां—अपनी वफादारी जरूर साबित कर दी थी उसने।

¶¶

हॉल के बीचोंबीच जोरावर और कबीर की लाशें पड़ी थीं।

उनके करीब ही अयोध्या प्रसाद खड़ा था—और उनके चारों तरफ अयोध्या प्रसाद के गुण्डे खड़े थे।

सभी के चेहरों पर दुख के भाव थे।

सभी कबीर की लाश की तरफ ही देख रहे थे—मगर अयोध्या प्रसाद सिर्फ जोरावर को देख रहा था।

अपने बेटे की लाश की तरफ उसने सिर्फ एक बार ही देखा था—वह भी तब जब लाशें उसके सामने रखी जा रही थीं।

काफी देर तक वह उसको देखता रहा—फिर वह उसकी लाश पर झुका और लाश के करीब बैठ गया।

"बहुत बड़ी गलती कर डाली मैंने।" वह जोरावर की लाश की तरफ देखते हुए बड़बड़ाया—"तुझे ऐसा नहीं कहना चाहिये था मुझे—अपने बेटे की मौत की खबर ने मेरी सोचने-समझने की ताकत छीन ली थी—और फिर अभी-अभी तो मैं पागलपन की बीमारी से उठा था। अरे—मैं तो बेवकूफी कर ही बैठा था। तू तो न करता—फोन पर मेरा जवाब सुनता। बस कहा और खुद को गोली मार ली। य....यह वफादारी नहीं दिखाई तूने—बल्कि कायरता दिखाई है तूने। रीमा राठौर से लड़ना न पड़े—इसीलिये तूने खुद को मारा है न—कायर निकला रे तू।"

आवाज भर्रा गई उसकी।

तभी एक गुलाम हाथ में कार्डलैस फोन उठाये उसके पास आया।

"आपका फोन है बाऊजी।" वह फोन उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला।

भरी हुई आंखों से अयोध्या प्रसाद ने उससे फोन लिया और कान से लगाया।

"हैलो....!" वह अपनी आवाज में ठहराव लाने की कोशिश करते हुए बोला।

"लाश देख रहा है अपने बेटे की?"

दूसरी तरफ से रीमा राठौर की आवाज सुन अयोध्या प्रसाद की आंखें धधक उठीं। चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो उठा।

“हरामजादी—कुतिया....!” उसके होंठों से भेड़िये की-सी गुर्राहट उबली—“मेरे बेटे को मार डाला तूने....।”

“एक और भी तो मरा है।” दूसरी तरफ से हंसी उभरी—“कहीं वो जोरावर तो नहीं? मैंने गोली चलने की आवाज सुनी थी।”

“हां....जोरावर ही था वो—जिसने अपनी वफादारी निभाते हुए जान दे दी।”

“चलो....अच्छा हुआ....खुद ही मर गया—वर्ना मेरे हाथों बड़ी भयानक मौत मरता। क्योंकि वही तो मेरे भाई को तेरे पास लेकर आया था। हरामी किस्मत वाला था जो आसान मौत मर गया। खैर....अब तेरी बारी है।”

“बारी मेरी नहीं तेरी है कुतिया।” दहाड़ा अयोध्या प्रसाद— “कसम है मुझे जोरावर की—जब तक मैं तेरे खून से नहाऊंगा नहीं— तब तक सोऊंगा नहीं। कसम है मुझे अपने बेटे की—जब तक मैं तेरी बोटी-बोटी नहीं कर दूंगा—तब तक चैन से बैठूंगा भी नहीं।”

“चिंता मत कर अयोध्या प्रसाद—अब मैं तुझे सोने भी नहीं दूंगी—और चैन से बैठने भी नहीं दूंगी। बहुत सता लिया तूने यहां की गरीब जनता को—बहुत खेल लिया तू कानून से। तेरे पापों का घड़ा भर चुका है अयोध्या प्रसाद—अब बस एक हल्की-सी ठोकर की जरूरत है उसे फोड़ने में....और वो ठोकर मैं मारूंगी—भीमसेन की बहन....।”

“तू एक बार सामने तो आ हरामजादी—इतने कुत्ते चढ़ाऊंगा तेरे पर कि तू गिनते-गिनते मर जायेगी लेकिन कुत्ते खत्म नहीं होंगे।”

“घबरा नहीं—आऊंगी और जरूर आऊंगी—और जब भी आऊंगी—वो वक्त तेरी जिंदगी का आखिरी वक्त होगा। खैर, अब रो—छाती पीट—बाल खींच अपने—लेकिन पागल नहीं होना—वर्ना तुझे मारने में कोई मजा नहीं आयेगा मुझे।”

उसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

अयोध्या प्रसाद ने फोन को गुस्से में इतनी जोरो से धरती पर पटका कि वह अनेक टुकड़ों में तब्दील हो गया।

“साली—कुतिया....अयोध्या प्रसाद को मारेगी। मुझे मारेगी....। एक बार पता तो चले तेरा—फिर बताऊंगा तुझे कि अयोध्या प्रसाद क्या बला है।”

झटके से खड़ा हो गया वह।

उसके खड़ा होते ही उसके चारों तरफ खड़े गुण्डे एकदम से अलर्ट हो गये।

“मुझे रीमा राठौर चाहिये—हर हाल में चाहिये....मैं....।”

“बाऊजी।” तभी पीछे से किसी ने उसे टोका।

झटके से पीछे गर्दन मोड़ी उसने और चेहरे से क्रूर नजर आने वाले उस व्यक्ति को देखा—जो कि शरीर से सींकिया पहलवान नजर आता था।

“गबरू....” वह फुंफकारा—“तूने मुझे बीच में टोका।”

“माफी चाहूंगा बाऊजी—लेकिन इतने बड़े शहर में रीमा राठौर को ढूंढना नामुमकिन है।”

अयोध्या प्रसाद की आंखें सुलग उठीं।

“यह तू कह रहा है गबरू।” वह फुंफकारा।

“गुस्ताखी माफ हो बाऊजी। दुश्मन छुपा हुआ हो तो बेहद खतरनाक होता है। ऐसे में अगर कोई स्कीम बनाकर उसे बाहर निकलने पर मजबूर किया जाये तो उसे खत्म करना आसान होगा।”

“तू कहना क्या चाहता है?” पूछते हुए माथे पर बल पड़ गये अयोध्या प्रसाद के।

“एस.पी. इकबाल ने जिस तरह से रीमा राठौर को फंसाने की चाल चली थी—वह बहुत ही शानदार थी। वह हमारे काबू में आ गई थी—लेकिन बदकिस्मती से ट्रक का टायर बर्स्ट हो गया था और वह निकलने में कामयाब हो गई। जिस ढंग से इकबाल ने अपने तेज दिमाग का परिचय दिया था—उससे यही जाहिर होता है कि वह फिर से उसे घेरने की कोई नई स्कीम बना सकता है। ऐसे में अगर उसकी सेवा ली जाये तो बेहतर होगा—यूं अंधेरे में ठोकरें खाने की बजाये पहले सोच-समझकर रास्ता बनाना बेहतर होगा—फिर ठोकर नहीं लगेगी।”

अयोध्या प्रसाद की आंखें सोचपूर्ण अंदाज में सिकुड़ गईं।

"तू ठीक कह रहा है।" वह बोला—"तैश में उठाया गया कदम नुकसान ही देता है। यह मैं भुगत चुका हूं।" उसने जोरावर की लाश की तरफ देखा—फिर पुनः गबरू की तरफ देखा—"बुला इकबाल को—उससे बोल कि फौरन यहां पहुंचे।"

"जी बाऊजी।"

कहकर गबरू ने सिर झुकाया और बाहर पीछे वाले कमरे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

"बैठ....।"

अपनी सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठते हुए अयोध्या प्रसाद इकबाल से बोला।

इकबाल करीब चालीस साल का मध्यम कद का साधारण शक्लो-सूरत वाला व्यक्ति था।

इस वक्त वह अपनी एस.पी. की फुल यूनिफार्म में था।

बिना किसी हिचकिचाहट के इकबाल उसके सामने फर्श पर बैठ गया।

"पता है.....क्यों बुलाया है मैंने तुझे?"

अयोध्या प्रसाद उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"हां बाऊजी....गबरू ने सब बता दिया है मुझे।" इकबाल गम्भीरता से बोला—"कसम से.....जब गबरू ने आपके ठीक होने की खबर दी तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा—मगर वो खुशी उसी वक्त गमी में तब्दील हो गई जब मुझे कबीर की मौत का पता चला।"

"जोरावर भी मर गया है—और बदन सिंह भी।"

"मुझे पता है बाऊजी।"

अयोध्या प्रसाद ने बैठे-बैठे ही पहलू बदला और बोला—

"पहले तूने ही अपनी खोपड़ी का इस्तेमाल करके रीमा राठौर को पकड़ा था। मगर वह हमारे गुलामों की बेवकूफी से बच निकलने में कामयाब हो गई। अब फिर तू

अपनी खोपड़ी का इस्तेमाल कर और पता लगा कि वो कहां छुपी हुई है। बस एक बार उसका पता चल जाये....फिर मैं उसे बचकर भागने का कोई रास्ता नहीं दूंगा।"

कहते हुए उसकी आवाज में दरिंदगी भरती चली गई।

इकबाल ने कुछ पल सोचने की मुद्रा बनाई और बोला—

"मेरे लिये एक कमरे का बंदोबस्त कर दीजिये—जिसमें कि बिस्तर लगा हो।"

"क्यों?"

"लेटने के बाद ही मेरे दिमाग के घोड़े खुलते हैं बाऊजी—और मुझे यकीन है कि सुबह होने तक मैं कोई-न-कोई ऐसी स्कीम जरूर बना लूंगा जिससे कि हम रीमा राठौर तक पहुंच जायें। लेकिन....।"

"लेकिन क्या?"

"उसे कम करके मत आंकिये बाऊजी—मैं आपकी ताकत से वाकिफ हूं—मगर वह बिजली है। और बाऊजी....उसकी पहुंच बहुत ऊपर तक है। है तो वह एक वकीलनी—लेकिन उसके सम्बंध बहुत ऊंचे हैं। इसलिये उसे खत्म करने में देर मत कीजियेगा। पहला मौका मिलते ही उसे खत्म कर दीजियेगा—और इस बात को फैलने भी मत दीजियेगा।"

"मैं तेरी बात समझ रहा हूं—तू उसका पता तो लगा। गबरू.....।"

अयोध्या प्रसाद ने गबरू को आवाज दी।

तुरंत गबरू इकबाल के पीछे आ खड़ा हुआ।

"जी बाऊजी।"

"इसे जोरावर के कमरे में ले जा।"

"जी बाऊजी।"

गबरू ने सिर झुकाया।

इकबाल फौरन खड़ा हो गया।

¶¶

रीमा राठौर ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही एक भरपूर अंगड़ाई ली और अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखा।

सुबह के सात बज रहे थे।

उसने अपने करीब अपनी तरफ पीठ करके लेटे सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा—जो कि अभी भी गहरी नींद सो रहा था।

रीमा राठौर हल्के से मुस्कुरा पड़ी।

जिस बिस्तर पर वे दोनों सो रहे थे—वह था तो साधारण-सा मगर था साफ-सुथरा।

कमरे की दीवारें नीचे से दो-ढाई फीट तक का हिस्सा छोड़कर ऊपर से साफ थीं। दो-ढाई फीट की ऊंचाई तक जमे हुए थूकों के निशान—बीड़ी-सिगरेट के रगड़ने की काली लकीरें थीं—और पांच चार आशिकाना जुमले कोयले से लिखे हुए थे। मानो कोई एक तरफ मुहब्बत करने वाला अपनी मुहब्बत का इजहार दीवारों पर लिखकर कर रहा हो। एक-दो जुमले तो हद से ज्यादा गंदे थे।

फर्श पर इधर-उधर बीड़ी-सिगरेट के टोटे बिखरे हुए थे।

एक धर्मशाला के कमरे में थे वे उस वक्त।

रात जब अयोध्या प्रसाद के आदमी जोरावर और कबीर की लाशों को लेकर चले गये तो कुछ दूर एक पेड़ के तने के पीछे छुपे सिकंदर ठाकरे ने रीमा राठौर के सामने अपनी थकावट का इजहार कर दिया।

थकी हुई रीमा राठौर भी थी। मगर अभी भी वह पूरी तरह से चाकचौबंद थी।

सारे पैसे तो कार में ही पड़े थे।

हां—सिकंदर ठाकरे के पास हजार-बारह सौ जरूर थे—मगर इतने पैसों में होटल में कमरा नहीं लिया जा सकता था।

सो दोनों पैदल ही एक तरफ चलने लगे।

उनकी खुशकिस्मती थी कि आधा किलोमीटर के बाद ही उन्हें एक धर्मशाला के दर्शन हो गये।

धर्मशाला का फाटक बन्द था।

रीमा राठौर को रात गुजारने का वह रास्ता बढ़िया लगा—सो उसने सिकंदर ठाकरे से फाटक खुलवाने के लिये कहा।

सिकंदर ठाकरे ने फाटक खड़काया और करीब पांच मिनट लगातार खड़काने के बाद जाकर फाटक के बीच बना छोटा दरवाजा खुला।

पहले तो सिकंदर ठाकरे की न हो गई—लेकिन जब सिकंदर ठाकरे ने रीमा राठौर को अपनी बीवी बताते हुए उसका हवाला दिया —तो उन्हें कमरा मिल गया—वर्ना इतनी रात गये उन्हें कहीं भी कमरा नसीब नहीं होना था। कमरा था तो थर्ड क्लास —मगर रात गुजारने के लिहाज से बढ़िया था।

और अब रीमा राठौर बिस्तर पर बैठी थी।

कुछ घण्टों के आराम से ही वह पूरी तरह से फ्रैश हो गई थी।

उसने सिकंदर ठाकरे की बांह पकड़ कर हिलायी।

तुरंत सिकंदर ठाकरे की आंख खुली और वह भी उठ बैठा।

"सुबह हो गई?" वह अंगड़ाई लेते हुए बोला।

"यस माई डियर हसबैंड।"

रीमा राठौर मुस्कुराई।

गहरी सांस छोड़ी सिकंदर ठाकरे ने।

"हसबैंड तो बना लिया—मगर पति का फर्ज निभाने का मौका नहीं दे रहीं?"

"मैंने कब मना किया है।" मुस्कुराई रीमा राठौर—"मैं तो अभी भी तैयार हूं। कहो तो अभी....?"

"नेकी और पूछ-पूछ।"

“अभी तैयार हो जाती हूं मेरे मालिक—बस थोड़ा-सा कष्ट उठाना पड़ेगा आपको।”

“क्या?”

“धर्मशाला के गेट से निकलोगे तो दाईं तरफ बाजू में ही नाई की दुकान है। दुकान खुल गई होगी। कुर्सी पर बैठो और नाई से कहो कि शेव कर दे।”

“वो तो मैं अभी कटवा आता हूं।”

“और उससे यह भी कहना कि तुम्हारी नाक के नीचे जो झाड़ी है उसे भी....।”

“खबरदार....मेरी मूंछों को गाली मत देना।” गुर्रा उठा सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

“हम दोनों के मिलन के बीच बस तुम्हारी मूंछें ही दीवार बनकर खड़ी हैं मेरे सरताज। हटा दो इस दीवार को और मुझे अपने आगोश में ले लो....मैं....।”

“बकवास बन्द करो अपनी। और आईंदा मेरी मूंछों के बारे में कभी भी गलत नहीं कहना।”

“तो फिर मुझे पाने का ख्याल दिल से निकाल दो। जो आदमी एक लड़की को खुश करने के लिये अपनी मूंछों का बलिदान नहीं दे सकता वो....।”

“अब बस कर मेरी मां—तू जीती मैं हारा।”

सिकंदर ठाकरे ने ताली बजाने वाले अंदाज में उसके सामने हाथ जोड़े।

रीमा राठौर खिलखिला उठी।

“फ्रेश हो आईं तुम?”

“पहले तुम हो आओ।”

सिकंदर ठाकरे बैड से उतरा और बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

रीमा राठौर ने एक सिगरेट सुलगाई और उसके छोटे-छोटे कश लगाते हुए सोचों में डूब गई।

वह जानती थी कि अपने बेटे की लाश देखकर अयोध्या प्रसाद पागल हो उठेगा। और उसे खत्म करने के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगा देगा।

क्या करेगा वह उसे ढूंढने के लिये?

यही सोच रही थी वह। लेकिन अभी तक उसके दिमाग में कुछ नहीं आया था।

तभी सिकंदर ठाकरे बाथरूम का दरवाजा खोल भीतर आया।

रीमा राठौर ने सिगरेट का टोटा एक तरफ फैंका और खड़ी हो गई।

दस मिनट बाद जब वह वापस बाहर निकली तो बैड पर दो गिलासों में चाय के साथ बिस्कुट का एक पैकेट रखा था।

उसके फ्रेश होने के दौरान ही मंगवाया था सिकंदर यह सब।

रीमा राठौर उसके सामने बैठ गई और एक गिलास उठा लिया।

सिकंदर ठाकरे ने पैकेट खोला और एक बिस्कुट निकालकर गिलास उठाया और बिस्कुट चाय में डुबोकर खाने लगा।

रीमा राठौर भी बिस्कुट खाने लगी।

“अब....?” चाय का घूंट भरकर ठाकरे बिस्कुट निकालते हुए बोला।

“क्या?”

“बाऊजी का बेटा तो गया—मास्टर भी गया। अब क्या करना है?”

“करना क्या है—अयोध्या प्रसाद को खत्म करना है।”

“बताया था न कबीर ने अपने बाप की ताकत के बारे में।”

“तो क्या डरकर भाग जाऊं यहां से? अपने भाई को भूल जाऊं—जिसने मुझे सिर्फ एक ही बार राखी बांधी थी?”

“म....मैंने ऐसा तो नहीं कहा।”

“तो और क्या कह रहे हो तुम?”

“मैं यह कह रहा हूं कि अयोध्या प्रसाद के पास पूरी फौज है—ऊपर से पुलिस भी उसकी गुलाम बनी हुई है। जबकि हम सिर्फ दो हैं।”

“तो?”

“क्या हम दोनों उसका मुकाबला कर पायेंगे?”

“तुम्हारा दिल क्या कहता है?”

गहरी सांस छोड़ी सिकंदर ठाकरे ने।

“मुझे तुम्हारी ताकत, तुम्हारे दिमाग पर कोई संदेह नहीं रीमा। मैं जानता हूं कि तुम असम्भव को सम्भव कर दिखाने की ताकत रखती हो—मगर....।”

“तो फिर अपने जेहन से डर दूर कर दो—और यह बात अपनी खोपड़ी में बिठा लो कि दुश्मन तुम तक मेरी लाश से होकर ही गुजर सकता है।”

“मरें तुम्हारे दुश्मन। खबरदार जो अब ऐसी बकवास की तो।”

भड़क उठा सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर मुस्करा पड़ी और बिस्कुट उठा लिया।

तभी—

¶¶

सुबह सात बजे जब इकबाल अयोध्या प्रसाद के कमरे में दाखिल हुआ तो उसकी आंखें सुर्ख हो रही थीं।

साफ नजर आ रहा था कि वह सारी रात नहीं सोया।

अयोध्या प्रसाद उस वक्त बैड के करीब ही एक कुर्सी पर बैठा था। उसकी आंखें भी बता रही थीं कि वह भी नहीं सोया था।

लेकिन उसके चेहरे पर थकान का एक छोटा-सा अंश भी नहीं था।

“क्या सोचा?” उसको देखते ही पूछा अयोध्या प्रसाद ने।

“रीमा राठौर का पता चल गया है बाऊजी।” मुस्कुराया इकबाल।

“क्या?” बुरी तरह से चौंका अयोध्या प्रसाद।

“जी हां।”

“कहां है वो?”

“पंजाबी धर्मशाला में। मैंने गबरू को वहां भेज भी दिया है— और अपने ऑफिस फोन करके दस सिपाही भी उधर भेज दिये हैं।”

अयोध्या प्रसाद के चेहरे पर हैरानी उभरी।

“तुझे कैसे पता चला कि वो वहां है?”

“इसके घोड़े बहुत तेज हैं बाऊजी।” इकबाल ने अपना सीना चौड़ा करते हुए अपनी कनपटी ठकठकाई।

“सीधे बकवास कर—कैसे पता चला?”

इकबाल का सीना पुनः पिचक गया—चेहरे पर हल्की-सी हड़बड़ी उभरी—फिर वह खुद को सम्भालते हुए बोला—

“रात साढ़े बारह बजे उसका आपके पास फोन आया था। यानि साढ़े बारह बजे वह बदन सिंह के फ्लैट के आसपास ही थी। उसकी कार बैस्ट होटल की पार्किंग में खड़ी है—जो वहां से पांच किलोमीटर दूर है। ऊपर से सर्दी। ऐसे में उसे रात गुजारने के लिये छत जरूरी थी।”

“फिर?”

“इतनी रात गये वह किसी होटल में कमरा ले नहीं सकती थी—और न ही किसी गैस्टहाऊस में जा सकती थी क्योंकि ग्यारह बजे के बाद सभी गैस्ट हाऊसों के गेट बन्द हो जाते हैं। अब बस धर्मशाला ही बचती थी जहां पर कि वो रात गुजार सकती थी—या फिर किसी खंडहर—या मन्दिर में उसे सोने की जगह मिल सकती थी। सो मैंने पहले धर्मशालाओं की तरफ ध्यान देना ठीक समझा।

कुल दस धर्मशालायें हैं यहां, जिनमें से सात में फोन लगे हैं।

मैंने सभी को फोन करके पूछा कि क्या रात साढ़े बारह बजे के बाद कोई जवान जोड़ा वहां ठहरा है?”

“और पंजाबी धर्मशाला से तुझे हां में उत्तर मिला।”

“जी हां।”

“फिर?”

“मैंने रीमा राठौर का हुलिया बताया तो दूसरी तरफ से कहा गया कि वही लड़की ठहरी है।”

“और तूने गबरू को रवाना कर दिया।”

“जी हां।”

अयोध्या प्रसाद की आंखों में उसके लिये प्रशंसा के भाव उभरे।

“तू वाकई दिमाग का धनी है।” वह बोला।

“आपकी जर्रानवाजी है बाऊजी—वर्ना मैं क्या और मेरी औकात क्या?”

“छोड़ यह एस.पी. की नौकरी—मेरे पास आजा तू....।”

“मैं अभी भी तो आपका गुलाम हूं बाऊजी। खा तो सरकार की रहा हूं मगर सेवा तो आप ही की कर रहा हूं।”

अयोध्या प्रसाद कुछ नहीं बोला—बस समझने वाले अंदाज में सिर हिला दिया।

“कब भेजा उन्हें?” कुछ देर बाद उसने पूछा।

“बस गबरू को भेजकर और अपने ऑफिस फोन करके सीधा आपके पास आया हूं।”

“यानि आध पौन घण्टे में वह कुतिया मेरे सामने होगी।”

“साथ में सिकंदर ठाकरे भी।”

“आने दो दोनों को।” गुर्राया अयोध्या प्रसाद—“ऐसी सजा दूंगा कि....।” भद्दी गाली निकली उसके मुंह से।

“अब मेरे लिये क्या हुक्म है?”

“तू जा—तेरा काम खत्म।”

इकबाल ने सिर झुकाया और बाहर निकल गया।

¶¶

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे ने चाय पीकर गिलास फर्श पर रखे ही थे कि तभी कमरे का दरवाजा खड़का।

‘खट....खट....खट....!’

दोनों की निगाहें एक साथ दरवाजे की तरफ उठीं।

“मैं देखता हूं।” सिकंदर ठाकरे खड़ा होते हुए बोला।

वह दरवाजे के करीब पहुंचा और ऊंचे स्वर में बोला—

“कौन है?”

“दरवाजा खोलो।” बाहर से आवाज आई।

धर्मशाला के मैनेजर की आवाज थी।

रात को उसी ने ही दरवाजा खोला था—और उसी ने ही उन्हें कमरा दिया था। सो सिकंदर ठाकरे ने दरवाजा खोल दिया।

सामने अधेड़ उम्र का धोती-कुर्ता पहने व्यक्ति खड़ा था।

उसने एक नजर सिकंदर ठाकरे पर डाली, फिर उसके करीब से होते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

जिस अंदाज में वह भीतर प्रविष्ट हुआ था, उसी से ही रीमा राठौर समझ गई कि कोई गड़बड़ है।

तुरंत खड़ी हुई वह और बोली—“क्या बात है अंकल?”

अधेड़ उसके करीब आया और बोला—

“सच-सच बोलो बेटी—कौन हो तुम?”

“आपको बताया तो था रात को....।”

“नहीं, तुम वो नहीं हो। अगर तुम वो होतीं तो पुलिस तुम्हें ढूंढ नहीं रही होती।”

दोनों बुरी तरह से चौंके।

“पुलिस....।” रीमा राठौर के मुंह से निकला—“आपको कैसे पता लगा कि हमें पुलिस ढूंढ रही है?”

“अभी-अभी फोन आया था एस.पी. का—तुम्हारे बारे में पूछ रहा था।”

“फिर....आपने क्या कहा?”

“बता दिया....बेटी....तुम यहां की पुलिस को नहीं जानतीं। कहने को तो यह शहर रामपुर है—लेकिन यहां राज रावण का चल रहा है। बाऊजी नाम है उस रावण का—और पुलिस सरकार की न होकर उसके तलवे चाट रही है। इसलिये बेटी, तुम जो भी हो, फौरन यहां से चली जाओ। मैं कह दूंगा कि तुम मुझे बिना बताये चली गई थीं।”

रीमा राठौर के होंठों पर गम्भीर मुस्कान फैल गई।

“मैं यहां से जाने के लिये नहीं आई अंकल। बल्कि अयोध्या प्रसाद के रावणराज को खत्म करने आई हूं।”

“क्...या?”

“जी हां....यह इंस्पेक्टर सिकंदर ठाकरे है—और मैं रीमा राठौर। रामपुर से हमारा जाना अब तभी होगा जब अयोध्या प्रसाद को उसके किये की सजा मिल जायेगी।”

“नहीं बेटी....त....तुम बाऊजी की ताकत नहीं जानतीं....।”

“आप मुझे नहीं जानते अंकल। हां, मौजूदा वक्त में मेरा यहां टिकना ठीक नहीं—सो हम यहां से निकल जाते हैं। और हां, हमारे जाने के बाद आप एक काम अवश्य कीजियेगा।”

“क्या?”

“आप यह बात शहर में फैला देना कि अयोध्या प्रसाद की मौत बनकर रीमा राठौर यहां आ गई है। मैं चाहती हूं कि लोगों के दिलों में अयोध्या प्रसाद का जो डर बैठा हुआ है, वो कम हो जाये।”

अधेड़ ने सिर हिला दिया—और फिर प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोला—

“भगवान तुम्हारी आयु लम्बी करे बेटी। नेक काम करने वाले कभी मात नहीं खाते। ऊपर वाला भी उनकी मदद करता है।” रीमा राठौर सिकंदर ठाकरे के साथ कमरे से बाहर निकल गई।

¶¶

पुलिस की जिप्सी धर्मशाला के सामने रुकी और धाड़-धाड़ करते दस पुलसिये जिप्सी में से छलांगें मारकर उतरे और धर्मशाला के गेट की तरफ लपके।

आनन-फानन में वे गेट में प्रविष्ट हुए।

बाईं तरफ ही मैनेजर का कमरा था।

पुलिस के कमरे तक पहुंचते-पहुंचते मैनेजर बाहर आ गया।

“कहां है वो छोकरी?” एक सब-इंस्पेक्टर गुर्राया।

“आ....आईए हुजूर....।” मैनेजर बोला—“मैं ले चलता हूं उसके कमरे में।”

सब-इंस्पेक्टर ने सिपाहियों की तरफ गर्दन घुमाई और गुर्राया—

“भागनी नहीं चाहिये वह, न ही मरनी चाहिये। अगर भागने की कोशिश करे तो साली की टांगों में गोली उतार देना।”

सभी सिपाहियों ने एक साथ गर्दन हिलाई।

“चलो।” सब-इंस्पेक्टर मैनेजर से बोला।

मैनेजर उसे लिये रीमा राठौर के कमरे की तरफ बढ़ा।

पीछे-पीछे अपनी-अपनी राइफलों को सम्भाले सिपाही चल रहे थे।

मैनेजर कमरे के बंद दरवाजे के सामने आकर रुका और दरवाजे की तरफ इशारा किया।

सब-इंस्पेक्टर ने उसे एक तरफ हटने का इशारा किया और स्वयं रिवॉल्वर निकालकर दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ।

मैनेजर एक तरफ हट गया।

सब-इंस्पेक्टर ने एक सिपाही को दरवाजा खटखटाने का इशारा किया।

सिपाही आगे बढ़ा और दरवाजे के करीब आकर दरवाजा खटखटाया।

'खट....खट....खट....।'

सब-इंस्पेक्टर ने रिवॉल्वर ऐसे तान ली जैसे दरवाजा खुलते ही वह गोली चला देगा।

खटखटाने से दरवाजा खुला तो नहीं—हां, भीतर की तरफ थोड़ा सरक जरूर गया।

सिपाही ने गर्दन मोड़कर खड़े सब-इंस्पेक्टर को देखा।

सब-इंस्पेक्टर ने दरवाजा खोलने का इशारा किया।

सिपाही ने गन आगे की और उसकी नाल से दरवाजे पर दबाव डाला।

दरवाजा भीतर की तरफ खुलता चला गया।

भीतर से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं हुई—न ही कोई दिखाई दिया।

सब-इंस्पेक्टर कुछ देर तो वैसे ही खड़ा रहा, फिर हिम्मत करके आगे बढ़ा और भीतर प्रवेश कर गया।

कमरे में कोई होता तो नजर आता न!

रीमा राठौर तो सिकंदर ठाकरे के साथ पंद्रह मिनट पहले ही फुर्र हो चुकी थी।

सब-इंस्पेक्टर के पीछे-पीछे सिपाही भी भीतर प्रवेश कर गये।

कमरे का कोना-कोना छान मारा सब-इंस्पेक्टर ने। लेकिन रीमा राठौर वहां होती तो ही मिलती न!

सब-इंस्पेक्टर जलता-भुनता बाहर निकला और एक तरफ खड़े मैनेजर का गिरेबान पकड़ लिया।

“कहां है वह छोकरी?” वह फुंफकारा।

“अन्दर....है साहब।”

“बकवास करता है—अन्दर तो चिड़िया का बच्चा भी नहीं।”

“य....यह क्या कह रहे हैं आप साहब—बड़े साहब का फोन आने के बाद मैंने खुद अपनी आंखों से उसे देखा था।”

“तो फिर कहां गई वह?”

“उ....उसे बताकर जाना चाहिये था—लेकिन....।”

झटके से सब-इंस्पेक्टर ने उसे छोड़ा और जेब से मोबाईल निकालकर इकबाल को फोन करके उसे रिपोर्ट दे दी।

इधर मैनेजर मन-ही-मन मुस्कुरा रहा था।

तभी गबरू अपने गुण्डों के साथ वहां पहुंच गया।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

फोन की घण्टी बजते ही अयोध्या प्रसाद ने झपटते हुए रिसीवर उठाया।

“हैलो....!” वह माऊथपीस में बोला।

“मैं गबरू बोल रहा हूं बाऊजी।”

“हां बोल—मिली वह?”

“लगता है उसे हमारे आने का पता चल गया था। और वह वक्त रहते भाग गई।”

अयोध्या प्रसाद का पूरा वजूद सुलग उठा।

“मुझे वो हरामन चाहिये।” फुंफकारा अयोध्या प्रसाद—“चाहे पूरे शहर को ही आग क्यों न लगानी पड़े—मुझे लाकर दे—वर्ना यहां वापस नहीं आना।”

कहने के साथ ही उसने फोन पटक दिया।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

फोन की घण्टी घनघनाई।

इकबाल ने तुरंत रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—“हैलो।”

अयोध्या प्रसाद के पास से आकर वह सीधा अपने ऑफिस में आ बैठा था। और तभी से रीमा राठौर के पकड़े जाने का फोन आने का इंतजार कर रहा था।

“क्या बात है मियां इकबाल—बड़े बेसब्रे नजर आ रहे हो?”

बुरी तरह से उछल पड़ा इकबाल। कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“त....तुम....?”

“हां....मैं....तुम्हारी अम्मा रीमा राठौर।” दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी—“लगता है यहां मुम्बई से मोटा पैसा पीट रहे हो....जो अयोध्या प्रसाद के कहने पर मुझे पकड़ने के लिये मरे जा रहे हो। लगता है अब तुम्हारा पक्का बंदोबस्त करना पड़ेगा। पहले तो यह सोचकर तुम्हारा ट्रांसफर कराया था कि तुम्हें अक्ल आ जाये—लेकिन अब तुम अपनी नौकरी को खत्म हुआ समझो और यह बात भी गांठ बांध लो कि अब तुमने बेईमानी से जो भी जमा किया है, वो भी खत्म हुआ समझो।”

इकबाल को काटो तो खून नहीं।

वह जानता था कि रीमा राठौर जो कह रही है, वह करके दिखा भी सकती है।

“हां....!” तभी आवाज आई—“अगर तुम अपनी नौकरी बचाना चाहते हो तो वो बनके दिखाओ जो तुम हो।”

“क्या मतलब?”

“खत्म कर दो कानून के दुश्मनों को....बाऊजी....जिसके तुम अब तक तलवे चाटते रहे हो....उनके खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दो। फिर देखो....यहां की जनता किस तरह तुम्हारी जय-जयकार करती है। अरे बेवकूफ—जो दौलत तुम उसके तलवे चाटकर इकट्ठी कर रहे हो—उस दौलत से कहीं बड़ी वह खुशी है जो पब्लिक की प्रशंसा से मिलेगी तुम्हें। एक बार भ्रष्टाचार के खोल से निकलकर तो देखो। और अगर नहीं निकल सकते तो फिर तुम्हारी भी गति वही होगी जो अयोध्या प्रसाद की होगी। ऐसी मौत नसीब होगी तुम्हें कि तुम उसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते। आज शाम तक का वक्त देती हूं तुम्हें—अगर शाम तक तुम बाऊजी के खिलाफ कुछ करते हो तो तुम यहीं टिके रहोगे वर्ना ऊपर का टिकट कट जायेगा तुम्हारा और तुम्हारे बाऊजी की मौत फिर भी होगी।” दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई—“मेरी बात पर गहराई से सोचना इकबाल—तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं—अब यह तुम्हें डिसाईड करना है कि तुम्हें किस रास्ते पर चलना है। अगर सही रास्ते पर चलते हो तो ठीक—वर्ना सुबह तुम्हारा सस्पैंशन आर्डर तुम्हारे पास पहुंच जायेगा—और फिर दोपहर तक तुम लाश में तब्दील हो जाओगे। गुड बाई।”

दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

इकबाल के कानों में सांय-सांय होने लगी।

वह जानता था कि रीमा राठौर जो कह रही है—करके भी दिखा सकती है।

वह पहले भी उसकी ट्रांसफर करा चुकी थी और तब भी उसने उसे समझाया था—मगर तब उसने उसकी बातों को बड़े ही हल्के ढंग से लिया था—और उसकी ट्रांसफर हो गई।

अब फिर वह उसे समझा रही थी—और यह भी कह रही थी कि अगर वह नहीं माना तो वह खत्म हो जायेगा।

यानि उसकी मौत?

उसका कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा।

वह जानता था कि उसने अयोध्या प्रसाद के खिलाफ कुछ किया तो वह उसे जिंदा नहीं छोड़ेगा। और अगर नहीं करता तो रीमा राठौर उसकी मौत बन जायेगी।

अजीब मुसीबत में फंस गया था वह।

एक तरफ कुंआ था तो दूसरी तरफ खाई।

दोनों तरफ मौत खड़ी थी।

अब तो उसे यह फैसला करना था कि वह कौन-सी मौत चुने।

काफी सोच-विचार करने के पश्चात् आखिर उसने अच्छी मौत चुनने का फैसला किया।

तुरंत उसने रिसीवर उठाया और डी.एस.पी. का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

“तुम क्या समझती हो—क्या तुम्हारे समझाने से वह एस.पी. सीधा रास्ता अपना लेगा?”

“मैंने सिर्फ कोशिश की है।” रीमा राठौर बोली—“अगर नहीं मानेगा फिर सजा भुगतेगा। वैसे मुझे उम्मीद है कि वह सीधा नहीं होगा तो उल्टा भी नहीं रहेगा। अपनी नौकरी और जान बचाने के लिये वह या तो छुट्टी ले लेगा या फिर अयोध्या प्रसाद से यह कहेगा कि मेरे साथ वह अपनी लड़ाई खुद लड़े।”

“यानि अब हमारे और अयोध्या प्रसाद के बीच पुलिस दखल नहीं देगी।”

“अभी क्या कहा जा सकता है—इसका पता तो शाम को चलेगा।” रीमा राठौर बोली—“वैसे भी हमें यह सोचना छोड़कर अगले कदम के बारे में सोचना है।”

“क्या?” सिकंदर ठाकरे बोला।

दोनों इस वक्त होटल बैस्ट के एक कमरे में थे।

धर्मशाला से निकलकर दोनों सीधे बैस्ट की पार्किंग पर पहुंचे थे।

सिकंदर ठाकरे ने पार्किंग के ठेकेदार को देखा तो उसे पहले वाले की जगह दूसरा नजर आया।

उसने उससे बात भी नहीं की और सीधा कार तक जा पहुंचा।

कार में से उसने सारा सामान निकाला—डैश बोर्ड में से रीमा राठौर की रिवॉल्वर भी निकाली और फिर पार्किंग से बाहर आ गया।

इस बीच रीमा राठौर थोड़ी दूर खड़ी ठेकेदार पर नजर रखे हुए थी।

ठेकेदार को शायद उसके बारे में बताया गया था—तभी तो उसने ठाकरे की तरफ ध्यान नहीं दिया था।

और ठाकरे आसानी से सामान बाहर ले आया था।

और फिर दोनों बैस्ट में आ गये—जहां उन्होंने एक कमरा लिया—और अब वे बैड पर बैठे बातें कर रहे थे।

रीमा राठौर ने पहलू बदला और निगाहें सिकंदर ठाकरे पर स्थिर करते हुए बोली—

“कबीर से हमें अयोध्या प्रसाद के कुल छह गोदामों का पता चला है—उनमें से दो गोदाम ऐसे हैं—जिन्हें अगर नष्ट कर दिया जाये तो अयोध्या प्रसाद की कमर टूट जाये। एक गोदाम में तो स्मैक—हेरोईन—चरस कोकीन पड़ा है—और दूसरे में हथियार।”

“मैं समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो।”

सिकंदर ठाकरे मुस्कुराया।

“तो फिर अब आराम करो—शाम को शिकार पर निकलेंगे।”

रीमा राठौर बोली।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन।’

फोन की घण्टी बजते ही अयोध्या प्रसाद ने रिसीवर उठाया।

“हैलो....।” वह बोला।

“मैं इकबाल बोल रहा हूं बाऊजी।”

दूसरी तरफ से इकबाल की आवाज सुनकर अयोध्या प्रसाद का पारा चढ़ गया।

“अबे गधे की औलाद....मादर....।” उसने गाली निकाली— “बड़ा दिमाग वाला बना फिरता था तू। वो हरामन तेरे को भी अंधा बना गई।”

“मुझे पता है बाऊजी।” दूसरी तरफ से गम्भीर आवाज आई—“लेकिन अब आप सम्भल जाइयेगा।”

“क्या मतलब?”

“अभी थोड़ी देर पहले ही मुझे पता चला है कि रीमा राठौर आपको पटखनी देने के लिये सी.आर.पी. बुलवा रही है।”

“क्या?” बुरी तरह से उछल पड़ा अयोध्या प्रसाद।

“जी हां....यहां की पुलिस का तो उसे पता चल ही गया है कि हम सब आपके गुलाम हैं—इसलिये उसने सी.आर.पी. बुलवा ली है।”

“य....यह क्या कह रहा है तू?”

“मैं ठीक कह रहा हूं।” दूसरी तरफ से आवाज आई—“और मुझे यह भी पता चला है कि सबसे पहले आपके अड्डों पर रेड डाली जायेगी।”

अयोध्या प्रसाद का कलेजा धड़क उठा।

रीमा राठौर इतनी पहुंची हुई होगी—यह तो उसे सपने में भी गुमान नहीं था।

“ब....बहुत बुरी खबर सुना रहा है तू। अब क्या करूं मैं?”

“अगर बुरा न मानें तो एक सलाह दूं बाऊजी।”

“बोल।”

“आप अपना सारा गैरकानूनी माल किसी एक अड्डे पर रखवा दीजिये।”

“ताकि सी.आर.पी. को मेरा सत्यानाश करने में ज्यादा परेशानी न हो। अपनी सलाह अपने पास रख हरामखोर।”

“ल....लेकिन बाऊजी।”

“मैं खुद ही निपट लूंगा सी.आर.पी. से। अभी अयोध्या प्रसाद की बाजुओं में बहुत दम है।”

कहने के साथ ही उसने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

¶¶

इकबाल ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और अपने सामने कुर्सियों पर बैठे डी.एस.पी., इंस्पेक्टर, सब-इंस्पेक्टर की तरफ देखते हुए बोला—

“अयोध्या प्रसाद की आधी ताकत तो इसी फोन से ही खत्म हो गई। बाकी बची हुई ताकत उसके अड्डों पर रेड डालकर आप लोगों ने खत्म करनी है।”

उसने एक गहरी सांस छोड़ी।

“हराम की बहुत खा ली हमने। अब हलाल की खाने का वक्त आ गया है। आप लोगों को सब कुछ समझा दिया है मैंने—हरेक की ड्यूटी भी बता दी है कि किस-किस अड्डे पर रेड डालनी है।”

“यस सर।”

“और यह बात अपने जेहन में बिठा लो—अयोध्या प्रसाद के किसी भी आदमी को जिन्दा नहीं छोड़ना। और उसके अड्डों से जो भी कैश हासिल होगा, वो सब आप लोगों का। बाकी सब सरकार का।”

सुनकर सभी की आंखों में चमक उभर आई।

ऐसा इकबाल ने जानबूझकर कहा था।

वह जानता था कि चोरी की आदत एकदम नहीं छूटती। इसलिये उसने उन्हें यह लालच दिया था—ताकि कोई उससे गद्दारी करके अयोध्या प्रसाद को खबर न कर दे। और वह खुद भी तो लालची था। भागते चोर की लंगोटी सही। कुछ तो हासिल होगा—यही सोचकर ही उसने कैश लूटने की बात की थी।

¶¶

नूरवाला रोड पर एक के पीछे एक पुलिस की चार गाड़ियां दौड़ रही थीं और उन गाड़ियों के पीछे थी एक जिप्सी।

जिप्सी में डी.एस.पी. जयदेव बैठा था।

हाथ में वॉकी-टॉकी लिये।

इस वक्त उसके चेहरे पर एक अजीब-सा खिंचाव था।

उसने दायें-बायें देखा—फिर वॉकी-टॉकी को मुंह के पास ले जाकर बोला—

“आगे दायें हाथ को कच्ची सड़क पर मोड़ लो।”

“यस सर।”

उसके वॉकी-टॉकी का सम्पर्क सबसे अगली गाड़ी के साथ था।

इस वक्त दोपहर के साढ़े बारह बज रहे थे।

सूरज बिल्कुल सिर पर था।

थोड़ी देर बाद सबसे अगली गाड़ी दायीं तरफ कच्ची सड़क पर उतरी और धूल उड़ाते हुए आगे बढ़ने लगी।

पीछे-पीछे तीनों गाड़ियां चल रही थीं—और उनके पीछे जिप्सी।

करीब पांच मिनट बाद जयदेव वॉकी-टॉकी पर बोला।

“बस....यहीं रोक दो।”

उसके मुंह से यह शब्द सुन उसके ड्राईवर ने ब्रेक पर पैर रख दिया।

उसकी जिप्सी के रुकते-रुकते आगे की चारों गाड़ियां भी रुक गईं।

देखते-ही-देखते गाड़ियों के दरवाजे खुले और उनमें से हथियारबन्द सिपाही निकलकर डी.एस.पी. जयदेव की जिप्सी की तरफ बढ़ने लगे।

जयदेव जिप्सी से निकला और अपने दाईं तरफ देखा।

थोड़ी दूरी पर एक फार्महाउस नजर आ रहा था।

“हमारा निशाना वो फार्महाऊस है।” वह फार्महाऊस की तरफ इशारा करते हुए बोला—“चारों तरफ से घेर लो फार्महाऊस को—और जैसे ही मेरा ओदश मिले—फायरिंग शुरू कर दो। एक भी अपराधी बचकर नहीं जाना चाहिये। पोजीशन।”

तुरंत सभी सिपाही वहां से हटे और इधर-उधर फैले खेतों में खड़ी फसलों में गायब हो गये।

करीब दस मिनट तक जयदेव वहीं खड़ा इंतजार करता रहा।

दस मिनट बाद जब उसे विश्वास हो गया कि अब हर जवान ने पोजीशन ले ली होगी—वह जिप्सी में बैठा और ड्राईवर से बोला—“चलो।”

ड्राईवर ने जिप्सी आगे बढ़ा दी।

कच्ची सड़क पर हिचकोले खाती—धूल उड़ाती जिप्सी वहां खड़ी गाड़ियों के बराबर से निकलकर दाईं तरफ मुड़ी और आगे बढ़ने लगी।

सामने फार्महाऊस का बन्द फाटक नजर आ रहा था।

फाटक के दोनों तरफ चारदीवारी के पीछे ऊंचे-ऊंचे सजावटी पेड़ लगे हुए थे और फाटक की सीध में भी कतार में ऐसे ही पेड़ लगे हुए थे जो कि काफी पीछे बने बंगले तक पहुंच रहे थे।

फाटक से थोड़ा पहले ही जयदेव ने जिप्सी रुकवाई और बाहर आ गया।

उसने डैश बोर्ड पर पड़े माईक को उठाया और माईक को ऑन कर मुंह के सामने करते हुए बोला—

“तुम लोग चारों तरफ से पुलिस द्वारा घेर लिये गये हो।” आवाज जिप्सी के आगे लगे स्पीकर में से कई गुना होकर निकली—“तुम लोगों की सलामती इसी में है कि चुपचाप खुद को कानून के हवाले कर दो।”

¶¶

“लो.....आ गई मुसीबत।”

“वो तो बाऊजी ने पहले ही कहा था कि अड्डे पर छापा पड़ सकता है।” दूसरा बोला।

खतरनाक चेहरों वाले दो व्यक्ति फार्म हाऊस के एक कमरे में आमने-सामने बैठे थे।

बाहर माईक पर जयदेव बोल रहा था—जिसकी आवाजें उनके कानों में पड़ रही थीं।

“अब क्या किया जाये?” पहला बोला।

“बाऊजी ने कहा तो था कि एक भी पुलसिया जिन्दा नहीं बचना चाहिये। और यह भी कहा था कि उनका एक रुपये का भी नुकसान नहीं होना चाहिये—तभी तो उनका फोन सुनने के बाद हमने अपने आदमियों को पोजीशन लेने को कह दिया था।”

“वो बात तो ठीक है यार—मगर यह बात ध्यान में रखो कि रेड सी.आर.पी. ने डाली है। बाऊजी ने तो हुक्म दे दिया। मरना तो हमें पड़ेगा न।”

“मैं दस तक गिनती गिनूंगा....।” बाहर से आवाज आ रही थी—“अगर मेरे दस गिनने तक तुमने आत्म-समर्पण नहीं किया तो मजबूरन मुझे बल का प्रयोग करना पड़ेगा....एक....।”

“यह कैसी बात कर रहा है तू?” भीतर बैठा दूसरा हैरानी से बोला—“अपनी जान तुझे इतनी ही प्यारी हो गई कि तू वफादारी तक भूल गया। भूल गया जब तू दाने-दाने का मोहताज था तब बाऊजी ने ही तेरी मदद की थी—और आज तू जिस ठाठ से जी रहा है—यह सब बाऊजी की देन है।”

“दो....तीन....चार....।”

“जब दाने-दाने को मोहताज था—तब आजाद तो था।” पहला बोला—“अपनी मर्जी का मालिक तो था। जब से बाऊजी ने मेहरबानी की है—तब से अपनी मर्जी से एक कदम भी नहीं उठा पाया।”

“पांच....छह....सात....।”

“यानि तूने पीठ दिखाने का फैसला कर लिया है।”

“आठ....!”

“तू ऐसा कह सकता है। पांच-सात साल की सजा होगी न....उसके बाद....।”

“तू पांच-सात साल क्या पांच-सात मिनट भी जिन्दा रहने के लायक नहीं।”

कहने के साथ ही दूसरे ने रिवॉल्वर निकाली और फायर कर दिया।

पहले को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसका साथी बिना किसी चेतावनी के उसे खत्म कर देगा।

गोली सीधी उसके माथे के बीचोंबीच लगी और वह वहीं टेबल पर मुंह के बल गिर पड़ा।

“नौ....!” बाहर से गिनती चल रही थी।

दूसरा तेजी से उठा और बाहर भागा।

बंगले के कम्पाऊंड में आकर वह चीखा—“एक भी पुलिसिया बचकर नहीं जाना चाहिये।”

“दस....।”

तभी स्पीकर में चल रही डी.एस.पी. की गिनती खत्म हो गई।

¶¶

जयदेव के चेहरे पर असमंजस के भाव उभरे। फिर एकाएक ही उसका चेहरा सख्त होता चला गया।

“अटैक....! खत्म कर दो सभी को....।”

वह पूरे वेग से दहाड़ा।

पोजीशन लिये हुए सिपाही रेंगते हुए बाऊंड्री वाल की तरफ बढ़ने लगे।

फाटक के बाईं तरफ की चारदीवारी के करीब चार सिपाही सबसे पहले पहुंचे।

एक ने अपनी राईफल कंधे में फंसाई और फिर हाथ ऊंचा करके कूद लगाई।

अगले ही पल दीवार उसके हाथ में थी।

वह ऊंचा उठा और दीवार पर चढ़ गया।

ठीक तभी—

‘तड़....तड़....तड़....!’

भीतर से फायरिंग हुई और सिपाही के जिस्म में एक साथ दर्जनों गोलियां समा गईं।

सिपाही चीखता हुआ उछला और अपने साथियों पर आ गिरा।

अपने साथी को अपनी आंखों के सामने मरते देख तीनों सिपाही सकते में आ गये।

अपनी जिप्सी के साथ पोजीशन लिये जयदेव ने भी सिपाही को गिरते देख लिया था।

उसे समझते देर नहीं लगी कि दुश्मन अन्दर पोजीशन लिये हुए है—और दुश्मन को मारने के लिये दीवार पार करनी जरूरी थी और दीवार पार हो नहीं सकती थी।

क्योंकि दीवार पर चढ़ने का मतलब था दुश्मन की निगाह में आना और निगाह में आने का मतलब था मौत।

फिर क्या किया जाये?

जयदेव तेजी से सोच रहा था।

"दीवार तोड़ दो....।" शीघ्र ही वह दहाड़ा।

कुछ ही पलों में एक काली-सी गेंद दीवार से टकराई।

'बड़ा....म....।'

एक जबरदस्त धमाका हुआ और हवा में ईंटों तथा सीमेंट के टुकड़े उड़ते नजर आने लगे। और दीवार का ढेर सारा हिस्सा गायब हो गया।

'बड़ा....म....।'

तभी एक और धमाका हुआ और कुछ दूरी पर दीवार का एक और बड़ा हिस्सा उड़ गया।

इसी तरह एक के बाद एक छह धमाके हुए और सामने वाली पूरी की पूरी दीवार गायब हो गई।

उसके स्थान पर टूटी हुई ईंटों तथा मलबे का ढेर नजर आने लगा।

अब दुश्मन नंगा था—सो पुलिस ने अपनी राईफलों के मुंह खोल दिये।

'रेट....ट....ट....ट।'

दुश्मन की चीखें उबलने लगीं।

लाशें बिछने लगीं।

अपने एक साथी की मौत का बदला पुलिस पूरे जोशोखरोश से ले रही थी।

ऐसे में दुश्मन ज्यादा देर तक नहीं टिक पाया और अपनी पोजीशनें छोड़ पीछे की तरफ भागा।

मगर मौत तो वहां पहले से ही उसका इंतजार कर रही थी।

सामने जब मुकाबला चल रहा था तो पीछे की तरफ घेरे खड़े जवान बाऊंड्री वाल फांदकर भीतर प्रवेश कर गये थे और उन्होंने पोजीशन ले ली थी।

और जब दुश्मन पीछे भागा तो उन्होंने भी अपनी राईफलों के मुंह खोल दिये।

'रेट....ट....ट....ट....।'

आगे भी मौत—पीछे भी मौत।

गुण्डों की लाशें धड़ाधड़ गिरने लगीं।

नतीजा—

पच्चीस मिनट में वहां एक भी गुण्डा नहीं बचा—यहां तक कि उस अड्डे का सह संचालक जिसने अपने हैड को इसलिये गोली मार दी थी कि उसने न लड़ने का फैसला लिया था, भी नहीं बचा।

पूरे अड्डे पर पुलिस का कब्जा हो गया।

और उस वक्त पुलिस का जोश देखने वाला था।

सभी के चेहरे खुशी से दमक रहे थे—जैसे उन्होंने किसी गुण्डे के अड्डे पर नहीं बल्कि पाकिस्तान पर कब्जा कर लिया हो।

¶¶

डेढ़ बजे रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे अपने कमरे से निकले।

इस वक्त दोनों पूरी तरह से फ्रैश थे।

गैलरी पार कर वे लॉबी में पहुंचे तो वहां सोफों पर बैठे दो व्यक्तियों की बातें उनके कानों में पड़ीं।

“आज तो सूरज जैसे पश्चिम से निकल आया है।”

“क्यों?” दूसरा बोला—“क्या कुछ खास घट गया है?”

“अरे भाई, वो हो गया जिसके बारे में रामपुर का कोई शख्स सोच भी नहीं सकता था। कल तक जो शेर कुत्तों की चमचागिरी कर रहे थे—आज उन्हें अपनी ताकत का अहसास हो गया है—और वे कुत्तों पर टूट पड़े हैं।”

“हुआ क्या—कुछ बताओगे भी।”

“अरे बाहर तो निकलो—चारों तरफ पुलिस की बहादुरी के चर्चे हैं। कल तक जो बाऊजी पुलिस को जेब में डाले हुए था, आज वही पुलिस उसके सिर पर जा बैठी है। छह अड्डे तबाह हो चुके हैं बाऊजी के। उसका करोड़ों-अरबों का गैरकानूनी माल पुलिस के कब्जे में पहुंच गया है।”

“फिर तो बाऊजी पागल हो उठा होगा।” दूसरा बोला।

“आधा पागल तो वो पहले ही था—अब पूरा पागल हो जायेगा। ताकत तो खत्म हो ही गई है उसकी—अब उसके पास रह ही क्या गया है।” पहला बोला।

“तुम गलत सोच रहे हो।” दूसरा बोला।

“क्या मतलब?”

“तुम बाऊजी की ताकत नहीं जानते। बस यूं समझ लो कि जब तक वो जिंदा है—वो राजा है। वो अपने आप में ही किसी फौज से कम नहीं।”

“गोली जब बदन में घुसती है तो मोटी से मोटी खाल को भी फाड़ देती है।” पहला बोला—“फिर चाहे वो गैंडे की खाल ही क्यों न हो।”

इधर उनकी बातें हो रही थीं—उधर रीमा मुस्कुराते हुए सिकंदर ठाकरे को देख रही थी—और सिकंदर ठाकरे हैरान हो रहा था।

“देखा ठाकरे....।” रीमा राठौर बोली—“मन बदलते कितनी देर लगती है। कल जो इकबाल बाऊजी के तलवे चाटता था—आज वही उस पर कहर बनकर टूटा हुआ है।”

“कमाल है।” सिकंदर ठाकरे हैरानी से बोला—“तुम्हारे सिर्फ दो बोलों ने उसका मन पलट दिया। विश्वास नहीं होता।”

“हो तो मुझे भी नहीं रहा। हो सकता है मौत के डर से उसका मन बदला हो—या यह भी हो सकता है कि मेरी बातों ने उसके भीतर सो रहे इंसान को जगा दिया हो। जो भी हो—उसने खुद को बदला और नतीजा सामने है—तुमने सुना—बाऊजी के छह अड्डे तबाह हो चुके हैं। जो काम हमने रात को करना था—वो उसने अभी कर डाला।”

“हां....तुम ठीक कह रही हो।”

गहरी सांस छोड़ी सिकंदर ठाकरे ने।

“मैं जरा इकबाल को फोन करूं। कम-से-कम उसे बधाई तो दूं।”

कहते हुए वह वापस कमरे की तरफ मुड़ गई।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे भी चल पड़ा।

अपने कमरे में आकर रीमा राठौर फोन के करीब आई और रिसीवर उठाकर पहले जीरो दबाकर उसकी डायल टोन चालू की—फिर इकबाल का नम्बर मिलाने लगी।

¶¶

‘ट्रिन....ट्रिन....।’

फोन की घण्टी बजते ही इकबाल ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

अपने ऑफिस में बैठे-बैठे ही वह सारे आपरेशन को कमाण्ड कर रहा था और निर्देश दे रहा था।

अभी तक अयोध्या प्रसाद के छह मुख्य अड्डे तबाह हो चुके थे।

अपनी इस सफलता पर उसे जो खुशी हासिल हो रही थी—वह उन लाखों रुपयों से कहीं ज्यादा थी जो उसे अयोध्या प्रसाद से बतौर पूंछ हिलाने के मिलते थे।

अब उसे रीमा राठौर की बातें याद आ रही थीं—उसने फोन पर उससे कहा था कि वह एक बार वो बनके तो देखे जिसके लिये सरकार ने उसे वर्दी दी थी। तब देखना

कितनी खुशी हासिल होगी उसे।

और सचमुच उसे खुशी ही नहीं शान्ति भी मिल रही थी।

अयोध्या प्रसाद के अड्डों पर छापे पड़ने के दौरान दो बार उससे अयोध्या प्रसाद की भी फोन पर बात हुई थी।

जिसमें उसने उससे कुछ करने को कहा था।

मगर उसने यह कहकर कि वह कुछ नहीं कर सकता—हाथ खड़े कर दिये थे।

"एस.पी. इकबाल राय स्पीकिंग।"

उसकी आवाज में इस वक्त पूरा आत्मविश्वास झलक रहा था।

"बधाई हो इकबाल राय।" दूसरी तरफ से रीमा राठौर की आवाज आई—"लगता है मेरी बातों का असर हुआ है तुम पर।"

इकबाल का चेहरा खिल उठा।

"आप ठीक कह रही हैं।" वह बोला—"वैसे मैंने शुरूआत ऐसे की थी कि अयोध्या प्रसाद को झटका लगने के साथ-साथ मेरी जेबों का वजन भी बढ़े। मगर अब उस खुशी का वजन इतना बढ़ गया है जो मुझे हासिल हो रही है कि जेबों में नोट रखने की जगह ही नहीं बची। थैंक्यू रीमा राठौर।"

"अयोध्या प्रसाद का क्या हाल है?"

"बस उसके दो अड्डे और रह गये—उसके बाद उसके हैडक्वार्टर पर धावा बोलना है।"

"मगर उसे खत्म नहीं करना।"

"क्यों?" हल्के से चौंका इकबाल।

"एक हिसाब चुकाना है उससे।" दूसरी तरफ से रीमा राठौर की गुर्राहट उभरी।

"आप उसे कम करके मत आंकियेगा....वो....।"

"डोंट वरी—मैं सम्भाल लूंगी।"

उसी के साथ ही सम्बंध विच्छेद हो गया।

एक गहरी सांस छोड़ते हुए इकबाल ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

¶¶

हॉल में इधर से उधर—उधर से इधर बिफरे भैंसे की तरह घूम रहा था अयोध्या प्रसाद।

उसके नथुने बार-बार फूल-पिचक रहे थे—आंखें दहक रही थीं—और उसका दिमाग इस कदर गर्म हो रहा था मानो किसी भी वक्त फट पड़ेगा।

उसके करीब उसके दस स्टेनगन गार्ड खड़े थे। लेकिन अयोध्या प्रसाद का ध्यान उनकी तरफ नहीं था।

वह तो पिछले तीन घण्टों से मिल रही सूचनाओं को सुनकर पागल हुआ जा रहा था।

उसकी वर्षों की मेहनत पर पानी फिर गया था।

एक-एक करके उसके सभी अड्डे पुलिस ने खत्म कर दिये थे।

उसने इकबाल को फोन किया तो वहां से टका-सा जवाब मिल गया।

उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। क्या नहीं।

तभी एक आदमी हॉल में प्रविष्ट हुआ।

अयोध्या प्रसाद के चहल कदमी करते कदम वहीं धमक गये। आग उगलती निगाहें उस पर स्थिर हो गईं।

“क्या खबर लाया है?” गुर्राया अयोध्या प्रसाद।

“ब....बहुत बुरी खबर है बाऊजी।”

“बोल।”

“अ....अब तो आम लोगों में भी आपका आतंक खत्म हो गया है बाऊजी। लोग ढोल बजाकर नाच रहे हैं और आपके पुतले को जगह-जगह जूतों से पीट रहे हैं—और ‘पुलिस जिंदाबाद’ के नारे लगा रहे हैं।”

अयोध्या प्रसाद की सुलगती आंखों में ज्वालामुखी धधकने लगे।

“इतनी जल्दी मेरा खौफ खत्म हो गया।” वह फुंफकारा— “कल तक ये जो मेरे नाम से कांपते थे आज मेरे बुत को जूते मार रहे हैं। नहीं....नहीं छोड़ूंगा—पूरे शहर को लाशों से पाट दूंगा....। किसी को भी जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। रामपुर को मुर्दा पुर बना डालूंगा।”

कहते हुए उसने गार्डों की तरफ देखा।

“तैयारी कर लो....” वह दहाड़ा—“पूरे शहर को लाशों से पाट दो। और लोगों को मुर्दा बनते हुए देखने के लिये मैं खुद तुम्हारे साथ चलूंगा।”

दसों गार्ड फौरन वहां से हट गये।

¶¶

‘ढम....ढम....ढम....ढम....।’

लोग खुशी से ढोलक पर नाच रहे थे।

एक आदमी फूंस के बने एक पुतले को लाठी से बांधे उठाये हुए नाच रहा था।

पुतले के गले में गत्ते की तख्ती टंगी हुई थी—जिस पर ‘अयोध्या प्रसाद उर्फ बाऊजी’ लिखा था।

लोग नाचते हुए नारे लगा रहे थे—

“बाऊजी।”

“हाय....हाय....।”

“रामपुर पुलिस।”

“जिन्दाबाद....जिन्दाबाद....।”

और फिर एक नौजवान ने ढोल वाले को रुकने का इशारा किया।

ढोल रुक गया।

नाच देखने के लिये वहां बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। सभी की आंखों में खुशी थी।

ऐसी खुशी तो लोगों में रावण दहन के दौरान भी नहीं होती थी—जितनी आज थी।

नौजवान ने बाऊजी का पुतला पकड़े व्यक्ति से पुतला लिया और लाठी को ऊंचा करते हुए ऊंचे स्वर में बोला—

“यह है वो बाऊजी—जिसने रामपुर की बहू-बेटियों की इज्जत को खराब किया—लोगों से जबरदस्ती पैसे वसूले—रामपुर में आतंक फैलाया। और यह सब इसी वजह से हुआ क्योंकि पुलिस सो रही थी।

लेकिन अब पुलिस जाग गई है—और उसने बाऊजी के आतंक को खत्म कर दिया है।

आप भी अपने दिलों से इस दरिंदे का आतंक निकाल दीजिये—निकालिये जूता—और एक-एक जूता मारते जाइये।”

कहकर उसने पुतले को जमीन पर लिटा दिया।

और फिर एक बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ा—उसने अपने पैरों से टूटी हुई चप्पल उतारी और उसे उठाकर अयोध्या प्रसाद के पुतले के मुंह पर मारने लगा।

“कमीने....मेरी बेटी को मारा था तूने। अब देख....तू मार खा रहा है।”

उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे—और वह ऐसे बोल रहा था जैसे अपना सारा गुस्सा उस पुतले पर निकाल रहा हो।

तभी एक आदमी ने उसे पीछे से पकड़ा और खड़ा करके हटाते हुए बोला—

“दूसरों को भी तो अपनी भड़ास निकालने दो बाबा।”

बूढ़ा हाथ में चप्पल पकड़े दूसरे हाथ से अपने आंसू पौंछते हुए पीछे हट गया।

तभी एक और आदमी आगे बढ़ा और पुतले को ठोकर मारकर उस पर थूक दिया।

“आक्....थू....।”

इधर थूक पुतले पर गिरी।

उधर—

‘रेट....ट....ट....ट....।’

दर्जनों गोलियां उस व्यक्ति के जिस्म में जा समाईं।

बुरी तरह से चीखता हुआ वह पुतले पर गिरा और छटपटाने लगा।

लोग इस घटना से स्तब्ध रह गये।

तभी पीछे से शोर उठा—

“बाऊजी....।”

लोगों की गर्दनें उधर घूमीं जिधर से कि गोलियां चली थीं।

एक खुली जीप में अयोध्या प्रसाद खड़ा था और उसके दायें-बायें स्टेनगनों से लैस दो गुण्डे खड़े थे।

एक अन्य जीप में पांच गुण्डे खड़े थे—वे सब भी गनों से लैस थे।

“हरामजादो....।” दहाड़ा अयोध्या प्रसाद—“भूल गये मेरे गुस्से को—पुलिस ने दो तीर क्या चला लिये—तुम नाचने लगे। इसकी सजा मिलेगी....जरूर मिलेगी। भून डालो सभी को।”

हुक्म मिलते ही गुण्डों ने गनों के मुंह खोल दिये।

‘तड़....तड़....तड़....!’

लोगों में भगदड़ मच गई।

हर कोई अपनी जान बचाने के लिये इधर-उधर भागने लगा।

कुछ ही देर में वह जगह कब्रिस्तान में तब्दील हो गई।

यहां-वहां लाशें बिखरी पड़ी थीं।

कुछ बुरी तरह से घायल हुए कराह रहे थे।

तीन-चार व्यक्ति नालियों में गिरे पड़े थे।

कहर बरपाती आंखों से अयोध्या प्रसाद ने लाशों को देखा और गर्दन अकड़ाते हुए बोला—

"हरामखोर....मेरे पुतले पर जूते मार रहे थे....चलो....।"

आदेश मिलते ही ड्राईवर ने जीप आगे बढ़ाई।

जीपों के पहिये लाशों को घायलों को कुचलते हुए आगे बढ़ने लगे।

और जब दोनों जीपें वहां से चली गईं तो दुबके हुए लोग एक-एक करके बाहर निकलने लगे।

सभी की आंखों में आतंक था।

चेहरों पर बदहवासी थी।

और फिर....।

जहां कुछ देर पहले लोग खुशी से झूम रहे थे—वहां अब कोहराम मच गया था।

¶¶

अवाक् रह गई रीमा राठौर।

सिकंदर ठाकरे को काटो तो खून नहीं।

दोनों फटी-फटी आंखों से सड़क पर बिछी पड़ी लाशों को घूर रहे थे।

ऐसा लग रहा था जैसे वे आदिम युग में पहुंच गये हों जहां एक कबीला दूसरे कबीले के तमाम लोगों को मौत के घाट उतार देता था।

ऐसा ही मंजर देख रहे थे वे।

कुछ लाशों से लिपटकर उनके प्रियजन विलाप कर रहे थे—और कुछ लावारिस-सी पड़ी थीं।

मौत का ऐसा घिनौना रूप वह पहली बार देख रहे थे।

"हाय मेरा बच्चा....।" तभी एक औरत उसके करीब से निकलकर लाशों में घूम-घूमकर अपने बच्चे की लाश को ढूंढ़ने लगी। साथ-साथ वह चीखती भी जा रही थी।

और फिर वह एक लाश पर गिरकर छाती पीट-पीटकर रोने लगी।

रीमा राठौर कुछ देर वहीं खड़ी लाशों को देखती रही—फिर वह एक तरफ खड़े उसी बूढ़े की तरफ बढ़ी जिसने अयोध्या प्रसाद के पुतले को चप्पलों से मारा था।

बूढ़ा सूनी-सूनी आंखों से लाशों को देख रहा था।

“बाबा....!” करीब पहुंचकर बोली रीमा राठौर।

बूढ़े की सूनी आंखें रीमा राठौर पर पड़ीं।

“य....यह सब कैसे हुआ? किसने मारा इन्हें?”

बूढ़े की आंखें बहने लगीं।

“एक ही तो रावण है रामपुर में।” वह भर्राये स्वर में बोला—“जिसे लाशों के बाजार देखने में मजा आता है। बाऊजी है उसका नाम।”

“क्या बाऊजी ने मारा है इन्हें?”

“हां।”

रीमा राठौर का चेहरा सुलगने लगा।

“किधर गया है वो कुत्ता?” वह फुंफकारी।

“इधर!” बूढ़े ने दाईं तरफ इशारा किया—“अब कोई नया बाजार लगायेगा लाशों का। पता नहीं कब ऊपर वाला इस शहर पर अपनी नजर सीधी करेगा।”

कहते हुए उसने उधर देखा।

रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा—और फिर तेजी से उधर भागी जिधर कि अयोध्या प्रसाद गया था। पीछे-पीछे ठाकरे भागा।

¶¶

सड़क पर एक बड़ा स्पीकर लगा था और साथ में एक एम.पी. थ्री लगा था।

स्पीकर में गाना चल रहा था और उसके आगे लोग झूमते हुए नाच रहे थे।

सभी के चेहरों पर खुशी थी।

स्पीकर के ऊपर अयोध्या प्रसाद का पुतला लगा हुआ था जिसके गले में जूतों की माला पड़ी हुई थी और लोग नाचते हुए कभी उस पर थूक रहे थे—तो कभी उस पर जूते मार रहे थे।

अभी तक वहां नाच रहे लोगों को पता नहीं था कि भेड़िया अपनी मांद से निकल आया है—और उसने कहर बरपाना शुरू कर दिया है।

तभी—

'तड़....तड़....तड़....।'

गोलियों की आवाजें गूंजीं और उसी के साथ ही नाच रहे दो लड़के लहुलुहान हो नीचे गिर पड़े।

नाच एकदम से रुक गया। लेकिन स्पीकर में अभी भी गाना चल रहा था।

लोग गाने को भूल गये। जब पीछे मुड़े तो कईयों के होंठों से खौफ भरी चीखें उबल पड़ीं।

"बाऊजी....।"

"बाऊजी....।"

"हां हरामजादो....।" दहाड़ा अयोध्या प्रसाद—"मेरी हार का जश्न मना रहे हो कुत्तो! भूल गये कि बाऊजी न कभी हारा है—न हारेगा। लेकिन अब तुम जिंदगी से हार चुके हो—मेरी हार पर जश्न मनाने वालों कुत्तो—अब तुम्हारी मौत का मैं जश्न मनाऊंगा। खत्म कर दो हरामजादों को।"

वह बांह सीधी करते हुए दहाड़ा।

लेकिन तभी—

'धांय....धांय....धांय....!'

पीछे से गोलियों की बरसात शुरू हो गई।

गोलियां इतनी तेजी से चलीं कि एक भी गुण्डे को ट्रिगर दबाने का मौका नहीं मिला और देखते-ही-देखते सभी लाशों में तब्दील हो नीचे सड़क पर आ गिरे।

दो गुण्डे तो जीप से बाहर की तरफ लटक गये थे।

इस बदली हुई स्थिति पर बुरी तरह से उछल पड़ा अयोध्या प्रसाद और झटके से पीछे गर्दन मोड़ी।

पीछे हाथ में रिवॉल्वर लिये रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे खड़े थे।

दोनों की रिवाल्वरों की नालों से धुएं की लकीरें निकल रही थीं।

"कौन हो तुम?" गुर्राया अयोध्या प्रसाद।

"तेरी मौत!" रीमा राठौर गुर्राई।

सुनकर पहले तो चौंका अयोध्या प्रसाद—फिर उसके होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

"रीमा राठौर है न तू?"

"अपनी मौत को पहचान लिया तूने!"

"मौत किसकी होती है....इसका फैसला अभी हो जायेगा कुतिया।"

गुर्राया अयोध्या प्रसाद और अगले ही पल उसका जिस्म हवा में उछला और कलाबाजी खाते हुए वह सड़क पर आ खड़ा हुआ।

"बाऊजी यूं ही नहीं बन गया अयोध्या प्रसाद।" वह फुंफकारा—"सैकड़ों लाशों की सीढ़ी बनाकर आज मैं इस मुकाम पर पहुंचा हूं—और तू यह समझती है कि तू मुझे एक ही झटके में नीचे गिरा देगी।"

"गिर तो तू चुका है अयोध्या—अब तो बस तेरे मरने की बारी है।"

"तो फिर चला गोली।"

सीना तानते हुए बोला अयोध्या प्रसाद।

रीमा राठौर ने ट्रिगर दबा दिया।

‘धांय....!’

उसकी रिवॉल्वर में बची एक मात्र गोली अयोध्या प्रसाद की तरफ बढ़ी।

अगले ही पल रीमा राठौर की आंखें फट पड़ीं।

अयोध्या प्रसाद स्वयं को गोली से साफ बचा गया।

यानि उसकी तरह वह भी संग आर्ट में माहिर था।

तभी सिकंदर ठाकरे ने भी अपनी रिवॉल्वर की बची आखिरी गोली खत्म कर दी।

मगर वह भी उसे छू नहीं पाई और उसके करीब से होते हुए जीप की बॉडी से जा टकराई।

“ठाकरे....।” रीमा राठौर रिवॉल्वर को सिकंदर ठाकरे की तरफ बढ़ाते हुए बोली—“तुम एक साईड में हो जाओ।”

सिकंदर ठाकरे ने उससे रिवॉल्वर ली और एक तरफ हट गया।

रीमा राठौर की ताकत पर उसे पूरा विश्वास था।

वहां मौजूद भीड़ दम साधे दोनों को देख रही थी।

हर कोई यही सोच रहा था कि वह लड़की अब नहीं बचेगी।

“तूने तो अपना कमाल दिखा दिया कुतिया।” अयोध्या प्रसाद गुर्राया—“अब मेरी बारी है।”

कहते हुए वह हाथ फैलाये उसकी तरफ बढ़ा।

उसकी बेशुमार ताकत के बारे में वह सुन ही चुकी थी—सो वह पूरी तरह से सावधान हो गई।

तभी एकाएक ही अयोध्या प्रसाद का बदन उछला और राकेट की तरह उड़ता हुआ रीमा राठौर की तरफ लपका।

रीमा राठौर ने बिजली की-सी चपलता दिखाई और नीचे लेट गई।

अयोध्या प्रसाद उसके ऊपर से उड़ता हुआ पीछे खड़ी एक गाय से जा टकराया जो कि अचानक उसके पीछे आ खड़ी हुई थी।

अयोध्या प्रसाद की टक्कर गाय के पेट में पड़ी।

यह देखकर रीमा राठौर हैरान रह गई कि उसकी टक्कर से गाय भरभरा कर न सिर्फ नीचे गिर पड़ी थी बल्कि तड़पने भी लगी थी। जबकि अयोध्या प्रसाद को कुछ भी नहीं हुआ था।

रीमा राठौर समझ गई कि उसके सामने खड़ा शख्स शैतानी शक्ति वाला है।

यानि उसे पूरी सतर्कता से काम लेना होगा।

जरा-सी भी चूक उसकी जीवन-लीला समाप्त कर देगी।

अयोध्या प्रसाद फुर्ती से पलटा और सुर्ख आंखों से रीमा राठौर को देखते हुए गुर्राया—

“कब तक बचेगी मेरे हाथों से कुतिया। आज तू चाहे कुछ भी कर ले—तू मेरे हाथों से नहीं बच पायेगी।”

कहने के साथ ही उसने पुनः उसकी तरफ छलांग लगाई।

रीमा राठौर तुरंत एक तरफ हटी और पीछे से उसके कूल्हे पर लात दे मारी।

अयोध्या प्रसाद लड़खड़ाता हुआ मुंह के बल नीचे गिर पड़ा।

उसके गिरते ही भीड़ में खुशी भरी चीखें उबलीं।

लोगों की खुशी देख अयोध्या प्रसाद के तन-बदन में आग लग गई।

तुरंत वह खड़ा हुआ और पुनः रीमा राठौर की तरफ झपटा।

इस बार रीमा राठौर ने खुद को पीठ के बल गिराया और अपनी लात उसकी जांघों के बीचों-बीच दे मारी।

बुरी तरह से डकराता हुआ अयोध्या प्रसाद वहीं बैठ गया और अपनी जांघों के बीच हाथ दबा कराहने लगा।

रीमा राठौर जमीन को हाथ लगाये बिना उछलकर खड़ी हुई और अगले ही पल उसकी टांग उसके सिर पर पड़ी।

अयोध्या प्रसाद पीछे को पलट गया।

मगर खून जरा भी नहीं निकला उसे।

इधर रीमा राठौर को ऐसा लगा—जैसे उसने किसी चट्टान पर ठोकर मारी हो।

पैर बुरी तरह से दर्द कर उठा था उसका।

वह समझ गई कि उसे हाथों से मारना नामुमकिन है।

उसने अपनी टांग को एक-दो बार झटका दिया और सीधा जीप की तरफ दौड़ लगा दी।

अगले ही पल वह जीप में पड़ी लाशों पर खड़ी थी और उसके हाथों में स्टेनगन थी—जिसका रुख उसी की तरफ था।

"अयोध्या प्रसाद!" वह गुर्राई—"रिवॉल्वर से तो तूने खुद को बचा लिया—अब स्टेनगन से बचकर दिखा।"

कहने के साथ ही उसने ट्रिगर दबा दिया।

'तड़....तड़....तड़....।'

अयोध्या प्रसाद ने अपनी तरफ से फुर्ती तो पूरी दिखाई।

मगर गोलियों की बाढ़ से वह स्वयं को नहीं बचा पाया।

नतीजा—

बेशुमार गोलियां उसके जिस्म में जा समाईं और वह वहीं गिरकर छटपटाने लगा।

इधर उसका जिस्म शांत हुआ—

उधर भीड़ में खुशी भरा शोर उठा—

"रीमा राठौर।"

“जिंदाबाद....जिंदाबाद।”

“रीमा राठौर।”

“जिंदाबाद....जिंदाबाद।”

रीमा राठौर के होंठों पर एक मुस्कान फैल गई। साथ ही उसकी आंखों के सामने भीमसेन का चेहरा नाच उठा। न चाहते हुए भी उसकी आंखें भीग गईं।

—समाप्त—